अभिनव पर्यायवाची कोश

(साहित्यिक पारिभाषिक शब्दों सहित)

सम्पादक

सत्यपाल गुप्त : श्याम चन्द्र कपूर

आर्य बुक डिपो

दो शब्द

शब्द कोश—शब्द-कोश किसी भाषा के शब्द-समुदाय के उस संचय को कहते हैं, जिसमें सब शब्दों को अकारादि अनुक्रम से रखकर उनके अर्थ दिए गए हों। इस प्रकार के कोश बड़े उपयोगी होते हैं; क्योंकि किसी भी शब्द से अनभिज्ञ व्यक्ति उस शब्द के अर्थ को शब्द-कोश की सहायता से तुरन्त जान सकता है।

पर्यायवाची कोश – हिन्दी भाषा एक विशाल देश की भाषा है। उसे अपनी जननी संस्कृत से विशाल शब्द भंडार की उपलब्धि हुई है, साथ ही संस्कृत से उसे नवीन शब्द निर्माण की अद्भुत शक्ति प्राप्त हुई है। हिन्दी भाषा की पाचन-शक्ति भी अद्वितीय है, वह अपने अन्दर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी, अरबी, तुर्की, अँग्रेजी तथा दक्षिण भारत की भाषाओं के अनेकानेक शब्दों को आत्मसात् कर चुकी है। इसके अतिरिक्त उसे संस्कृत भाषा से एक लोकातीत देन मिली है। वह है समानार्थक शब्दों की विपुलता। हिन्दी अन्य भाषाओं की भाँति दरिद्र नहीं है कि उसमें एक वस्तु के लिए एक या दो ही शब्द हों। यहां तो एक वस्तु ही नहीं, व्यक्ति के लिए भी अनेकानेक शब्द उपलब्ध होते हैं। विष्णु के सहस्रनाम से हम अपनी भाषा की सम्पत्ति का सहज ही अनुमान कर सकते हैं। पर्यायवाची अथवा समानार्थक शब्दों का लाभ भी खूब होता है। परिस्थितियों के अनुसार शब्द के प्रयोग से भाषा में लालित्य आ जाता है। साहित्य में ओज, प्रसाद और माधुर्य—रचना-शैली के ये तीन गुण स्वीकृत हैं। इन तीनों में विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग साहित्य में हुआ है। उनके अर्थों को जानने में साधारण कोश सहायक हैं, परन्तु जब हमारे सम्मुख प्रयोग का अवसर आता है, तब हमें पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए पर्यायवाची कोश एक महान् गुरु का काम देता है जिसे हम हर समय

अपने समीप रखकर उससे अपनी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं और अवसर के उपयुक्त शब्द पूछकर उसका प्रयोग कर सकते हैं। समानार्थक शब्दों के विस्तृत ज्ञान से किसी भी व्यक्ति की रचना-शक्ति बहुत बढ़ सकती है, इस विषय में दो मत नहीं हो सकते। उदाहरणत: अन्धकारमयी रात्रि के लिए निशा का प्रयोग तथा चाँदनी रात के लिए विभावरी का प्रयोग समीचीन और उचित है।

प्रश्न हो सकता है कि शेक्सपीयर ने कहा है—'नाम में क्या है? फूल को फूल न कहो तो भी उसका रूप और उसकी सुगंध तो आनन्द देती हैं।' महाकवि कालिदास ने भी प्रकारान्तर से यही बात कही है कि 'किमिव हि मधुराणाँ मंडनम् नाडकृतीनाम्' अर्थात् सुन्दर वस्तु व व्यक्ति की शोभा प्रत्येक पदार्थ से बढ़ती है। कुछ भी नाम दो, सुन्दर वस्तु सुन्दर ही रहेगी। वाद के लिए यह बात सही हो सकती हैं, परन्तु हम देखते हैं कि शब्द का उचित और साधु प्रयोग बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। संस्कृत में कहा गया है—'एक: शब्द: सम्यग्ज्ञात: सुप्रयुक्त: स्वर्गे लोके काम-धुग् भवति' अर्थात् एक भी शब्द भली भाँति जाना हुआ और अच्छी तरह प्रयोग किया हुआ स्वर्ग तथा कामधेनु की भान्ति मनोकामना पूर्ण करने वाला होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि किसी वस्तु के एक से अधिक नाम या पर्याय हमें विदित हों तो हमें अवसर के अनुकूल उचित शब्द को अवश्य चुनकर फिर उसका प्रयोग करना चाहिए। एक ही विचार, भाव वस्तु या व्यक्ति के लिए किसी एक वाचक का प्रयोग हितकर हो सकता है और किसी दूसरे पर्याय का प्रयोग अहितकर या अनुचित! अस्तु।

पर्यायवाची शब्द और उचित शब्द का चयन—प्राय: पर्यायवाची शब्दों को सर्वथा एक ही अर्थ के वाचक समझ लिया जाता है, परन्तु ये वास्तव में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द होते हैं। शब्दों द्वारा ध्वनि भी प्रकट होती है और अर्थ भी। प्रत्येक शब्द की ध्वनि में उसका

अपना संगीत होता है। इसी संगीत-भेद के कारण वे एक ही पदार्थ के भिन्न-भिन्न रूपों को व्यक्त करते हैं। प्रयोक्ता के लिए यह सोचना आवश्यक है कि अमुक स्थल पर कौन-सा शब्द श्रेष्ठ रहेगा। कविवर सुमित्रानंदन पन्त ने इसका एक मनोरंजक उदाहरण दिया है—'भ्रू से क्रोध की वक्रता, भृकुटि से कटाक्ष की चंचलता, भौंहों से स्वाभाविक प्रसन्नता और ऋजुता का हृदय में अनुभव होता है।' इससे स्पष्ट है कि समानार्थक होते हुए भी ये शब्द दशा-विशेष की दृष्टि से तनिक विभिन्न अर्थ के द्योतक हो जाते हैं। शब्दों की यह संगीत-ध्वनि गद्य तथा पद्य—दोनों प्रकार की रचना में उपयुक्त होती है। पर्यायवाची कोश इस प्रकार शब्द-चयन में अद्वितीय सहायक होता है।

पर्यायवाची शब्द और विद्यार्थी—विद्यार्थियों को पर्यायवाची कोश से दो प्रकार का लाभ होता है, एक तो वे अपने पाठ्य ग्रंथों में आम शब्दों के अन्य समानार्थकों को जानकर उस शब्द के यथार्थ तात्पर्य को परिनिश्चित कर सकते हैं। दूसरे, वे अपने लेखन-काल में उचित शब्द का व्यवहार कर सकते हैं। इसी बात को दृष्टि में रखकर परीक्षाओं में कुछ शब्दों के समानार्थक पूछे जाते हैं। सार यह है कि पर्यायवाची कोश हमारी भाषा की समृद्धि का भंडार है।

प्रस्तुत पर्यायवाची कोश के विषय में—प्रस्तुत पर्यायवाची कोश में हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले सहस्रों शब्दों के यथासंभव पर्यायवाचक अर्थात् समानार्थक शब्द उपस्थित किये गये हैं। पर्यायवाचक देते हुए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशी भाषा, अँग्रेजी भाषा आदि के शब्द भी यथासंभव दे दिए गए हैं। परन्तु इतर भाषा-शब्दों में से उन्हीं शब्दों को लिया गया है, जिनका प्रयोग हिन्दी में भी होता है अथवा बोलचाल में वे शब्द प्रचलित हैं।

इस कोश की प्रयोग विधि—प्रस्तुत कोश में सभी शब्द अकारादि अनुक्रम से दिये गये हैं। कोश-शरीर के प्रारम्भ में एक सूची दे दी गई है,

जो यह प्रदर्शित करती है कि अमुक अक्षर से आरम्भ होने वाला शब्द किस पृष्ठ पर प्राप्त होगा। इससे कोश के प्रयोग-कर्ताओं का समय बचेगा।

शब्दों के पर्याय देते हुए कहीं-कहीं विलोम या विपरीतार्थक शब्द देकर भी अर्थ स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है, परन्तु सर्वत्र ऐसा करने से ग्रन्थ का कलेवर बढ़ने का भय था। इससे मूल्य भी बढ़ाना पड़ता, अतः इसका विचार छोड़ देना पड़ा।

अन्त में हम हिन्दी-प्रेमियों तथा छात्र-समुदाय से निवेदन करेंगे कि यह आपकी ही वस्तु है और आपका इससे हित होगा—ऐसी हमें पूर्ण आशा है। अतः आप से अनुरोध है कि इसे अपना ही जानकर अपनाएँ और लाभ उठाएँ।

—विनीत
सम्पादक

संकेत

भाषा-सम्बन्धी

अ०	—	अरबी
अँ०	—	अँग्रेजी
तुर्की	—	तुर्की
फा०	—	फारसी
सं०	—	संस्कृत
हि०	—	हिन्दी

व्याकरण-सम्बन्धी

संज्ञा पु० (सं० पु०)	—	संज्ञा पुल्लिंग
संज्ञा स्त्री० (सं० स्त्री०)	—	संज्ञा स्त्रीलिंग
सर्व०	—	सर्वनाम
वि०	—	विशेषण
क्रि०	—	क्रिया
क्रि० अ०	—	क्रिया अकर्मक
क्रि० स०	—	क्रिया सकर्मक
क्रि० वि०	—	क्रिया विशेषण
प्रत्यय	—	प्रत्यय
अव्यय	—	अव्यय
व्यु० श०	—	व्युत्पन्न शब्द

विषय-सूची

अक्षर	पृष्ठ
अ	१
आ	७
इ	८
ई	९
उ	९
ऊ	११
ऋ	११
ए	११
ऐ	११
ओ	१२
औ	१२
क	१२
ख	१९
ग	२१
घ	२४
च	२५
छ	२८
ज	२९
झ	३२
ट	३३
ठ	३३
ड	३४
ढ	३५
त	३५
थ	३९
द	४०
ध	४८
न	५२
प	६९
फ	१६०
ब	१६९
भ	२०६
म	२२५
य	२६४
र	२७०
ल	२८९
व	३०१
श	३२७
ष	३४३
स	३४४
ह	३६९
साहित्यिक पारिभाषिक शब्द	३७३
धातु	४१३
प्रत्यय	४२३
उपसर्ग	४२५

अ

१. **अंक, अङ्क** (संज्ञा पु०) (सं०) निशान, चिह्न, लेख, अक्षर, संख्या, भाग्य, डिठौना, अनखा, धब्बा, नाटक का परिच्छेद, गोद, पाप, दाग़, (फ़ा०) दफ़ा।

२. **अंकुर, अङ्कुर** (संज्ञा पु०) (सं०) प्ररोह, गाभ, अँखुवा, आँख, कोंपल, कलिका, नोक, रक्त, रोआँ, लोम, जल, अँगूर, भराव, कल्ला।

३. **अंग, अङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) गात्र, अवयव, अंश, टुकड़ा, भाग, शरीर, तन, देह, खंड, भेद, सहायक, प्रकृति, उपाय, सुहृद्, जन्मलग्न, विभाग, हिस्सा।

४. **अंगद, अङ्गद** (संज्ञा पु०) (सं०) भुजबन्ध, तारेय, बालितनय, बालिपुत्र, बालिकुमार।

५. **अंगार, अङ्गार** (संज्ञा पु०) (सं०) चिनगारी, अँगारा।

६. **अँगूठी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मुंदरी, छल्ला, मुद्रिका, (फ़ा०) अँगुश्तरी।

७. **अँगूर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) द्राक्षा, दाख।

८. **अँगोछा** (संज्ञा पु०) (हिं०) तौलिया, गमछा, उपरना, उपवस्त्र, कन्धे पर डालने का वस्त्र।

९. **अंचल, अञ्चल** (संज्ञा पु०) (सं०) आँचल, पल्ला, छोर, प्रान्त अथवा देश की सीमा के आस-पास का भाग, किनारा, तट।

१०. **अंजन, अञ्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) सुरमा, काजल, रात, स्याही, एक प्रकार का बगला, छिपकली, एक प्रकार का वृक्ष, एक पर्वत का नाम, लेप, माया, एक सर्प, अलंकार में एक वृत्ति।

११. **अंड, अण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) अंडा, फोता, अण्डकोश, विश्व, ब्रह्माण्ड, वीर्य, कस्तूरी का नाफा, कोश, कामदेव, सुन्दरता के लिए मकानों की छाजन के ऊपर बना हुआ गोल कलश।

१२. **अंत, अन्त** (संज्ञा पु०) (सं०) समाप्ति, आखीर, मृत्यु, पार, छोर, परिणाम, फल, समीप, प्रलय, अन्तिम भाग।

१३. **अंतर, अन्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) भेद, फासला, दूरी, मध्यवर्ती समय, परदा, आड़।

१४. **अंतरिक्ष, अन्तरिक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) अंबर, आकाश, आसमान, अनन्त, गगन, नभ, द्यु, व्योम, तारायण, शून्य, सुरपथ सिद्धपथ, अन्तरीक, अभ्रक, खग, गो, ज्योतिष्पथ, गुप्त।

१५. **अंतर्गत, अन्तर्गत** (वि०) (सं०) शामिल, गुप्त, अन्तःकरण-स्थित।

१६. **अंतर्दृष्टि, अन्तर्दृष्टि** (संज्ञा स्त्री) (सं०) ज्ञानचक्षु, आत्म-चिन्तन।

१७. **अंतर्हित, अन्तर्हित** (वि०) (सं०) अदृश्य, छिपा हुआ, गायब, गुप्त, तिरोहित।

१८. **अंदाज, अन्दाज** (संज्ञा पु०) (फा०) अनुमान, अटकल, कूत, नापजोख, ढंग, मटक, भाव, चेष्टा, ठसक, परिणाम।

१९. **अंदेशा, अन्देशा** (संज्ञा पु०) (फा०) सोच चिन्ता, अनुमान, सन्देह, आशंका, भय, खटका, हानि, पसोपेश, दुविधा, असमंजस।

२०. **अंधकार, अन्धकार** (संज्ञा पु०) (सं०) तिमिर, अँधेरा, अन्ध, अँधेरी अँधियारी, कालिमा, कृष्ण, घटा, छाया, झाँई, तम, तमता, तमर, तमस्, तमिस्र, तारीक, तारीकी, दिनकेशर, दिनांत, दिनांतक, धुन्धाकार, धुमलाई, नभोरज, निद्रावृक्ष, निशाचर्म, नीलपंक, तामस, अँधार, अँध्यार।

२१. **अंध्र, अन्ध्र** (संज्ञा पु०) (सं०) शिकारी, व्याध, बहेलिया, आखेटक, बधिक, तीवर, अहेरी, तैत्तिरिक, पारधी, पाशिक, पाशी, जल्लाद, हत्यारा, लुब्ध, हिंसक, कालपाशिक, खड्गिक, खेटक।

२२. **अंबिका, अम्बिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माता, पार्वती, देवी, दुर्गा, अंबष्ठालता, पाठा।

२३. **अंबुज, अम्बुज** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, बेंत, वज्र, ब्रह्मा, शंख।

२४. **अंशु** (संज्ञा पु०) (सं०) किरण, प्रभा, ज्योति, सूर्य, सूत, तागा, अंसु।

२५. **अकस्मात्** (क्रिया वि०) (सं०) अचानक, सहसा, तत्क्षण, संयोगवश, अकारण, अनायास, औचक, दैवयोग, दैवात्, यकायक, हठात्।

२६. **अकाल** (संज्ञा पु०) (सं०) दुर्भिक्ष, महँगी, कुसमय, अयोग्य काल, कुकाल, दुःसमय, दुष्काल, ठोहर, विपदकाल, (अ०) क़हत।

२७. **अक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) पासा, छकड़ा, चौसर, गाड़ी, धुरी, मामला, व्यवहार, मुकद्दमा, सुहागा, आँख, बहेड़ा, रुद्राक्ष, तूतिया, साँप, गरुड़ आत्मा, जन्मांध, आँवला।

२८. **अक्षर** (संज्ञा पु०) (सं०) अविनाशी, स्थिर, नित्य, वर्ण, (फ़ा०) हुरुफ़।

२६. **अखाड़ा** (संज्ञा पु०) (हिं०) कुश्ती का स्थान, सन्तमण्डली, सभा, दरबार, मजलिस, रंगशाला, मैदान।

३०. **अगम** (वि०) (सं०) दुर्गम, गहन, विकट, कठिन, दुर्लभ, अपार, अत्यन्त, बहुत, दुर्बोध, अथाह, गहरा, दुश्वार, अगम्य, मुश्किल, अज्ञेय।

३१. **अगर** (अव्यय) (फ़ा०) यदि, जो, यदपि, यद्यपि, जो, जो पै, जद, पर।

३२. **अगुआ** (संज्ञा पु०) (हिं०) अग्रणी, मुखिया, नेता सरदार, नायक, प्रधान, रहनुमा, मार्गदर्शक।

३३. **अगोचर** (वि०) (सं०) अप्रकट, अव्यक्त, इन्द्रियातीत, अप्रत्यक्ष, अप्रकाशित, अप्रकाशमान्, गुप्त।

३४. **अग्नि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आग, पावक, अनल, वह्नि, चिनगारी।

३५. **अग्र** (संज्ञा पु०) (सं०) आगा, सिरा, नोक, अवम्लम्बन, समूह, (वि०) अगला, प्रथम, श्रेष्ठ, उत्तम।

३६. **अग्रज** (संज्ञा पु०) (सं०) बड़ा भाई, भ्राता, अगुआ, नायक, नेता, ब्राह्मण।

३७. **अचेत** (वि०) (सं०) बेसुध, विकल, विह्वल, असावधान, अनजान, बेख़बर, नासमझ, मूर्ख, जड़, (संज्ञा पु०) अज्ञान, माया।

३८. **अच्छा** (वि०) (हिं०) चोखा, उत्तम, भला, खरा, अतुल, उद्भट, कुशल, पुण्य, बढ़िया, वर, भव्य, शुभ, साधु, (संज्ञा पु०) कल्याण, हित, (अव्यय) अस्तु, खैर।

३९. **अचम्भा** (संज्ञा पु०) हिं०) अचरज, आश्चर्य, कुतूहल, कौतुक, विस्मय।

४०. **अछूत** (वि०) (हिं०) अस्पृश्य, नया, कोरा, पवित्र ।

४१. **अजनबी** (वि०) (फ़ा०) अपरिचित, अज्ञात, अनजान, नावाकिफ़, अविदित ।

४२. **अजय** (संज्ञा पु०) (सं०) पराजय, हार, अभिषंग, अभिभूति ।

४३. **अजिर** (संज्ञा पु०) (सं०) आँगन, सेहन, हवा, वायु, शरीर, मेंढक, चौक, अँगना ।

४४. **अज्ञ** (वि०) (सं०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवकूफ़, नासमझ ।

४५. **अज्ञान** (संज्ञा पु०) (सं०) जड़ता, मूर्खता, अविद्या, मोह, अविवेक ।

४६. **अटल** (वि०) (सं०) स्थिर, अचल, नित्य, चिरस्थायी, अवश्यम्भावी, पक्का, ध्रुव, निश्चित, अडिग ।

४७. **अटूट** (वि०) (हिं०) मजबूत, अजेय, अखंड, निरन्तर, अपरिमित ।

४८. **अणु** (संज्ञा पु०) (सं०) कण, छोटा टुकड़ा, रज, रजकण, (वि०) क्षुद्र ।

४९. **अति** (वि०) (सं०) बहुत, अधिक, अतिशय, अनेक, अपार, असंख्य, बहु, अत्यन्त, अतीव, अपरिमित, निपट, परम, विपुल, ज्यादा, (संज्ञा स्त्री०) अधिकता, ज्यादती ।

५०. **अतिथि** (संज्ञा पु०) (सं०) अभ्यागत, मेहमान, मुनि, व्रात्य ।

५१. **अतिरिक्त** (क्रिया वि०) (सं०) सिवाय, अलावा, (वि०) अधिक, ज्यादा, शेष, न्यारा, भिन्न, अलग, जुदा ।

५२. **अतीत** (वि०) (सं०) भूत, गत, व्यतीत, निर्लेप, विरक्त, पृथक्, मृत, (संज्ञा पु०) वीतराग, संन्यासी, अभ्यागत, अतिथि, (क्रि० वि०) परे, बाहर ।

५३. **अत्याचार** (संज्ञा पु०) (सं०) अन्याय, विरुद्धाचरण, ज्यादती, पाप, दुराचार, आडम्बर, पाखंड, ढकोसला, अनाचार, दुष्टता, व्यभिचार ।

५४. **अथवा** (अव्यय) (सं०) या, वा, किंवा ।

५५. **अदृश्य** (वि०) (सं०) अलख, अगोचर, परोक्ष, ग़ायब, लुप्त, अन्तर्द्धान, ओझल, तिरोहित ।

५६. **अद्भुत** (वि०) (सं०) विचित्र, विलक्षण, आश्चर्यजनक, अनोखा,

अपूर्व, अलौकिक, (अ०) अजीव ।

५७. **अद्वितीय** (वि०) (सं०) एकाकी, अकेला, एक, बेजोड़, अनुपम, प्रधान, मुख्य, विचित्र, विलक्षण, (अ०) अद्भुत अजीब ।

५८. **अधिकार** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभुत्व, आधिपत्य, स्वत्व, हक़, अख़्तियार, कब्ज़ा, प्राप्ति, शक्ति, क्षमता, सामर्थ्य, योग्यता, ज्ञान, परिचय, प्रकरण, शीर्षक ।

५९. **अधीन** (वि०) (सं०) आश्रित, मातहत, वशीभूत, आज्ञाकारी, विवश, लाचार, दीन ।

६०. **अधीर** (वि०) (सं०) धैर्यहीन, व्यग्र, बेचैन, व्याकुल, विह्वल, चंचल, अस्थिर, उतावला, आतुर, असंतोषी ।

६१. **अध्यापक** (संज्ञा पु०) (सं०) शिक्षक, गुरु, (फ़ा०) उस्ताद ।

६२. **अनंत, अनन्त** (वि०) (सं०) असीम, बेहद, अपार, असंख्य, अविनाशी, नित्य, अतिशय, अधिक, अगणित, बहुत बड़ा, (संज्ञा पु०) विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम, आकाश, अभ्रक ।

६३. **अनजान** (वि०) (हिं०) अज्ञात, अपरिचित, भोला-भाला, नासमझ, अनभिज्ञ, नादान, सीधा, अज्ञ, अज्ञानी ।

६४. **अनाज** (संज्ञा पु०) (हिं०) अन्न, धान्य, नाज, गल्ला, दाना ।

६५. **अनाथ** (वि०) (सं०) नाथहीन, असहाय, दीन, निःसहाय, बेकस, यतीम, दुःखी ।

६६. **अनुकूल** (वि०) (सं०) अनुसार, मुआफ़िक, हितकर, पक्षपाती, प्रसन्न (क्रि० वि०) ओर, तक ।

६७. **अनुमति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आज्ञा, अनुज्ञा, हुक्म, सम्मति, पूर्णिमा, अवकाश, छुट्टी ।

६८. **अनुयायी** (वि०) (सं०) अनुगामी, मतावलम्बी, नौकर, सेवक, अनुचर, चाकर, दास ।

६९. **अनुवाद** (संज्ञा पु०) (सं०) भाषान्तर, उल्था, तर्जुमा, पुनरुक्ति, दोहराना, पुनर्लेख ।

७०. **अनुशासन** (संज्ञा पु०) (सं०) आदेश, आज्ञा, उपदेश, शिक्षा, (अ०) डिसिप्लिन ।

७१. अन्न (संज्ञा पु०) (सं०) खाद्य-पदार्थ, अनाज, धान्य, दाना, नाज, गल्ला, भात, सूर्य, विष्णु, पृथ्वी, प्राण, जल, (वि०) (हिं०) अन्य, दूसरा, विरुद्ध।

७२. अपमान (संज्ञा पु०) (सं०) अनादर, अवज्ञा, अवहेलना, तिरस्कार, बेइज्ज़ती, निरादर, अप्रतिष्ठा।

७३. अभिनंदन, अभिनन्दन (संज्ञा पु०) (सं०) प्रार्थना, प्रोत्साहन, आनन्द, प्रशंसा, उत्तेजना, संतोष।

७४. अभ्यास (संज्ञा पु०) (सं०) बार-बार अनुशीलन, पुनरावृत्ति, दोहराव, मुहावरा, स्वभाव, आदत, बान, टेव, शिक्षा।

७५. अमानत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) थाती, धरोहर, उपनिधि।

७६. अमृत (वि०) (सं०) जीवित, (संज्ञा पु०) सुधा, पीयूष, जल, पानी, देवता, इन्द्र, सूर्य, शिव, पारा, धवन्तरि, उड़द, सोना, घी, दूध, अन्न, अनाज, धन, मुक्ति, स्वर्ग, सोमरस, भोजन, मधु, शहद, अमिय, सार, सुरभोग, विष।

७७. अरुण (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, गरुड़, प्रातःकाल, कुमकुम, सिन्दूर, अफ़ीम, मजीठ, लाल कमल, मणि।

७८. अर्जुन (संज्ञा पु०) (सं०) पार्थ, कुन्तिसुत, पांडुनन्दन, मयूर, मोर, इकलौता पुत्र।

७९. अर्थ (संज्ञा पु०) (सं०) अभिप्राय, मतलब, प्रयोजन, माइने, काम, इष्ट, हेतु, निमित्त, धन, सम्पत्ति, पाँच इन्द्रिय-विषय (शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध)।

८०. अवश्य (क्रिया वि०) (सं०) जरूर, असंशय, निःसन्देह।

८१. अशुभ (संज्ञा पु०) (सं०) अशिव, अपशगुन, अमंगल, अकल्याण, अहित, पाप (वि०) अपवित्र, अशुचि, असंस्कृत,।

८२. असभ्य (वि०) (सं०) अशिष्ट, गँवार, उजड्ड।

८३. अस्त (वि०) (सं०) तिरोहित, अदृश्य, नष्ट, ध्वस्त, लुप्त, (संज्ञा पु०) लोप, अदर्शन।

८४. अस्त्र (संज्ञा पु०) (सं०) हथियार, शस्त्र, चिकित्सक का औज़ार।

आ

८५. **आकाश गंगा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आकाश जनेऊ, आकाश नदी, किराती, नभगंगा, स्वर्ण नदी, सुरदीर्घिका, मंदाकिनी।

८६. **आकुल** (वि०) (सं०) व्यग्र, व्यस्त, उद्विग्न, क्षुब्ध, विह्वल, कातर, अस्वस्थ, संकुल, व्याप्त, दुखित, बेचैन, अधीर, विकल, बेकल, बेसब्र, बेहाल, बिहाल, आर्त्त, अकल, आतुर, बेकरार, बेताब।

८७. **आकृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बनावट, ढाँचा, गढ़न, अवयव, मूर्त्ति, रूप, मुख, चेष्टा, आकार।

८८. **आक्रमण** (संज्ञा पु०) (सं०) हमला, चढ़ाई, धावा, (क्रि०) घेरना, छेंकना।

८९. **आँख** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अँखड़ी, अँखिया, अक्ष, गो, गोलक, चख, चक्षु, चर्मचक्षु, ज्योति, दर्पण, दर्शन, दृग्, दृशा, दृष्टि, देवदीप, नयन, नीथ, नेत्र, प्रेक्षण, विलोचन, लोचन, लोयन।

९०. **आखिर** (वि०) (फ़ा०) अन्तिम, पिछला, समाप्त, खतम, (संज्ञा पु०) अन्त।

९१. **आग** (सं० स्त्री०) (हिं०) अग्नि, बसुन्दर, जलन, गरमी, ताप, कामाग्नि, डाह, ईर्ष्या, आत्मा, अनल, अंगार, उल्का, ज्योति, तपन, त्रिधाम, दमुना, दव, देववाहन, देवपात्र, द्यु, धनंजय, धनद, धूमध्वज, पवनवाहन, पाचन, पाथ, पावक, पावन, पिंगल, पुण्डरीक, पृथु, प्राण, बहनी, बहुल, वासदेव, बृहद्, बृहद्भानु, ब्राह्मण, बड़वाग्नि, भारत, भास्कर, भुव, भूरितेजस्, मनु, दहन, वह्नि, रोहिताश्व, ऊष्मा, हव, हवन, हर, हरि, हुताशन, घृतकेश, (अँ०) फ़ायर।

९२. **आचार** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यवहार, आचरण, अनुष्ठान, चरित्र, चालढाल, शील, शुद्धि, सफ़ाई, बर्ताव।

९३. **आज्ञा** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) आदेश, अनुमति, हुक्म, अनुशासन, आयसु, निर्देश, निदेश।

९४. **आडंबर, आडम्बर** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊपरी, बनावटी, मटामटी, ढोंग, आच्छादन, तम्बू, पटह, दर्प, आवाज़।

९५. **आड़** (संज्ञा स्त्री०)(हिं०) ओट, पर्दा, ओझल, रक्षा, शरण, आश्रय, रोक, धूनी, टेक, डंक।

९६. **आत्मा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जीव, चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार, ब्रह्म, देह, शरीर, सूर्य, अग्नि, वायु, स्वभाव, धर्म, पुत्र, बेटा, अन्तरपुरुष, अन्तरात्मा, अन्तर्भूत, अमूर्त्त, अव्यक्त, गोरथ, चेतन, जन्मी, जन्य, जात, प्राण, जीवात्मा।

९७. **आदर्श** (संज्ञा पु०) (सं०) दर्पण, शीशा, टीका, व्याख्या।

९८. **आदि** (वि०) (सं०) प्रथम, पहला, आरम्भिक, बिल्कुल (संज्ञा पु०) आरम्भ, बुनियाद, मूल कारण, ईश्वर, इत्यादि।

९९. **आधार** (संज्ञा पु०) (सं०) सहारा, आश्रय, अवलम्ब, थाला, आलबाल, पात्र, नींव, जड़, मूल।

१००. **आपत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुःख, क्लेश, विघ्न, विपत्ति, आफ़त, कष्ट, दोषारोपण, उज्र, ।

१०१. **आम** (वि०) (सं०) कच्चा, अपक्व, अप्रसिद्ध, साधारण, सामान्य, मामूली, विख्यात, प्रसिद्ध, (संज्ञा पु०) (हिं०) अंब, आम्र, फलश्रेष्ठ, रसाल, सुपथ्य, स्त्रीप्रिय।

१०२. **आराम** (संज्ञा पु०) (सं०) बाग, उपवन, फुलवारी (फा०) सुख, चैन, स्वास्थ्य, चंगापन, विश्राम, सुविधा।

१०३. **आशय** (संज्ञा पु०) (सं०) अभिप्राय, तात्पर्य, प्रयोजन, मतलब, निमित्त, उद्देश्य, इच्छा, वासना, नीयत, लक्ष्य, सारांश, भाव, सार।

१०४. **आशा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आस, उम्मीद, कामना, लालसा, आकांक्षा।

१०५. **आश्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) तपोवन, कुटी, मठ, विश्राम-स्थल।

१०६. **आँसू** (संज्ञा पु०) (सं०) अश्रु, अँसुआ, अँसुवा, नेत्रजल, नयनवारि, नयनसलिल, नयनाम्बु, (अ०) अश्क।

१०७. **इंद्र, इन्द्र** (सं० पु०) (सं०) अमरेश, अमरपति, उग्रधन्वा, देवराज,

देवेश, प्राचीपति, वज्रधर, बृहद्रथ, मेघवाहन, वज्रपाणि, महेन्द्र, सुरेश, सुरपति, सुरपाल. सोमपति, सुरवर, सुरश्रेष्ठ, मालिक, स्वामी, मेघराज, (वि०) प्राण, श्रेष्ठ, बड़ा, विभूति, ऐश्वर्यवान् ।

१०८. **इच्छा** (संज्ञा स्त्री०) (*सं०*) वांछा, चाह, लालसा, अभिलाषा, आकांक्षा, अभिरुचि, इष्टि, उत्कण्ठा, एषणा, कामना, मनोकामना, लिप्सा, रुचि, स्पृहा, (*तुर्की*) अरमान ।

ई

१०९. **ईश्वर** (संज्ञा पु०)(*सं०*) अच्युत, अन्नदाता, अक्षर, अक्षय, अलख, अविनाशी, अद्वैत, ईश, कर्त्ता, केशव, चिन्मय, जगदीश, जगत्पति, जगन्नाथ, जगन्नियंता, देवाधिप, दामोदर, दीनदयाल, देवेश, दीनबन्धु, दीनानाथ, देवातिदेव, निराकार, निरंजन, परमपिता, प्रभु, भगवान्, भुवनेश, विश्वम्भर, विश्वकर्मा, विश्वनाथ, ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर, नारायण, गोविन्द, सर्वव्यापी, स्वामी, पुरुषोत्तम, साँईं, साजन, साहिब, (*फा०*) खुदा ।

उ

११०. **उग्र** (वि०) (*सं०*) उत्कट, तीव्र, प्रचण्ड प्रबल, घोर, रौद्र, (संज्ञा पु०) महादेव, शिव, विष्णु, सूर्य ।

१११. **उत्तर** (संज्ञा पु०) (*सं०*) प्रतिवचन, प्रतिभाषण, प्रत्युक्ति, प्रतिउत्तर जवाब, प्रतिवाक्य, प्रतिकार, एक दिशा (वि०) पिछला, बाद का, श्रेष्ठ, पीछे ।

११२. **उत्पत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (*सं०*) उद्भव, जन्म, पैदाइश, सृष्टि, आरम्भ, शुरू, उदय ।

११३. **उत्सव** (संज्ञा पु०) (*सं०*) उछाह, धूमधाम, त्योहार, पर्व, उद्धव ।

११४. **उत्साह** (संज्ञा पु०) (*सं०*) उमंग, उछाह, जोश, हौसला, हिम्मत, साहस ।

११५. **उदार** (वि०) (सं०) दाता, बड़ा, श्रेष्ठ, सरल, सीधा, अनुकूल।

११६. **उदाहरण** (संज्ञा पु०) (सं०) दृष्टान्त, मिसाल, कथा-प्रसंग।

११७. **उद्‍गार** (संज्ञा पु०) (सं०) उबाल, उफान, वमन, उल्टी, थूक, कफ, विचार।

१८. **उद्देश्य** (वि०) (सं०) लक्ष्य, इष्ट, (सं० पु०) तात्पर्य, (अ०) मतलब।

११९. **उद्धार** (सं० पु०) (सं०) मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, सुधार, दुरुस्ती।

१२०. **उन्नति** (सं० स्त्री) (सं०) उत्थान, उदय, अभ्युदय, प्रवर्द्धन, प्रसार, बढ़ोतरी, वृद्धि, समृद्धि, उत्कर्ष, चढ़ाव, बरकत।

२२१. **उपकार** (सं० पु०) (सं०) हित, भलाई, नेकी, लाभ, (अ०) फ़ायदा।

१२२. **उपचार** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यवहार, प्रयोग, विधान, चिकित्सा, इलाज, प्रतिकार, घूँस, रिश्वत, सेवा, खुशामद।

१२३. **उपदेश** (संज्ञा पु०) (सं०) शिक्षा, सीख, नसीहत, दीक्षा, गुरुमन्त्र।

१२४. **उपद्रव** (संज्ञा पु०) (सं०) उत्पात, हलचल, ऊधम, दंगा, फ़साद।

१२५. **उपमा** (संज्ञा पु०) (सं०) समानता, तुलना, मिलान, सादृश्य।

१२६. **उपवास** (संज्ञा पु०)(सं०) अनशन, निराहार, व्रत, (अ०) फ़ाका।

१२७. **उपाय** (संज्ञा पु०) (सं०) अध्यवसाय, आयोजन, उद्यम, उद्योग, क्रिया, चेष्टा, यत्न, तरीका, साधन, युक्ति, विधान, विधि, कोशिश, तरकीब।

१२८. **उपेक्षा** (सं० स्त्री०) (सं०) उदासीनता, लापरवाही, विरक्ति, अनादर, तिरस्कार, घृणा।

१२९. **उमर, उम्र** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) वय, अवस्था, आयु, जीवनकाल, वयस, वै।

१३०. **उल्का** (सं० स्त्री०) (सं०) प्रकाश, तेज, ज्वाला, मशाल, दीया, दीपक।

१३१. **उल्लू** (सं० पु०) (हिं०) अंध, उलूक, कवि, कौशिक, पिंगल, हरिलोचन, मूर्ख, बेवकूफ़।

ऊ

१३२. ऊपर (क्रि० वि०) (हिं०) पहले, अधिक, ज्यादा, अतिरिक्त, प्रतिकूल, पर, परे।

१३३. ऊषाकाल, उषाकाल (सं० पु०) (सं०) प्रातःकाल, सवेरा, तड़का, अरुणोदय, प्रभात, प्रातः, पूर्वसन्ध्या, प्रत्यूष, वासर, उदयकाल, अमृतवेला, सूर्योदय, सुबह।

१३४. ऊष्मा, उष्मा (सं० स्त्री०) (सं०) ग्रीष्मकाल, तपन, गरमी, भाप, उष्णता, ताप, जलन, तेजी, उग्रता, आवेश, क्रोध।

ऋ

१३५. ऋणी (वि०) (सं०) ऋणिया, उपकृत, कर्ज़दार, देनदार।

१३६. ऋते (सं० पु०) (सं०) कालविशेष, ऋतुकाल, मौसम।

१३७. ऋद्धि (सं० स्त्री०) (सं०) बढ़ती, समृद्धि, सफलता, सम्पन्नता, वृद्धि, ऋद्धि-सिद्धि।

ए

१३८. एकता (सं० स्त्री०) (सं०) मेल, ऐक्य, संगठन, समानता, बराबरी, अभिन्नता, अभेद।

१३९. एवं (क्रि० वि०) (सं०) ऐसा ही, इसी प्रकार, और।

१४०. ऐंठन (सं० स्त्री०) (हि०) ऐंठ, मरोड़, बल, तनाव, अकड़, ठसक, गर्व, घमंड, द्वेष, विरोध, कुटिल भाव।

१४१. ऐबी (वि०) (अ०) बुरा, खोटा, दूषण-युक्त, नटखट, दुष्ट, अंग-हीन (विशेषतः काना)।

१४२. ऐश (सं० पु०) (अ०) सुख, चैन, आराम, विलास।

१४३. ऐश्वर्य (सं० पु०) (सं०) धन-सम्पत्ति, विभूति, प्रभुत्व, आधिपत्य।

ओ

१४४. ओंठ (सं० पु०) (हिं०) अधर, ओष्ठ, होंठ, दन्तवस्त्र, (फ़ा०) लब।

१४५. ओछा (वि०) (हिं०) तुच्छ, क्षुद्र, छिछोरा, बुरा, खोटा, छिछला, हलका, छोटा, कम गहरा, कम।

१४६. ओर (सं० स्त्री०) (हिं०) दिशा, तरफ, पक्ष, (सं० पु०) प्रान्त, भाग, किनारा, छोर, सिरा, अंत, आदि, आरम्भ।

१४७. ओला (सं० पु०) (हिं०) कर, करका, बिनौरी, हिम-उपल, जलमूर्त्तिका, तुहिन, परदा, ओट, भेद, रहस्य, गुप्त बात।

१४८. ओस (सं० स्त्री०) (हिं०) तुषार, तुहिन, निशाजल, हैम, शीत, (फ़ा०) शबनम।

औ

१४९. और (अव्यय) (हिं०) दूसरा, भिन्न, अधिक, ज्यादा, तथा।

क

१५०. कंकाल, कङ्काल (सं० पु०) (सं०) ठठरी, अस्थिपंजर।

१५१. कंगाल (वि०) (हिं०) कंगला, निर्धन, गरीब, दरिद्र, भुक्खड़

१५२. **कंचन, कञ्चन** (सं० पु०) (सं०) सुवर्ण, सोना, धन, सम्पत्ति धतूरा, (वि०) नीरोग, स्वस्थ, स्वच्छ, सुन्दर, मनोहर।

१५३. **कंजूस** (वि०) (हिं०) सूम, कृपण, खसीस।

१५४. **कंठ, कण्ठ** (सं० पु०) (सं०) गला, टेंटुआ, स्वर, शब्द, आवाज, तीर, तट, किनारा।

१५५. **कक्ष** (सं० पु०) (सं०) कोख, बगल, कांछ, लांग, कच्छ, कछार, कास, जंगल, सूखी घास, सूखावन, भूमि, भीत, पाखा, घर, कमरा, दोष, पाप, कखवार, अंचल, दर्जा, श्रेणी, बेल, लता, पेटी, कमरबन्द।

१५६. **कच्चा** (वि०) (हिं०) अपक्व, अपरिपुष्ट, कमजोर, अदृढ़, अप्रामाणिक, अयुक्त, अनभ्यस्त, नियमरहित, अस्थायी, नीरस, (सं० पु०) गड्ढा, पांडुलेख, मसौदा, जबड़ा, दाढ़।

१५७. **कठिन** (वि०) कड़ा, कठोर, दृढ़, सख्त, दुष्कर, दुःसाध्य, क्लिष्ट, गूढ़, दारुण, दुर्गम, दुर्लभ, दूभर, पेचीदा, प्रचंड, विकट, विकराल, दुशवार, मुश्किल।

१५८. **कड़ा** (सं० पु०) (हिं०) कंगन, चूल्हा, कुण्डा, (वि०) उग्र, दृढ़, चुस्त, रूखा, तगड़ा, हृष्ट-पुष्ट, असह्य, कर्कश, दुष्कर, दुःसाध्य, कठिन, सख्त, ठोस।

१५९. **कड़ुआ** (वि०) (हिं०) कटु, कड़वा, कड़वा, तीता, कसैला, तीक्ष्ण, अनिष्ट, अरुचिकर।

१६०. **कण** (सं० पु०) (सं०) जर्रा, कन, प्रसाद, जूठन, भीख, भिक्षान्न बून्द, कतरा।

१६१. **कतिपय** (वि०) (हिं०) कितने ही, कई, कुछ, कुछ एक, थोड़े से।

१६२. **कथा** (सं० स्त्री) (सं०) आख्यान, जिक्र, चर्चा, हाल, समाचार, कहानी।

१६३. **कपटी** (वि०) (सं०) धूर्त, धोखेबाज, चालबाज।

१६४. **कपड़ा** (संज्ञा पु०) (हिं०) वस्त्र, पहनावा, पोशाक, चीर, दुकूल पट, वसन।

१६५. **कपाल** (संज्ञा पु०) (सं०) खोपड़ा, ललाट, मस्तक, माथा, अदृष्ट,

भाग्य, भिक्षापात्र, खप्पर, ढक्कन ।

१६६. **कबूतर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कपोत, परेवा, पारावत

१६७. **कमर** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) कटि, कटिदेश, मध्यभाग, मध्यस्थल ।

१६८. **कमल** (संज्ञा पु०) (सं०) अब्ज, अम्बुज, अरविन्द, कुञ्ज, कुमुद, किंजल्क, कोकनद, जलज, जलजात, सरोज, वारिज, सरसिज, नलिन, पद्म, सहस्रदल, नीरज, पंकजन्य, पंकज, अज, इन्दीवर, कुन्द ।

१६९. **कमला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, धन, ऐश्वर्य, सुन्दर स्त्री, रमा, नारंगी, संतरा ।

१७०. **कमाल** (संज्ञा पु०) (अ०) परिपूर्णता, निपुणता, कुशलता, आश्चर्य, अद्‌भुत कर्म, कारीगरी, (वि०) पूरा, सम्पूर्ण, सब, ज्यादा, अत्यन्त ।

१७१. **कमी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) न्यूनता, अल्पता, कोताही, हानि, नुकसान, टोटा, घाटा, तोड़ा ।

१७२. **कमीना** (वि०) (फ़ा०) ओछा, नीच, क्षुद्र, मक्कार, अधम, मन्द, असज्जन, पामर ।

१७३. **कर** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथ, सूँड, किरण, ओला, पत्थर, महसूल, टैक्स, छल, युक्ति, पाखंड (प्रत्यय) (हिं०) का ।

१७४. **करतूत** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कर्म, करनी, काम, करतब, कला, हुनर, गुण,

१७५. **करार** (संज्ञा पु०) (अ०) इकरार, सहमति, ठहराव, स्थिरता, धैर्य, तसल्ली, संतोष, आराम, चैन, वायदा, प्रतिज्ञा, कौल, प्रण (हिं०) ऊँचा किनारा ।

१७६. **कर्कश** (संज्ञा पु०) (सं०) ईख, गन्ना, तलवार, (वि०) कड़ा, कठोर, काँटेदार, खुरखुर, क्रूर ।

१७७. **कर्त्तव्य** (वि०) (सं०) करने योग्य, (संज्ञा पु०) कार्य, काम (अँ०) ड्यूटी, फ़र्ज, धर्म, कर्म, क्रिया, कृति, कृत, कृत्य, कृत्यकर्म, तंत्र, प्रयोजन ।

१७८. **कलई** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) रांगा, सफ़ेदी, चूना, कली, चमक-दमक, तड़क-भड़क, दिखावट, बनावट, रहस्य ।

१७९. **कला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अंश, भाग, मात्रा, कौशल, फ़न, हुनर,

बूँद, नौका, जिह्वा, शिव, लेश, लगाव, वर्ण, अक्षर (छन्द), अवयव, विभूति, तेज, शोभा, छटा, प्रभा, ज्योति, किरण, कौतुक, खेल, लीला, मिस, बहाना, हीला, युक्ति, ढंग, करतब, यन्त्र, पेंच, ।

१८०. **कलाकार** (संज्ञा पु०) (सं०) कला-कुशल, अभिनेता, कवि, चित्रकार, गायक, मूर्तिकार, (अँ०) आर्टिस्ट ।

१८१. **कलुष** (संज्ञा पु०) (सं०) मलिनता, मैलापन, पाप, दोष, क्रोध, भैंसा, (वि०) मलिन, मैला, पापी, दोषी ।

१८२. **कल्पना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सजावट, बनावट, अच्छी रचना, उद्भावना, अध्यारोप, अनुमान, अंदाजा ।

१८३. **कल्याण** (संज्ञा पु०) (सं०) मंगल, शुभ, भलाई, सोना, (वि०) अच्छा, भला ।

१८४. **कवच** (संज्ञा पु०) (सं०) आवरण, छाल, छिलका, ज़िरहबख्तर, तनुत्राण, सँजोया, अँगरी, कंचुक, कंटक, तनुत्र, तनुवार, शरीरत्राण ।

१८५. **कवि** (संज्ञा पु०) (सं०) पंडित, शुक्र, सूर्य ब्रह्मा, ऋषि, शायर ।

१८६. **कसक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टीस, पुराना वैर, अरमान, अभिलाष, दर्द, हमदर्दी, सहानुभूति ।

१८७. **कान** (संज्ञा० पु०) (हिं०) कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रवण, श्रुति, श्रोत्र ।

१८८. **काम** (संज्ञा पु०) (सं०) इच्छा, मनोरथ, महादेव, कामदेव, कामशास्त्र, कार्य, कर्म, प्रयोजन, उद्देश्य, मतलब, गर्ज़, वास्ते, सरोकार, उपयोग, व्यवहार, इस्तेमाल, कारबार, व्यवसाय, रोज़गार, कारीगरी, रचना, बनावट, दस्तकारी, क्रिया, कृत, कृत्य ।

१८९ **कामी** (वि०) (सं०) इच्छुक, विषयी, कामुक, (सं० पु०) चकवा, चिड़ा, कबूतर, सारस, चन्द्रमा, काकड़ासींगी ।

१९०. **कामदेव** (संज्ञा पु०) (सं०) अनंग, अंड, अदेह, अव्यक्त, कुसुमबाण, कुसुमाकर, कंदर्प, किंकर, पंचशर, पंचभूत, पुष्पकेतु, मकरपति, मदन, मनोजात, मनोज, मनसिज, मन्मथ, सारंग, मकरध्वज, शंकरारि, रतिपति ।

१९१. **कारण** (संज्ञा पु०) (सं०) वजह, सबब, हेतु, निमित्त, प्रयोजन, आदि, मूल, साधन, विष्णु ।

१६२. **कारीगर** (सं० पु०) (फ़ा०) दस्तकार, (वि०) निपुण, कुशल, हुनरमन्द।

१६३. **काल** (सं० पु०) (सं०) समय, वक्त, (अँ०) टाईम, अन्त, मृत्यु, यमराज, यमदूत, अवसर, मौका, अकाल, दुर्भिक्ष, क़हत, महँगी, साँप, लोहा, शनि, (वि०) काला, (क्रि० वि०) कल।

१६४. **काला** (वि०) (हिं०) कृष्ण, स्याह, कलुषित, बुरा, भारी, प्रचण्ड, बड़ा।

१६५. **किताब** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) पुस्तक, ग्रन्थ, बहीखाता, रजिस्टर, पोथी, कुतुब।

१६६. **किनारा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) छोर, तीर, तट, कूल, समीप, पास, निकट, पार्श्व बगल, सिरा।

१६७. **किरण** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अंशु, केतु, रश्मि, कर, द्युति, मरीचि, किरन, गो।

१६८. **किला** (संज्ञा पु०) (अ०) दुर्ग, गढ़, कोट, प्राचीर, कलतर, कुट, शहरपनाह।

१६६. **किसान** (संज्ञा पु०) (हिं०) कृषक, खेतीहर, क्षेत्रक, कृषिकार, काश्तकार, क्षेत्रपति, हलवाहा, हलधर, हली,।

२००. **किस्सा** (संज्ञा पु०) (अ०) कहानी, कथा, आख्यान, वृत्तांत, समाचार, काण्ड, हाल, झगड़ा, तक़रार।

२०१. **कीचड़** (सं० पु०) (हिं०) कीच, कर्दम, कलुष, पंक, कचला।

२०२. **कीड़ा** (सं० पु०) (हिं०) कीट, कृमि, भुरकुटा।

२०३. **कीर्त्ति** (सं० स्त्री०) (सं०) पुण्य, ख्याति, बड़ाई, यश, प्रसाद, दीप्ति, संगीत-ताल।

२०४. **कुँआँ** (संज्ञा पु०) (हिं०) कूप, तमस, अन्धु, जलात्मिका, जलाम्बिका, कुँवाँ।

२०५. **कुंडली, कुण्डली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुण्डलिनी, गिलोय, कचनार, केवाँच, गेंडुरी, संभड़ी, डफली, (वि०) कुण्डलधारी, जन्मपत्री।

२०६. कुटिल (वि०) (सं०) वक्र, टेढ़ा, छल्लेदार, घुँघराला, कपटी, शठ, खल, दगाबाज़ ।

२०७. कुतूहल (संज्ञा पु०) (सं०) इच्छा, उत्कण्ठा, कौतुक, क्रीड़ा, खिलवाड़, आश्चर्य, अचम्भा ।

२०८. कुबेर (संज्ञा पु०) (सं०) कोषनायक, धनपति, धनपाल, धनद, धनाधिप, नरवाहन, निधिनाथ, पुनकायल, पौलस्त्य, श्रीमान, सोम, धनेश, यक्षपति, द्रव्याधीश, धनदेव, धनस्वामी, धनेश्वर, सितोदर, धनधारी, अर्थपति, ईश्वरसखा, एकाक्ष पिंगल, ।

२०९. कुमार (संज्ञा पु०) (सं०) पुत्र, बेटा, युवराज, लड़का, कुँवारा कार्तिकेय, सुग्गा, तोता ।

२१०. कुमारी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पार्वती, दुर्गा, (वि०) अविवाहिता ।

२११. कुम्हार (संज्ञा पु०) (हिं०) कुम्भकार, कुलाल, चक्रजीवक, चक्री चाक्रिक, दण्डभृत्, भरट, भार्गव, सूकर, कोंहार, घटकार, चक्रजर ।

२१२. कुल (संज्ञा पु०) (सं०) वंश, घराना, खानदान, जाति, समूह, समुदाय, भवन, घर, मकान, वाममार्ग, (वि०) (अ०) समस्त, सब, तमाम, पूरा, सम्पूर्ण ।

२१३. कुशल (संज्ञा पु०) (सं०) क्षेम, मंगल, शिव, खैरियत, राजीखुशी, आफ़ियत, (वि०) चतुर, दक्ष, प्रवीण, श्रेष्ठ, अच्छा, भला, पुण्यशील ।

२१४. कूल (संज्ञा पु०) (सं०) तट, किनारा, नहर, तालाब, (अव्यय) समीप, पास, निकट ।

२१५. कृतांत, कृतान्त (संज्ञा पु०) (सं०) यम, धर्मराज, मृत्यु, पाप, देवता, सिद्धांत, शनिवार, भरणी नक्षत्र ।

२१६. केसर (संज्ञा पु०) (सं०) अयाल, नागकेसर, बकुल, मौलसरी, पुन्नाग, स्वर्ग, कसीस, केशर, पीतक, पीतपराग, पीतवर्ण, कुंकुम, कुमकुम, गौर, कुसुंभ, चारु, दीपक, देववल्लभ, सौरभ, हरिचन्दन, अग्निशिख, रुचिर, शठ, शोणित, अरुण, वर, पीत, ।

२१७. कैद (संज्ञा स्त्री०) (अ०) बंधन, अवरोध, कारावास ।

२१८. कोख (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) जठर, उदर, पेट, गर्भाशय ।

२१९. **कोमल** (वि०) (सं०) नर्म, मुलायम, मृदु, सुकुमार, सुन्दर, मनोहर, स्निग्ध, अकठिन, कोंवर।

२२०. **कोयल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पिक, कलघोष, कलकंठ, कुहुकण्ठ, कलापी, कोकिल, कादम्बरी, कुहुशब्द, पंचमा, पिकी, वनप्रिय, मदनपाठक, मदनशलाका, मदालापी, मधुकण्ठ, श्याम, सुधाकण्ठ, वसन्तदूत।

२२१. **कोष** (संज्ञा पु०) (सं०) खजाना, निधि, धनागार, कोषगृह, कोषागार, भण्डार, भाण्डागार, भाण्डार।

२२२. **कौआ** (संज्ञा पु०) (हिं०) कौवा, काक, काग, अलि, रुट-खादक, एकदृग, एकाक्ष, वायस, गूढ़कर्मा, करट, ग्रामीण, चक्री, चलाचल, पर्वत काक, द्रोण, वृक, सूचक, काकोल, कौवा।

२२३. **क्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) सिलसिला, तरतीब, शनैः-शनैः।

२२४. **क्रूर** (वि०) (सं०) निर्दय, दयारहित, भयंकर, डरावना, दुष्ट, नीच, तीक्ष्ण, तीखा, कठिन।

२२५. **क्रोध** (संज्ञा पु०) (सं०) कोप, रोष, गुस्सा, कोह, आवेश, कामानुज, पाणिपीड़न, यक्ष, मत्सर, मान, राग, रार, आवेशन, तम, चण्ड, अनख, झल, झोंझल, तमक, तैश।

२२६. **क्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) समय-भाग, काल, अवसर, मौका, वक्त, उत्सव।

२२७. **क्षत** (वि०) (सं०) घायल, पीड़ित, (संज्ञा पु०) घाव, जख्म, व्रण, फोड़ा, मारना, काटना, क्षति, आघात।

२२८. **क्षति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हानि, नुकसान, क्षय, नाश, घाटा।

२२९. **क्षमता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति, ताकत।

२३०. **क्षर** (वि०) (सं०) नाशवान्, (संज्ञा पु०) जल, मेघ, जीवात्मा, शरीर, अज्ञान।

२३१. **क्षिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, आवास, जगह, क्षय, प्रलय-काल, गोरोचन।

२३२. **क्षितिज** (संज्ञा पु०) (सं०) मंगल ग्रह, केंचुआ, नरकासुर, वृक्ष, पेड़, दिशान्त, आकाश।

२३३. **क्षीण** (वि०) (सं०) क्षाम, कृश, दुबला-पतला, बलहीन, कमज़ोर, अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, बारीक।

२३४. **क्षुद्र** (वि०) (सं०) कृपण, कंजूस, नीच, अधम, छोटा, अल्प, थोड़ा, मामूली, दरिद्र, निर्धन, क्रूर, खोटा, (संज्ञा पु०) चावल-कण।

२३५. **क्षुब्ध** (वि०) (सं०) चंचल, चपल, रुष्ट, क्रुद्ध, कुपित, नाराज़, व्याकुल, विह्वल, भयभीत, डरा हुआ।

२३६. **क्षेत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) भूमिखण्ड, खेत, स्थान, प्रदेश, हलका, पुण्य स्थान, तीर्थस्थान, तीर्थ, (अँ०) एरिया।

ख

२३७. **खंड, खण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) भाग, टुकड़ा, हिस्सा, देश, खांड, चीनी, दिशा, काला नमक, (वि०) खंडित, अपूर्ण छोटा, लघु।

२३८. **खग** (संज्ञा पु०) (सं०) पक्षी, पंछी, चिड़िया, बाण, तीर, गन्धर्व, ग्रह, तारा, वायु, हवा, चन्द्रमा, सूर्य, देवता, बादल।

२३९. **खचरा** (वि०) (हिं०) दोगला, वर्णसंकर, दुष्ट, नीच, निकृष्ट, पतित।

२४०. **खत** (संज्ञा पु०) (अ०) पत्र, चिट्ठी, पाती, समाचार, लिखावट, समाचार-पत्र, रेखा, लकीर, हजामत, (संज्ञा स्त्री०) पृथ्वी, ज़मीन।

२४१. **खतरा** (संज्ञा पु०) (अ०) भय, डर, ख़ौफ़, आशंका, खटका, (अँ०) डेंजर।

२४२. **खन** (संज्ञा पु०)(हिं०) क्षण, लमहा, समय, वक्त, तत्काल, तुरन्त, फ़ौरन, खंड, तल्ला, मंज़िल।

२४३. **खबर** (संज्ञा पु०) (अ०) समाचार, हालचाल, वृत्तान्त, सन्देश, सूचना, जानकारी, सन्देसा, सुधि, चेत, संज्ञा, पता, खोज।

२४४. **खर** (संज्ञा पु०) (सं०) खच्चर, गधा, तिनका, तृण, कौवा, काक, (वि०) सख्त, कड़ा, कठोर, तेज, तीक्ष्ण, हठी, ज़िद्दी, घना, मोटा, मूर्ख, हानिकारक, अमांगलिक, तिरछा, आड़ा।

२४५. **खरा** (वि०) (हिं०) अच्छा, स्वच्छ, साफदिल, बढ़िया, असली, चोखा, तीक्ष्ण, तेज, करारा, कड़ा, नकद, कटुसत्य।

२४६. **खराबी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दोष, अवगुण, बुराई, दुर्दशा, दुरवस्था, गन्दगी।

२४७. **खर्च** (संज्ञा पु०) (हिं०) व्यय, सरफा, खपत।

२४८. **खल** (वि०) (हिं०) नीच, दुष्ट, धोखेबाज, कपटी, छली, दुर्जन, विश्वासघाती, चुगलखोर, निर्लज्ज, कमीना (संज्ञा पु०) खलियान, सूर्य, कोठिला, तमकूट, पृथ्वी, स्थान, खरल।

२४९. **खलबल** (संज्ञा पु०) (हिं०) हलचल, शोर, हल्ला, कुलबुलाहट, रौला, हल्ला-गुल्ला, व्याकुलता, (संज्ञा स्त्री०) खलबली।

२५०. **खाट** (संज्ञा स्त्री०)(हिं०) चारपाई, पलंग, मंजी, खटिया, खट्वा, पर्यंक, मंच, मंजा, शय्या, डोलची, चौपाई।

२५१. **खाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) चाम, चमड़ा, त्वचा, चर्म, मृत शरीर, खलड़ी, चमड़ी, अंग, खलल, खेट, चमरू, धौंकनी।

२५२. **खास** (वि०) (अ०) विशेष, मुख्य, प्रधान, निज का, आत्मीय, प्रिय, स्वयं, खुद, विशुद्ध, ठेठ, खालिस।

२५३. **खिचना, खिंचना** (क्रि०) (हिं०) आकृष्ट होना, खींचा जाना, घसिटना, निकलना, तानना, कड़ा पड़ना, बढ़ना, जाना, चुसना, खपना, उतरना, रुकना, पहुँचना, बिगड़ना, चढ़ना, महँगा पड़ना।

२५४. **खिलना** (क्रि०) (हिं०) प्रसन्न होना, हँसना, फूलना, सजना, पँखुड़ियाँ खुलना, ठीक जँचना, दरकना।

२५५. **खेल** (संज्ञा पु०) (हिं०) क्रीड़ा, केलि, खेलवाड़, मन-बहलाव, तमाशा, अभिनय, रति, रमण, लीला, विनोद, विहार, खेलवार, हँसी, विलास, कौतुक, तुच्छ काम, (अं०) सिनेमा।

२५६. **खैर** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) कुशल, क्षेम, कल्याण, भलाई, (संज्ञा पु०) (हि०) कत्था, कथकीकर, बबूल, खदिरसार, बहुसार, बहुशल्य, मदन, मदनक, बालतनय, कथ, सोमवृक्ष, सोमसार, गायत्री, खैरसार, (अव्यय) अस्तु, अच्छा।

२५७. **खोज** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तलाश, अनुसन्धान, अन्वेषण, निशान, चिह्न, पता।

२५८. **ख्याल** (संज्ञा पु०)(अ०) ध्यान, विचार, भाव, सम्मति, अनुमान, अटकल, अन्दाज़, आदर, लिहाज़।

ग

२५९. **गंगा, गङ्गा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भागीरथी, मंदाकिनी, जाह्नवी, सुरनदी, देवनदी, देवापगा, सुरसरी, सुरसरिता, विष्णुनदी, निर्जरनदी, निगनदी, ध्रुवनन्दा, अमरतरंगिणी, भुवनपावनी, पापमोचनी, नन्दिनी, पावनी पुरन्दरा, भगवती, भानुमती, त्रिधारा, त्रिपथगामिनी, धात्री, सुरसिन्धु, गिरिजा, गिरिनन्दिनी।

२६०. **गंदा, गन्दा** (वि०) (हिं०) मैला, मलिन, अशुद्ध, खराब, नापाक, घृणित, घिनौना, भ्रष्ट।

२६१. **गंध, गन्ध** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बास, महक, सुगन्ध, सुवास, सुगन्धित द्रव्य, लेश, अणुमात्र, गन्धक, शोभांजन, सहिजन।

२६२. **गंभीर, गम्भीर** (वि०) (सं०) गहरा, गूढ़, घना, जटिल, विकट, भारी, धीर, शान्त, गहन, दुर्गम, दुर्भेद्य, कठिन, दुरूह, (संज्ञा पु०) कमल।

२६३, **गँवार** (वि०) (हिं०) देहाती, ग्रामीण, असभ्य, मूर्ख, उजड्ड, अज्ञानी, बेवकूफ़, भद्दा, नासमझ, बेढंगा, बदमूरत।

२६४. **ग़जब** (संज्ञा पु०) (अ०) आश्चर्य, रोष, कोप, आपत्ति, अन्याय, अँधेर।

२६५. **गड़बड़** (वि०) (हिं०) अव्यवस्थित, बुरा, खराब, ऊँचा-नीचा, सन्देहजनक, (संज्ञा पु०) दंगा, लड़ाई, फ़साद, हेराफेरी, धोखाधड़ी, उपद्रव, अव्यवस्था, कुप्रबन्ध।

२६६. **गण** (संज्ञा पु०) (सं०) झुंड, समूह, समुदाय जत्था, श्रेणी,

जाति, कोटि, सेवक, दूत, अनुचर, पक्षपाती, अनुयायी।

२६७. **गणेश** (संज्ञा पु०) (सं०) गणनायक, गणपति, विघ्नेश, विघ्नेश्वर, गणाध्यक्ष, एकदन्त, लम्बोदर, गजकर्ण, गजानन, गौरीसुत, पार्वतीसुवन, शंकरसुत, गण्य, नान्दिनी, करिमुख, पर्शपाणि, भालचन्द्र, देवदेव, सिद्धिदाता, सुरश्रेष्ठ, हस्तिमुख, गणनाथ, विघ्नराज, परशुपाणि, गौरीज।

२६८. **गत** (वि०) (सं०) व्यतीत, विगत, अतीत, भूत, बीता हुआ, मृत, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अवस्था, दशा, हालत, रूप-रंग, वेश, आकृति, उपयोग, दुर्दशा, दुर्गति।

२६९. **गति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चाल, गमन, हरकत, स्पन्दन, दशा, अवस्था, पहुँच, प्रवेश, पैठ, उपाय, चारा, वेश, बाना, सहारा, अवलम्ब, माया, लीला, ढंग, रीति, मोक्ष, मुक्ति।

२७०. **गदर** (संज्ञा पु०) (अ०) हलचल, खलबली, उपद्रव, बलवा, विद्रोह, बगावत, क्रान्ति।

२७१. **गरम** (वि०) (फ़ा०) तप्त, उष्ण, प्रचण्ड, तीक्ष्ण, तीव्र, उग्र, क्रुद्ध, क्रोधी, उत्साहपूर्ण।

२७२. **गहना** (संज्ञा पु०) (हिं०) आभूषण, ज़ेवर, अलंकार, रेहन, बन्धक, श्रेष्ठ व्यक्ति।

२७३. **गाँव, गांव** (संज्ञा पु०) (हिं०) बस्ती, ग्राम, नगर, पुरी, देहात, मन्दिर, आबादी।

२७४. **गाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) कपोल, केनार, गण्ड, गण्डस्थान, गण्डस्थल, गल्ल, रुखसार, मध्य, बीच, ग्रास, कौर।

२७५. **गीदड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्यार, शृगाल, जम्बुक, निशाचर, निशामृग, वृक, खटखादक, गीदर, (वि०) डरपोक, साहसहीन।

२७६. **गुंजाइश** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) स्थान, जगह, अवकाश, सुभीता, समाई।

२७७. **गुप्त** (वि०) (सं०) छिपा हुआ, अप्रत्यक्ष, परोक्ष, रहस्यपूर्ण, अप्रगट, गोप्य, गोपित, गूढ़, वैश्य।

२७८. गुरु (संज्ञा पु०) (सं०) शिक्षक, अध्यापक, आचार्य, उपदेष्टा, उपदेशक, उस्ताद, धर्मोपदेशक, उपाध्याय, बृहस्पति, (वि०) भारी, बड़े आकार का।

२७९. गुलाम (संज्ञा पु०) (अ०) दास, सेवक, नौकर, (वि०) परतन्त्र, पराधीन।

२८०. गूँगा (वि०) (फ़ा०) मूक, अवाक्, निःशब्द, वाणीहीन, मौन, गुंगा, ख़ामोश, बेज़बान।

२८१. गृह (संज्ञा पु०) (सं०) घर, गेह, निवासस्थान, मकान, आश्रम, वंश खानदान।

२८२. गेंद (संज्ञा पु०) (हिं०) कन्दुक, गेन्दुक, गिरिक, कंदु, गुलिका गोय।

२८३. गेहूँ (संज्ञा पु०) (हिं०) गोधूम, बहुदुग्ध, म्लेच्छभोजन, क्षीरी, रसाल, मधूली, नन्दीमुख, गंदुम।

२८४. गोद (संज्ञा पु०) (हिं०) अंक, उत्संग, अंचल, अँकोरी, उछंग, ओली, कोली, कौंरी।

२८५. गोप (संज्ञा पु०) (सं०) गोरक्षक, अहीर, ग्वाला, राजा, गोशाला-प्रबन्धक।

२८६. गोबरगणेश (वि०) (सं०) भद्दा, बदसूरत, बेडौल, मूर्ख, अनाड़ी, बेवक़ूफ़ उजड्ड, जड़।

२८७. गौ (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गऊ, गाय, धेनु, गो, सुरभी, कपिला, इला, सरस्वती, जगती, पावनी, पीवरी, बलभद्रा, रेवती, सुरभि, तंबिका, धात्री, गैया, सुरभितनया, पृथ्वी, माता, जननी।

२८८. गौरव (संज्ञा पु०) (सं०) बड़प्पन, महत्त्व, स्वाभिमान, सम्मान, आदर, उत्कर्ष, अभ्युत्थान, भारीपन, गुरुत्व, गुरुता।

२८९. गौरी (संज्ञा पु०) (सं०) पार्वती, गिरिजा, तुलसी, शुभ्र गौ, हल्दी, गंगा, कन्या, गौरवर्ण स्त्री, एक प्रकार की मदिरा, एक नाड़ी।

२९०. ग्रह (संज्ञा पु०) (सं०) नक्षत्र, चन्द्र या सूर्य-ग्रहण, अनुग्रह, कृपा, (वि०) तंग करने वाला।

घ

२९१. घट (संज्ञा पु०) (सं०) घड़ा, शरीर, मन, हृदय, कुम्भराशि, (वि०) कम, थोड़ा, मध्यम, क्षीण।

२९२. घड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०) घट, कलश, गागर, गागरी, गगरा, कुम्भ, करीर, कर्क, जलपात्र, परिघ, कर्कटी, घटक।

२९३. घन (संज्ञा पु०) (सं०) मेघ, बादल, बड़ा हथौड़ा, लोहा, मुख, समूह, कपूर, घंटा, घड़ियाल, पिंड, शरीर, (वि०) घना, ठोस, प्रचुर, अधिक, ज्यादा, दृढ़, मजबूत, भारी।

२९४. घबराहट, घबड़ाहट (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) व्याकुलता, अधीरता, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता, हड़बड़ी, परेशानी, उतावली, अशान्ति, बेचैनी।

२९५. घमंड (संज्ञा पु०) (हिं०) अभिमानी, गर्व, अहंकार, सहारा, भरोसा, आसरा, दम्भ, गरिमा, ऐंठ, मान, अहं, ग़रूर, शेखी, गुमान, (वि०) घमंडी।

२९६. घर (संज्ञा पु०) (हिं०) गृह, गेह, आवास, मकान, स्वदेश, मातृभूमि, कुल, वंश, कोठरी, कमरा, आश्रम, आलय, निवास-स्थान, धाम, वास, परिवास, पुर, भवन, भौन, आगार, मन्दिर, सदन, निकेतन, घरौना, आगर।

२९७. घाव (संज्ञा पु०) (हिं०) ज़ख्म, व्रण, क्षत, चोट।

२९८. घी (संज्ञा पु०) (हिं०) घृत, क्षीरसार, जीवन, घीऊ, नवोद्धृत, मधु, हविष्य, अमृत, होमि, होम्य, अमृतसार, हवि।

२९९. घूँघट (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मुख का आवरण, पर्दा।

३००. घूँघरी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नूपुर, नेउर, घूँघरू।

३०१. घृणा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नफ़रत, घिन।

च

३०२. **चंचल, चञ्चल** (वि०) (सं०) चलायमान, अस्थिर, अधीर, अव्यवस्थित, उद्विग्न, चुलबुला, नटखट, चपल, (संज्ञा स्त्री०) चंचलता।

३०३. **चंट** (वि०) (हिं०) चतुर, चालाक, धूर्त, छँटा हुआ, घृष्ट, शैतान।

३०४. **चंड, चण्ड** (वि०) (सं०) तेज, तीक्ष्ण, उग्र, प्रखर, प्रचंड, बलवान्, कठिन, विकट, क्रोधी, उद्धत (संज्ञा पु०) ताप, गरमी, उष्णता।

३०५. **चंदन, चन्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्द्रकान्त, तमाल, दारुसार, दिव्य, पीतगन्ध, पीतसार, मलयगिरि, सिन्दूर, सौरभ, गणेशभूषण, हरिगन्ध, एकांग, गोरी चन्दन, सन्दल।

३०६. **चंद्रमा, चन्द्रमा** (संज्ञा पु०) (सं०) आनन्ददायक, सुन्दर, रमणीय, हिमकर, शशि, हिमांशु, रजनीपति, राकेश, इन्दु, सोम, सुधांशु, अम्बुज, सुधाकर, कलानिधि, अंशुमाली, कुमुदनाथ, तारापति, निशाकर, पूर्णमास, सितकर, हरि, तमोपति, द्विजेश, सुधाघट, सुधाधाम, सुधानिधि, सोमराज, तुषारकिरण, सिन्धुनन्दन, अमृत, गौर, चन्द्रक, चन्द्र।

३०७. **चकवा** (संज्ञा पु०) (हिं०) चक्रवाक, सुरखाब, कामी, कामुक, कोक, चक्र, चक्रनाम, चक्राँग, चक्री, चक्रांग, पत्ररथ, सुनेत्र, दिन-दुखित।

३०८. **चकित** (वि०) (सं०) विस्मित, हक्कावक्का, आश्चर्यान्वित, भौंचक्का, सशंकित, चौकन्ना, डरपोक, कायर, आश्चर्ययुक्त, भ्रान्त।

३०९. **चकोर** (संज्ञा पु०) (हिं०) जिवाजिव, ज्योत्स्नाप्रिय, मनाल, जीवञ्जीव, जीवजीव, चलचंचु, चन्द्रिकापायी, सुलोचन।

३१०. **चक्र** (संज्ञा पु०) (सं०) पहिया, चाक, चक्की, जाँता, कोल्हू वातचक्र, बवंडर, समूह, मण्डली, समुदाय, सेना, दल, समूह, मण्डल, भँवर, वृत्त, चक्कर, फेरा, भ्रमण, दिशा, प्रान्त, धोखा, भुलावा, चकवा।

३११. **चतुर** (वि०) (सं०) वक्रगामी, बुद्धिमान, व्यवहारकुशल, निपुण, दक्ष, धूर्त्त, चालाक, जानकार, चग, कार्यदक्ष, दक्ष, कर्मकुशल, प्रवीण, मतिमन्त, मतिमान, होशियार, योग्य, विज्ञ, सतर्क, सावधान, सिद्ध, उत्साहशील, पटु, विशारद, सुजान, स्याना, अक्खड़, अक़्लमन्द ।

३१२. **चपटी** (वि०) (हिं०) चिपटी, (संज्ञा स्त्री०) ताली, थपोड़ी, भग, योनि ।

३१३. **चमक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रकाश, ज्योति, रोशनी, आभा, दमक, कान्ति, प्रभा, शोभा, दीप्ति, झलक, झलमल, झलमलाहट, लहक, आब, ताब, तड़क-भड़क, चिलक (कमर का दर्द) ।

३१४. **चरण** (संज्ञा पु०) (सं०) पग, पाँव, पैर, छन्द का एक भाग, मूल, जड़, गोत्र, आचार, क्रम, गमन, जाना, चरना, किरण ।

३१५. **चरित्र** (संज्ञा पु०) (सं०) चाल-चलन, स्वभाव, व्यवहार, आचरण, करनी, करतूत ।

३१६. **चर्चा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वर्णन, ज़िक्र, विवेचन, बयान, वार्तालाप, बातचीत, किंवदन्ति, अफ़वाह, पोतना, लेपन, दुर्गा, गायत्री ।

३१७. **चर्य्या** (संज्ञा स्त्री) (सं०) कार्य, आचरण, रहन-सहन, वृत्ति, जीविका, सेवा, चलना, गमन, दैनिक कार्यक्रम ।

३१८. **चल** (वि०) (सं०) चंचल, अस्थिर, चलायमान, (संज्ञा पु०) पारा, विष्णु, शिव, कम्पन, दोष, ऐब, भूल, चूक, छल, कपट ।

३१९. **चश्मा, चशमा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) ऐनक, सोता, स्रोत, झरना ।

३२०. **चहल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आनन्दोत्सव, धूमधाम, कीचड़ वाली मिट्टी, पंक, चहल-पहल, रौनक ।

३२१. **चांडाल, चाण्डाल** (संज्ञा पु०) (सं०) डोम, श्वपच, चमार, पतित मनुष्य, शूद्र, दिवाचर, निशाद, अन्तेवासी, मातंग, श्वपाक, अन्तावसायी ।

३२२. **चाँदनी, चान्दनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी,

गुलचाँदनी, तगर, तोरण, वितान, बड़ी चादर, कामवल्लभ, चंदनी, चन्द्रिका, सौम्या, हरिचन्दन, अमृततरंगिणी, उजियारी, चन्द्रक, चन्द्रमौलिका, चन्द्रपुष्पा, चन्द्रप्रभा, चन्द्रशाला।

३२३. **चांदी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चाँद, चँदिया, चन्द्रकान्ति, रूपक, रजत, चन्द्रहास, शुभ, सित, सितप्रभ, सिता, सितराग, श्वेत, कलधूत, चामीकर, एक धातु, लाभ।

३२४. **चाल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गति, गमन, आचरण, चलन, आकार-प्रकार, ढंग, बनावट, रीति, रस्म, प्रथा, परिपाटी, ढंग, प्रकार, विधि, हलचल, आन्दोलन, आहट, खटका।

३२५. **चाव** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रबल इच्छा, अभिलाषा, अरमान, प्रेम, अनुराग, चाह, उत्कण्ठा, लाड, प्यार, दुलार, नखरा, उत्साह, उमंग, आनन्द।

३२६. **चावल** (संज्ञा पु०) (हिं०) अन्न, भूमी, धान, तण्डुल, भात, अक्षत।

३२७. **चाह** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रेम, प्रीति, अनुराग, इच्छा, अभिलाषा, पूछ, आदर, आवश्यकता, माँग, खबर, समाचार, रहस्य, मर्म, गुप्त भेद, चाय।

३२८. **चिउँटी, चिऊँटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चींटी, पिपीलिका, कृमि, पिपील, स्थूलशीर्षिका, कीड़ी, चेंटी।

३२९. **चिंता, चिन्ता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ध्यान, फ़िक्र, सोच, भावना, खटका, रंज, दुःख, शोक, व्यथा।

३३०. **चीज़** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) पदार्थ, वस्तु, द्रव्य, गहना, अलंकार, गीत, विलक्षण बात।

३३१. **चुड़ैल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रेतनी, भूतनी, पिशाचिनी, कुरूपा स्त्री, लड़ाकी स्त्री।

३३२. **चुप** (वि०) (हिं०) मौन, अवाक्, चुपचाप, खामोश, शान्त।

३३३. **चेटक** (संज्ञा पु०) (सं०) सेवक, नौकर, दूत, जादू, माया, चटक-मटक, चाट, चसका, जल्दी।

३३४. **चेतन** (संज्ञा पु०) (सं०) आत्मा, जीव, मनुष्य, प्राणी, परमेश्वर, ब्रह्मज्ञान।

३३५. चेतना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चेत, होश, ज्ञान, सुध, सुधि, बोध, चेतनता, (क्रि०) विचारना, समझना, सावधान होना, होश में आना ।

३३६. चेला (संज्ञा पु०) (हिं०) शिष्य, सिख, छात्र विद्यार्थी, शागिर्द, चेरा ।

३३७. चोट (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) घाव, व्रण, जख्म, आघात, (अँ०) इंजरी, हानि, नुकसान, क्षति, व्यंग, ताना, चुभती हुई बात, प्रहार, ठेस, ठोकर, धमक, हेठ, जरब, वार, दफ़ा ।

३३८. चोटी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शिखा, चुंदी, चुटिया, वेणी, चूड़ा, शृंग, दवान, शिखर, जगतीवर ।

३३९. चोर (संज्ञा पु०) (हिं०) तस्कर, दस्यु, धूर्त्त, चोट्टा, उचक्का, जेबकतरा, धनहर, द्रवक, निशाचर, रजनीचर, चौर ।

३४०. चौक (संज्ञा पु०) (हिं०) आंगन, सेहन, चौखूटा, चबूतरा, चौहट्टा, चौकोर स्थान, बड़ी वेदी ।

छ

३४१. छंद, छन्द (संज्ञा पु०) (सं०) वेद, पद्य, अभिलाषा, इच्छा, मनमाना आचरण, बंधन, गाँठ, संधान, समूह, छल, कपट, युक्ति, चाल, रंग-ढंग, अभिप्राय, मतलब, एकान्त, निर्जन, विष, ज़हर, ढक्कन, आवरण, पत्ती, एक आभूषण ।

३४२. छटा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शोभा, सौन्दर्य, प्रकाश, प्रभा, झलक, कान्ति, आभा, चमक ।

३४३. छतरी (संज्ञा पु०) (हिं०) छाता, मंडप, खुमी, कुकुरमुत्ता, टट्टर, (अँ०) पेराशूट, छत्र, आवार, आश्रय ।

३४४. छल (संज्ञा पु०) (सं०) कपट, धोखा, प्रपंच, धूर्त्तता, मिस, बहाना, कूटता, कूटकर्म, प्रलम्भ, फन्द, मक्कारी, धोखेबाज़ी, ठगई, चकमा, फ़रेब, दग़ा, दग़ाबाज़ी ।

३४५. छाया (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छाँह, प्रतिकृति, अनुहार, अनुकरण, नकल, कान्ति, दीप्ति, अँधेरा, उत्कोच, घूस, पंक्ति, कात्यायनी, साया, प्रतिबिम्ब, परछाई, प्रतिप्रभा, प्रतिमान, बिम्ब, झाँई, आभास, छाँव, अन्धकार।

३४६. छावनी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छप्पर, छान, डेरा, पड़ाव, शिविर, (अँ०) कैंटोनमैट।

३४७. छिद्र (संज्ञा पु०) (सं०) छेद, सूराख, विवर, गड्ढा, बिल, कोटर, ऐब, दोष, अवकाश, जगह, नाश, ध्वंस, खंड, टुकड़ा, नौ की संख्या।

३४८. छिपकली (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बिस्तुइया, गृहगोधिका, गृहगोधा, विशंवरी, ज्येष्टा, सुगाजिका, हेमल, अजन, पलभी।

३४९. छोटा (वि०) (हिं०) लघु, कम, तुच्छ, हीन, ओछा, क्षुद्र, छोटका, छोट, साधारण, कनिष्ठ, अनुज।

३५०. छोह (संज्ञा पु०) (हिं०) ममता, स्नेह, प्रेम, दया, कृपा, अनुग्रह।

ज

३५१. जंगल, जङ्गल (संज्ञा पु०) (अँ०) वन, अरण्य, विपिन बयाबान, कानन, आरन, गहन, गुल्म, झुंड, आस, दव, नैमिषारण्य, विजन, भीरुक, द्रुमालय, उजाड़, उजार।

३५२. जगह (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) स्थान, स्थल, स्थिति, आश्रय, पद, मौका, अवसर, ओहदा।

३५३. जठर (संज्ञा पु०) (सं०) पेट, शरीर, रोग, (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, कठिन।

३५४. जन (संज्ञा पु०) (सं०) लोक, लोग, प्रजा, अनुयायी, अनुचर, समूह, समुदाय।

३५५. **जनक** (संज्ञा पु०) (सं०) जन्मदाता, उत्पादक, पिता, बाप, सीता के पिता।

३५६. **जननी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जननी, माता, माँ, भाभी, अम्माँ, (अँ०) मम्मी, जूही वृक्ष, जटमाँसी, मजीठ, कुटकी, चमकादड़, कृपा, दया।

३५७. **जनेऊ** (संज्ञा पु०) (हिं०) यज्ञोपवीत, उपवीत, सूत्र, ब्रह्मसूत्र, सव्य, उपनयन, यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत संस्कार।

३५८. **जन्म** (संज्ञा पु०) (सं०) उत्पत्ति, पैदाइश, आविर्भाव, उद्भव, जनन, प्रसव, प्रसूति, जन्मग्रहण, जात, जनि, जनु, सहारा, जीवन, ज़िन्दगी, आयु।

३५९. **जब** (क्रि० वि०) (हिं०) जिस वक्त, जिस समय।

३६०. **जर** (संज्ञा पु०) (सं०) जरा, वृद्धावस्था, ज्वर (फ़ा०) ज़र, स्वर्ण, धन, सम्पत्ति, (वि०) (सं०) जीर्ण, पुराना, कठिन, कर्कश, वृद्ध, नष्ट, भस्मीभूत।

३६१. **ज़र्रा** (संज्ञा पु०) (अ०) अणु, छोटा टुकड़ा या खंड, थोड़ा, कम।

३६२. **जल** (संज्ञा पु०) (सं०) पानी, पय, उशीर, खस, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

३६३. **जवानी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) यौवन, युवावस्था, तरुणाई, वयस-शिरोमणि, बैस, तरुनई, जुवानी, जोबन, सुन्दरता, रौनक, बहार, दीपनी, कुच, स्तन, छाती।

३६४. **जहाज़** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) जलपोत, समुद्रयान, पोत, बोहित, बेड़ा, तरणी, नौका, हवाई जहाज़ (अँ०) बोट।

३६५. **जाति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कोटि, वर्ग, वर्ण, कुल, वंश, गोत्र, जन्म, सामान्य, साधारण, मात्रिक छन्द, गण, जन, स्वजन, ज्ञाति, बिरादरी, बन्धु, बान्धव।

३६६. **जाल** (संज्ञा पु०) (सं०) षड्यन्त्र, मकड़ी का जाला, तन्तुजाल, मछली पकड़ने की जाली, समूह, गवाक्ष, झरोखा, क्षार, खार, कदम वृक्ष, अहंकार, गर्व, अभिमान, कली, फरेब, धोखा, दग़ाबाज़ी।

३६७. **जिगर** (संज्ञा पु०)(फ़ा०) कलेजा, चित्त, यकृत, मन, जीव, साहस, हिम्मत, पुत्र, प्रिय, सन्तान।

३६८. **जिल्द** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) खाल, चमड़ा, त्वचा, पुस्तक का आवरण।

३६९. **जी** (संज्ञा पु०) (हिं०) मन, दिल, चित्त, हिम्मत, जीवट, संकल्प, विचार, जीव, जान।

३७०. **जीन** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) काठी, गद्दी, पलान, कजावा, मोटा कपड़ा, (वि०) पुराना, जर्जर, वृद्ध।

३७१. **जीभ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रसना, जिह्वा, जीहा, चपला, रसनेन्द्रिय, भूमि, जीह, रसज्ञा, रसिका, रसना, रसोका, ललना, गो, ज़बान, जीहि, निव।

३७२. **जीव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्राण, जान, आत्मा, प्राणी, जीवधारी, जीवन, विष्णु, वृहस्पति।

३७३. **जीवन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्राणधारण, ज़िन्दगी, प्राणाधार, परमप्रिय, वृत्ति, जीविका, जल, पानी, वायु, मज्जा, घी, पुत्र, परमेश्वर, गंगा।

३७४. **जुग** (संज्ञा पु०) (हिं०) युग, जोड़ा।

३७५. **जुगनू** (संज्ञा पु०) (हिं०) खद्योत, पटबीजना, गले का एक गहना, जुगनी, कटिमणि, ज्योतिरिंग, ज्योतिर्बीज, नीलमीलिक, प्रभाकीट, ज्योतिरिंगण, त्रिशंकु, दृष्टिवन्धु।

३७६. **जूता** (संज्ञा पु०) (हिं०) जून, ठोकर, जोड़ा पादत्राण, उपानह, पादत्र, पादपा, पादुका, पादू, पनही, चर्मपादुका, चरणदासी।

३७७. **ज़ोर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बल, शक्ति, प्रबलता, तेजी, वश, अधिकार, वेग, आवेश, झोंक, भरोसा, आसरा, सहारा, परिश्रम, मेहनत, व्यायाम, कसरत।

३७८. **जोश** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) उत्साह, उबाल, उफान, मनोवेग, आवेश।

३७९. **जौ** (संज्ञा पु०) (हिं०) यव, जव, धान्यराज, (क्रिया वि०) जब (अव्यय) यदि, अगर।

३८०. **जौहर** (संज्ञा पु०) (फा०) रत्न, मूल्यवान् पत्थर, सारांश, तत्त्व, ओप, पानी, खूबी, विशेषता, श्रेष्ठता, उत्तमता, बलिदान, आत्महत्या, प्राणत्याग,।

३८१. **ज्ञ** (संज्ञा पु०) (सं०) ज्ञानबोध, ज्ञानी, मंगलग्रह।

३८२. **ज्येष्ठ** (वि०) (सं०) जेठा, बड़ा, अग्रज वृद्ध, बूढ़ा, प्राण, ईश्वर (अँ०) सीनियर, (संज्ञा पु०) एक महीना।

३८३. **ज्योति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रकाश, उजाला, द्युति, लपट, लौ, अग्निशिखा, अग्नि, सूर्य, नक्षत्र, मेथी, दृष्टि, नज़र, विष्णु, परमात्मा, किरण।

३८४. **ज्योतिषी** (संज्ञा पु०) (सं०) दैवज्ञ, गणक, भविष्यवक्ता।

३८५. **ज्वाला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लपट, लौ, अग्निशिखा, गरमी, ताप, दग्धान्न।

झ

३८६. **झंडा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पताका, निशान, ध्वज, ध्वजा, केतुक, चिह्न, चीन, फरहरा, केतु।

३८७, **झांई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रतिबिम्ब, परछाईं, झलक, छाया, आभा, अंधकार, अँधेरा, धोखा, छल, प्रतिध्वनि।

३८८. **झील** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ताल, सर, सरोवर।

३८९. **झुंड** (संज्ञा पु०) (हिं०) वृन्द, गिरोह, समुदाय, समूह, निकर, यूथ, कुटुम्ब, समाहार, कुल, गण, जत्था जाल, भीड़, दल, पक्ष, टोल, पुंज, मंडली, वरूथ, माला, श्रेणी, (अं०) पार्टी।

३९०. **झूठा** (वि०) (हिं०) मिथ्या, असत्य मिथ्यावादी नकली, बनावटी, कल्पित, अतथ्य, अन्यथा अयुक्तिक, अयथार्थ, कूट, असत्, पंचदशानर्थ, मृषा, अमूलक, ग़लत, जूठा।

३९१. झूला (संज्ञा पु०) (हिं०) हिंडोला, झोंका, स्त्रियों का ढीला कुर्ता।

३९२. टंकार, टङ्कार (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टनटन का शब्द, ध्वनि, झनकार, शब्द, विस्मय, कीर्ति नाम, प्रसिद्धि।

३९३. टंटा (संज्ञा पु०) (हिं०) आडम्बर, प्रपंच, उपद्रव, दंगा, फ़साद, झगड़ा, तकरार।

३९४. टका (संज्ञा पु०) (हिं०) सिक्का, रुपया, अधन्ना, धन, द्रव्य।

३९५ टक्कर (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ठोकर, मुठभेड़, भिड़न्त, धक्का, घाटा, हानि, नुकसान।

३९६. टाँका (संज्ञा पु०) (हिं०) सिलाई, सींवन, थिगली, चिप्पी, जोड़, छेनी, हौज, कुंडी, चहबच्चा, कंडाल।

३९७. टीका (संज्ञा पु०) (हिं०) तिलक, श्रेष्ठ पुरुष, शिरोमणि, राजतिलक, युवराज, माथे का गहना, दाग, धब्बा, (संज्ञा स्त्री०) व्याख्या।

३९८. टुकड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०) अंश, खंड, भाग, ग्रास, कौर, हिस्सा, विभाग, अवयव।

३९९. टूटा (वि०) (हिं०) त्रुटित, भग्न, दुबला, कमज़ोर, शिथिल, निर्बल, दीन, हीन।

४००. टेक (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) थम, थूनी, सहारा, ढासना, आश्रय, अवलम्ब, चबूतरा, टीला, दृढ़-संकल्प, अड़, हठ, जिद, आदत, संस्कार, गीत का पुनरुक्त भाग।

४०१. टेढ़ा (वि०) (हिं०) वक्र, कुटिल, तिरछा, पेचीदा, कठिन, विषम, उद्धत, उग्र, उज्जड, बाँका, खल, तिर्यक्, बंक, अटपट, ऐंडा।

४०२. टोकरी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) झाँपी, झपोली, देगची, बटलोई।

४०३. ठंडा, ठंढा (वि) (हिं०) शीतल, सर्द, शान्त, धीर, गम्भीर, सुस्त, मन्द, उदासीन, धीमा।

४०४. **टसक** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) नखरा, अभिमान, दर्प, शान ।

४०५. **ठहरना** (क्रिया) (*हिं०*) रुकना, थमना, टिकना, अड़ना, घिराना, प्रतीक्षा करना ।

४०६. **ठाट** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) ढाँचा, पिंजर, रचना, बनावट, सजावट, आडम्बर, तड़क-भड़क, मजा, आराम, ढंग, शैली, आयोजन, सामान, माल, सामग्री, अनुष्ठान, उपाय, युक्ति, ढंग ।

४०७. **ठिकाना** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) स्थान, जगह, ठौर, प्रमाण, आयोजन, प्रबन्ध, पारावार, अन्त ।

४०८. **ठीक** (वि०) (*हिं०*) यथार्थ, प्रामाणिक, उपयुक्त, उचित, अच्छा, भला, योग्य, शुद्ध, सही, दुरुस्त, स्थिर, पक्का, समीचीन, सम्यक्, (संज्ञा पु०) निश्चय, ठिकाना, ठहराव ।

४०९. **ठेठ** (वि०) (*देश०*) निपट, निरा, बिल्कुल, शुद्ध, निर्मल, खालिस, आरम्भ, शुरू ।

४१०. **ठौर** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) स्थान, जगह, ठिकाना, अवसर, मौका, घात ।

४११. **डंडा, डँडा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) दंड, सोटा, लाठी, लठिया, छड़ी, चारदीवारी, डाँड़ ।

४१२. **डहकना** (क्रिया) (*हिं०*) ठगना, धोखा देना, छल करना, बिलखना, विलाप करना, हुँकारना, दहाड़ना, छितराना, छिटकाना, फैलना ।

४१३. **डाँड़** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) डंडा, गदका, चप्पू, सीधी लकीर, आड़, रोक, मेड़, सीमा, बाड़, हद, अर्थदंड, हरजाना ।

४१४. **डायन** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) डाकिनी, पिशाचिनी, भूतनी, कुरूपा स्त्री, कुटनी ।

४१५. **डायरी** (संज्ञा स्त्री०) (*अँ०*) दिनचर्या, रोचनामचा, दैनिकी ।

४१६. **डाल** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) शाखा, शाख, डंडी डाँड़ी, डलिया, एक तरह की खूँटी, चगेरी ।

४१७. डिंब, डिम्ब (संज्ञा पु०) (सं०) हलचल, पुकार, दंगा, लड़ाई, अंडा, फेफड़ा, प्लीहा।

४१८. डेरा (संज्ञा पु०) (हिं०) ठिकाना, ठहराव, खेमा, शिविर, तम्बू, छावनी, निवास-स्थान, निवास।

४१९. डोरा (संज्ञा पु०) (हिं०) धागा, तन्तु, डोर, धारी, लकीर, धार, प्रेमबन्धन, सुराग।

ढ

४२०. ढंग (संज्ञा पु०) (हिं०) क्रिया, प्रणाली, शैली, रीति, पद्धति, ढब, प्रकार, भाँति, तरह, रचना, बनावट, ढाँचा, युक्ति, उपाय, तदबीर, आचरण, व्यवहार, चाल-ढाल, हीला, बहाना, लक्षण, आसार, स्थिति, अवस्था, दशा।

४२१. ढँढोरा, ढिंढोरा (संज्ञा पु०) (हिं०) डुगडुगी, डोंडी, मुनादी, शोर।

४२२. ढलना (क्रिया) (हिं०) ढरकना, बहना, बीतना, गुजरना, रीझना, लहराना, प्रवृत्त होना।

४२३. ढाल (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चर्म, फलक, ढंग, तरीका, प्रकार, रोक, चन्दा, उगाही, एक प्रकार का शस्त्र।

४२४. ढेर (संज्ञा पु०) (हिं०) राशि, अम्बार, बहुत ज्यादा, अधिक।

४२५. ढोला (संज्ञा पु०) (हिं०) पिंड, शरीर, देह, पति, प्रीतम, मूर्ख व्यक्ति।

त

४२६. तंग (वि०) (फ़ा०) कसा, दृढ़, दुःखी, हैरान, धनहीन, संकुचित, सँकरा, संकीर्ण।

४२७. तंतु, तन्तु (संज्ञा० पु०) (सं०) सूत, डोरा, धागा, ग्राह, सन्तान, विस्तार, फैलाव, वंश-परम्परा।

४२८. **तंत्र, तन्त्र** (संज्ञा० पु०) (सं०) तन्तु, ताँत, सूत, जुलाहा, वस्त्र, सिद्धान्त, प्रमाण, औषध, काम, कारण, उपाय, शासन, सेना, अधिकार, घर, प्रसन्नता, समूह, धन, सम्पत्ति, श्रेणी, वर्ग, कोटि, उद्देश्य, कुल, शपथ, कसम।

४२९. **तक़रार** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) हुज्जत, विवाद, लड़ाई, झगड़ा, वार्ता।

४३०. **तट** (संज्ञा पु०) (सं०) किनारा, कूल, क्षेत्र, प्रदेश, खेत, शिव, महादेव, (क्रि० वि०) समीप, पास, निकट।

४३१. **तत्त्व, तत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) यथार्थता, वास्तविकता, असलीयत, पंचभूत (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि) परमात्मा, ब्रह्मा, सारांश, सार।

४३२. **तत्पर** (वि०) (सं०) उद्यत, सन्नद्ध, मुस्तैद, दक्ष, निपुण, होशियार।

४३३. **तनु** (वि०) (सं०) दुबला, पतला, कृश, अल्प, थोड़ा, कम, कोमल, सुन्दर, (संज्ञा स्त्री०) शरीर, देह, चमड़ा, खाल, स्त्री, औरत, केंचुली।

४३४. **तन्मयता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) एकाग्रता, लिप्तता, लीनता, लगन।

४३५. **तरणि** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, मदार, आक, किरण, नौका, नाव।

४३६. **तरल** (संज्ञा पु०) (सं०) हार, हीरा, लोहा, तल, पेन्दा, घोड़ा, (वि०) चंचल, चलायमान, चमकीला, कान्तिवान्, अस्थिर, क्षणभंगुर, खोखला, पीला, कोमल, मन्द।

४३७. **तरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाव, नौका, पेटी, धुआँ, धूम, छोर, दामन, (हिं०) तलछट, कछार, तराई, (फ़ा०) गीलापन, आर्द्रता, नमी, ठंडक, शीतलता, रसा।

४३८. **तरीका** (संज्ञा पु०) (अ०) विधि, ढंग, रीति, पुकार, ढब, चाल, व्यवहार, युक्ति, उपाय।

४३९. **तरुण** (वि०) (सं०) युवा, जवान, नया, नूतन, नवीन, (स्त्री०) तरुणी।

४४०. **तर्कश** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) तूणीर, चोंगा, माथा।

४४१. **तल** (संज्ञा पु०) (सं०) पेन्दा, हथेली, थप्पड़, चपेट, मूठ, दस्ता, आधार, सहारा, कानन, वन, जंगल, निचला भाग।

४४२. **तलवार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) खड्ग, असि, कृपाण, करवाल, शमशीर, खंजर।

४४३. **तस्कर** (संज्ञा पु०) (सं०) चोर, कान, श्रवण, मैनफल, मदनवृक्ष।

४४४. **ताड़न, ताड़ना** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मार, प्रहार, डाँट, डपट, दण्ड, शासन, धमकी, उत्पीड़न, कष्ट, (क्रि०) (हिं०) भाँपना, अन्दाजा लगाना, डाँटना।

४४५. **तात्पर्य** (संज्ञा पु०) (सं०) अभिप्राय, अर्थ, आशय, मतलब, तत्परता।

४४६. **तान** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) खींच, फैलाव, विस्तार, लय, तरंग।

४४७. **ताना** (क्रिया) (हिं०) ताव देना, तपाना, गर्म करना, पिघलाना, जाँचना, मूँदना, (संज्ञा पु०) (अ०) व्यंग, आक्षेप, बोली।

४४८. **ताप** (संज्ञा पु०) (सं०) उष्णता, गर्मी, आँच, ज्वर, बुखार, कष्ट, दुःख।

४४९. **तामस** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्प, साँप, खल, उल्लू क्रोध, गुस्सा, अंधकार, अँधेरा, मोह, अज्ञान, (वि०) तमोगुण युक्त।

४५०. **तार** (संज्ञा पु०) (सं०) रूपा, चाँदी, सूत, धागा, तन्तु, सूत्र, सुनली, सिलसिला, युक्ति, ढब, सुभीता, प्रणव, ओंकार, शुद्ध मोती, तारा, नक्षत्र, शिव, विष्णु, (हिं०) ताल, मजीरा, तरौना, तल, सतह, (अं०) वायर, टेलिग्राम, (वि०) निर्मल, स्वच्छ।

४५१. **तारा** (संज्ञा पु०) (सं०) नक्षत्र, सितारा, आँख की पुतली, भाग्य।

४५२. **तारीख** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) तिथि, दिनांक, नियत तारीख, इतिहास।

४५३. **ताल** (संज्ञा पु०) (सं०) करतल, हथेली ताली, हरताल, बेल, बिल्वफल, ताला, नृत्य-ताल, महादेव, एक नरक, जलाशय, तालाब।

४५४. **तालाब** (संज्ञा पु०) (हिं०) जलाशय, सरोवर, पोखर, ताल।

४५५. **तालिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ताली, कुंजी, सूची, फ़हरिस्त (अँ०) लिस्ट, मजीठ, तमाचा, तालमूली।

४५६. **ताली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुंजी, चाबी, ताड़ी, तालमूली, अरहर, भूआँवला, ताम्रवल्ली लता, एक वर्णवृत्त, (हिं०) करतल-ध्वनि, छोटा ताल, तलैया।

४५७. तिरस्कार (संज्ञा पु०) (सं०) अपमान, अनादर, भर्त्सना, फटकार, उपेक्षा ।

४५८. तिलक (संज्ञा पु०) (सं०) टीका, राज्याभिषेक, गद्दी, शिरोमणि, श्रेष्ठ व्यक्ति, पुन्नाग, घूआ, मरुआ ।

४५९. तिष्य (संज्ञा पु०) (सं०) पुष्य नक्षत्र, पौष मास, कलियुग, मांगल्य, कल्याण ।

४६०. तीक्ष्ण (वि०) (सं०) तेज, प्रखर, तीव्र, उग्र, प्रचण्ड, तीखा, कर्ण-कटु, आत्मत्यागी, निरालस्य, (संज्ञा पु०) गर्मी, ताप, विष, ज़हर, युद्ध, लड़ाई, मरण, मृत्यु, इस्पात, शस्त्र, मोखा, महामारी, योगी ।

४६१. तीर्थंकर (संज्ञा पु०) (सं०) जैन धर्म के २४ गुरु ।

४६२. तीर्थ (संज्ञा पु०) (सं०) पवित्र स्थान, शास्त्र, यज्ञ, स्थल, उपाय, अवसर, अवतार, चरणामृत, गुरु, उपाध्याय, मंत्री, योनि, दर्शन, घाट, ब्राह्मण, कारण, निदान, अग्नि, पुण्यकाल, तारक, ईश्वर, माता-पिता, अतिथि ।

४६३. तीव्र (वि०) (सं०) अतिशय, अत्यन्त, तीक्ष्ण, तेज, गर्म, नितान्त, वेहद, कटु, कड़ुवा, दुःसह, वेगयुक्त, (संज्ञा पु०) इस्पात, शिव ।

४६४. तुंग, तुङ्ग (वि०) (सं०) उन्नत, ऊँचा, उग्र, प्रचण्ड, प्रधान, मुख्य, (संज्ञा पु०) पुन्नाग, पर्वत, नारियल, कमल-केसर, किंजल्क, शिव, बुध ग्रह ।

४६५. तुच्छ (संज्ञा पु०) (सं०) सारहीन छिलका, भूसी, तूतिया, नील, (वि०) हीन, क्षुद्र, नीच, ओछा, खोटा, नाचीज़, अल्प, थोड़ा, खोखला, निस्सार ।

४६६. तुलसी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुरसा, गौरा, बहुमंजरी ।

४६७. तुला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तुलना, मिलाना, तराज़ू, मान, तौल, एक राशि ।

४६८. तुहिन (संज्ञा पु०) (सं०) पाला, कुहरा, तुषार, हिम, बर्फ, चाँदनी, शीतलता, ठंढक ।

४६९. तूफान (संज्ञा पु०) (अ०) आपत्ति, प्रलय, आफ़त, हल्ला-गुल्ला, आँधी, वावेला, झगड़ा, बखेड़ा, झूठा दोषारोपण, तोहमत ।

४७०. तूल (संज्ञा पु०) (सं०) आकाश, शहतूत, रूई, (अ०) लम्बाई, विस्तार, (वि०) (हिं०) तुल्य, समान ।

४७१. तेज (संज्ञा पु०) (हिं०) दीप्ति, कान्ति, चमक, आभा, पराक्रम, ज़ोर, बल, वीर्य, तत्त्व, ताप, गर्मी, पित्त, सोना, तेज़ी, प्रचण्डता, प्रताप, रोब, दाव, मज्जा।

४७२. तेज़ (वि०) (फ़ा०) फुर्तीला, तीक्ष्ण, तीता, महँगा, प्रखर, तीव्र, चपल, चंचल।

४७३. तेजस्वी (वि०) (सं०) कान्तिमान्, तेजयुक्त, प्रतापी, प्रभावशाली, (स्त्री०) तेजस्विनी।

४७४. तेवर (संज्ञा पु०) (हिं०) क्रुद्ध दृष्टि, चितवन, भौंह, भृकुटी।

४७५. तैयार (वि०) (अ०) उद्यत, तत्पर, मुस्तैद, प्रस्तुत, उपस्थित, मौजूद, हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा।

४७६. तोड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०) थैली, तट, घाटा, टोटा, कमी, फलीता, पलीता, हरिस।

४७७. तोता (संज्ञा पु०) (फ़ा०) शुक, सुआ, कीर, प्रियदर्शन, फलाशन, हरि, सुवना, सुग्गा, आत्माराम।

४७८. तोष (संज्ञा पु०) (सं०) तुष्टि, सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, आनन्द, (वि०) अल्प, थोड़ा।

४७९. त्रस्त (वि०) (सं०) भयभीत, पीड़ित, दुखित, चकित।

४८०. त्राण (संज्ञा पु०) (सं०) रक्षा, बचाव, कवच, बख्तर।

४८१. त्रिशंकु (संज्ञा पु०) (सं०) बिल्ली, जुगनू, पपीहा।

४८२. त्रुटि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कमी, न्यूनता, अभाव, भूल, चूक, वचन-भंग, संशय, सन्देह, छोटी इलायची।

थ

४८३. थपेड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०) थप्पड़, आघात, धक्का, टक्कर, थपेटा, थपेड़, चपेट, थप्पर, धौल, चपत।

४८४. थल (संज्ञा पु०) (हिं०) स्थान, जगह, ठिकाना, सूखी धरती, थल मार्ग, भूड़, थली, रेगिस्तान, माँद।

४८५. **थाप** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आघात, चोट, थप्पड़, छाप, धाक, कसम, शपथ, पंचायत, प्रमाण, कदन, मान।

४८६. **थाह** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गहराई का अन्त या सीमा, पता, परिचय, अन्दाज़, परिमिति।

४८७. **थोक** (संज्ञा पु०) (हिं०) ढेर, राशि, अटाला, समूह, झुंड, जत्था, चक।

४८८. **थोड़ा** (वि०) (हि०) न्यून, अल्प, कम, तनिक, किंचित्, क्षीण चन्द, ज़रा, परिमित, प्रमित, मात्र, लेश, स्वल्प, तनु, थोरा, कलुक, घट।

४८९. **थोथा** (वि०) (देश०) खोखला, खाली, पोला, कुंठित, गुठला, बौंडा, भद्दा, बेढंगा, निकम्मा, निःसार, व्यर्थ।

द

४९०. **दंग** (वि०) (फ़ा०) विस्मित, चकित, स्तब्ध, आश्चर्यान्वित, (संज्ञा पु०) भय, डर, घबराहट।

४९१. **दंगा** (संज्ञा पु०) (हिं०) उपद्रव, गुलगपाड़ा, हुल्लड़, शोरगुल, झगड़ा, लड़ाई।

४९२. **दंड, दण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) डंडा, सोटा, लाठी, कसरत, दंडवत्, सज़ा, अर्थदंड, जुर्माना, हरजाना, दमन, शासन, डाँडी, मथानी, डंडी, मस्तूल, यम, विष्णु, शिव, सेना, फ़ौज, घोड़ा, घड़ी (६० पल), शमन।

४९३. **दंडी, दण्डी** (संज्ञा पु०) (सं०) यमराज, राजा, द्वारपाल, संन्यासी। जिनदेव, दमनकवृक्ष, मंजुश्री, शिव, महादेव, दण्डधारी व्यक्ति।

४९४. **दंश** (संज्ञा पु०) (सं०) दंशन, डक, कटूक्ति, द्वेष, वर, दाँत, डाँस।

४९५. **दक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, बल, वीर्य, मुर्गा, महेश्वर, (वि०) निपुण, कुशल, चतुर, होशियार, दक्षिण, दाहिना।

४९६. **दखल** (संज्ञा पु०) (अ०) अधिकार, कब्ज़ा, हस्तक्षेप, पहुँच, प्रवेश।

४९७. **दधि** (संज्ञा पु०) (सं०) दही, वस्त्र, कपड़ा, (स्त्री०) समुद्र, सागर।

४९८. **दधिसुत** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, मोती, मुक्ता, चन्द्रमा, जालन्धर दैत्य, विष, ज़हर, मक्खन, नवनीत।

४९९. **दनादन** (क्रि० वि०) (हिं०) निरन्तर, लगातार, दनदन शब्द युक्त।

५००. **दफ़ा** (संज्ञा पु०) (अ०) बार, मर्तबा, कानून की धारा, (वि०) तिरस्कृत।

५०१. **दफ़्तर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कार्यालय, आफ़िस।

५०२. **दबकना** (क्रिया) (हिं०) छिपना, लुकना, डाँटना, घुड़कना।

५०३. **दबदबा** (संज्ञा पु०) (अ०) रोब-दाब, प्रभाव, डर, खौफ़, भय, आतंक।

५०४. **दम** (संज्ञा पु०) (सं०) सज़ा, कीचड़, घर, विष्णु, दवात, (फ़ा०) साँस, श्वास, प्राण, जान, व्यक्तित्व, धोखा, छल, फ़रेब, तलवार या छुरी की धार।

५०५. **दमक** (संज्ञा स्त्री) (सं०) चमक, चमचमाहट, आभा, द्युति (वि०) दमनशील।

५०६. **दमन** (संज्ञा पु०) (सं०) निग्रह, विष्णु, शिव, दौना, कुन्द।

५०७. **दया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) करुणा, रहम, सहानुभूति, अनुग्रह, मेहरबानी, कृपा, दयालुता।

५०८. **दर** (संज्ञा पु०) (सं०) शंख, गड्ढा, दरार, गुफ़ा, कन्दरा, विदारण, डर, भय, खौफ़, (हिं०) दल, सेना, समूह, जगह, स्थान, (फ़ा०) द्वार, दरवाज़ा, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भाव, निर्ख, प्रमाण, ठीक, ठिकाना, कदर, प्रतिष्ठा, महत्त्व, महिमा, ईख, ऊख, (वि०) (सं०) थोड़ा, किंचित्, ज़रा-सा।

५०९. **दरवाज़ा** (संज्ञा पु० (फ़ा०) द्वार, मुहाना, किवार, कपाट, (अँ०) गेट।

५१०. **दरस** (संज्ञा पु०) (हिं०) देखादेखी, दीदार, भेंट मुलाकात, रूप, छवि, सुन्दरता, दर्शन।

५११. **दर्जा** (संज्ञा पु०) (अ०) श्रेणी, कोटि, वर्ग, (अँ०) क्लास (क्रि० वि०) गुणित, गुना ।

५१२. **दर्द** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) पीड़ा, व्यथा, दुःख, तकलीफ़, सहानुभूति, करुणा, दया, तरस, रहम ।

५१३. **दर्प** (संज्ञा पु०) (सं०) घमंड, अहंकार, गर्व, अभिमान, उद्दण्डता, अक्खड़पन, मान, आतंक, रोब, कस्तूरी ।

५१४. **दर्पण** (संज्ञा पु०) (सं०) आईना, आरसी, शीशा, मुकुट, चक्षु, आँख, उद्दीपन, उत्तेजन, (अँ०) मिरर ।

५१५. **दर्रा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) घाटी, पहाड़ी रास्ता (हिं०) दरार, दरज, शिगाफ़ ।

५१६. **दर्शन** (संज्ञा पु०) (सं०) साक्षात्कार, ज्ञान, भेंट, मुलाकात, नेत्र, आँख, स्वप्न, बुद्धि, धर्म, दर्पण, वर्ण, रंग (अँ०) फ़िलासफ़ी ।

५१७. **दल** (संज्ञा पु०) (सं०) पत्र, तमाल-पत्र, पँखुड़ी, समूह, झुंड, गिरोह गुट्ट, सेना, फ़ौज, कोर, म्यान, धन, जल-तृण ।

५१८. **दलना** (क्रि०) (हिं०) पीसना, रौंदना, कुचलना, मसलना, मीड़ना, नष्ट करना, ध्वस्त करना, तोड़ना, खण्डित करना ।

५१९. **दवा** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) औषध, ओषधि, इलाज, चिकित्सा, रसायन, पाचक, भेषज, दारू, दवाई, (हिं०) दावानल, अग्नि, आग ।

५२०. **दशा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अवस्था, हालत, स्थिति, बत्ती, चित्त, वस्त्रान्त, कपड़े का किनारा ।

५२१. **दस्ता** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) मूठ, बेंत, दल, गारद, सोटा, डंडा, गदका कागज़ का दस्ता ।

५२२. **दस्यु** (संज्ञा पु०) (सं०) डाकू, चोर असुर, राक्षस, अनार्य, म्लेच्छ, दास गुलाम ।

५२३. **दहन** (संज्ञा पु०) (सं०) दाह, आग, अग्नि, चित्रक, चीता, दुष्ट व्यक्ति, कपोत, कबूतर ।

५२४. **दहशत** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) डर, भय, खौफ़, आतंक ।

५२५. **दांव** (संज्ञा पु०) (हिं०) बार, दफ़ा, मरतबा, पारी, अवसर,

मौका, दाव-पेंच, स्थान, ठौर, जगह, युक्ति, चाल ।

५२६. **दाख** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) द्राक्षा, अँगूर, मुनक्का, किशमिश ।

५२७. **दाग़** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) धब्बा, निशान, चिह्न, अंक, नेत्र, दोष, कलंक, (हिं०) **दाग**—दाह कर्म, डाह, जलन ।

५२८. **दान** (संज्ञा पु०) (सं०) देना, खैरात, कर, महसूल, चुंगी, छेदन, शुद्धि, पुण्य, धर्म, सुकृत, समर्पण, वितरण ।

५२९. **दाना** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) अन्न, कण, कन, अनाज, चर्वण, चबेना रवा, (वि०) बुद्धिमान्, अक़लमन्द ।

५३०. **दानी** (वि०) (हिं०) दाता, कर-संग्रही, उदार, दातृ, दनुद, दानवीर, दायक, दायी, दानशील, दानकर्त्ता, धनद, अन्नदाता ।

५३१. **दाम** (संज्ञा पु०) (सं०) रस्सी, रज्जु, माला, हार, लड़ी, समूह, राशि, लोक, विश्व, (फ़ा०) जाल, पाशा, फन्दा, (हिं०) सिक्का, मूल्य, कीमत, धन, रुपया, पैसा ।

५३२. **दामाद** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) जामाता, जमाई, दुहितापति, यामाता, जामातृ, जामातु ।

५३३. **दावा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दावानल, दावाग्नि, (अ०) स्वत्व, हक़, अभियोग, मुकद्दमा, नालिश वश, ज़ोर, दृढ़ता ।

५३४. **दास** (संज्ञा पु०) (सं०) सेवक, चाकर, नौकर, शूद्र, धीवर, दस्यु, वृत्रासुर, ज्ञातात्मा, आत्मज्ञानी, अनुचर, किंकर, अनुगामी, आज्ञाकारी, गण, कर्मचारी, कर्मकार, चेट, दासजन, परिचर, अनुग, चेरा, सेवी, जीवक, टहलुआ, टहलू, सहचारी, सेवाजन, अधीन, दासक ।

५३५. **दाह** (संज्ञा पु०) (सं०) दाहकर्म, जलन, ताप, अत्यन्त दुःख, संताप, डाह, ईर्ष्या, ।

५३६. **दाहिना** (वि०) (हिं०) दाहना, दक्षिण, दायाँ, अनुकूल, प्रसन्न ।

५३७. **दिन** (संज्ञा पु०) (सं०) समय, काल, वक्त, वार, दिवस, दिहाड़ा, दिहाड़ी, ।

५३८. **दिमाग़** (संज्ञा पु०) (अ०) मस्तिष्क, मग़ज़, भेजा, स्मरण-शक्ति, मानसिक शक्ति, बुद्धि, समझ, अभिमान, शेखी, घमंड ।

५३९. दिल (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कलेजा, हृदय, मन, चित्त, साहस, जियट, प्रवृत्ति, इच्छा।

५४०. दिलावर (वि०) (फ़ा०) शूर, बहादुर, साहसी, वीर, उत्साही, (स्त्री०) दिलावरी।

५४१. दिलासा (संज्ञा पु०) (हिं०) आश्वासन, ढाढ़स, तसल्ली, धैर्य।

५४२. दिवाकर (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, रवि, आक, मन्दार, काक, कौवा।

५४३. दिव्य (वि०) (सं०) स्वर्गीय, अलौकिक, प्रकाशमान्, चमकीला, बढ़िया, तत्ववेत्ता, अच्छा, (संज्ञा पु०) यव, आँवला, ब्राह्मी, लौंग, सूअर, कपूर-कचरी, चमेली, जीरा, सौगन्ध।

५४४. दीक्षा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) यजन, यज्ञकर्म, मन्त्रोपदेश, उपनयन, संस्कार, गुरुमन्त्र, पूजन।

५४५. दीठ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नयन-ज्योति दृष्टि, देख-भाल, परख, पहचान, कृपादृष्टि, दृक्पात, अवलोकन, चितवन, नज़र, निगाह, ध्यान, विचार, संकल्प।

५४६. दीदा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) दृष्टि, नज़र, दर्शन, आँख, नेत्र ढिठाई।

५४७. दीन (वि०) (सं०) दरिद्र, ग़रीब, दुःखी, सन्तप्त, नम्र, विनीत, (संज्ञा पु०) (अ०) मत, मज़हब।

५४८. दीप (संज्ञा पु०) (सं०) दीपक, दीया, चिराग़, प्रदीप, तिमिरहर, अग्निशिख, कुलिक, शमा, (अँ०) लैम्प, (हिं०) द्वीप।

५४९. दीप्ति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रकाश, उजाला, प्रभा, आभा, चमक, कान्ति, शोभा, छवि, द्युति, दुति, लाक्षा, लाख, काँसा, थूहर।

५५०. दीर्घ (वि०) (सं०) बड़ा, आयत, लम्बा, विशाल, ऊँचा, विस्तृत, (संज्ञा पु०) लताशाल वृक्ष, माडवृक्ष, नरकट।

५५१. दुःख (संज्ञा पु०) (सं०) कष्ट, क्लेश, संकट, आपत्ति, वेदना, खेद, रंज, पीड़ा, व्यथा, व्याधि, रोग, बीमारी, शोक, सन्ताप, विषाद, आपत्ति, अनुताप, यंत्रणा, परिताप, यातना, दर्द।

५५२. दुबला (वि०) (हिं०) कृश, अशक्त, कमज़ोर, निर्बल, दुर्बल।

५५३. दुम (संज्ञा स्त्री०) (फा०) पूँछ, पुच्छ, पिछला भाग ।

५५४. दुर्गम (वि०) (सं०) औघट, दुर्ज्ञेय, दुस्तर, विकट, कठिन, (संज्ञा पु०) गढ़, दुर्ग, किला, विष्णु, वन ।

५५५. दुर्गा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चण्डिका, कौशकी, भारती, चण्डी, नन्द-नन्दिनी, पर्वतवासिनी, बहुभुजा, महाशक्ति, अम्बा, उमा, गौरी, काली, भवानी, रुद्राणी, कल्याणी, पार्वती, अम्बिका, गिरिजा, मंगला, नारायणी, महामाया, वैष्णवी, महाकाली, शिवानी, महालक्ष्मी, त्रिपुरा, ज्वालामुखी, अन्न-पूर्णा, सुभगा, चित्रा, सिंहवाहिनी, सुर-सुन्दरी, हेमगुप्ता, कुमारी, जगन्मोहिनी, नौवर्षीय कन्या, नील का पौधा, कौवाठोंठी, श्यामा पक्षी ।

५५६. दुर्जन (वि०) (सं०) दुष्टजन, खल, खोटा ।

५५७. दुर्बोध (वि०) (सं०) कठिन, गूढ़, क्लिष्ट, अगम्य, दुर्गम, दुर्बोध्य ।

५५८. दुर्लभ (वि०) (सं०) दुष्प्राप्य, अनोखा, विलक्षण, लोकप्रिय, (संज्ञा पु०) कचूर, विष्णु ।

५५९. दुविधा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मन की अस्थिरता, संशय, सन्देह, असमंजस, आगा-पीछा, खटका, चिन्ता, दुबधा, आशंका ।

५६०. दुष्ट (वि०) (सं०) दोषग्रस्त, बुरा, दुर्जन, खल, पाजी, दुराचारी, (संज्ञा पु०) कुष्ठ, कोढ़ ।

५६१. दुहाई (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) घोषणा, पुकार, शपथ, कसम, सौगन्ध, दुहना ।

५६२. दूध (संज्ञा पु०) (हिं०) पय, दुग्ध, क्षीर ।

५६३ दूरदर्शी (संज्ञा पु०) (सं०) पंडित, विद्वान्, गिद्ध, (वि०) दूर की सोचने वाला, दूरदर्शक ।

५६४. दृढ़ (वि०) (सं०) प्रगाढ़, पुष्ट, मजबूत, ठोस, कड़ा, बलवान्, बलिष्ठ, स्थायी, निश्चित, ध्रुव, पक्का, निडर, ढीठ, (संज्ञा पु०) लोहा, विष्णु ।

५६५. दृश्य (वि०) (सं०) दर्शनीय, मनोरम, सुन्दर, ज्ञेय, (संज्ञा पु०)

सीनरी, नाटक, (अं०) सीन।

५६६. दृष्टि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नजर, निगाह, टक, अवलोकन, परख, कृपादृष्टि, आस, उम्मीद, ध्यान, विचार, अनुमान, उद्देश्य, अभिप्राय, नीयत।

५६७. देखना (क्रिया) (हिं०) खोजना, ढूँढ़ना, जाँच करना, निरीक्षण करना, अवलोकन करना, आज़माना, सोचना, समझना, विचारना, निगरानी रखना, भोगना, पढ़ना, बाँचना, परीक्षा करना, सोचना।

५६८. देर (संज्ञा पु०) (फ़ा०) विलम्ब, अतिकाल, अवेर, अरसा, समय, वक्त।

५६९. देवता (संज्ञा पु०) (सं०) सुर, विबुध, अनिमेष, खग, अमर, अजर, अग्निमुख, अमृताशन, देव, देवक, विश्वरूप, अदितिसुत, अमृतबन्धु, आकाशचारी।

५७०. देवन (संज्ञा पु०) (सं०) व्यवहार, जगीषा, वासना, कामना, खेल, क्रीड़ा, लीलोद्यान, बगीचा, कमल, पद्म, परिवेदना, खेद, रज, शोक, द्युति, कान्ति, स्तुति, गति, जूआ, द्यूत।

५७१. देवल (संज्ञा पु०) (सं०) पुजारी, पंडा, धार्मिक पुरुष, देवर, नारद मुनि, एक स्मृतिकार, देवालय, देवमन्दिर, देवस्थान।

५७२. देवसदन (संज्ञा पु०) (सं०) सुरलोक, स्वर्ग, देवलोक, देवालय, मन्दिर।

५७३. देवी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) देवपत्नी, दुर्गा, पटरानी, सदाचारिणी या सुशील स्त्री, मूर्वा, मरोरफली, हुलहुल, हुर-हुर (घास), पँचगुरिया, वनककोड़ा, शालपर्णी, महाद्रोणी, पाठा, नागरमोथा, सफेद इन्द्रायन, हरीतकी, हड़, अलसी, तीसी, श्यामा पक्षी, रविसंक्रांति।

५७४. देह (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शरीर, तन, बदन, जीवन, ज़िन्दगी, विग्रह, चित्रमूर्त्ति, गात, धाम, अंग, काया, जिस्म, अवयव, तनु, जीवनावास, (संज्ञा पु०) गाँव, खेड़ा, मौजा।

५७५. दैत्य (संज्ञा पु०) (सं०) असुर, दुराचारी या नीच व्यक्ति, लोहा,

अहि, अक्ष, माँसाहारी व्यक्ति, निशाचर, यातुधान, पिशाच, राक्षस, क्रूर, चण्ड, दानव, तामिस्र, दनुज, रजनीचर, दितिसुत, सुरशत्रु, अमानुष।

५७६. दैनिक (वि०) (सं०) नित्य का, रोज़ का, प्रतिदिन या दिन सम्बन्धी, (संज्ञा पु०) दैनिकपत्र, दैनिकी, दिहाड़ी।

५७७. दैव (संज्ञा पु०) (सं०) प्रारब्ध, भाग्य, होनहार, परमात्मा, आकाश, आसमान, दैवक।

५७८. दोपहर (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दिनयौवन, मध्याह्न, दिनार्द्ध, दुपहरिया।

५७९. दोष (संज्ञा पु०) (सं०) अवगुण, खराबी, बुराई, अपराध, कसूर, पाप, पातक, (हिं०) विरोध, द्वेष, वैर।

५८०. दोहद (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गर्भवती की इच्छा, मितली, गर्भावस्था, गर्भ।

५८१. दौड़ (संज्ञा पु०) (हिं०) धावा, चढ़ाई, आक्रमण, पहुँच, विस्तार, लम्बाई।

५८२. द्रव (वि०) (सं०) तरल, गीला, पिघला हुआ, (संज्ञा पु०) द्रवण, बहाव, दौड़, वेग, आसव, परिहास, द्रवत्व।

५८३. द्रव्य (संज्ञा पु०) (सं०) वस्तु, पदार्थ, चीज़, सामग्री, सामान, उपादान, धन, रुपया-पैसा, दौलत, पीतल, औषध, भेषज, मद्य, लेप, गोंद (वि०) द्रुम-सम्बन्धी, पेड़ जैसा।

५८४. द्रावक (वि०) (सं०) बहाने वाला, गलाने वाला, हृदयग्राही, चतुर, चालाक, चोर, (संज्ञा पु०) चन्द्रकान्त, मीठा, जार, मोम, सुहागा।

५८५. द्रुत (वि०) (सं०) द्रवीभूत, गला हुआ, तेज़, शीघ्रगामी, (संज्ञा पु०) विच्छु, वृक्ष, बिल्ली, द्रुन।

५८६. द्रोण (संज्ञा पु०) (सं०) कठवत, दोना, नाव, काला कौआ, डोम कौआ, बिच्छु, वृक्ष, पेड़, द्रोणाचल पर्वत, द्रोणाचार्य, भारद्वाज, कुम्भ योनि, कुम्भज।

५८७. द्वंद, द्वन्द, द्वंद्व, द्वन्द्व (संज्ञा पु०) (सं०) युग्म, जोड़ा, मिथुन,

प्रतिद्वंद्वी, द्वंद्वयुद्ध, झगड़ा, कलह, उलझन, झंझट, बखेड़ा, कष्ट, दुःख, उपद्रव, ऊधम, रहस्य, गुप्त बात, भय, डर, आशंका, दुविधा, असमंजस, दुर्ग, किला, (संज्ञा स्त्री०) दुन्दुभि।

५८८. द्वारा (संज्ञा पु०) (सं०) द्वार, दरवाजा, मार्ग, राह, फाटक, (अव्यय) ज़रिये से, साधन से।

५८९. द्विज (संज्ञा पु०) (सं०) अंडज प्राणी, पक्षी, ब्राह्मण, चन्द्रमा, दाँत, शूद्रेतर जाति के मनुष्य।

५९०. द्वैत (संज्ञा पु०) (सं०) युगल, अन्तर, भेद-भाव, दुविधा, भ्रम, अज्ञान, द्वैतवाद।

ध

५९१. धंधा, धन्धा (संज्ञा पु०) (हिं०) कामकाज, उद्योग, उद्यम, व्यवसाय, कारबार, रोज़गार।

५९२. धक्का (संज्ञा पु०) (हिं०) टक्कर, झोंका, धकेलना, कशमकश, आघात, संकट, विपत्ति, हानि, घाटा, टोटा।

५९३. धड़का (संज्ञा पु०) (हिं०) खटका, आशंका, अंदेशा, भय, फ़िक्र, चिन्ता, डर, धोखा।

५९४. धड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०) बाट, बटखरा, तुला, तौल, तराजू, दल, जत्था, समूह।

५९५. धनंजय, धनञ्जय (संज्ञा पु०) (सं०) अर्जुन, अग्नि, चित्रक वृक्ष, विष्णु।

५९६. धन (संज्ञा पु०) (सं०) द्रव्य, दौलत, सम्पत्ति, जायदाद, प्रिय या स्नेहपात्र व्यक्ति, मूल पूँजी, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) युवती, वधू, (वि०) धन्य।

५९७. धनिक (वि०) (सं०) धनवाला, धनी, मालदार, धनवान्, सम्पन्न, अमीर, धनाढ्य, (संज्ञा पु०) पति, स्वामी, महाजन, धनिया।

५९८. धनुष (संज्ञा पु०) (सं०) चाप, कमान, धनु, धनुस्, धन्वा।

५६६. **धन्य** (वि०) (सं०) प्रशंसनीय, श्लाघ्य, सुकृती, पुण्यवान्, (संज्ञा पु०) विष्णु, नास्तिक, धनिया।

६००. **धन्वा** (संज्ञा पु०) (सं०) धनुष, कमान, चाप, मरुभूमि, रेगिस्तान, बंजर, आकाश।

६०१. **धन्वी** (संज्ञा पु०) (सं०) वीर, निपुण, धनुर्धर, विष्णु, महादेव, अर्जुन, जवासा, धनु राशि, मौलसिरी।

६०२. **धब्बा** (संज्ञा पु०) (देशज) चिह्न, निशान, दाग़, कलंक, दोष, ऐब, लांछन, दोषारोपण।

६०३. **धर** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्वत, पहाड़, कपास डोडा, विष्णु, श्रीकृष्ण, व्यभिचारी पुरुष (वि०) धारणकर्त्ता।

६०४. **धरण** (संज्ञा पु०) (सं०) सम्भाल, थाम, ग्रहण, बाँध, पुल, संसार, जगत्, सूर्य, स्तन, धान।

६०५. **धरणिधर** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, विष्णु, पर्वत, शेषनाग, कच्छप।

६०६. **धरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, धरती, ज़मीन, संसार, दुनिया, गर्भाशय, मेद, नाड़ी।

६०७. **धरोहर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अमानत, थाती, धराउर।

६०८. **धर्म** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रकृति, स्वभाव, व्यवहार, कर्त्तव्य, सत्कर्म, सुकृति, सदाचार, पंथ, मज़हब, मत, नीति, न्याय-व्यवस्था, ईमान, (अँ०) रिलीजन।

६०९. **धर्मराज** (संज्ञा पु०) (सं०) धर्मपाल, युधिष्ठिर, यमराज, न्यायाधीश, धर्मराइ।

६१०. **धर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) धृष्टता, गुस्ताख़ी, असहनशीलता, तुनकमिजाजी, अधीरता, बेसबरी, शक्ति-बंधन, रोक, दबाव, नपुंसक, हिजड़ा, हिंसा, अनादर, अपमान।

६११. **धवल** (वि०) (सं०) श्वेत, उजला, निर्मल, झकाझक, सुन्दर, मनोहर, (संज्ञा पु०) सिन्दूर, धवर पक्षी, भारी बैल, सफ़ेद मिर्च।

६१२. **धांधली, धांधली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) उपद्रव, उत्पात, स्वेच्छाचारिता, ज़बरदस्ती ।

६१३. **धाक** (संज्ञा स्त्री०)(हिं०) रोब, आतंक, ख्याति, प्रसिद्धि, शोहरत, दबदबा, (संज्ञा पु०) ढाक, पलाश, (सं०) वृष, उपहार, भोजन, अन्न, अनाज, स्तम्भ, खम्बा, आधार ।

६१४. **धाता** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शेषनाग, (वि०) पालक, रक्षक, धारक ।

६१५. **धातृ** (वि०) (सं०) धारक, (संज्ञा पु०) ब्रह्मा, विष्णु, आत्मा ।

६१६. **धात्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माता, माँ, धाय, गंगा, आँवला, भूमि, पृथ्वी, सेना, फ़ौज, गाय, आया, उपमाता ।

६१७. **धाना** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धनिया, अन्न, सत्तू, धान, (क्रिया) दौड़ना, भागना ।

६१८. **धाम** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, घर, मकान, देह, शरीर, तन, बागडोर, देवस्थान, पुण्यस्थान, शोभा, प्रभाव, जन्म, ज्योति, ब्रह्मा, चारदिवारी, किरण, तेज, परलोक, स्वर्ग, अवस्था, गति ।

६१९. **धाय** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दाई, धात्री, उपमाता ।

६२०. **धार** (संज्ञा पु०) (सं०) तेज़ वर्षा-जल, जल-धारा, ऋण, उधार, कर्ज़, प्रान्त, प्रदेश, (वि०) गहरा, गम्भीर, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रवाह, सोता, चश्मा, सिरा, किनारा, छोर, सेना, फ़ौज, आक्रमण, हल्ला, समूह, रेखा, लकीर, ओर, दिशा, द्वारपाल, चोबदार ।

६२१. **धारण** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) थामना, परिधान, पहनना, सेवन, ग्रहण, अंगीकरण, शिव, महादेव ।

६२२. **धारणा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुद्धि, समझ, दृढ़-निश्चय, विचार, मर्यादा, याद, स्मृति, ख्याल ।

६२३. **धारा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अखंड प्रवाह, धार, चश्मा, बाढ़, समूह, झुंड, सेना, सन्तान, उत्कर्ष, उन्नति, तरक्की, रथ का पहिया, यश, कीर्ति, वाक्यावली, पंक्ति, रेखा, लकीर, चोटी ।

६२४. **धिषण** (संज्ञा पु०) (सं०) बृहस्पति, ब्रह्मा, विष्णु, गुरु, शिक्षक ।

६२५. **धीर** (वि०) (सं०) धैर्यवान्, दृढ़चित्त, बलवान्, विनीत, नम्र, गम्भीर, मन्द, मनोहर, सुन्दर, (संज्ञा पु०) (हिं०) धीरज, धैर्य, स्थिरता, संतोष, सत्र (सं०) केसर, मंत्र ।

६२६. **धीवर** (संज्ञा पु०) (सं०) मछुआ, मल्लाह, सेवक, दास ।

६२७. **धुकधुकी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धड़कन, कम्प, डर, भय, कलेजा, हृदय, पदिक, जुगनू ।

६२८. **धुन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रवृत्ति, लगन, मन की तरंग, मौज, चिंता, तर्ज़, ध्वनि ।

६२९. **धुर** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बोझ, भार, अक्ष, शीर्ष, आरम्भ, शुरू, जूआ, (वि०) दृढ़, पक्का ।

६३०. **धुरंधर, धुरन्धर** (वि०) (सं०) श्रेष्ठ, प्रधान ।

६३१. **धूप** (संज्ञा पु०) (सं०) सुगन्धित धूआँ, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आतप, घाम ।

६३२. **धूम** (संज्ञा पु०) (सं०) धुआँ, धूआँ, धूमकेतु, उल्कापात (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हलचल, आन्दोलन, उपद्रव, ऊधम, ठाटबाट, समारोह, कोलाहल, हल्ला, शोर, प्रसिद्धि, ख्याति ।

६३३. **धूमकेतु** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, आग, केतुग्रह, पुच्छल तारा, शिव, महादेव ।

६३४. **धूर्त्त, धूर्त** (वि०) (सं०) मायावी, छली, चालबाज़, वंचक, प्रतारक, (संज्ञा पु०) जुआरी धतूरा, विट्लवण ।

६३५. **धूर्त्तता, धूर्तता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शठता, वंचकता, चालाकी, चालबाज़ी, मक्कारी ।

६३६. **धूलि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गर्द, धूल, रेणु, रज ।

६३७. **धृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ठहराव, स्थिरता, दृढ़ता, धीरता, धैर्य ।

६३८. **धृष्ट** (वि०) (सं०) प्रगल्भ, निर्लज्ज, बेहया, उद्धत, ढीठ, गुस्ताख़ ।

६३९. **धोखा** (संज्ञा पु०) (हिं०) छल, भुलावा, भ्रम, जोखिम, खट-खटा ।

६४०. **धोर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पास, सामीप्य, निकटता, किनारा, धार, बाड़ ।

६४१. **धोरी** (संज्ञा पु०) (हिं०) बैल, वृषभ, प्रधान, धुरीण, मुखिया, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष ।

६४२. **धौंस** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धमकी, डाँट, धाक, अधिकार, रोब, भुलावा, धोखा, छल ।

६४३. **ध्यान** (संज्ञा पु०) (हिं०) लीनता, ख्याल, समझ, विचार, वुद्धि, समृद्धि, एकाग्रता ।

६४४. **ध्रुव** (वि०) (सं०) स्थिर, अचल, दृढ़, पक्का, निश्चित, (संज्ञा पु०) आकाश, कील, पर्वत, खम्बा, बट, बरगद, ध्रुपद, विष्णु, हर, ध्रुवतारा, गाँठ ।

६४५. **ध्वंस** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, विनाश, क्षय, क्षति ।

६४६. **ध्वज** (संज्ञा पु०) (सं०) चिह्न, निशान, पताका, ध्वजा, झंडा, शौंडिक, दर्प, गर्व, घमंड, पुरुषेन्द्रिय ।

६४७. **ध्वजी** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्वत, ब्राह्मण, रण, संग्राम, साँप, घोड़ा, मोर, सीपी, शौंडिक, (वि०) झंडा धारण करने वाला ।

६४८. **ध्वस्त** (वि०) (सं०) खण्डित, टूटा-फूटा, नष्ट-भ्रष्ट, पराजित ।

६४९. **नंगा** (वि०) (हिं०) दिगम्बर, वस्त्रहीन, निर्लज्ज, वेहया, पाजी, धनहीन, (संज्ञा पु०) शिव, महादेव ।

६५०. **नंद, नन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) आनन्द, हर्ष, परमेश्वर, कृष्ण के धर्मपिता, विष्णु, मेंढ़क, ज्ञानेश्वर, लड़का, बेटा, पुत्र ।

६५१. **नंदन, नन्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, महादेव, केसर, चन्दन, विष्णु, मेंढ़क, लड़का, बेटा, मेघ, बादल, विष-अस्त्र, स्वर्ग-उद्यान ।

६५२. **नंदा, नन्दा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, गौरी, सम्पत्ति, ननद (पति की बहन) ।

६५३. **नंदिनी, नन्दिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कन्या, पुत्री, लड़की, जटा-मांसी, उमा, गंगा, दुर्गा, ननद, पत्नी, जोरू ।

६५४. **नंदिवर्द्धन, नन्दिवर्द्धन** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, पुत्र, बेटा, मित्र, दोस्त, (वि०) आनन्दवर्धक ।

६५५. **नंबर, नम्बर** (वि०) (अँ०) अंक, अदद, संख्या, गणना, गिनती ।

६५६. **न** (संज्ञा पु०) (सं०) रत्न, सोना, उपमा, बुद्ध, बंध (अव्यय) नहीं, मत ।

६५७. **नक़ल** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अनुकृति, अनुकरण, प्रतिलिपि, स्वाँग, अभिनय, चुटकला (अँ०) कापी ।

६५८. **नक़ली** (वि०) (अ०) कूट, बनावटी, जाली, झूठा, असत्य ।

६५९. **नकुल** (संज्ञा पु०) (सं०) पांडुपुत्र, नेवला, पुत्र, बेटा, शिव, महादेव (वि०) कुल-रहित ।

६६०. **नक्कारा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) डुगडुगी, नगारा, डंका, नौबत, दुन्दुभि ।

६६१. **नक्की** (वि०) (देशज) पक्का, दृढ़, ठीक, निश्चित, तय ।

६६२. **नक्श** (वि०) (अ०) अंकित, चित्रित, खचित, (संज्ञा पु०) तस्वीर, चित्र, आकृति, स्वरूप, मोहर, छाप, यन्त्र, तावीज़, जादू, टोना, ताश का जूआ ।

६६३. **नक्शा** (संज्ञा पु०) (अ०) रेखा-चित्र, बनावट, आकृति, ढाँचा, गढ़न, स्वरूप, तरज़, ढंग, अवस्था, दशा, हाल, ठप्पा, मानचित्र, (अँ०) मैप ।

६६४. **नखरा** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) चुलबुलापन, चोचला, नाज़, हाव-भाव, चुलबुलाहट, चपलता ।

६६५. **नग** (वि०) (सं०) स्थिर, अचल, अटल, (संज्ञा पु०) पर्वत, पहाड़, सूर्य, साँप, वृक्ष, पौधा (फ़ा०) नगीना, रत्न, मणि, अदद, संख्या ।

६६६. **नचाना** (क्रिया) (हिं०) हैरान करना, विवश करना, इधर-उधर

घुमाना, दौड़ाना, भ्रमण कराना, चक्कर देना, परेशान करना, नृत्य कराना।

६२७. **नज़र** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दृष्टि, निगाह, कृपादृष्टि, चितवन, निगरानी, देख-रेख, ध्यान, भेंट, उपहार, परख, पहचान।

६२८. **नटवर** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रधान नट, सूत्रधार, श्रीकृष्ण, (वि०) अत्यन्त चतुर, चालाक।

६२९. **नटी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नर्त्तकी, अभिनेत्री, वेश्या, नट की पत्नी।

६३०. **नत** (वि०) (सं०) विनीत, उदास, टेढ़ा, झुका हुआ, अभिवादन करता हुआ।

६३१. **नदी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सरि, सरिता, तरंगिणि, शैवलिनी, आपगा, नटिनी, स्रोतवती, निम्नगा, निर्झरिणी, कूलवती, कल्लोलिनी, स्रोतस्विनी, ऋषिकुल्या, समुद्रपत्नी, नै, निर्झरी, वाहिनी, तरंगवती (फ़ा०) दरिया।

६३२. **नभ** (संज्ञा पु०) (सं०) आकाश, आसमान, शून्य, सिफ़र, आश्रय, आधार, श्रावण मास, भादों, पास, निकट, नजदीक, शिव, महादेव, अभ्रक, जल, वर्षा, मेघ, बादल, मृणाल सूत्र, विषतन्तु, (वि०) हिंसक।

६३३. **नभगामी** (संज्ञा पु०) (सं०) पक्षी, देवता, चन्द्रमा, सूर्य।

६३४. **नभचर** (संज्ञा पु०) (सं०) पक्षी, बादल, हवा, देवता, ग्रह।

६३५. **नम** (वि०) (फ़ा०) गीला, तर, आर्द्र, भीगा हुआ, (संज्ञा पु०) (सं०) नमस्कार, अन्न, वज्र, त्याग, यज्ञ, स्तोत्र।

६३६. **नमक** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) क्षार, नोन, लवण, जल-रस, सर्व-रस, लावण्य, सलोनापन।

६३७. **नमूना** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बनगी, ढाँचा, ठाठ, खाका, (अँ०) सैम्पल।

६३८. **नय** (संज्ञा पु०) (सं०) नम्रता, नीति, विष्णु (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नदी।

६३९. **नर** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, शिव, महादेव, अर्जुन, पुरुष, मर्द, आदमी, संधिया गंधेल, शंकु, लंब, सेवक।

६८०. **नरक** (संज्ञा पु०) (सं०) पापियों के लिए दण्डस्थान, जहन्नुम, दोज़ख़, गन्दा स्थान, कष्टप्रद स्थान ।

६८१. **नरद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शब्द, ध्वनि, नाद (फ़ा०) चौसर की गोटी ।

६८२. **नरम** (वि०) (हिं०) कोमल, मुलायम, लचीला, मंदा, धीमा, लघुपाक ।

६८३. **नरेंद्र, नरेन्द्र** (संज्ञा पु०) (सं०) नरेश, राजा, वैद्य, चिकित्सक, हकीम, विषवैद्य (वि०) श्रेष्ठ व्यक्ति ।

६८४. **नर्त्तक** (संज्ञा पु०) (सं०) नट, चारण, भाट, बन्दीजन, पात्र, केलक, हाथी, राजा, मडुआ, मयूर, मोर (स्त्री०) नर्त्तकी ।

६८५. **नलिन** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, पद्म, नील, नीलिका, नीम, सारस पक्षी, करौंदा, जल, पानी ।

६८६. **नवनीत** (संज्ञा पु०) (सं०) नवनि, नवनी, नवनीतक, मक्खन, श्रीकृष्ण ।

६८७. **नवल** (वि०) (सं०) नव्य, नवीन, नूतन, सुन्दर, युवा, जवान, नवयुवक, उज्ज्वल, शुद्ध, साफ़, स्वच्छ ।

६८८. **नष्ट** (वि०) (सं०) बरबाद, ध्वस्त, निष्फल, व्यर्थ, दरिद्र, धन-हीन, मृत, अधम, नीच, अदृष्ट, (हिं०) नाठ ।

६८९. **नाक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नासा, नासिका, नसा, नस्त, घ्राण, नकुट, नक्र, प्राणरन्ध्र, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, मान, नाशपाती ।

६९०. **नाग** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्प, साँप, शार्क, हाथी, बादल, खूँटी, राँगा, पान, ताम्बूल (वि०) धूर्त्त, दुष्ट ।

६९१. **नागर** (संज्ञा पु०) (सं०) सभ्य या शिष्ट व्यक्ति, सोंठ, नागरमोथा, नारंगी, नासरन्ध्र, (वि०) नगर रहने वाला ।

६९२. **नाज़** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) ठसक, नख़रा, चोचला, घमंड, गर्व, हाव-भाव, अदा, बनाव-सिंगार, चटक-मटक ।

६९३. **नाज़ुक** (वि०) (फ़ा०) कोमल, सुकुमार, सूक्ष्म, पतला, महीन, बारीक, गूढ़ ।

६९४. **नाता** (संज्ञा पु०) (हिं०) सम्बन्ध, रिश्ता, लगाव, वास्ता।

६९५. नाथ (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभु, स्वामी, मालिक, पति, नाह (हिं०) नथ।

६९६. **नाद** (संज्ञा पु०) (सं०) शब्द, ध्वनि आवाज, संगीत।

६९७. **नाप** (संज्ञा पु०) (हिं०) परिमाण, माप, मानदण्ड, पैमाना।

६९८. **नाम** (संज्ञा पु०) (हिं०) संज्ञा, अभिख्या, अभिधान, आख्या, सुनाम, प्रसिद्धि, ख्याति, यश, कीर्ति, (अँ०) नेम।

६९९. **नामी** (वि०) (हिं०) नामधारी, नामवाला, विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर।

७००. **नायक** (संज्ञा पु०) (सं०) नेता, अगुआ, मुखिया, अधिपति, स्वामी, मालिक, जननायक, कलावन्त, नाटक का प्रमुख पात्र।

७०१. **नाल** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कमल-डंडी, डंठल, काण्ड, नली, नाली, नलिका।

७०२. **नाव** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जलयान, नौका, किश्ती, तरणि, तरी, तरिका, तरंडी, तरंड, वहित्र, पोत, वहन, बेड़ी, नावर।

७०३. **नाविक** (संज्ञा पु०) (सं०) माझी, मल्लाह, केवट, नावी।

७०४. **नाश** (संज्ञा पु०) (सं०) विनाश, क्षति, क्षय, खंडन, निर्मूल, पतन, ध्वंस, विध्वंस, प्रलय, बरबादी, मृत्यु, विलय, संहार, हानि, भंग, तबाही, दुर्भाग्य, बदकिस्मती, विपत्ति, लोप, अदृश्यता।

७०५. **नाहक** (क्रिया वि०) (फ़ा०) वृथा, निष्प्रयोजन, बेमतलब, बेकार, व्यर्थ।

७०६. **निंदा, निन्दा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अपकीर्ति, बदनामी, नि.पभ, अयश।

७०७. **निःशेष** (वि०) (सं०) समूचा, सारा, पूरा, समाप्त, खतम।

७०८. **निःश्रेयस** (संज्ञा पु०) (सं०) मोक्ष, मुक्ति, कल्याण, मंगल, भक्ति, विज्ञान।

७०९ **निःसंदेह, निःसन्देह** (वि०) (सं०) सन्देहरहित, (अव्यय) ठीक, बेशक।

७१०. **निःसरण** (संज्ञा पु०) (सं०) निकलना, निकास, मरण, निर्वाण ।

७११. **निकट** (क्रिया वि०) (सं०) पास, समीप, निकट, (वि०) पास का, समीप का ।

७१२. **निकर** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, राशि, ढेर, निधि, कोष, निकाय, (अँ०) हाफ़पैंट ।

७१३. **निकाय** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, राशि, ढेर, सभा, समाज, संस्था, आवास स्थान, घर, शरीर, परमात्मा, लक्ष्य, निशाना ।

७१४. **निकास** (संज्ञा पु०) (हिं०) निःसरण, मैदान, द्वार, दरवाज़ा, उद्गम, मूलस्थान, सिलसिला, वसीला, आय-स्रोत, आमदनी ।

७१५. **निकृष्ट** (वि०) (सं०) बुरा, ख़राब, नीच, कमीना, पाजी, गँवार, घृणित, जातिच्युत ।

७१६. **निकृष्टता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुराई, ख़राबी, कमीनापन, नीचता, नीचपना ।

७१७. **निकेतन** (संज्ञा पु०) (सं०) घर, आवास, मकान, आवास-स्थान, आलय, पलाँडु, प्याज ।

७१८. **निक्षेपण** (संज्ञा पु०) (सं०) फेंकना, डालना, चलाना, छोड़ना, त्यागना ।

७१९. **निखट्टू** (वि०) (हिं०) निकम्मा, आलसी ।

७२०. **निखिल** (वि०) (सं०) सब, सम्पूर्ण, समूचा, तमाम, सारा, अखिल, निःशेष ।

७२१. **निगम** (संज्ञा पु०) (सं०) वेद, वेदसंहिता, वेदभाष्य, आप्तवचन, धातु, निश्चय, विश्वास, न्याय, व्यवसाय, व्यापार, बाज़ार, हाट-मंडी, पैंठ, फेरी वाला, वनजारा, मार्ग, रास्ता, नगर, (अँ०) कारपोरेशन ।

७२२. **निगह** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) दृष्टि, नज़र, चितवन, तकाई, कृपादृष्टि, मेहरबानी, परख, पहचान, ध्यान, विचार, समझ ।

७२३. **निगूढ़** (वि०) (सं०) छिपा हुआ, अति गुप्त ।

७२४. **निगोड़ा** (वि०) (हिं०) अनाथ, अभागा, दुष्ट, नीच, बुरा, कमीना ।

७२५. **निग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) रोक, अवरोध, संयम, दमन, पकड़ना, कैद करना, पराभव, पराजय, नाश, विनाश, चिकित्सा, दंड, सजा, डाँट, फटकार, दस्ता, बेंट, अरुचि, घृणा, सीमा, हद, शिव, विष्णु ।

७२६. **निचोड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) आशय, सारवस्तु, सार, सारांश, तात्पर्य, खुलासा ।

७२७. **निज** (वि०) (सं०) अपना, स्वीय, स्वकीय, खास, प्रधान, मुख्य, ठीक, सही, वास्तविक, सच्चा, यथार्थ ।

७२८. **निठल्ला** (वि०) (हिं०) निठल्लू, खाली, बेरोजगार, बेकार, निकम्मा ।

७२९. **निडर** (वि०) (हिं०) निर्भय, निःशंक, साहसी, हिम्मती, ढीठ, धृष्ट ।

७३०. **निढाल** (वि०) (हिं०) थका-माँदा, शिथिल, सुस्त, अशक्त, उत्साहहीन ।

७३१. **नित्य** (वि०) (सं०) शाश्वत, अविनाशी, त्रिकालव्यापी, (*अव्यय*) प्रतिदिन, हर रोज, नित, सदा, सर्वदा, हमेशा, अनवरत ।

७३२. **निदरना** (क्रि०) (हिं०) निरादर करना, अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना, बेइज्जती करना, तिरस्कार करना, त्याग करना, मात करना, दबाना ।

७३३. **निदान** (संज्ञा पु०) (सं०) कारण, अन्त, अवसान, शुद्धि, पवित्रता, बागडोर, रस्सी, बँधना (*अव्यय*) अन्ततः, आखिर, (वि०) निम्न श्रेणी का ।

७३४. **निदारुण** (वि०) (सं०) कठिन, भयानक, घोर, दुःसह, निर्दय, कठोर ।

७३५. **निदेश** (संज्ञा पु०) (सं०) शासन, आज्ञा, निर्देश, हुक्म, कथन, वर्णन, वार्त्तालाप, उक्ति, पड़ोस, नैकट्य, पात्र, बरतन, शर्त ।

७३६. **निधन** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, विनाश, मृत्यु, मौत, मरण, स्थान, कुल, कुटुम्ब, जाति, विष्णु, (वि०) धनहीन, दरिद्र, निर्धन ।

७३७. **निधान** (संज्ञा पु०) (सं०) आधार, आश्रय, निधि, कोश, भंडार, लयस्थान।

७३८. **निधि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) खज़ाना, कोष, सम्पत्ति, समुद्र, आगार, घर, विष्णु, शिव, (अँ०) फ़ंड।

७३९. **निनाद** (संज्ञा पु०) (सं०) शब्द, नाद, आवाज़।

७४०. **निपट** (अव्यय) (हिं०) निरा, विशुद्ध, खाली, एकमात्र, सरासर, एकदम, बिल्कुल, नितान्त।

७४१. **निपात** (संज्ञा पु०) (सं०) पतन, पात, अधःपतन, गिरावट, क्षय, विनाश, नाश, मृत्यु।

७४२. **निपीड़न** (संज्ञा पु०) (सं०) पीड़ा, पीड़ित करना, दलना, मलना, पसाना, दवाना, पेरना।

७४३. **निपुण** (वि०) (सं०) दक्ष, कुशल, प्रवीण, अनुभवी, योग्य, क़ाबिल, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, सम्पूर्ण, पूरा, कोमल।

७४४. **निबंध, निबन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्धन, रोकथाम, सहारा, अवलम्ब, अधीनता, सम्बन्ध, कारण, आधार, उद्देश्य, नींव, स्थापना, सद्वृत्ति, टीका, वाक्य-रचना, प्रस्ताव, (अँ०) ऐस्से।

७४५. **निबटना** (क्रि०) (हिं०) निवृत्त होना, फ़ारिग या खाली होना, समाप्त होना, पूरा होना, भुगतना, निर्णीत होना, तै होना, चुकना, खतम होना, निबेड़ना, निबेरना, निमटना, निपटना।

७४६. **निभृत** (वि०) (सं०) रखा हुआ, जमा किया हुआ, परिपूर्ण, धृत, गुप्त, शान्त, चुप, अचंचल, अनुद्विग्न, धीर, विनीत, विनम्र, दृढ़ संकल्प-युक्त, निर्जन, एकान्त, निम्न, कोमल।

७४७. **निमंत्रण, निमन्त्रण** (संज्ञा पु०) (सं०) बुलावा, न्योता, आह्वान, आमन्त्रण।

७४८. **निमित्त** (संज्ञा पु०) (सं०) हेतु, कारण, शकुन, सगुन, उद्देश्य, लक्ष्य, (कारक) लिए।

७४९. **निमिष** (संज्ञा पु०) (सं०) पलक मारना, पल, क्षण, निमीलन।

७५०. **निमीलन** (संज्ञा पु०) (सं०) झपकाना, निमेष, मरण, मूँदना, मिकोड़ना, यत्न, अग्र ।

७५१. **नियति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वन्धेज, होनी, भाग्य, दैव, अदृष्ट, स्थिरता, ठहराव, जड़ ।

७५२. **नियम** (संज्ञा पु०) (सं०) सिद्धान्त, क्रम, परम्परा, ऊसूल, दस्तूर, विष्णु, शिव, महादेव ।

७५३. **नियुक्त** (वि०) (सं०) तैनात, मुकर्रर, आदिष्ट, निर्दिष्ट, आज्ञाप्त, संलग्न, लगा हुआ, बँधा हुआ, (अँ०) एपांइटिड ।

७५४. **निरंग, निरङ्ग** (वि०) (सं०) अंग-रहित, निरवयव, केवल, खाली, (हिं०) वदरंग, वेरंग, विवर्ण, फीका, वेरौनक, उदास ।

७५५. **निरंतर, निरन्तर** (वि०) (सं०) लगातार, वरावर, अविच्छिन्न, अन्तर रहित, निविड़, घना, अविचल, स्थायी (क्रिया० वि०) लगातार, वरावर, सदा, हमेशा ।

७५६. **निरपाय** (वि०) (सं०) अपकारशून्य, दुष्टता-रहित, अविनाशी, अमोघ, अभ्रान्त, अव्यर्थ ।

७५७. **निरपेक्ष** (वि०) (सं०) वे-परवाह, रहित, अलग, तटस्थ (संज्ञा पु०) अवहेलना, अनादर ।

७५८. **निरर्थक** (वि०) (सं०) व्यर्थ, हानिकर, निष्प्रयोजन, वेफ़ायदा, वेमतलव का ।

७५९. **निरवार** (संज्ञा पु०) (सं०) निस्तार, छुटकारा, बचाव, फ़ैसला, निबटारा ।

७६०. **निरस** (वि०) (सं०) रसविहीन, वेस्वाद, वद-जायका, फीका, रूखा, सूखा, विरक्त, असार, निस्तत्व ।

७६१. **निरा** (वि०) (हिं०) विशुद्ध, खालिस, केवल, एकमात्र, निपट, नितान्त, एकदम, विलकुल ।

७६२. **निराकार** (वि०) (सं०) आकार-रहित, वदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा, कपटवेशी, विनम्र, लज्जालू (संज्ञा पु०) धर्मात्मा, ब्रह्म, आकाश ।

७६३. **निराधार** (वि०) (सं०) आधाररहित, बेबुनियाद, अयुक्त, मिथ्या, झूठ, तर्कहीन ।

७६४. **निरालंब, निरालम्ब** (वि०) (सं०) एकाकी, निराश्रय, मित्रशून्य, निराधार, बेसहारा, बेठिकाना ।

७६५. **निराला** (संज्ञा पु०) (हिं०) एकान्त स्थान, (वि०) एकान्त, निर्जन, अद्‌भुत, विलक्षण, अनूठा, अपूर्व, बढ़िया, बेजोड़, अनोखा ।

७६६. **निरीह** (वि०) (सं०) चुपचाप, विरक्त, उदासीन, बेचारा, दीन, सीधा-सादा, कामना-रहित, निर्दोष, शान्तिप्रिय, तटस्थ ।

७६७. **निरूपण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रकाश, निदर्शन, निर्णय ।

७६८. **निरोध** (संज्ञा पु०) (सं०) रोक, अवरोध, रुकावट, संयम, घेरा, नाश ।

७६९. **निर्जर** (संज्ञा पु०) (सं०) देवता, सुधा, अमृत ।

७७०. **निर्णय** (संज्ञा पु०) (सं०) निश्चय, फ़ैसला, (अँ०) जजमैंट ।

७७१. **निर्देश** (संज्ञा पु०) (सं०) आज्ञा, हुक्म, उल्लेख, वर्णन, कथन, निदेश ।

७७२. **निर्धन** (वि०) (सं०) धनहीन, दरिद्र, कंगाल, ग़रीब ।

७७३. **निर्बंध, निर्बन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) अड़चन, रुकावट, ज़िद्द, हठ, आग्रह ।

७७४. **निर्भर** (वि०) (सं०) अवलंबित, आश्रित, पूर्ण, पूरा, युक्त, (संज्ञा पु०) बेगार सेवक ।

७७५. **निर्मल** (वि०) (सं०) शुद्ध, पवित्र, निर्दोष, मलरहित, साफ़, स्वच्छ ।

७७६. **निर्मलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफ़ाई, स्वच्छता, पवित्रता, निष्कलंकता, शुद्धता ।

७७७. **निर्वाचन** (संज्ञा पु०) (सं०) चुनाव, (अँ०) इलैक्शन ।

७७८. **निर्वाण** (वि०) (सं०) बुझा हुआ, अस्त, डूबा हुआ, मृत, शान्त, धीमा, बाणरहित, निश्चल (संज्ञा पु०) बुझना, ठंडा होना, समाप्ति, अस्त, डूबना, शान्ति, मोक्ष, मुक्ति ।

७७६. **निर्वासन** (संज्ञा पु०) (सं०) वध, मार डालना, निकालना, विसर्जन, देश-निकाला।

७८०. **निर्वृत्ति** (संज्ञा स्त्री) (सं०) मोक्ष, शान्ति, आनन्द, मृत्यु।

७८१. **निर्व्याज** (वि०) (सं०) ईमानदार, सच्चा, निष्कपट, छल-रहित, निश्छल, बाधा-रहित, ब्याज-रहित, स्वार्थ-रहित।

७८२. **निलय** (संज्ञा पु०) (सं०) मकान, घर, आलय, विल, घोंसला।

७८३. **निवसन** (संज्ञा पु०) (हिं०) गाँव, घर, आवास, वस्त्र, स्त्री का अधोवस्त्र।

७८४. **निवास** (संज्ञा पु०) (सं०) रहने का स्थान, रिहायश, विश्राम-स्थान, घर, मकान, वस्त्र, कपड़ा।

७८५. **निवेश** (संज्ञा पु०) (सं०) विवाह, शिविर, डेरा, पड़ाव, छावनी, घर, मकान, प्रवेश, द्वार, धरोहर, सुपुर्दगी, प्रतिलिपि, अंकन, नक़्शा, भूषण, सजावट।

७८६. **निशंक** (वि०) (सं०) निर्भय, निडर, अभय, अकातर, अभीरु, निरातंक, निर्भीक।

७८७. **निशा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात, रात्रि, रजनी, निश, निशि, हरिद्रा, हल्दी, दारु-हल्दी।

७८८. **निशाकर** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्द्रमा, शशि, चाँद, मुरगा, कुक्कुट, महादेव, कपूर, निशाधीश, निशानाथ, निशापति, निशिनायक, निशिपालक।

७८९. **निशाचर** (संज्ञा पु०) (सं०) राक्षस, उल्लू, शृगाल, गीदड़, सर्प, चक्रवाक, भूत, चोर, महादेव, विल्ली, पिशाच, निशिचर।

७९०. **निशाचरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) राक्षसी, अभिसारिका, नायिका, वेश्या, कुलटा, पिशाचिनी।

७९१. **निशान** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) चिह्न, धब्बा, दाग़, पता, ठिकाना, लक्षण, ध्वजा, पताका, झंडा, संकेत।

७९२. **निशिदिन** (क्रिया वि०) (सं०) रातदिन, सदा, सर्वदा, हमेशा, निरन्तर, निशिवासर, अहर्निश।

७९३. **निशीथ** (संज्ञा पु०) (सं०) रात्रि, रात, आधी रात ।

७९४. **निश्चक्षु** (वि०) (सं०) नेत्रहीन, अंधा ।

७९५. **निश्चय** (संज्ञा पु०) (सं०) विश्वास, यकीन, दृढ़ संकल्प, पक्का विचार, पूरा इरादा, निर्णय, निश्चय, फ़ैसला ।

७९६. **निश्चल** (वि०) (सं०) अचल, अटल, स्थिर ।

७९७. **निश्चित** (वि०) (सं०) निर्णीत, तैशुदा, दृढ़, पक्का ।

७९८. **निषंग** (संज्ञा पु०) (सं०) तरकश, तूणीर, तूण, खड्ग ।

७९९. **निषेक** (संज्ञा पु०) (सं०) गर्भाधान, वीर्यपात, अपवित्रता, मैला पानी, सिंचन, आवपाशी, छिड़काव-बुरकाव, चुआव, झराव, बहाव, ढरकाव, रिसाव ।

८००. **निषेध** (संज्ञा पु०) (सं०) वर्जन, मनाही, रुकावट, बाधा ।

८०१. **निषेवण** (संज्ञा पु०) (सं०) सेवा, चाकरी, पूजा, अभ्यास, अभिनय, अनुराग, आसक्ति, निवास, परिचय, उपयोग ।

८०२. **निष्कर्म** (संज्ञा पु०) (सं०) निचोड़, सार, सारांश, निश्चय, तत्त्व, खुलासा ।

८०३. **निष्कलंक** (वि०) (सं०) निर्दोष, वेऐब ।

८०४. **निष्कृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निस्तार, छुटकारा, उपकार, प्रायश्चित्त, स्थानान्तरण, वचाव, असावधानी, बुरा चाल-चलन, गुंडापन, बदमाशी ।

८०५. **निष्क्रय** (संज्ञा पु०) (सं०) वेतन, तनख्वाह, भाड़ा, मजदूरी, विनिमय, बिक्री, सामर्थ्य, शक्ति, पुरस्कार, इनाम ।

८०६. **निष्क्रीति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मोक्ष, मुक्ति ।

८०७. **निष्ठ** (वि०) (सं०) स्थित, ठहरा हुआ, निष्ठा, श्रद्धा ।

८०८. **निष्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्थिति, ठहराव, निर्वाह, विश्वास, निश्चय, इति, समाप्ति नाश, उत्कृष्टता, निपुणता, योग्यता, सर्वांगपूर्णता, मृत्यु, याचना, कष्ट, पीड़ा, सन्ताप, चिन्ता, धर्म, देवता, श्रद्धा ।

८०९. **निष्ठुर,** (वि०) (सं०) कठिन, कड़ा, सख्त, क्रूर, वे-रहम, संगदिल,

नृशंस, बेलगाम, निर्लज्ज, तीव्र, तीक्ष्ण, उग्र, निर्दयी, दयाहीन, उग्रदण्ड, चांडाल, कर्कश, नदारुण, निष्करुण, पिशुन, बेदर्द, विषम, अकरुण, अदय, अभीक, निर्भीक, निर्दय।

८१०. **निष्ण** (वि०) (सं०) कुशल, निपुण, पटु, होशियार, ज्ञात, विशेषज्ञ, विज्ञ, पारंगत, श्रेष्ठतर, निष्णात।

८११. **निष्पत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समाप्ति, अन्त, पक्वावस्था, परिपाक, निश्चय, निर्धारण, निर्वाह, मीमांसा।

८१२. **निष्परिग्रह** (वि०) (सं०) रंडुआ, अविवाहित, कुँवारा, स्त्रीहीन।

८१३. **निष्प्रयोजन** (वि०) (सं०) प्रयोजनरहित, स्वार्थशून्य, व्यर्थ, निरर्थक, बेकार।

८१४. **निसबत** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सम्बन्ध, लगाव, मँगनी, तुलना, अपेक्षा, बजाय, मुकाबला।

८१५. **निसर्ग, निःसर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वभाव, प्रकृति, रूप, रूपाकृति, दान, सृष्टि।

८१६. **निसार** (संज्ञा पु०) (अ०) निछावर, न्योछावर, सदका, उतारा, समूह, बलिहार।

८१७. **निसेनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीढ़ी, जीना, सोपान।

८१८. **निस्तब्धता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) खामोशी, सन्नाटा, शान्तता, नीरवता।

८१९. **निस्तल** (वि०) (सं०) तलहीन, थाहरहित, गहरा, गोल, वृत्ताकार, नीचा, निम्न।

८२०. **निस्तार** (संज्ञा पु०) (सं०) छुटकारा, उद्धार, दोष-मोचन, निवृत्ति, बचाव।

८२१. **निस्पन्द, निस्पंद** (वि०) (सं०) स्थिर, निश्चल, निश्चेष्ट, स्तब्ध, चेष्टा-हीन, मूर्च्छित।

८२२. **निस्पंदन, निस्पन्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) स्थिरता, निश्चलता, स्तब्धता।

८२३. **निस्संदेह, निस्सन्देह, निःसन्देह** (क्रिया वि०) (सं०) अवश्य, ज़रूर, सचमुच, बेशक।

८२४. **निस्सार** (वि०) (सं०) सार-रहित, निस्तत्त्व।

८२५. **निहंग** (वि०) (हिं०) एकाकी, अकेला, अविवाहित, साधू, नंगा, निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म।

८२६. **निहार** (संज्ञा पु०) (सं०) कुहरा, पाला, ओस, बर्फ़, हिम, (अँ०) आइस

८२७. **निहोरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) अहसान, कृतज्ञता, विनति, प्रार्थना, अनुग्रह, (क्रिया वि०) कारण से, द्वारा, के लिए, वास्ते, निमित्त।

८२८. **नीका** (वि०) (हिं०) उत्तम, अच्छा, बढ़िया, स्वच्छ, (संज्ञा पु०) उत्तमता, अच्छापन, (संज्ञा स्त्री०) सिंचाई की नहर।

८२९. **नीच** (वि०) (सं०) तुच्छ, अधम, क्षुद्र, हठी, बुरा, निकृष्ट।

८३०. **नीति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ढंग, रीति, आचार-पद्धति, नय, राजविद्या, हिकमत, (अँ०) पालिसी।

८३१. **नीप** (संज्ञा पु०) (सं०) तलहटी, कदम्ब वृक्ष, अशोकवृक्ष, भूकदंभ वृक्ष, बन्धूक वृक्ष।

८३२. **नीयत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) आशय, मन्शा, इच्छा, संकल्प, विचार।

८३३. **नीर** (संज्ञा पु०) (सं०) जल, पानी, रस, अर्क।

८३४. **नीरज** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, मोती, जलजीव, कुट, कूट, शिव, महादेव।

८३५. **नीरव** (वि०) (सं०) निःशब्द, चुप, मौन, स्तब्ध, निस्तब्ध।

८३६. **नीरस** (वि०) (सं०) सूखा, शुष्क, रसहीन, फीका, अरुचिकर।

८३७. **नील** (संज्ञा पु०) (सं०) रंग, लांछन, कलंक, मंगलघोष, मंगल-शब्द, वटवृक्ष, बरगद, नीलम, इन्द्रनीलमणि, तालिशपत्र, विष, ज़हर।

८३८. **नीलकण्ठ** (संज्ञा पु०) (सं०) मोर, मयूर, चातक पक्षी, शंकर, गौरापक्षी, चटक, मूली ।

८३९. **नीलभ** (संज्ञा पु०) (सं०) बादल, चन्द्रमा, मधुमक्खी ।

८४०. **नीलाम्बर** (संज्ञा पु०) (सं०) नीला वस्त्र, तालिशपत्र, बलदेव, शनिश्चर, राक्षस, नीलाभ, नीला आकाश ।

८४१. **नीलांजसा** (संज्ञा पु०) (सं०) बिजली, विद्युत्, अप्सरा, नदी ।

८४२. **नींव** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जड़, मूल, आधार, नीव, नेई, आधार-शिला, आरम्भ ।

८४३. **नीशार** (संज्ञा पु०) (सं०) कम्बल, परदा, कनात, मसहरी, गर्म कपड़ा ।

८४४. **नीहार** (संज्ञा पु०) (सं०) कोहरा, पाला, बर्फ़, हिम, नीहारिका ।

८४५. **नुक़ता** (संज्ञा पु०) (अ०) बिन्दु, बिन्दी, फबती, उक्ति, ऐब, दोष, परदा, तिलहारी ।

८४६. **नुक़सान** (संज्ञा पु०) (अ०) कमी, घाटा, क्षति, हानि, बिगाड़, खराबी, दोष, अवगुण, विकार ।

८४७. **नुकीला** (वि०) (हिं०) नोकदार, बाँका, तिरछा, सजीला ।

८४८. **नुक्स** (संज्ञा पु०) (अ०) दोष, ऐब, खराबी, बुराई, त्रुटि, कसर ।

८४९. **नुमायश** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) दिखावट, दिखावा, प्रदर्शनी, तड़क-भड़क, सज-धज, बन-ठन, ठाट-बाट ।

८५०. **नूतन** (वि०) (सं०) नया, नवीन, ताज़ा, अभिनव, अर्वाचीन ।

८५१. **नूपुर** (संज्ञा पु०) (सं०) पैंजनी, घूँघरू, पैजनिया ।

८५२. **नूर** (संज्ञा पु०) (अ०) ज्योति, प्रकाश, आभा, कान्ति, शोभा, श्री, ईश्वर ।

८५३. **नृप** (संज्ञा पु०) (सं०) राजा, नरपति, नृपपति, नृपाल ।

८५४. **नृपप्रिय** (संज्ञा पु०) (सं०) लाल प्याज़, सरकंडा, आम, तोता, राजसुआ ।

८५५. **नृशंस** (वि०) (सं०) क्रूर, निर्दय, अनिष्टकारी, अत्याचारी, कठोर, ज़ालिम ।

८५६. **नेक** (वि०) (फ़ा०) अच्छा, भला, उत्तम, शिष्ट, सज्जन, थोड़ा, तनिक, ज़रा, किंचन, कुछ ।

८५७. **नेकी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) भलाई, उपकार, सज्जनता, भलमनसाहत, शिष्टता, उत्तमता ।

८५८. **नेजा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) भाला, बरछा, साँग, निशान ।

८५९. **नेड़े** (क्रिया वि०) (हिं०) निकट, पास नज़दीक, नेरे, समीप ।

८६०. **नेत** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) ठहराव, व्यवस्था, प्रबन्ध, आयोजन, निर्धारण, निश्चय, संकल्प, इरादा, नेता ।

८६१. **नेता** (संज्ञा पु०) (हिं०) अगुआ, नायक, प्रभु, स्वामी, निर्वाहक, प्रवर्त्तक, नींव, विष्णु, अग्रणी, मुखिया, प्रबन्धक ।

८६२. **नेतृ** (संज्ञा पु०) (सं०) नेता, गुरु, प्रधान, अगुआ, संचालक, व्यवस्थापक, अग्रगन्ता, मालिक, मुखिया, स्वामी, अभिनेता ।

८६३. **नेत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) आँख, रेशमी वस्त्र, जड़, मूल, वृक्ष, नाड़ी, गाड़ी, सवारी, दो (संख्या), नक्षत्र, तारा, कटीटा ।

८६४. **नेत्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अग्रगामिनी, शिक्षयित्री, पथप्रदर्शिका, स्त्री नेता, अगुआ, नाड़ी, धमनी, लक्ष्मी, नदी ।

८६५. **नेपथ्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्दे के पीछे, वेश-स्थान, शृंगार, भूषण, सजावट ।

८६६. **नेम** (संज्ञा पु०) (सं०) काल, समय, अवधि, प्राकार, दीवार, कैतव, खंड, टुकड़ा, छल, आधा, अर्द्ध, अन्य, और, सायंकाल, मूल, जड़, गर्त्त, गढ़ा, नियम, कायदा, रीति, दस्तूर, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास ।

८६७. **नेवा** (संज्ञा पु०) (हिं०) रीति, रिवाज, दस्तूर, कहावत, लोकोक्ति, समान, चुप, मौन, (अव्यय) नाईं, तरह, भाँति ।

८६८. **नेस्ती** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) अस्तित्व-हीनता, आलस, बरबादी, विनाश ।

८६६. **नेह** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) स्नेह, प्रीति, प्यार, प्रेम, चिकनाई, तेल घी, घृत ।

८७०. **नैतिक** (वि०) (*सं०*) नीतियुक्त, नीति-सम्बन्धी ।

८७१. **नैन** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) नयन, नेत्र, मक्खन, नवनीत ।

८७२. **नैर** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) शहर, नगर, देश, जनपद, प्रदेश ।

८७३. **नैष्ठिक** (वि०) (*सं०*) निष्ठायुक्त, निष्ठावान्, अन्तिम, आख़ीर, स्पष्ट, पक्का, निर्णीत, अवगत, परिचित, सर्वोच्चपूर्ण, निर्दिष्ट, सतत, दृढ़ ।

८७४. **नैसर्गिक** (वि०) (*सं०*) स्वभावानुकूल, स्वाभाविक, प्रकृतिजन्य प्राकृतिक, परम्परागत ।

८७५. **नैहर** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) मायका, पीहर ।

८७६. **नोकझोंक** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) बनाव-सिंगार, सजावट, ठाट-बाट तमक, तेज, व्यंग, ताना, आतंक, दर्प, आक्षेप, प्रतिद्वन्द्विता ।

८७७. **नोटिस** (संज्ञा पु०) (*अँ०*) विज्ञप्ति, सूचना, इश्तिहार, विज्ञापन

८७८. **नोदन** (संज्ञा पु०) (*सं०*) प्रेरणा, हाँकना, कोड़ा, खंडन, पैना प्रतोद ।

८७९. **नोना** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) लोनी मिट्टी, शरीफ़ा, सीताफल, आत (वि०) नमक मिला, खारा, लावण्यमय, सलोना, सुन्दर, अच्छा, बढ़िया ।

८८०. **नोहर** (वि०) (*हिं०*) अलभ्य, दुर्लभ, अजीब, अनोखा, अद्‌भुत

८८१. **नौकर** (संज्ञा पु०) (*फ़ा०*) भृत्य, चाकर, सेवक, वैतनिक कर्मचारी, ख़िदमतगार ।

८८२. **नौबत** (संज्ञा स्त्री०) (*फ़ा०*) पारी, बारी, हालत, दशा, संयोग शहनाई ।

८८३. **न्यय** (संज्ञा पु०) (*सं०*) हानि, नुकसान, नाश, बरबादी ।

८८४. **न्याय** (संज्ञा पु०) (*सं०*) इन्साफ़, उचित, वाजिब, निर्णय, निपटारा, फ़ैसला ।

८८५. **न्याय्य** (वि०) (*सं०*) न्याययुक्त, न्याय-संगत, उपयुक्त, ठीक उचित ।

८८६. **न्यारा** (वि०) (हिं०) अलग, दूर, जुदा, और, अन्य, अनोखा, निराला, अजीव, अद्भुत।

८८७. **न्याव** (संज्ञा पु०) (हिं०) नियम, नीति, आचरण-पद्धति, उचित-पक्ष, कर्त्तव्य-निर्धारण, विवेक, वाजिब, इन्साफ़, निपटारा, निर्णय, फ़ैसला।

८८८. **न्यास** (संज्ञा पु०) (सं०) स्थापना, रखना, धरोहर, थाती, संन्यास, त्याग, अर्पण, (अं०) ट्रस्ट।

८८९. **न्यून** (वि०) (सं०) अल्प, कम, थोड़ा, हल्का, क्षुद्र, नीच।

८९०. **न्योता** (संज्ञा पु०) (हिं०) बुलावा, निमन्त्रण, (अं०) इन्वीटेशन।

प

८९१. **पंक** (संज्ञा पु०) (सं०) कीचड़, कीच, लेप।

८९२. **पंकिल** (वि०) (सं०) गंदला, मैला, मलिन, मलीन।

८९३. **पंक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) श्रेणी, कतार, लकीर, पंगत, रेखा, पीढ़ी।

८९४. **पंख** (संज्ञा पु०) (हिं०) डैना, पर, पखौटा, पखौआ।

८९५. **पंखी** (संज्ञा पु०) (हिं०) पक्षी, चिड़िया, पंखड़ी, पतंगा, पांखी, छोटा पंखा।

८९६. **पंगत** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पांत, पंक्ति, पंगती, कतार, भोज, समाज, सभा।

८९७. **पंगु** (वि०) (सं०) लूला, पंगुल, लँगड़ा, पंगुक, पादहीन।

८९८. **पंच** (संज्ञा पु०) (सं०) पाँच (संख्या), समुदाय, पंचायत, सर्व-साधारण, जन, जनता, लोक।

८९९. **पंचजनीन** (संज्ञा पु०) अभिनयकर्त्ता, अभिनेता, मसखरा, विदूषक, भाँड।

९००. **पंचम** (वि०) (सं०) पाँचवाँ, सुन्दर, रुचिर, दक्ष, कुशल, निपुण, (संज्ञा पु०) संभोग, मैथुन, पाँचवाँ स्वर।

९०१. **पंचमुखी** (वि०) (सं०) पाँच मुख वाला, (संज्ञा स्त्री०) वासा, जवा, अड़ूसा, सिंही, पार्वती (संज्ञा पु०) शिव।

९०२. **पंचांग** (संज्ञा पु०) (सं०) पत्रा, पंचकल्याण, पंचभद्र, कछुआ, कच्छप।

९०३. **पंचानन** (वि०) (सं०) पंचमुखी, शिव, सिंह, पंचाल।

९०४. **पंजर** (संज्ञा पु०) (सं०) कंकाल, ठठरी, शरीर, देह, पिंजड़ा, कलियुग, कोलकंद।

९०५. **पंडा, पण्डा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पुजारी, घाटिया, रसोइया, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विवेक, ज्ञान, विवेकात्मिका बुद्धि।

९०६. **पंडित, पण्डित** (वि०) (सं०) विद्वान, बुद्धिमान्, कुशल, निपुण, चतुर, योग्य, शास्त्रज्ञ, (संज्ञा पु०) ब्राह्मण।

९०७. **पंडु, पण्डु** (वि०) (सं०) सफ़ेद, श्वेत, पीला, मटमैला।

९०८. **पंथ, पन्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) मार्ग, रास्ता, राह, ढंग, धर्म, सम्प्रदाय, मत।

९०९. **पंथी, पन्थी** (संज्ञा पु०) (हिं०) पथिक, राही, बटोही, मतानुयायी।

९१०. **पकड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पकड़ना, ग्रहण, भिड़न्त, हाथापाई।

९११. **पकड़ना** (क्रिया) (हिं०) थामना, गहना, ग्रहण करना, धरना, बाँधना, काबू करना, गिरफ़्तार करना, स्थिर करना, रोकना, टोकना, ग्रसना, घेरना, ढूँढ़ना।

९१२. **पक्का** (वि०) (हिं०) पुष्ट, अनुभवी, तजुरबेकार, मजबूत, दृढ़, निपुण, निश्चित, अभ्यस्त, प्रामाणिक।

९१३. **पक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) दल, पार्टी, फ़ौज, सेना, बल, सखा, सहायक, साथी, डैना, पंख, पर, शर, महीने का पक्ष, दीवार, दीवाल, प्रतिउत्तर, घर, मकान, गृह, सामीप्य, पड़ोस, कोष्ठिक, शुद्धता, सर्वाङ्गपूर्णता, कड़ा, कंगन, महाकाल, शिव।

९१४. **पक्षाघात** (संज्ञा पु०) (सं०) वातरोग, अर्द्धांगरोग, लकवा, फ़ालिज।

९१५. **पक्षीराज** (संज्ञा पु०) (सं०) पक्षीपति, पक्षीसिंह, पक्षीन्द्र, पक्षीश्वर, गरुड़, पक्षी।

९१६. **पख** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) शर्त, अड़ंगा, झगड़ा, बखेड़ा, दोष, त्रुटि, नुक्स।

९१७. **पग** (संज्ञा पु०) (*सं०*) पैर, पाँव, पाद, डग, पद, कदम, फाल, (*हिं०*) पगड़ी।

९१८. **पगड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) पाग, साफ़ा, उष्णीष, शिरस्त्राण, पगिया, नज़राना।

९१९. **पचड़ा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) झंझट, बखेड़ा, प्रपंच, पँवारा।

९२०. **पचत** (संज्ञा पु०) (*सं०*) इन्द्र, सूर्य, अग्नि।

९२१. **पछतावा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) पछताव, पश्चात्ताप, अनुताप, सन्ताप।

९२२. **पट** (संज्ञा पु०) (*सं०*) वस्त्र, कपड़ा, परदा, चिक, छत, छावन, छप्पर, चिरोंजी, कपास, शर, वाण, सिंहासन, तुरन्त, फ़ौरन।

९२३. **पटना** (क्रिया) (*हिं०*) बनना, तै हो जाना, बैठ जाना, निर्वाह होना।

९२४. **पटल** (संज्ञा पु०) (*सं०*) छत, छान, छप्पर, पर्दा, आवरण, बुरका, घूँघट, पिटारा, पटरा, लावलश्कर, लवाजमा, परिच्छेद, तिलक, टीका, ढेर, समूह, टोकरी, अँवार।

९२५. **पटह** (संज्ञा पु०) (*सं०*) नगाड़ा, दुन्दुभ, डंका, मृदंग, तबला, बड़ा ढोल।

९२६. **पटा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) अधिकार-पत्र, पट्टा, सनद, लेन-देन, सौदा, क्रय-विक्रय, चौड़ी लकीर, धारी, चटाई, पटरा, पीढ़ा।

९२७. **पटाका** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) आतिशबाजी की वस्तु, तमाचा, थप्पड़, चपत, (संज्ञा स्त्री०) भड़कीली युवती।

९२८. **पटिम** (संज्ञा पु०) (*सं०*) चातुरी, निपुणता, तीव्रता, क्षारपन, सख्ती, कड़ाई, रूखापन, उग्रता, प्रचंडता।

९२९. **पटिया** (संज्ञा स्त्री०) (*सं०*) चौरस टुकड़ा, चौरस शिलाखंड, फलक, छोटा तख्ता, पाटी, माँग, पट्टी, हेंगा, पाटा, तख्ती।

९३०. **पटी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पर्दा, वस्त्र, मोटा कपड़ा, कनात, रंगीन वस्त्र ।

९३१. **पटु** (वि०) (सं०) चतुर, निपुण, योग्य, कुशल, दक्ष, चालाक, होशियार, चरपरा, तीखा, कुशाग्र बुद्धि, प्रचंड, उग्र, उद्देश्योपयोगी, स्वभावतः, उत्सुक, प्रबल, निष्ठुर, नृशंस हृदय, धूर्त, मक्कार, छलिया, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित, क्रियाशील, मकबूल, सुन्दर, मनोहर, प्रकाशित, फूँका हुआ, खुला हुआ, नग्न, भयंकर, बड़बोला, बेलगाम, (संज्ञा पु०) कुकुरमुत्ता, छत्ता, नमक, पांशुलवण, पांगानोन, परवल, करेला, चीनी कपूर, जीरा, नकछिकनी ।

९३२. **पटुता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रवीणता, निपुणता, होशियारी, चतुराई, चालाकी ।

९३३. **पट्ट** (संज्ञा पु०) (सं०) पट्टी, पट्टा, पटिया, तख्ती, किरीट, मुकुट, कलंगी, अर्जी, रेशम, साफ़ा, पगड़ी, मंडील, सिंहासन, तख्त, कुर्सी, ढाल, चौराहा, नगर, कस्बा, (वि०) मुख्य, प्रधान ।

९३४. **पट्टा** (संज्ञा पु०) (सं०) अधिकार-पत्र, सनद, पीढ़ी, चपरास, कमरबन्द, पेटी, (अं०) लीज़ ।

९३५. **पट्टी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तख्ती, पटिया, पाटी, पाठ, सबक, शिक्षा, उपदेश, सिखावन, भुलावा, सलाह, चकमा, बहकावा, झाँसा, दम, किनारी, पंक्ति, पाँति, नेग ।

९३६. **पट्ठा** (संज्ञा पु०) (हिं०) जवान, हृष्ट-पुष्ट, तरुण, नवयुवक, पाठा, अखाड़िया, कुश्तीबाजी, स्नायु ।

९३७. **पड़ता** (संज्ञा पु०) (हिं०) दाम, लागत, दर, शरह, औसत ।

९३८. **पड़ताल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अनुसंधान, खोज, चैकिंग, जाँच ।

९३९. **पड़ना** (क्रि०) (हिं०) गिरना, पतित होना, दाखिल होना, पहुँचना, प्रवेश करना, ठहरना, टिकना, प्राप्त होना, मिलना, आराम करना, बीमार होना ।

९४०. **पढ़ना** (क्रि०) (हिं०) उच्चारण करना, बाँचना, अध्ययन करना, कहना, रटना, मंत्र फूँकना, जादू करना।

९४१. **पढ़ाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अध्ययन, विद्याभ्यास, पठन, अध्यापन।

९४२. **पण** (संज्ञा पु०) (सं०) दाँव, जूआ, द्यूत, शर्त, मजदूरी, भाड़ा, पुरस्कार, इनाम, मूल्य, दाम, सम्पत्ति, सौदा, वणिक्, वनिज, व्यवसाय, व्यापार, मकान, घर, (अँ०) कंडीशन, टर्म।

९४३. **पण्य** (संज्ञा पु०) (सं०) सौदा, माल, व्यापार, व्यवसाय, रोजगार, हाट, बाजार, दूकान।

९४४. **पतंग, पतङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) चिड़िया, पक्षी, सूर्य, सूरज, रवि, टिड्डी, मधुमक्षिका, शलभ, परवाना, भुनगा, फतिंगा, पतंगा, कंदुक, गेन्द, नौका, नाव, शोला, चिनगारी, शरीर, गुड्डी, कनकौआ, चंग।

९४५. **पतंगा** (संज्ञा पु०) (हिं०) परदार कीड़ा, स्फुलिंग, चिंगारी, फतिंगा, अग्निकण, गुल, फूल।

९४६. **पत** (संज्ञा पु०) (हिं०) पति, खसम, खाविन्द, स्वामी, मालिक, प्रभु, (संज्ञा स्त्री०) कानि, लज्जा, प्रतिष्ठा, साख, आबरू, इज्जत, एतबार।

९४७. **पतन** (संज्ञा पु०) (सं०) गिरना, नीचे जाना, डूबना, अधोगति, अवनति, तबाही, नाश, मृत्यु, पाप, पातक, उड़ान, उड़ना।

९४८. **पतला** (वि०) (हिं०) कृश, झीना, हलका, तरल, अशक्त, शक्तिहीन, निर्बल, कमजोर, हीन।

९४९. **पतवार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कर्ण, कन्हर, पतवाल, सुकान।

९५०. **पता** (संज्ञा पु०) (हिं०) खोज, अनुसंधान, जानकारी, अभिज्ञता, सुराग, टोह, गूढ़तत्त्व, रहस्य, भेद, (अँ०) एड्रेस।

९५१. **पताका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) झंडा, ध्वजा, ध्वज, फरहरा, (अँ०) फ्लैग।

९५२. **पति** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वामी, प्राणनाथ, प्राणेश्वर, नाथ,

कान्त, भर्तार, मालिक, शौहर, दूल्हा, भर्ता, बल्लभ, वर, प्रियतम, प्राणपति, प्राणप्रिय, प्राण-वल्लभ, प्राणाधार, आशिक, प्रिय, प्रीतम, खाविन्द, गुसाईं, नाह, साईं, साजन, सैयाँ, हृदयेश, हृदयेश्वर, पीव, खसम, प्रभु, अधिपति, शिव, ईश्वर।

९५३. **पतित** (वि०) (सं०) आचारच्युत, धर्मभ्रष्ट, जातिच्युत, नीतिभ्रष्ट, महापापी, दुराचारी, अति-पातकी, अधम, नीच, समाज-वहिष्कृत, मलीन।

९५४. **पतिव्रता** (वि०) (सं०) सती, साध्वी, पतिभक्ता।

९५५. **पतेर** (संज्ञा पु०) (हिं०) चिड़िया, पक्षी, गड्ढा, गर्त्त।

९५६. **पत्तन** (संज्ञा पु०) (सं०) नगर, नगरी, शहर, कस्बा, मृदंग, (अँ०) टाऊन, पोर्ट।

९५७. **पत्ता** (संज्ञा पु०) (हिं०) पत्र, दल, पर्ण, पत्रक।

९५८. **पत्ती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) साँझा, भाग, हिस्सा, अंश, दल, भाँग, छोटा पत्ता, वस्त्र।

९५९. **पत्थर** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रस्तर, पाषाण, शिलाखंड, ओला, इन्द्रोपल, बिनौली, रत्न, पन्ना, हीरा।

९६०. **पत्नी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भार्या, दयिता, कलत्र, वधू, सहधर्मिणी, दार, जाया, गृहिणी, पाणिगृहीता, जनि, सहचरी, साथिन, सजनी, प्रियतमा।

९६१. **पत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) दल, पर्ण, चिट्ठी, खत, समाचार-पत्र, अखबार, पन्ना, सफ़ा, पृष्ठ, चद्दर, पत्तर, वरक, पर, पक्ष, तेजपत्ता, चिड़िया, पखेरू, पँखुड़ी।

९६२. **पत्रा** (संज्ञा पु०) (हिं०) तिथिपत्र, पंचांग, जन्त्री, वर्क, पन्ना, पृष्ठ, सफ़ा।

९६३. **पत्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चिट्ठी, खत, लिपिपत्रिका, दोना, धमासा, जवसा, ताड़, महातेजपत्र, (वि०) पत्रयुक्त (संज्ञा पु०) बाण, तीर, पक्षी, श्येन, बाज़, वृक्ष, पेड़, पर्वत, पहाड़ी, रथ।

९६४. **पथ** (संज्ञा पु०) (सं०) मार्ग, रास्ता, राह, रीति, आचरण, ढंग, पथ्य, आहार।

९६५. **पथिक** (संज्ञा पु०) (सं०) यात्री, राही, राहगीर, मुसाफ़िर, पंथी, पथिल, पथि।

९६६. **पथ्य** (संज्ञा पु०) (सं०) आहार, नमक, हित, कल्याण, मंगल, ओषधि, औषध, दवाई।

९६७. **पथ्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हरीतकी, हड़, वनककोड़ा, सेंधनी, चिरमिटा, गंगा, मार्ग, रास्ता।

९६८. **पद** (संज्ञा पु०) (सं०) काम, व्यवसाय, पैर, पाँव, त्राण, रक्षा, चिह्न, निशान, शब्द, प्रदेश, वस्तु, चीज, श्लोक, पद, उपाधि, मोक्ष, निर्वाण, गीत, भजन, स्थान, (अँ०) पोस्ट।

९६९. **पदक, पदिक** (संज्ञा० पु०) (सं०) तमगा, चिह्न, (अँ०) मैडिल।

९७०. **पदवी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पद्धति, परिपाटी, तरीका, रास्ता, मार्ग, आदेश उपाधि, ख़िताब,।

९७१. **पद्म** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, पदम, पुरष्कार, मूल, सीसा।

९७२. **पद्मा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, लौंग, लवंग।

९७३. **पद्मासन** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, शिव, सूर्य, योगासन।

९७४. **पद्मिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कमलिनी, कमल-समुदाय, कमलनाल, हथिनी, सर्वोत्तम स्त्री।

९७५. **पद्य** (संज्ञा पु०) (सं०) कविता, छन्द, शूद्र, शठता (वि०) अन्तिम, शब्द-सम्बन्धी, पाँव-सम्बन्धी।

९७६. **पधारना** (क्रि०) (हिं०) जाना, गमन, आना, चलना, सादर बिठलाना, प्रतिष्ठित करना।

९७७. **पन** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रतिज्ञा, प्रण, संकल्प, वचन, अहद, अवस्था।

९७८. **पनवाड़ी** (संज्ञा पु०) (हिं०) तमोली, बरेजा, पनवारी।

९७९. **पनाह** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) शरण, त्राण, बचाव, आड़, रक्षा स्थान।

९८०. **पन्ना** (संज्ञा पु०) (हिं०) मरकत, रत्न, पृष्ठ, वरक।

९८१. **पपीहा** (संज्ञा पु०) (सं०) चातक, मेघजीवन, तोकक, सारंग, स्तोकक।

९८२. **पय** (संज्ञा पु०) (सं०) दूध, क्षीर, दुग्ध, जल, पानी, अन्न।

९८३. **पयोद** (संज्ञा पु०) (सं०) मेघ, बादल, पयोधर, वारिधर।

९८४. **पयोधर** (संज्ञा पु०) (सं०) स्तन, बादल, नारियल, नागर-मोथा, पर्वत, पहाड़, आक, मदार, तलाब, तड़ाग, कसेरू, दुग्ध-वृक्ष, समुद्र, ऊख।

९८५. **पर** (वि०) (सं०) दूसरा, अन्य, और, ग़ैर, पराया, अतिरिक्त, परलोक, भिन्न, जुदा, अलावा, दूर, अलग, तटस्थ, श्रेष्ठ, प्रवृत्त, लीन, तत्पर, (अव्यय) परन्तु, किन्तु, लेकिन।

९८६. **परख** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) जाँच, परीक्षा, पहचान, (अँ०) टैस्ट।

९८७. **परचा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) चिट, कागज़, अख़बार, प्रश्न-पत्र, पत्र, पुरज़ा, ख़त, चिट्ठी, जानकारी, परिचय, सबूत, प्रमाण, परख, जाँच, परीक्षा।

९८८. **परछाँई** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिरूप, प्रतिबिम्ब, (अँ०) अक्स।

९८९. **परजना** (क्रिया) (हिं०) जलना, दहकना, सुलगना, क्रुद्ध होना, कुढ़ना, डाह करना, ईर्ष्या करना।

९९०. **परतन्त्र** (वि०) (सं०) गुलाम, परालम्बी, पराश्रित, परमुखापेक्षी, पराधीन, परवश, अधीन।

९९१. **परत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) पहचान, भेद, दूरी, नतीजा, परिणाम, शत्रुता, वैर, (अँ०) रिज़ल्ट।

९९२. **परत** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सतह, स्तर, तह, तल।

९९३. **परदा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) आड़, व्यवधान, ओट, ओझल, छिपाव, तह, तल, परत, पर्दा-प्रथा।

९९४. **परनाला** (संज्ञा पु०) (हिं०) पनाला, मोरी, नाबदान।

९९५. **परंतु, परन्तु** (अव्यय) (हिं०) पर, तो भी, मगर, किन्तु लेकिन।

९९६. **परंपरा, परम्परा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अविच्छिन्न क्रम, सिलसिला, अनुक्रम, पूर्वापर क्रम, वंश-परम्परा, मर्यादा, सन्तति, औलाद, (अँ०) ट्रेडीशन।

९९७. **परपुरुष** (संज्ञा पु०) (सं०) ग़ैर, अजनबी, अपरिचित, परब्रह्म, विष्णु, अन्य व्यक्ति।

९९८. **परम** (वि०) (सं०) सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य, आद्य, आदिम, (अँ०) एवसोल्यूट।

९९९. **परमाणु** (संज्ञा पु०) (सं०) अणु, परमाणु वम, (अँ०) एटम।

१०००. **परमार्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्वोत्कृष्ट या सर्वोच्चसत्य आत्मज्ञान, उत्तम-भाव, उत्तम सम्पत्ति, परोपकार पर-कल्याण।

१००१. **परमार्थी** (वि०) (सं०) तत्वजिज्ञासु, मुमुक्षु, परोपकारी।

१००२. **परवा** (संज्ञा पु०) (हि०) कसोरा, (संज्ञा स्त्री०) खटका, आशंका, चिन्ता, व्यग्रता, आसरा, भरोसा, सहारा।

१००३. **परवान** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रमाण, सबूत, यथार्थ बात, सत्य बात, सीमा, अवधि, हद।

१००४. **परवाना** (संज्ञा पु०) (हिं०) आज्ञापत्र, फतिंगा, पतंगा, आशिक, प्रेमी।

१००५. **परवाह** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) चिन्ता, व्यग्रता, आशंका, खटका, आसरा, भरोसा, ध्यान, ख्याल।

१००६. **परस** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्पर्श, छूना, पत्थर, स्पर्श-मणि।

१००७. **परसा** (संज्ञा पु०) (हिं०) परशु, फरसा, कुठार, कुल्हाड़ा।

१००८. **पराकाष्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चरम सीमा, सीमान्त, अन्त, हद, बेइन्तहा।

१००९. **पराक्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) शक्ति, बल, पुरुषार्थ, पौरुष, उद्योग, ताकत।

१०१०. **पराक्रमी** (वि०) (सं०) बलवान्, बलिष्ठ, बहादुर, वीर, उद्योगी, पुरुषार्थी, उद्यमी।

१०११. **पराग** (संज्ञा पु०) (सं०) पुष्प-रज, धूल, धूलि, रज, चन्दन, उपराग, कपूर-रज, ख्याति।

१०१२. **पराजित** (वि०) (सं०) परास्त, विजित, हारा हुआ, पराभूत, ध्वस्त, नष्ट, निरस्कृत।

१०१३. **पराभव** (संज्ञा पु०) (सं०) हार, पराजय, तिरस्कार, मान-ध्वंस, विनाश।

१०१४. **परामर्श** (संज्ञा पु०) (सं०) पकड़ना, खींचना, स्मृति, याद, विवेचन, विचार, निर्णय, अनुमान, युक्ति, सलाह, मन्त्रणा, (अँ०) कन्सल्टेशन।

१०१५. **परायण** (वि०) (सं०) गत, निरत, प्रवृत्त, लीन, मग्न, तत्पर, (संज्ञा पु०) आश्रय, विष्णु।

१०१६. **पराया** (वि०) (हि०) दूसरा, और, अन्य, ग़ैर, अनात्मीय।

१०१७. **परावर्त्त** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रत्यावर्त्तन, बदलौअल, पलटाव, अदल-बदल, विनिमय, लेन-देन, परावर्त्तन, पुनः प्राप्ति।

१०१८. **पराहत** (वि०) (सं०) आक्रान्त, ध्वस्त, निराकृत, खंडित।

१०१९. **परिकर** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुगत, सहचर, लवाजमा, आरम्भ, शुरुआत, तैयारी, समूह, संग्रह, भीड़, कमर-बन्द, कमर-पट्टी, फैसला, निर्णय, पर्दुका, पलंग, पर्यंक।

१०२०. **परिकल्पन** (संज्ञा पु०) (सं०) मनन, चिन्तन, रचना, आविष्कार, बनावट, बँटवारा, विभाजन।

१०२१. **परिकर्मा** (संज्ञा पु०) (सं०) परिचारक, सेवक, नौकर, भृत्य।

१०२२. **परिक्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) टहलना, क्रम, सिलसिला, घूमना, दौरा, (अँ०) टूर।

१०२३. **परिक्रमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) घूमना, फेरी, चक्कर।

१०२४. **परिक्रय**. (संज्ञा पु०) (सं०) मजदूरी, भाड़ा, क्रय, मोल, खरीद।

१०२५. **परिक्षेप** (संज्ञा पु०) (सं०) भ्रमण, टहलना, घेरना, छेकना, फैलाना, बिखेरना।

१०२६. **परिगत** (वि०) (सं०) गत, गया, गुजरा, मृत, ज्ञात, भ्रान्त, विस्मृत ।

१०२७. **परिगलित** (वि०) (सं०) पिघला हुआ, गला हुआ, डूबा हुआ, टकराया हुआ, बहा हुआ ।

१०२८. **परिग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिग्रह, ग्रहण, दान, पाना, संग्रह, स्वीकार, अंगीकार, विवाह, परिजन, परिवार-सम्बन्धी, भार्या, पत्नी, स्त्री, विष्णु, सूर्यग्रहण, जड़, मूल, अनुग्रह, मेहरबानी, शपथ, कसम ।

१०२९. **परिघ** (संज्ञा पु०) (सं०) गँड़ासा, लोहाँगी, अर्गला, अगड़ी, मुद्गर, शूल, भाला, बरछी, कलश, घड़ा, घोड़ा, गोपुर, फाटक, शेषनाग, जल, चन्द्र, सूर्य, नदी, घर, तीर, पर्वत, वज्र, स्थल, बाधा, प्रतिबन्ध ।

१०३०. **परिचय** (संज्ञा पु०) (सं०) ज्ञान, अभिज्ञता, अवगति, प्रमाण, पहचान, लक्षण, जान-पहचान, (अँ०) इंट्रोडक्शन ।

१०३१. **परिचर** (संज्ञा पु०) (सं०) सेवक, नौकर, चाकर, टहलुआ, परिचारक, सुश्रुषाकारी, सेनापति, दण्डनायक, (अँ०) सर्वेन्ट ।

१०३२. **परिचर्या, परिचार** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सेवा, टहल, ख़िदमत, (अँ०) सरविस ।

१०३३. **परिच्छेद** (संज्ञा पु०) (सं०) अध्याय, प्रकरण, अवधि, हद, सीमा, विभाग, इयत्ता, निर्णय, निश्चय, फ़ैसला, बँटवारा, विभाजन ।

१०३४. **परिणत** (वि०) (सं०) रूपान्तरित, परिवर्तित, प्रौढ़, पुष्ट पक्का ।

१०३५. **परिणति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नमन, झुकाव, अवनति, बदलना, परिणयन, विकृति, पक्वता, पुष्टि, पूर्णता, परिणाम, नतीजा, वृद्धावस्था, अन्त, समाप्ति अवसान ।

१०३६. **परिणय** (संज्ञा पु०) (सं०) विवाह, शादी, पाणिग्रहण, ग्रन्थि-बन्धन, प्रेम (अँ०) मैरिज (वि०) परिणीत ।

१०३७. **परिणाम** (संज्ञा पु०) (सं०) विकृति, नतीजा, फल, पाक, विकास, बाढ़, वृद्धि, समाप्ति, अवसान, (अँ०) रिज़ल्ट ।

१०३८. **परिणायक** (संज्ञा पु०) (सं०) नेता, पथ-प्रदर्शक, सेनापति, स्वामी, पति, भर्त्ता।

१०३९. **परितप्त** (वि०) (सं०) गर्म, जलता हुआ, तपा हुआ, दुःखित, सन्तप्त, पीड़ित, व्यथित, क्लेशयुक्त।

१०४०. **परिताप** (संज्ञा पु०) (सं०) जलन, आँच, ताप, दुःख, क्लेश, गर्मी, पीड़ा, व्यथा, सनन्ताप, सन्ताप, रंज, पश्चात्ताप, पछतावा, भय, डर, कँपकँपी, दर्द, तकलीफ़।

१०४१. **परितुष्ट** (वि०) (सं०) सन्तुष्ट, प्रसन्न, आल्हादित, हर्षित, खुश।

१०४२. **परितोष** (संज्ञा पु०) (सं०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, खुशी, (अँ०) सैटिस्फैक्शन

१०४३. **परिवर्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) आक्रमण, चढ़ाई, बलात्कार,, हत्तक, अपमान, कुवाच्य, दुर्व्यवहार।

१०४४. **परिधान** (संज्ञा पु०) (सं०) वस्त्र, पहनावा, पहरावा, पोशाक, वेश।

१०४५. **परिनिष्ठा** (संज्ञा स्त्री) (सं०) चरम सीमा, चरमावस्था, पराकाष्ठा, पूर्णता, सर्वांगपूर्णता।

१०४६. **परिपक्व** (वि०) (सं०) पूर्ण विकसित, प्रौढ़, बहुदर्शी, निपुण, प्रवीण, कुशल, पुख्ता, तजुरबेकार।

१०४७. **परिपाक** (संज्ञा पु०) (सं०) पाचन शक्ति, परिपूर्णता, फल, परिणाम, नतीजा, कर्मफल, चातुर्य, निपुणता, दक्षता, चालाकी।

१०४८. **परिपाटी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) क्रम, सिलसिला, श्रेणी, रीति, प्रणाली, शैली, तरीका, चाल, ढंग, पद्धति, नियम अंकगणित,।

१०४९. **परिपालन, परिपालना** (संज्ञा पु०) (सं०) रक्षा, बचाना, बचाव, प्रबन्ध करना।

१०५०. **परिपोषण** (संज्ञा पु०) (सं०) पालन, परवरिश करना, पुष्ट करना, (वि०) परिपुष्ट।

१०५१. **परिप्लव** (वि०) (सं०) हिलता, हुआ, काँपता हुआ, उतरता हुआ, चंचल, अस्थिर (संज्ञा पु०) बूड़ा, बाढ़, प्लावन, अत्याचार, जुल्म, नौका, नाव, जहाज़, गीला, भीगा, तैरना।

१०५२. **परिप्लुत** (वि०) (सं०) भीगा हुआ, गीला, मनात, प्लावित, डूबा हुआ, कम्पित, (संज्ञा पु०) फलाँग, छलाँग।

१०५३. **परिभव, परिभाव** (संज्ञा पु०) (सं०) अनादर, तिरस्कार, हतक, अपमान।

१०५४. **परिभाषण** (संज्ञा पु०) (सं०) उलाहना, उपालम्भ, फटकार, लानत, नियम, कायदा, दस्तूर, बातचीत, बोलना-चालना।

१०५५. **परिभाषा** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) व्याख्या, स्पष्टीकरण, निन्दा, परिवाद, शिकायत, बदनामी, परिष्कृत भाषण, स्पष्ट कथन, (अँ०) डैफ़ीनिशन।

१०५६. **परिभू** (वि०) (सं०) परिचालक, नियामक, ईश्वर, परिपालक।

१०५७. **परिभूत** (वि०) (सं०) पराजित, अपमानित, तिरस्कृत।

१०५८. **परिभ्रंश** (संज्ञा पु०) (सं०) छुटकारा, स्खलन, च्युति, पतन, निकास, गिराव।

१०५९. **परिभ्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) घूमना, भ्रमण, परिभ्रमण, पर्यटन, भूल, भ्रम।

१०६०. **परिमंडल, परिमण्डल** (संज्ञा पु०) (सं०) चक्कर, घेरा, दायरा, परिधि, विषैला मच्छर, (वि०) गोलाकार, चक्करदार, गोल।

१०६१. **परिमर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) डाह, घृणा, ईर्ष्या, अरुचि, क्रोध, गुस्सा, रोष।

१०६२. **परिमल** (संज्ञा पु०) (सं०) सुवास, उत्तम गन्ध, खुशबू, सुगन्धित चूर्ण, सहवास, संभोग, पंडित समुदाय।

१०६३. **परिमार्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) खोज, अनुसन्धान, तालाश, स्पर्श, संसर्ग।

१०६४. **परिमित** (वि०) (सं०) सीमित, नपातुला, थोड़ा, कम, अल्प, (अँ०) लिमिटिड, (संज्ञा पु०) परिमाण।

१०६५. **परिम्लान** (वि०) (सं०) कुम्हलाया, मुर्झाया, उदास, हतप्रभ, निस्तेज, मलीन, निर्बल, कमज़ोर, घटा हुआ, धब्बा खाया हुआ, कलंकित ।

१०६६. **परिया** (संज्ञा पु०) (तामिल) अछूत, अस्पृश्य, क्षुद्र, तुच्छ ।

१०६७. **परिलेख** (संज्ञा पु०) (सं०) चित्र, खाका, ढाँचा, रेखाचित्र, तस्वीर, कृति, कथन, उल्लेख, वर्णन, विवरण, (अँ०) रिपोर्ट ।

१०६८. **परिवर्त** (संज्ञा पु०) (सं०) फिराव, घुमाव, फेरा, चक्कर, विवर्तन, आवृत्ति, अवधि, परिवर्तन, विनिमय, अदल-बदल, आवास-स्थल, घर, पुनरागमन, परिच्छेद, अध्याय ।

१०६९. **परिवाद** (संज्ञा पु०) (सं०) निन्दा, अपवाद, मिज़राव, शिकायत, (अँ०) कम्प्लेंट ।

१०७०. **परिवार** (संज्ञा पु०) (सं०) कुटुम्ब, कुनबा, खानदान, वंश, बाल-बच्चे, वर्ग, कुल, जाति, म्यान, आवरण ।

१०७१. **परिवास** (संज्ञा पु०) (सं०) ठहरना, टिकना, टिकाव, घर, गृह, सुगन्ध ।

१०७२. **परिवेदन** (संज्ञा पु०) (सं०) पूर्ण ज्ञान, परिज्ञान, विद्यमानता, मौजूदगी, लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि, दुःख, कष्ट, विचरण, वाद-विवाद, बहस ।

१०७३. **परिवेश** (संज्ञा पु०) (सं०) परसना, परोसना, घेरा, परिधि, चन्द्रमंडल, सूर्यमंडल, परकोटा, कोट ।

१०७४. **परिवेष्टन** (संज्ञा पु०) (सं०) छिपाव, आच्छादन, आवरण, घेरा, परिधि, दायरा ।

१०७५. **परिव्यय** (संज्ञा पु०) (सं०) मूल्य, शुल्क, भाड़ा, पारिश्रमिक, खर्च, (अँ०) कौस्ट ।

१०७६. **परिव्राजक** (संज्ञा पु०) (सं०) भिक्षु, संन्यासी, योगी, यति, परमहंस ।

१०७७. **[illegible]** (संज्ञा पु०) (सं०) थकावट, मान्दगी, श्रान्ति, श्रम,

[illegible]. **परिषद्** (संज्ञा स्त्री०) ([illegible]) सभा, समिति, समाज, (अँ०) कौंसिल ।

१०७९. **परिष्कार** (संज्ञा पु०) (सं०) संस्कार, शुद्धि, सफ़ाई, स्वच्छता, निर्मलता, शोधन, आभूषण, सजावट, श्रृंगार, शोभा, संयम, ज़ेवर, गहना।

१०८०. **परिस्फुट** (वि०) (सं०) साफ़, प्रत्यक्ष, स्पष्ट, विकसित, खिला हुआ।

१०८१. **परिहार** (संज्ञा पु०) (सं०) निवारण, निराकरण, उपाय, उपचार, खंडन, तरतीद, अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, उपेक्षा।

१०८२. **परिहास** (संज्ञा पु०) (सं०) हँसी, मजाक, दिल्लगी, ठट्ठा, खेल, क्रीड़ा।

१०८३. **परीक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) इम्तहान, समीक्षा, प्रयोग, निरीक्षण, मुआयना, जाँच-पड़ताल, (अँ०) एक्सपैरीमैंट, एग्ज़ामिनेशन।

१०८४. **परुष** (वि०) (सं०) कठोर, कर्कश, कड़ा, अप्रिय, निष्ठुर, निर्दय, उग्र, प्रचण्ड, तीव्र, सुस्त, आलसी, मैला, कुचैला, (संज्ञा पु०) फालसा, तीर, बाण, सरकण्डा, कठोर-वचन, (संज्ञा स्त्री०) परुषता।

१०८५. **परे** (अव्यय) (हिं०) दूर, उधर, पार, उस तरफ, ओर, अतीत, बाहर, अलग, ऊँचे, बाद, पीछे।

१०८६. **परोक्ष** (वि०) (सं०) अगोचर, अप्रत्यक्ष, अनुपस्थित, गुप्त, अनजान, अपरिचित, परमज्ञानी, त्रिकालज्ञाता (संज्ञा पु०) अभाव, अनुपस्थिति।

१०८७. **परोपकार** (संज्ञा पु०) (सं०) हित, भलाई, उपकार।

१०८८. **पर्ण** (संज्ञा पु०) (सं०) पत्ता, पान, तांबूल, पंख, डैना, बाजू, पलास, (अ०) फाइल।

१०८९. **पर्यंक, पर्यङ्क** (संज्ञा पु०) (सं०) पलंग, खाट, चारपाई, वीरासन।

१०९०. **पर्यंत, पर्यन्त** (अव्यय)(सं०) तक, लौं, (संज्ञा पु०) परिधि, व्यास, सीमा, किनारा, पार्श्व, बगल, अवसान, खात्मा।

१०९१. **पर्यवसान** (संज्ञा पु०) (सं०) समाप्ति, अन्त, खात्मा, इरादा, निश्चय, समावेश।

१०६२. **पर्याप्त** (वि०) (सं०) काफ़ी, आवश्यकतानुसार, यथेष्ट, प्राप्त, हासिल, समर्थ, परिमित, सशक्त, (संज्ञा पु०) पर्याप्ति, तृप्ति, सन्तोष, यथेष्टता, प्रचुरता, शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता ।

१०६३. **पर्याय** (संज्ञा पु०)(सं०) समानार्थवाची शब्द, समानार्थक शब्द, क्रम, सिलसिला, परम्परा, प्रकार, ढंग, तरह, मौका, अवसर, निर्माण ।

१०६४. **पर्यास** (संज्ञा पु०) (सं०) पतन, गिरना, विनाश, हत्या, वध ।

१०६५. **पर्याहार** (संज्ञा पु०) (सं०) ढुलाई, बोझ, भार ।

१०६६. **पर्व** (संज्ञा पु०) (सं०) गाँठ, ग्रन्थि, जोड़, अंग, अवयव, भाग, विभाग, परिच्छेद, अध्याय, टुकड़ा, खंड, जीना, सीढ़ी, अवधि, निर्दिष्ट काल, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रान्ति, चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, उत्सव, पुण्यकाल, अवसर ।

१०६७. **पर्वणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, उत्सव ।

१०६८. **पर्वत** (संज्ञा पु०) (सं०) पहाड़, वृक्ष ।

१०६९. **पर्वतजा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गिरिजा, पार्वती, नदी, सरिता ।

११००. **पल** (संज्ञा पु०) (सं०) क्षण, दम, तराजू, तुला, पयाल, धोखेबाज़ी, प्रस्तारण, दृगंचल, (अँ०) सैकिंड ।

११०१. **पलटन** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सेना, फ़ौज, दल, समुदाय, झुंड, (अँ०) मिलिट्री ।

११०२. **पलटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) परिवर्तन, बदला, प्रतिफल ।

११०३. **पलाश** (संज्ञा पु०) (सं०) किंशुक, पलास, ढाक, टेसू, राक्षस, पत्ता, पत्र, विदारी कन्द, शासन, मगधदेश, परिभाषण (वि०) निर्दय, हरा, माँसाहारी ।

११०४. **पलाशक** (संज्ञा पु०) (सं०) ढाक, पलास, कपूर, लाख, लाक्षा ।

११०५. **पलित** (वि०) (सं०) वृद्ध, बुड्ढा, (संज्ञा पु०) सफ़ेद बाल, मिर्च, गरमी, शैलज, गूगल, कीचड़ ।

११०६. **पलीद** (वि०) (फ़ा०) अपवित्र, गन्दा, घृणास्पद, दुष्ट, नीच, (संज्ञा पु०) भूत, प्रेत ।

११०७. **पल्लव** (संज्ञा पु०) (सं०) कोमल पत्ता, कोंपल, कंकण, कड़ा, बाजूबन्द, चांचल्य, बल ताकत, विस्तार, फैलाव।

११०८. **पल्लवित** (वि०) (सं०) हरा-भरा, लहलहाता, विस्तृत।

११०९. **पल्ला** (संज्ञा पु०) (हिं०) छोर, दामन, आँचल, किवाड़, पटल, बोरा, पलड़ा, पास (अधिकार में) दूरी, तरफ़, पल्लू।

१११०. **पल्ली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटा गाँव, गाँवड़ा, स्थान, नगर, कसबा, झोंपड़ी, मकान, छिपकली, बिस्तुइया।

११११. **पव** (संज्ञा पु०) (सं०) पवन, हवा, वायु, गोबर।

१११२. **पवन** (संज्ञा पु०) (सं०) हवा, वायु, प्राणवायु, श्वास, साँस, जल, पानी, (कुम्हार का) आवाँ, विष्णु।

१११३. **पवि** (संज्ञा पु०) (सं०) वज्र, बिजली, गाज, वाक्य, थूहर, राह, पथ, मार्ग, रास्ता।

१११४. **पवित्र** (वि०) (सं०) शुद्ध, निर्मल, साफ़, पापरहित, (संज्ञा पु०) ताँबा, जलवृष्टि, जल, यज्ञोपवीत, जनेऊ, अर्घ्य, घी, शहद, रगड़, महादेव, विष्णु, सफ़ाई करना।

१११५. **पवित्रक** (संज्ञा पु०) (सं०) सूत, जाल, कुशा, पेड़, गूलर, पीपल, जनेऊ।

१११६. **पवित्रता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्वच्छता, पावनता, सफ़ाई।

१११७. **पवित्रा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तुलसी, हल्दी, श्रावणी एकादशी, पीपल, रेशमी माला।

१११८. **पशु** (संज्ञा पु०) (सं०) जन्तु, जानवर, मवेशी, चौपाया, जीव, प्राणी, देवता, यज्ञ. यज्ञकुण्ड, (अँ०) ऐनीमल।

१११९. **पशुनाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, महादेव, सिंह, शेर, पशुपति, पशुराज।

११२०. **पशुपति** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, अग्नि, ओषधि, दवा, महादेव, शंकर।

११२१. **पशुपाल, पशुपालक** (संज्ञा पु०) (सं०) ग्वाला, गड़रिया, पशुरक्षि, गोपाल।

११२२. पश्चात्ताप (संज्ञा पु०) (सं०) अनुताप, पछतावा, अफसोस, ग्लानि, खेद।

११२३. पश्चात् (अव्यय) (सं०) पीछे, तत्पश्चात्, तदुपरान्त, अनन्तर, बाद, फिर।

११२४. पश्चिम (संज्ञा पु०) (सं०) पच्छिम, (अँ०) वस्ट (वि०) पश्चिमी, पिछला, अन्तिम।

११२५. पसन्द (वि०) (फा०) मनोनुसार, स्वेच्छित, रुचि अनुकूल, (संज्ञा स्त्री०) अभिरुचि, मनोवृत्ति।

११२६. पसर (संज्ञा पु०) (हिं०) हथेली, आधी, अंजली, करतल, पुट, विस्तार, फैलाव, प्रसार, धावा, आक्रमण, चढ़ाई।

११२७. पसार (संज्ञा पु०) (हिं०) पसरना, फैलाव, प्रसार, लम्बाई, चौड़ाई, दालान।

११२८. पसीजना (क्रिया) (हिं०) दया आना, रसना, पसीने से तर होना।

११२९. पसीना (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रस्वेदन, स्वेद, श्रमकण, श्रमवारि, प्रस्वेद।

११३०. पसोपेश (संज्ञा पु०) (फा०) दुविधा, असमंजस, आगापीछा, सोच-विचार।

११३१. पस्त (वि०) (फा०) हारा हुआ, थका हुआ, दबा हुआ।

११३२. पस्ती (संज्ञा स्त्री०) (फा०) निचाई, कमी, न्यूनता।

११३३. पहँ (अव्यय) (हिं०) निकट, पास, समीप से, (अँ०) नीयर,।

११३४. पहचान (संज्ञा पु०) (हिं०) परख, चिह्न, लक्षण, परिचय, जान-पहचान, (अँ०) आइडैन्टीफ़िकेशन।

११३५. पहनावा, पहरावा, पहिनावा, पहिरावा (संज्ञा पु०) (हिं०) कपड़े, पोशाक, (अँ०) परिच्छेद, परिधेय, पहरावन, पहरावा, (अँ०) ड्रैस।

११३६. पहपट (संज्ञा पु०) (देश०) हल्ला, शोरगुल, कोलाहल, बदनामी, अपवाद, झगड़ा, तकरार, ठगी, मक्कारी, धोखा, छल, निन्दा, (वि०) पहपट-बाज।

११३७. **पहरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) रक्षा, निगरानी, देखभाल, निरीक्षण, निगहबानी, पहरेदारी, गारद, रक्षक दल, चौकीदारी, चौकसी, चौकी, हिरासत, हवालात, युग, समय, ज़माना, पैर।

११३८. **पहरेदार** (वि०) (हिं०) पहरी, पहुरुआ, पहरू, चौकीदार, सन्तरी, पहारू।

११३९. **पहल** (संज्ञा पु०) (हिं०) समभूमि, बगल, पहलू, तह, परत, छेड़, आरम्भ।

११४०. **पहलू** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) पार्श्व, बाज़ू, बगल, करवट, बल, दिशा, तरफ़, पहल, पक्ष, पड़ोस, आसपास, संकेत, गूढ़ाशय, व्यंगार्थ, (अँ०) साइड।

११४१. **पहले** (अव्यय) (हिं०) प्रथम, आदि, में, आरम्भ में, सर्वप्रथम, बीते समय में, पहले समय में।

११४२. **पहाड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) पर्वत, गिरि, शैल, अचल, भूधर, नग।

११४३. **पहियाँ** (अव्यय) (हिं०) निकट, पास, समीप, नियरे, ढिग से।

११४४. **पहिया** (संज्ञा पु०) (हिं०) चक्का, चक्र, (अँ०) व्हील।

११४५. **पहुँच** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रवेश, पैठ, समीप, गति, प्राप्ति, सूचना, रसीद, दौड़, परिचय, जानकारी, अभिज्ञता, प्रदेश।

११४६. **पहुँचना** (क्रिया) (हिं०) प्रस्तुत होना, उपस्थित होना, फैलना, विस्तृत होना, घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना, जानकारी रखना, ताड़ना, समझना, मिलना, तुल्य होना।

११४७. **पहेली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बुझावल, बात, समस्या।

११४८. **पांचजन्य** (संज्ञा पु०) अग्नि, श्री कृष्ण का शंख।

११४९. **पाँजर** (संज्ञा पु०) (हिं०) पसली, पार्श्व, बगल।

११५०. **पांडर, पाण्डर** (संज्ञा पु०)(सं०) कुन्द, पानड़ी, मरुवा (वृक्ष)।

११५१. **पांडित्य, पाण्डित्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पंडिताऊपन, विद्वत्ता, पंडिताई, बुद्धिमत्ता।

११५२. **पांडु, पाण्डु** (संज्ञा पु०) (सं०) पीला रंग, सफ़ेद हाथी, नाग

(विशेष) पीलिया रोग, पाण्डुफली, पाटली, परमल, राजा पाँडु, (पांडवों क पिता)।

११५३. **पांडुर, पाण्डुर** (वि०) (सं०) पीला, ज़र्द, सफ़ेद, (संज्ञा पु०) सफ़ेद ज्वार, कबूतर, बगला, खड़िया, कामला रोग, कोढ़।

११५४. **पांडुलिपि, पाण्डुलिपि** (संज्ञा पु०) (सं०) मसौदा, पांडुलेख, (अँ०) ड्राफ्ट, मैनिस्क्रिप्ट।

११५५. **पांडे** (संज्ञा पु०) (हिं०) ब्राह्मण, कायस्थ, पंडित, विद्वान्, शिक्षक, अध्यापक, रसोइया।

११५६. **पाँति** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कतार, अवली, पंक्ति, पंगत, श्रेणी, शृंखला, (अँ०) लाइन।

११५७. **पाँथ, पान्थ** (वि०) (सं०) पथिक, वियोगी, विरही।

११५८. **पाँवर** (वि०) (हिं०) पामर, अधम, नीच, पापी।

११५९. **पाँवरी, पाँवड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सोपान, सीढ़ी, जूता, पौरी, पौड़ी, ड्योढ़ी, बैठक, दालान।

११६०. **पांशु** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) धूलि, रज, वालू, पांसु, रेणु, रेणुका, गोबर, खाद, पित्तपापड़ा, कपूर, भूसम्पत्ति।

११६१. **पांशुल** (वि०) (सं०) लंपट, पर-स्त्रीगामी, व्यभिचारी।

११६२. **पांशुला** (वि०) (सं०) कुलटा, छिनाल, भ्रष्टचरित्रा, (संज्ञा स्त्री०) रजस्वला स्त्री, वेश्या, भूमि, ज़मीन, केतकी, पांसुका।

११६३. **पांसुल** (वि०) (सं०) धूलिधूसरित, मलिन, मैला, पापी, कंजा।

११६४. **पाइप** (संज्ञा पु०) (अँ०) नल, नली, अँग्रेज़ी बाजा, हुक्के की नली, सिगार की नली।

११६५. **पाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पैसा, पूर्णविराम (।), अड्डा।

११६६. **पाक** (संज्ञा पु०) (सं०) रसोई, पचाना, पाकिस्तान, इन्द्र, देवराज, (वि०) (फ़ा०) शुद्ध, पवित्र, निर्दोष, पापरहित, निर्मल, समाप्त, साफ़।

११६७. **पाकज** (संज्ञा पु०) (सं०) काला नमक, कचिया नमक, अफरा ।

११६८. **पाकल** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आग, अग्नि, कुष्ट की दवा, हाथी का बुखार ।

११६९. **पाकिट** (संज्ञा पु०) (अँ०) जेब, खीसा, थैली ।

११७०. **पाकी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता, परहेजगारी ।

११७१. **पाकीजा** (वि०) (फा०) पाक, पवित्र, शुद्ध, सुन्दर, निर्दोष, खूबसूरत, बे-ऐब ।

११७२. **पाक्षिक** (वि०) (सं०) पक्षपाती, तरफ़दार, पन्द्रहदिवसीय (संज्ञा पु०) व्याध, वहेलिया ।

११७३. **पाखंड, पाखण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) ढोंग, आडम्बर, ढकोसला, धूर्तता, चालाकी, छल, धोखा, दम्भ, कपट, नास्तिकता ।

११७४. **पाख** (संज्ञा पु०) (हिं०) पखवाड़ा, पंख, पर, पक्ष, पन्द्रह दिन, भीति, दीवार ।

११७५. **पाखा** (संज्ञा पु०) (हिं०) कोना, छोर, उसारा ।

११७६. **पागल** (वि०) (सं०) बावला, विक्षिप्त, सिड़ी, नासमझ, बेवकूफ़, बौखल, बौड़हा, बौरहा, बौरा, सनकी, मत्त, उन्मत्त, मतवाला, मदकल, जड़भरत, झल्ला, दीवाना ।

११७७. **पाचन** (संज्ञा पु०) (सं०) खट्टा रस, अग्नि, प्रायश्चित्त, लाल एरंड ।

११७८. **पाजी** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्यादा, पैदिल सैनिक, रक्षक, चौकीदार, (वि०) दुष्ट, लुच्चा, शरारती, दुर्विनीत ।

११७९. **पाजेब** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) नूपुर, मंजीर, घूँघरू, पैजनिया ।

११८०. **पाट** (संज्ञा पु०) (हिं०) रेशम, रेशम का कीड़ा, राजगद्दी । सिंहासन, राज्यासन, चौड़ाई, फैलाव, पीढ़ा, तख्ता, पटिया, शिला ।

११८१. **पाटक** (संज्ञा पु०) (सं०) नदी तट, किनारा, मूलधन, एक स्वरवाद्य ।

११८२. **पाटन** (संज्ञा पु०) (हिं०) छाना, छत पटवाना, पटाव, सर्प विष उतारने का मन्त्र ।

११८३. **पाटना** (क्रि०) (हिं०) बराबर करना, ढेर लगाना, बिछाना, छत बनाना, तृप्त करना, सींचना, भर देना ।

११८४. **पाटला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, पार्वती, भगवती, एक वृक्ष, लाल लोध, जलकुंभी, (संज्ञा पु०) उत्तम सोना ।

११८५. **पाटव** (संज्ञा पु०) (सं०) पटुता, कुशलता, विज्ञता, नैपुण्य, चतुराई, दृढ़ता, मजबूती, आरोग्य ।

११८६. **पाटविक** (वि०) (सं०) चतुर, होशियार, धूर्त्त, चालाक, धोखेबाज़ ।

११८७. **पाटी** (संज्ञा स्त्री०) रीति, शैली, परिपाटी, पंक्ति, श्रेणी, पाठ, सबक, चट्टान, शिला, चटाई, जंती ।

११८८. **पाठ** (संज्ञा पु०)(सं०) पढ़ाई, सबक, परिच्छेद, अध्याय, (अँ०) लैसन रीडिंग ।

११८९. **पाठक** (संज्ञा पु०) (सं०) वाचक, पढ़ने वाला, छात्र, शिष्य, शिक्षक, गुरु, पढ़ाने वाला, कथावाचक, गौड़, उपाध्याय ।

११९०. **पाठशाला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विद्यालय, चटसाल, मदरसा, (अँ०) स्कूल ।

११९१. **पाठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पित्त, ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, विदोष, हृदय रोग, रक्तकुष्ट, कंडु, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, (संज्ञा पु०) युवा, जवान भैंसा, बकरा, बैल, योद्धा, मल्ल, पहलवान, (वि०) हृष्ट-पुष्ट, मोटा, तगड़ा ।

११९२. **पाठी** (संज्ञा पु०) (हिं०) पढ़ने वाला, पाठक, चीता, चित्रक, वृक्ष, युवा, बकरी, छागी ।

११९३. **पाड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) साड़ी, किनारा, दरार, मचान, (अँ०) पाइट, चह (कुएँ की जाली) फाँसी का तख्ता, बाँध, पुश्ता ।

११९४. **पाड़ा** (संज्ञा पु०) (हिं०) मुहल्ला, टोला, पुरवा, भैंस का बच्चा ।

११९५. **पाण** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यापार, (अ०) तिजारत, हाथ, कर, दाँव, प्रशंसा, पीना, ताँबूल ।

११९६. **पाणि** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथ, हस्त, कर, ग्रहण, ब्याह, विवाह, परिणय, तल, करतल, हस्ततल, पाणिग्रहण, शादी, पाणिपीड़न, पाणिबंध ।

११९७. **पाणिय** (संज्ञा पु०) (सं०) ढोल बजाने वाला, मज़दूर, कारीगर, शिल्पी, ढोल, मृदंग ।

११९८. **पाणिरुह** (संज्ञा पु०) (सं०) उँगली, नख, नाखून ।

११९९. **पात** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, ध्वंस, पतन, गिराव, गिरना, बड़ना, कर्णभूषण, पत्र, पत्ता, (*डिंगल*) कवि ।

१२००. **पातक** (संज्ञा पु०) (सं०) पाप, गुनाह, अतिपातक, अपात्रीकरण, जातिभ्रंशकर, महापातक, अनुपातक, उपपातक, संकरीकरण, प्रकीर्ण, अघ, कलुष, अशुभ, अपराध, दोष ।

१२०१. **पातकी** (वि०) (हिं०) पापी, अधर्मी, अपराधी, दोषी ।

१२०२. **पातर, पातरि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पत्तल, वेश्या, रंडी, पतुरिया, मणिका, तितली, (वि०) पतला, सूक्ष्म, क्षीण, बारीक, दुर्बल, निर्बल ।

१२०३. **पाता** (वि०) (हिं०) रक्षक, पीने वाला, (संज्ञा पु०) पत्र, पत्ता ।

१२०४. **पाताल** (संज्ञा पु०) (सं०) अधोलोक, गड्ढा, सूराख, विवर, बिल, वड़वानल, पातालयंत्र, रसातल, नागलोक, अधोभुवन, नरक, दैत्य, सर्प, नृपति, सीसा, यंत्र ।

१२०५. **पाति** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पत्ती, पर्ण, पात्र, चिट्ठी, पत्र, पाती, लज्जा, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त ।

१२०६. **पातुक** (संज्ञा पु०) (सं०) पतनशील, गिरने वाला, प्रपात, झरना, जलहाथी ।

१२०७. **पात्र** (संज्ञा पु०) (सं०) बरतन, आधार, अभिनेता, नट, (अँ०)

ऐक्टर, आमात्य, राजसचिव, राजमन्त्री, आढक, पत्ता, पत्र, (वि०) योग्य, उपयुक्त।

१२०८. **पात्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटा बरतन, स्त्रीपात्र, कथानक, छोटी भट्ठी।

१२०९. **पात्रीर** (संज्ञा पु०) (सं०) नैवेद्य, भेंट, चढ़ावा।

१२१०. **पाथ** (संज्ञा पु०) (हिं०) मार्ग, रास्ता, जल, पानी, नीर, नाथ, समुद्र, पति, वरुण, सूर्य, आकाश, वायु, भोजन।

१२११. **पाथना** (क्रि०) (हिं०) थोपना, खपड़े बनाना, उपले बनाना, गोबर पाथना, सुडौल बनाना, गढ़ना, पीटना, ठोंकना, मारना।

१२१२. **पाथा** (संज्ञा पु०) (हिं०) जल, अन्न, आकाश।

१२१३. **पाथि** (संज्ञा पु०) (हिं०) आँख, समुद्र, खरंड, एक प्रकार का शरबत, कीलाल।

१२१४. **पाद** (संज्ञा पु०) (सं०) चरण, पैर, पाँव, चौथाई, प्रकरण, वृक्ष का मूल, तल, छोटा पहाड़, चिकित्सा के चार अंग (वैद्य, रोगी, उपचारक तथा औषध), किरण, अपान वायु, रश्मि, गमन, शिव, महादेव।

१२१५. **पादक** (वि०) (सं०) चलने वाला, चौथाई, छोटा पैर, चतुर्थांश।

१२१६. **पादप** (संज्ञा पु०) (सं०) वृक्ष, पेड़, पौढ़ा।

१२१७. **पादविक** (संज्ञा पु०) (सं०) पथिक, मुसाफ़िर।

१२१८. **पाधा** (संज्ञा पु०) (हिं०) उपाध्याय, आचार्य, पंडित, पुरोहित।

१२१९. **पान** (संज्ञा पु०) (सं०) पीना, पेयद्रव्य, मद्यपान, शराब पीना, मद्य, मदिरा, पानी, पात्र, प्याला, कटोरा, प्याऊ, पौसाला, कुल्या, नहर, निःश्वास, जय, पानी, पत्ता, ताम्बूल, प्राण, लड़ी, गून।

१२२० **पानक** (संज्ञा पु०) (सं०) पेय पदार्थ, शर्बत, रस।

१२२१. **पाना** (क्रि०) (हिं०) प्राप्त होना, मिलना, एकत्रित करना, लाभ होना, उपलब्ध करना, हासिल करना, देख लेना, जान लेना, साक्षात् करना, देखना, भोजन करना, खाना, समर्थ होना, अनुभव करना, भोगना, सकना, निकट पहुँचना, ज्ञान प्राप्त करना, जानना।

१२२२. **पानी** (संज्ञा पु०) (हिं०) जल, नीर, वर्षा, मेह, वृष्टि, चमक,

काँति, आब, छवि, जौहर, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आबरू, वर्ण, माल, मुलम्मा, वीर्य, शुक्र, मरदानगी, स्वाभिमान, द्वन्द्व युद्ध, अवसर, मौका, वार, दफ़ा, जलवायु, आबहवा, परिस्थिति, सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य ।

१२२३. **पानीदार** (वि०) (सं०) प्रतिष्ठित, साहसी, आबदार, चमकदार, ताकतवर, इज्जत वाला ।

१२२४. **पाप** (संज्ञा पु०) (हिं०) पातक, गुनाह, उलटा, अपराध, जुर्म, वध, हत्या, पापबुद्धि, बदनीयत, अहित, बुराई, जंजाल, कठिनाई, संकट, पापग्रह, अशुभग्रह, (वि०) पापी, पापात्मा, अधर्म, चेचक, पापिष्ठ, दुष्ट, दुराचारी, कमीना, नीच ।

१२२५. **पापड़** (वि०) (हिं०) सूखा, शुष्क, बारीक, (संज्ञा पु०) एक प्रकार की मसालेदार चपाती ।

१२२६. **पापनाशन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रायश्चित्त, विष्णु, शिव ।

१२२७. **पाया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुध नक्षत्र की एक जाति, (संज्ञा पु०) अन्न का कीड़ा, पिता ।

१२२८. **पाबंद, पाबन्द** (वि०) (फ़ा०) बद्ध, बँधा हुआ, (संज्ञा पु०) नौकर, दास, सेवक, लाचार, बेवस ।

१२२९. **पाबंदी, पाबन्दी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) अधीनता, प्रतिबन्ध, बद्धता, मजबूरी, लाचारी, बाध्यता, नियमता ।

१२३०. **पामर** (वि०) (सं०) दुष्ट, कमीना, पापी, अधम, नीचकुलोत्पन्न, मूर्ख, मूढ़, पातकी, पापिष्ठ, दुष्टात्मा, नीच ।

१२३१. **पामरता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुष्टता, कमीनापन, पाप, नृशंसता, निर्दयता, पातक, मूर्खता, मूढ़ता ।

१२३२. **पामाल** (वि०) (हिं०) मसला हुआ, पददलित, रौंदा हुआ, पदाक्रान्त, तबाह, बरबाद, चौपट, पायमाल, अधोगत ।

१२३३. **पामाली** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) तबाही, बरबादी, नाश, अधोगति, दुर्गति ।

१२३४. **पायक** (वि०) (सं०) पीने वाला, (संज्ञा पु०) (हिं०) पैदल

सिपाही, हरकारा, दूत, दास, सेवक, अनुचर, चर, पाथिक, पियादा, पदाति।

१२३५. **पायदार** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) टिकाऊ, दृढ़, मजबूत, पुख्ता।

१२३६. **पायल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पाजेब, पायजेब, नूपुर, सीढ़ी, नसैनी, तेज हथिनी, सुचाल।

१२३७. **पावा** (संज्ञा पु०) (हिं०) गोड़ा, पावा (चारपाई का), खम्भा, स्तम्भ, जीना, सीढ़ी, पद, ओहदा, दर्जा।

१२३८. **पायिक** (संज्ञा पु०) (सं०) पैदल सिपाही, दूत, हरकारा, पदातिक, चर, मल्ल, पहलवान।

१२३९. **पारंगत** (त्रि०) (सं०) जानकार, पंडित, कुशल, प्रवीण प्रकांड।

१२४०. **पार** (संज्ञा पु०) (सं०) अपर तट, सीमा, दूसरी ओर, अन्त, सिरा, छोर, तीर, अधिकतम परिमाण, समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्रान्त, तरण, उद्धरण, मोचन।

१२४१. **पारत्र** (वि०) (सं०) पराया, परकीय, दूसरे का, विरोधी, (संज्ञा पु०) परलोक साधन।

१२४२. **पारखी** (संज्ञा पु०) (हिं०) पारख, परीक्षक, परखैया।

१२४३. **पारग** (त्रि०) (सं०) समर्थ, पारगामी, निपुण, कर्मदक्ष, विद्वान्, चतुर, कुशल।

१२४४. **पारचा** (संज्ञा पु०) (फा०) टुकड़ा, धज्जी, खंड, कपड़ा, एक रेशमी वस्त्र, पोशाक।

१२४५. **पारद** (संज्ञा पु०) (सं०) पारा, रसधातु, धातु विशेष, म्लेच्छ जाति विशेष।

१२४६. **पारतन्त्र्य** (संज्ञा पु०) (सं०) परतन्त्रता, पारवश्य, परवशता, पराधीनता, अस्वाधीनता।

१२४७. **पारदर्शी** (वि०) (सं०) दूरदर्शी, चतुर, गुलामी, पारगामी, निपुण, कुशल, दक्ष, ज्ञानी।

१२४८. **पारदेशिक** (संज्ञा पु०) (सं०) यात्री, (वि०) विदेशी, परदेशी।

१२४९. **पारधी** (संज्ञा पु०) (हिं०) बहेलिया, व्याध, शिकारी, अहेरी, हत्यारा, वधिक, (संज्ञा स्त्री०) ओट, आड़ ।

१२५०. **पारना** (क्रिया) (हिं०) गिराना, रखना, डालना, मिलाना, पहनना, लेटाना, पछाड़ना, धारण करना, डालना, समर्थ होना ।

१२५१. **पारमार्थिक** (वि०) (सं०) वास्तविक, यथार्थ में विद्यमान, यथार्थ, असली, पारलौकिक, मोक्षप्राप्त, मुख्य, प्रधान ।

१२५२. **पारम्पर्य** (वि०) (सं०) परम्परागत, कुलक्रम, अनुक्रम, कुल-रीति, कुलपरम्परा ।

१२५३. **पारशव** (संज्ञा पु०) (सं०) वर्णसंकर, लोहा, जारजपुत्र, पारस्त्रैणेय, दोगला, हरामी ।

१२५४. **पारस** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्पर्शमणि, परसा हुआ भोजन, पत्तल, एक पहाड़ी वृक्ष, (वि०) स्वच्छ, उत्तम, नीरोग, चंगा, (अव्यय) (हिं०) पास, निकट, समीप ।

१२५५. **पारावत** (संज्ञा पु०) (सं०) कबूतर, कपोत, परेवा, पंडुक, बन्दर, पर्वत, खट्टा पदार्थ, तेंदु का पेड़ ।

१२५६. **पारावती** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) रेवड़ी, लवलीफल, ग्वालगीत, एक नदी ।

१२५७. **पारावार** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, सागर, आरपार, सीमा, परिधि, हद ।

१२५८. **पारि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हद, सीमा, ओर, तरफ़, तट, (संज्ञा पु०) (सं०) प्याला, पात्र, चपक ।

१२५९. **पारिजात** (संज्ञा पु०) (सं०) परजाता, हरसिंगार, कचनार, परिभद्र, फरहद, देवतरु, देवताओं का हाथी, हरचंदन वृक्ष, पुष्प विशेष ।

१२६०. **पारितोषक** (संज्ञा पु०) (सं०) इनाम, पुरस्कार, दान, (अं०) प्राइज (वि०) आनन्दकर, प्रीतिकर ।

१२६१. **पारिपार्श्व** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुचर, नौकर, भृत्यु, अरदली पारिषद ।

१२६२. **पारिप्लव** (संज्ञा पु०) (सं०) नौका, नाव, जहाज़, जलपक्षी,

एक तीर्थ, (वि०) चंचल, चपल, स्थिर, उद्विग्न, घबराया हुआ, घुमक्कड़, तैराक।

१२६३. **पारिभद्र** (संज्ञा पु०) (सं०) देवदारु, सरल वृक्ष, नीम का पेड़, सलई का पेड़, मूँगे का पेड़, मालू का पेड़।

१२६४. **पारिभाषिक** (वि०) (सं०) प्रचलित, अर्थबोधक, सांकेतिक, (अँ०) टेकनीकल।

१२६५. **पारिषद्** (संज्ञा पु०) (सं०) सभासद, पंच, सभ्य, अनुयायी, वर्ग, गण, सभास्थ।

१२६६. **पारिहास्य** (संज्ञा पु०) (सं०) हँसी-ठट्ठा, व्यंग्य, परिहास, दिल्लगी, मज़ाक।

१२६७. **पारी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बारी, पाला, अवसर, क्रम, जलपरिमाण, पात्र, प्याला, जलसमूह।

१२६८. **पारुष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) कठोरता, रूखापन, कड़ुआपन, गाली, कुवाच्य, कठोर वचन, दुर्वाक्य, परुषत्व, परनिन्दा, परद्रोह, अप्रियभाषण, इन्द्र का वन, बृहस्पति।

१२६९. **पार्क** (संज्ञा पु०) (अँ०) उद्यान, बगीचा।

१२७०. **पार्टी** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) मंडली, दल, समारोह।

१२७१. **पार्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) राजा, पृथ्वीपति, अर्जुन।

१२७२. **पार्थक्य** (संज्ञा पु०) (सं०) भेद, वियोग, जुदाई, पृथकता, भिन्नता, प्रभेद।

१२७३. **पार्थिव** (वि०) (सं०) मिट्टी का, पृथ्वी का, पृथ्वी सम्बन्धी, राजसी, शाही, मृण्मय, (संज्ञा पु०) राजा, नृपति, महिपाल, संवत्सर, तगर का पेड़, मिट्टी का बर्तन, मिट्टी का शिवलिंग, मंगल ग्रह।

१२७४. **पार्थिवी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीता, उमा, पार्वती।

१२७५. **पार्लियामेंट** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) संसद्, लोकसभा, राज्यसभा।

१२७६. **पार्वत** (वि०) (सं०) पर्वत सम्बन्धी, पहाड़ी, (संज्ञा पु०) बकायन, शिलाजीत, सीसा नामक धातु, अस्त्र, ईंगुर।

१२७७. **पार्वती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उमा, गिरिजा, शिवा, भवानी, दुर्गा, भगवती, शैलकुमारी, गौरी, नन्दिनी, पार्थिवी, भवा, भवभामिनी, भववामा, अभया, नन्दा, पर्वतजा, ब्रह्मचारिणी, भ्रमरी, मंगला, मालवी, शक्ति, शान्ति, सर्वमंगला, सावित्री, ईश्वरा, त्रिभुवनसुन्दरी, देवेशी, सर्वणा, शैलात्मजा, हिमजा, हेमसुता, हेमवती, जया, कुमारी, गौरा, गोपीचन्दन, आमलकी, आँवला, धाय का पौधा ।

१२७८. **पार्वतेय** (संज्ञा पु०) (सं०) सुरमा, अंजन, जिगनी, हुरहुर का पौधा, (वि०) पर्वतीय, पहाड़ी ।

१२७९. **पार्श्व** (संज्ञा पु०) (सं०) पसली, टेढ़ी चाल, कुटिल उपाय, अगल-बगल, अधोभाग, कक्षक ।

१२८०. **पार्श्वचर** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुचर, सहचर, अरदली, पार्श्वानुचर, पासबान, नौका ।

१२८१. **पार्षद** (संज्ञा पु०) (सं०) सेवक, पहरेदार, दरबान, मुसाहब ।

१२८२. **पार्ष्णि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) एड़ी, पृष्ठ, लात, ठोकर, छिनाल, कुन्ती, सेना का पृष्ठ भाग ।

१२८३. **पाल** (संज्ञा पु०) (सं०) रक्षक, रखवाला, ग्वाल, अहीर, गडरिया, राजा, पीकदानी, चित्रक, तंबू, शामियाना, पालक, त्राणकर्त्ता, बरसाती (संज्ञा स्त्री०) मेंड़ (किनारा), बाँध, कगार ।

१२८४. **पालक** (संज्ञा पु०) (सं०) रक्षक, पालनकर्ता, राजा, शासक, साईस, पोष्य-पिता, चित्रक, अश्वरक्षक, शासनकर्ता, पोषक, एक प्रकार की भाजी या शाक, पालक्या, क्षुरिका, चीरितच्छदा ।

१२८५. **पालघ्न** (संज्ञा पु०) (सं०) कुकुरमुत्ता, छत्रक, जलतृण (वि०) विश्वासघाती ।

१२८६. **पालन** (संज्ञा पु०) (सं०) भरण-पोषण, परवरिश, (अं०) मेंटेनेंस, एबाइड, प्रतिपालन, रक्षक अंगीकारकरण, पूरण, निर्वाह ।

१२८७. **पालव** (संज्ञा पु०) (हिं०) पल्लव, पत्ता, कोमल पत्ता ।

१२८८. पाला (संज्ञा पु०) (हिं०) हिम, बरफ़, ठंड, सर्दी, सम्बन्ध, अवसर, वास्ता, मात्रिका, प्रधान स्थान, पीठ, मेंड़, अखाड़ा, नीहार, तुषार, पारी, बारी।

१२८९. पालागन (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नमस्कार, दंडवत् प्रणाम, अभिवादन, पाँव छूना।

१२९०. पालि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कान का अग्रभाग, कान की लौ, नोक, किनारा, हाशिया, सीमा, हद, पंक्ति, अवली, दाग़, धब्बा, पुल, गोदी, अंक, क्रोड़, जूँ, चौलर, प्रशंसा, बड़ाई, डढ़ियल औरत, पालि भाषा।

१२९१. पालिक (संज्ञा पु०) (सं०) पलंग, चारपाई, पलकी।

१२९२. पालित (वि०) (सं०) रक्षित, पाला-पोसा हुआ, स्थापित, पोषित।

१२९३. पालिश (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) चिकनाई, चमक, रोग़न, चिकनाई लानेवाला मसाला।

१२९४. पालिसी (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) ढंग, रीति, नीति, प्रथा।

१२९५. पाली (वि०) (हिं०) पालक, (संज्ञा स्त्री०) ढक्कन, परई, पारी, बारी, शिफ़्ट, पंक्ति, श्रेणी, प्रशंसा, अलंकार, सेतु, उत्संग, गोदी, देश, प्रस्थ, परिमाण।

१२९६. पाँव, पांव (संज्ञा पु०) (हिं०) पग, पैर, पाद, पायँ, चरण, अवयव, क्रमण, क्रान्त, पानु, पाँ, पाइँ, बीख, पगु, चलन, कदम।

१२९७. पाँवड़ी, पांवड़ी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) खड़ाऊँ, जूता, पाँवरी।

१२९८. पाँवर (वि०) (हिं०) पामर, तुच्छ, क्षुद्र, नीच, दुष्ट, (संज्ञा पु०) पाँवड़, (संज्ञा स्त्री०) पाँवड़ी।

१२९९. पावक (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, आग, अग्निदेव, तेज, ताप, चित्रक वृक्ष, तीन (संख्या) अग्निमंथ वृक्ष, भिलावा, कुसुम्भ, सूर्य, वरुण, अनल, वह्नि, (वि०) पवित्र, परिष्कारक, पवित्रक, पवित्रकारी।

१३००. पावन (वि०) (सं०) पवित्र, शुद्ध, पवित्रक, स्वच्छ, शुद्ध, (संज्ञा पु०) तप, जल, गोबर, तिलक, रुद्राक्ष, कुष्ट, पीली भंगरैया, चित्रक

वृक्ष, चंदन, शिलारस, सिद्ध पुरुष, विष्णु, व्यास।

१३०१. **पावनध्वनि** (संज्ञा पु०) शंख, शंखनाद।

१३०२. **पावना** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्राप्यधन, आदाय धन, बाकी, लाहना, (क्रि०) प्राप्त करना, पाना, जानना, समझना मिलना।

१३०३. **पावनि** (संज्ञा पु०) (सं०) पवन सुत, हनुमान।

१३०४. **पावनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तुलसी, गौ, गंगा नदी, हड़, हरीतकी, एक नदी।

१३०५. **पाश** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्धन, जाल, फन्दा, रज्जू, रस्सी, गुन, फाँसी, अस्त्र विशेष, पासिक, पासिका।

१३०६. **पाशक** (संज्ञा पु०) (सं०) जूआ, पासा, चौपड़, अक्ष।

१३०७. **पाशिक** (संज्ञा पु०) (सं०) बहेलिया, शिकारी, चिड़ीमार, आखेटक।

१३०८. **पाशी** (वि०) (सं०) पाशवाला, (संज्ञा पु०) वरुण देवता, यम, चांडाल, बहेलिया, चिड़ीमार, पाशधर।

१३०९. **पाशुपत** (संज्ञा पु०) (सं०) शैव, शैव सम्प्रदायी, शिवोक्त तन्त्र, शास्त्र, (वि०) शिवसम्बंधी, पशुपति का।

१३१०. **पाश्चात्य** (वि०) (सं०) पीछे का, पिछला, पश्चिमी, पश्चाज्जात, पश्चात् उत्पन्न, पश्चिम देशीय, पश्चिम देशोद्भव, योरुप देशवासी।

१३११. **पाषंड, पाषण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) ढोंग, पाखंड, कुटिलता, सम्प्रदाय, मत, पंथ, वेदविमुख, धूर्तता।

१३१२. **पाषंडी, पाषण्डी** (वि०) (सं०) ढोंगी, कुटिल, धूर्त, चालाक, मक्कार, धोखेबाज़, झूठा, मिथ्याचारी।

१३१३. **पाषाण** (संज्ञा पु०) (सं०) पत्थर, प्रस्तर, शिला, पाथर, गंधक, गहन, अशनि।

१३१४. **पास** (संज्ञा पु०) (हिं०) बगल, ओर, तरफ, सामीप्य, समीपता, निकटता, अधिकार, कब्ज़ा, (अव्यय) निकट, समीप, अधिकार में, कब्ज़े में, के प्रति (वि०) पार किया हुआ, तै किया हुआ, अवस्था, श्रेणी या कक्षा में

उत्तीर्ण, सफलीभूत, जाँच या परीक्षा में सफल, सफल, स्वीकृत, मन्जूर, प्रचलित, जारी, (संज्ञा पु०) पारण-पत्र, प्रवेश-पत्र ।

१३१५. **पासी** (संज्ञा पु०) (हिं०) व्याध, चिड़ीमार, बहेलिया, एक जाति, (संज्ञा स्त्री०) पाश, फन्दा, फाँस, फाँसी, जाली ।

१३१६. **पाँह** (अव्यय) (हिं०) पाहिं, निकट, समीप, पास, किसी से, किसी के प्रति ।

१३१७. **पाहुना** (संज्ञा पु०) (हिं०) अभ्यागत, अतिथि, दामाद, जामाता, पाहुन, मेहमान, आगन्तुक, गँवहियाँ ।

१३१८. **पाहुनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अतिथि स्त्री, आतिथ्य, मेहमान-दारी, खातिरतवाजा, खातिरदारी, रखेल स्त्री ।

१३१९. **पाहुर** (संज्ञा पु०) (हिं०) भेंट, नज़र, सौगात, बैना, उपहार, बयाना ।

१३२०. **पिंग, पिङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) भैंसा, हरताल, चूहा, (वि०) पीला, भूरा, ताम्रवर्ण, तामड़ा, सुँघनी रंग का, भूरा, लाल, कपिल, पीत ।

१३२१. **पिंगल, पिङ्गल** (वि०) (सं०) भूरा लाल, तामड़ा, पीत, पीला, भूरा पीला, नील-पीत, मिश्रित कपिशरंग, (संज्ञा पु०) पीतल, हरताल, उल्लू, सर्प, बन्दर, न्योला, सूर्य, कुबेर की एक निधि, छन्द शास्त्र, खस, उशीर, रास्ना, विष, मुनि विशेष, नकुल, पिशंग ।

१३२२. **पिंगला, पिङ्गला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, पार्वती, एक चिड़िया, राजनीति, शीशम, गोरोचन ।

१३२३. **पिंगा, पिङ्गा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गोरोचन, हींग, वंशलोचन, हल्दी, चंडिका, देवी ।

१३२४. **पिंगाक्ष, पिङ्गाक्ष** (वि०) (सं०) भूरी आँख वाला (संज्ञा पु०) शिव, महादेव, बिल्ली ।

१३२५. **पिंगाश, पिङ्गाश** (संज्ञा पु०) (सं०) मुखिया, चौधरी, ज़मींदार, एक प्रकार की मछली, सोना ।

१३२६. **पिंजर, पिञ्जर** (वि०) (सं०) पीला, भूरा लाल, भूरा पीला,

(संज्ञा पु०) पजर, पिंजरा, सोना, स्वर्ण, नाग केसर, हरताल, भूरा-लाल घोड़ा।

१३२७. **पिंजल, पिञ्जल** (वि०) (सं०) व्याकुल, परेशान, हैरान, भयभीत, पीत मुख (संज्ञा पु०) हरताल, कुश की पत्ती।

१३२८. **पिंड, पिण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) ठोस गोला, गोल पदार्थ, गोल खंड, ढेला, लुगदा, जीविका, भोजन, शरीर, काया, खजूर।

१३२९. **पिंडक, पिण्डक** (संज्ञा पु०) (सं०) गोला, गूमड़ा, गोल आकार का ग्रास, पिंडालू, शिला रस, मुरमक्की।

१३३०. **पिंड पुष्प, पिण्ड पुष्प** (संज्ञा पु०) (सं०) अशोक फूल, गुलाब, कमल, जया पुष्प, तगर।

१३३१. **पिंडा** (संज्ञा पु०) (हिं०) गोल टुकड़ा, शरीर, देह, स्त्रियों की धरन (संज्ञा स्त्री०) कस्तूरी, वंशपत्री, इसपात।

१३३२. **पिंडार, पिण्डार** (संज्ञा पु०) (सं०) साधु, भिखारी, ग्वाला, एक प्रकार का वृक्ष।

१३३३. **पिंडिका, पिण्डिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गोलाकार सूजन, छोटा गोल टुकड़ा, शिवलिंग, इमली।

१३३४. **पिंडित, पिण्डित** (वि०) (सं०) गुणित, गुणा किया हुआ (संज्ञा पु०) शिला रस, गणित, काँसा।

१३३५. **पिंडी, पिण्डी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चक्र नाभि, पिंडली, अशोक वृक्ष, ताड़, घीया, कद्दू, लौकी, हजारातगर, बलि-वेदी, धागे की गोली।

१३३६. **पिक** (संज्ञा पु०) (सं०) कोयल, कोकिल, अलि, पंचमा, वसन्त दूती, कादम्बरी, कलकंठ, कलापी, कोक, पिकी।

१३३७. **पिचकारी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पिचक, पचूका, दमकला, पिचका, पिचुक्का।

१३३८. **पिचपिचा** (वि०) (हिं०) पिलपिला, सड़ा, गला, चिपचिपा।

१३३९. **पिचुल** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्रफल, झाऊ का वृक्ष, गोता-खोर, रूई।

१३४०. **पिच्छ** (संज्ञा पु०) (सं०) पूँछ, मोर पंख, शिखंड, लांगल, मोचरस, पिच्छन, पिच्छभार ।

१३४१. **पिच्छल** (संज्ञा पु०) (सं०) मोच रस, आकाश बेल, शीशम (वि०) पिछला, चिकना, रपटन वाला, फिसलाहटी ।

१३४२. **पिच्छा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) म्यान, खोल, माँड, मोचरस, आकाश बेल, पिंडली, शीशम, नारंगी, आकाश लता, निर्मली वृक्ष, सर्प विष, सुपारी, कवच, केला ।

१३४३. **पिच्छिल्ला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वृश्चिकाली जड़ी, शीशम, तालमखाना, अगर, अलसी, अरवी, पोई, सेमल, शूली घास (वि०) चिकना, रिपटन वाला, पिच्छिल पक्षी, (संज्ञा पु०) माँड़, चटनी, दही ।

१३४४. **पिछलग्गा** (संज्ञा पु०) (हिं०) मतानुयायी, अनुगामी, अनुवर्त्ती, सेवक, नौकर, खिदमतगार, पिछलागू, पिच्छलग्गू, अधीन, आश्रित, चेला, टहलुआ ।

१३४५. **पिछला** (वि०) (हिं०) बीता हुआ, गुजरा हुआ, गत, पीछे की ओर का, अनन्तर का, पश्चाद्भव (संज्ञा पु०) आमोख्ता, रोजे का भोजन, सहरी, पृष्ठ भाग ।

१३४६. **पिछौरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) दोहर, दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय, पिछौरी ।

१३४७. **पिटक** (संज्ञा पु०) (सं०) पेटी, टोकरी, पिटका, पिटरिया, मुहाँसा, फुन्सी ।

१३४८. **पिटना** (क्रि०) (हिं०) पीटा जाना, मार खाना, बजना, (संज्ञा पु०) डंडा, थापी, मुद्गर, मुँगरा ।

१३४९. **पिट्ठू** (संज्ञा पु०) (हिं०) सहायक, पृष्ठपोषक, हिमायती, समर्थक, खुशामदी ।

१३५०. **पिठर** (संज्ञा पु०) (सं०) मोथा, मथानी, थाली, एक तरह का घर, अग्नि विशेष ।

१३५१. **पिण्याक** (संज्ञा पु०) (सं०) खली, केसर, हींग, शिलाजीत, शिला रस ।

१३५२. **पिता** (संज्ञा पु०) (हिं०) जनक, जन्मदाता, तात, जनिता, बाप, पित्र, बप्पा, वापू, बाबा, अव्वा, क़िबला, पितृ, (अं०) फ़ादर ।

१३५३. **पितामह** (संज्ञा पु०) (सं०) दादा, भीष्म, शिव, ब्रह्मा ।

१३५४. **पितृकल्प** (संज्ञा पु०) (सं०) श्राद्धादि, पितृकर्म, और्ध्वदेहिक क्रिया, पितृ श्राद्ध ।

१३५५. **पितृकानन** (संज्ञा पु०) श्मशान घाट, प्रेतभूमि, शवदाह-स्थान ।

१३५६. **पितृदिन** (संज्ञा पु०) (सं०) अमावस्या, पित्र्या, अन्धरात्रि ।

१३५७. **पितृपति** (संज्ञा पु०) (सं०) यम, यमराज, काल, दण्डधर, धर्मराज ।

१३५८. **पितृप्रिय** (संज्ञा पु०) (सं०) भंगरैला, भृङ्गराज, अगस्तवृक्ष ।

१३५९. **पितृप्रसू** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पितामही, दादी, सन्ध्या, सायंकाल, पितृसू ।

१३६०. **पितृभ्राता** (संज्ञा पु०) (सं०) चाचा, ताऊ, पितृव्य, काका, (अं०) अंकल ।

१३६१. **पितृयज्ञ** (संज्ञा पु०) (सं०) श्राद्ध, तर्पण ।

१३६२. **पित्त पापड़ा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा, वरकंटक, वरतिक्त, पर्पटक, पृथ्विक, चमकंटक, पित्तारि ।

१३६३. **पित्तल** (वि०) (सं०) पित्ताकारी, (संज्ञा पु०) भोजपत्र, हरताल, पीतल, धातु (संज्ञा स्त्री०) शालपर्णी, जल पीपल ।

१३६४. **पित्ता** (संज्ञा पु०) (सं०) पित्ताशय, हिम्मत, साहस, पित्त ।

१३६५. **पित्तारि** (संज्ञा पु०) (सं०) पित्त पापड़ा, पीला चन्दन, लाख ।

१३६६. **पित्र्य** (वि०) (सं०) पैतृक, पिता सम्बन्धी, पुश्तैनी, (संज्ञा पु०) मघा नक्षत्र, हथेली, अग्रज, शहद, मधु, पितृ तीर्थ, ज्येष्ठ भ्राता ।

१३६७. **पित्र्या** (संज्ञा स्त्री०) मघानक्षत्र, अमावस्या, पूर्णिमा ।

१३६८. **पिद्दी** (वि०) तुच्छ, नगण्य, छोटा, फुदकी, एक छोटी चिड़िया।

१३६९. **पिधान** (संज्ञा पु०) (सं०) ढकना, म्यान, आच्छादन, आवरण, किवाड़, पिधानक।

१३७०. **पिनपिनाना** (क्रि०) (सं०) टंकोरना, टनकना, शब्द होना, शब्द करना, क्रोध करना, क्रुद्ध होना, रोना।

१३७१. **पिनाक** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव धनुष, त्रिशूल, धनुष, डंडा, छड़ी, अभ्रक।

१३७२. **पिनाकी** (संज्ञा पु०) (सं०) महादेव, शिव, महेश, एक बाजा।

१३७३. **पिन्ना** (वि०) (सं०) सर्वदा, दैनिक (संज्ञा पु०) धुनकी, धागे का रील।

१३७४. **पिपासा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्यास, तृषा, लोभ, लालच, इच्छा, पियास, पयास (वि०) पिपासित, पिपासु, (अँ०) थर्स्ट।

१३७५. **पिपीलिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) च्यूँटी, चींटी, कीड़ी, चिंऊटी, चिउंटी, कृमि, पिपील, स्थूलशीर्षिका, हीरा।

१३७६. **पिप्पल** (संज्ञा पु०) (सं०) आस्तीन, एक जलपक्षी, वस्त्र खंड, नग्न व्यक्ति, अश्वत्थ वृक्ष।

१३७७. **पिप्लु** (संज्ञा पु०) (सं०) जतुमणि, तिल, मस्सा।

१३७८. **पिरिच** (संज्ञा पु०) (सं०) (देशज), कटोरा, तश्तरी, पिरोज।

१३७९. **पिरोज** (संज्ञा पु०) (हिं०) कटोरा, तश्तरी।

१३८०. **पिशाच** (संज्ञा पु०)(सं०) पिशाचक, भूत, प्रेत, देवयोनिविशेष, उपदेवता (वि०) विधर्मी मनुष्य, दुराचारी, अनाचारी, उन्मत्त, वातुल, (स्त्री०) पिशाचिनी।

१३८१. **पिशुन** (वि०) (सं०) चुगलखोर, दुर्जन, दुष्ट, खल, (संज्ञा पु०) केसर, काक, तगर, कपास, नारद का एक नाम, क्रूर, निन्दक, दुर्वाक्य, निष्ठुर वाक्य, गाली

१३८२. **पिष्ट** (वि०) (सं०) पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, (संज्ञा पु०)

पीठी, पिट्ठी, कचौरी, पुआ, पिष्टक ।

१३८३. **पिष्टक** (संज्ञा पु०) (सं०) पूरी, पुआ, मिठाई, पकवान, पीठी, पिट्ठी, सीसा, धातु ।

१३८४. **पिष्टपिंड,** (संज्ञा पु०) (सं०) आटा, पूरी, पीठी, लड्डू ।

१३८५. **पिष्टात** (संज्ञा पु०) (सं०) खुशबूदार चूर्ण, गुलाल, अबीर ।

१३८६. **पींड** (संज्ञा पु०) (हिं०) पिंडी, बेलन, खजूर, वृक्ष का धड़, शरीर, देह-पिंड ।

१३८७. **पीछा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पिछला भाग, पीछू ।

१३८८. **पीछे** (अव्यय) (हिं०) अनन्तर, अन्त में, अभाव में, मरणोपरान्त, वास्ते, कारण, निमित्त, बदौलत, पश्चात्, परे ।

१३८९. **पीठ** (संज्ञा पु०) (सं०) पीढ़ा, वेदी, अधिष्ठान, कुशासन, पुराग. आसन, राजसिंहासन, तख्ता, प्रदेश, प्रान्त, पृष्ठ, पिछाड़ी, पीछे ।

१३९०. **पीठनायिकादेवी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, भगवती ।

१३९१. **पीठिका** (संज्ञा स्त्री) (सं०) पीढ़ा, मूल, आधार, अंश, अध्याय, परिच्छेद, आसन ।

१३९२. **पीड़क** (वि०) (सं०) उत्पीड़क, अत्याचारी, ज़ालिम, दुःखदायी, दुःखदायक, क्लेश ।

१३९३. **पीड़न** (संज्ञा पु०) (सं०) चाँपना, पेना, पेलना, कष्ट देना, दुःख देना, यंत्रणा पहुँचना या पहुँचाना, उत्पीड़न, अत्याचार करना, सूर्य या चन्द्र ग्रहण, तिरोभाव, लोप, दबोचना, उच्छेद, नाश, पकड़ना ।

१३९४. **पीड़ा** (संज्ञा स्त्री) (सं०) व्यथा, दुःख, वेदना, बाधा, कष्ट, तकलीफ़, रोग, शिरोमाला, सुगंधित औषध ।

१३९५. **पीड़ित** (वि०) (सं०) पीड़ायुक्त, क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी, बीमार, दबाया हुआ, नष्ट किया हुआ, दुःखी ।

१३९६. **पीढ़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा पीढ़ा, वंश परम्परा, (अं०) जेनरेशन ।

१३९७. **पीत** (वि०) (सं०) पीला, भूरा, पीया हुआ (संज्ञा पु०) पीला रंग, हरताल, कुसुम, पुखराज, हरिचन्दन, सोमलता, सरल धूप, पद्मकाष्ठ, सिहोर का पेड़, मूँगा, पीलाखस, अकोल का पेड़, तुन, नंदि वृक्ष, मूँगा, बेंत, स्वर्ण, सोना, केसर, अगर, हल्दी, पीतल, पीला चन्दन, शहद, गाजर, सफेद जीरा, पीला लोध, चिरायता।

१३९८. **पीतक** (संज्ञा पु०) (सं०) हरताल, केसर, अगरकाष्ठ, सोनामाखी, पद्माख, तुन, विजयसार, हलदुआ, बबूल विशेष, शहद, पीतल, चंदनकाष्ठ, गाजर, पीतजारक, चिरायता, पीली लोध, सोनापाठा, शलजम, पीतरंड।

१३९९. **पीत दारु** (संज्ञा पु०) (सं०) सरल वृक्ष, देवदार, हलदी, कायकरंज, चिरायता।

१४००. **पीतदुग्धा** (संज्ञा स्त्री) (सं०) थूहर, कटेहरी, ऊँट कटारा, दुधार गाय।

१४०१. **पीतन** (संज्ञा पु०) (सं०) हरताल, पीतनक, केसर, सरल वृक्ष, आमड़ा, पाकड़।

१४०२. **पीतपुष्प** (संज्ञा पु०) (सं०) कनेर, पीत पुष्पक, हिंगोट, घीया तोरई, पेठा, तगर, लाल कचनार, चम्पा।

१४०३. **पीतपुष्पा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) झिझरीना, यूथिका, अरहर, तरोई, कनेर, इन्द्रायण, सहदेई।

१४०४. **पीतपुष्पी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शंखाहुली, सहदेई, बड़ी तरोई, सोवजुही, खीरा, इन्द्रायण।

१४०५. **पीत वर्ण** (संज्ञा पु०) (सं०) पीला, पीले रंग का, ताड़ का पेड़, कदम्ब, हलदुआ, लाल कचनार, पीत चंदन, मैनसिल, केसर, (वि०) पीला।

१४०६. **पीतसार** (संज्ञा पु०) (सं०) हरिचन्दन, गेमेदमणि, अंकोल, विजयसार, शिलारस, सफेद चन्दन।

१४०७. **पीताम्बर** (संज्ञा पु०) (सं०) श्री कृष्ण, नट, अभिनयकर्त्ता,

विष्णु, पीला वस्त्र, (वि०) पीले वस्त्र वाला ।

१४०८. **पीता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हल्दी, बड़ी माल कंगनी, दारुहल्दी, देवदारु, राल, असगन्धा, अतीस, पीला केला, बिजौर नींबू, शालिपर्णी, अकाशबेल, गोरोचन, जर्द चमेली, भूरा शीशम, फलप्रियंगु ।

१४०६. **पीति, पीती** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) पीना, गति, प्रीति (संज्ञा पु०) घोड़ा, सूँड ।

१४१०. **पीतिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हल्दी, दारुहल्दी, स्वर्णयूथी ।

१४११. **पीतु** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, अग्नि, यूथपति, गूलर, पीतुदारु, देवदारु।

१४१२. **पीथ** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, अग्नि, समय, काल, पेयपदार्थ (जल, पानी, घी) ।

१४१३. **पीन** (वि) (हिं०) पीवर, स्थूल, माँसल, मोटा, पुष्ट, हृष्ट-पुष्ट, प्रवृद्ध, परिवर्धित, सम्पन्न, भरापूरा, (संज्ञा पु०) पीनता, स्थूलता, मोटाई ।

१४१४. **पीना** (क्रि०) (हिं०) पान करना, सह जाना, बरदाश्त करना, मद्यपान करना, शराब पीना, धूम्रपान करना, सोखना, जज़्ब करना, शोषण करना, छिपाना, जल पीना, सिकुड़ना, संकुचित होना, (संज्ञा पु०) खली, डाट ।

१४१५. **पीयु** (संज्ञा पु०) (सं०) काक, सूर्य, अग्नि, समय, काल, उल्लू, काला सूआ, थूक, कौआ, सुवर्ण, सोना, (वि०) हिंसक, विरुद्ध, प्रतिकूल ।

१४१६. **पीयूष** (संज्ञा पु०) (सं०) अमृत, सुधा, दूध, क्षीर, अमी ।

१४१७. **पीयूषवर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्द्रमा, कपूर, एक छंद ।

१४१८. **पीरि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पीड़ा, दुःख, दर्द, सहानुभूति, करुणा, हमदर्दी, दया, प्रसवपीड़ा, (संज्ञा पु०) मुस्लिम धर्मगुरु, फकीर, सोमवार (वि०) (फा०) वृद्ध, बुजुर्ग, सिद्ध, महात्मा, धूर्त, चालाक ।

१४१६. **पीरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, पेशा, गुरुवाई,

धूर्तता, इजारा, ठेका, चमत्कार, करामात, हुकूमत, अमानुषिक शक्ति, (वि०) पीली।

१४२०. **पील** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथी, गज, शतरंजक, मोहरा, पीलू वृक्ष, एक कीड़ा।

१४२१. **पीला** (वि०) (हिं०) पीत, जर्द, निस्तेज, कांतिहीन।

१४२२. **पीलू** (संज्ञा पु०) (सं०) एक फलदार वृक्ष, लालकट सरैया, चने का साग, तीर, बाण, अणु, सरकंडे का फूल, अखरोट का पेड़, हथेली, करतल।

१४२३. **पीवर** (वि०) (सं०) मोटा, माँसल, स्थूल, तगड़ा, भारी, पीन, चरबी वाला, बलिष्ठ, ताकतवर (संज्ञा पु०) जटा, कछुवा।

१४२४. **पीवरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) युवती स्त्री, गौ, गाय, सतावर, सरिवन, शालपर्णी।

१४२५. **पीसना** (क्रिया) (हिं०) कुचल देना, मेहनत करना, परिश्रम करना, चौपट कर देना, नष्ट करना, पिसान करना, बूकना।

१४२६. **पीहर** (संज्ञा पु०) (हिं०) मैका, मायका, नैहर, पितृगृह, मातृगृह।

१४२७. **पुंग, पुङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) संग्रह, समूह, राशि, श्रेणी, दल, ढेर, पुङ्गीफल, सुपाड़ी।

१४२८. **पुंगल, पङ्गल** (संज्ञा पु०) (सं०) आत्मा ,जीव, रूह।

१४२९. **पुंज, पुञ्ज** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, ढेर, राशि, गुच्छा, गट्ठा, दल, पुंजा, (अव्यय) बहुत-सा।

१४३०. **पुंडरीक, पुण्डरीक** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल पुष्प, सफेद छाता, सफेद रंग, चीता, सफेद हाथी, तिलक, टीका, जल का घड़ा, श्वेत सर्प, श्वेत कुष्ठ, सफेद कोढ़, धान विशेष, कमंडलु, शर, बाण, अग्नि, आग, आकाश, एक यज्ञ, शुक्ल पद्म, श्वेतच्छत्र, सफेदा आम।

१४३१. **पुंड्र, पुण्ड्र** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊख, कमल, सफेद कमल, तिलक, माधवीलता, तिनिश वृक्ष, तिलक वृक्ष, पुंड्रक।

१४३२. **पुंस्त्व पुंसता** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरुषत्व, मर्दानगी, वीर्य, गंवतृण ।

१४३३. **पुकार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हांक, टेर, दुहाई, अधिक माँग ।

१४३४. **पुख्ता** (वि०) (फा०) पक्का, दृढ़, मज़बूत, (हिं०) पुख्तता (संज्ञा स्त्री०) पुख्तगी ।

१४३५. **पुचारा** (संज्ञा पु०) (हिं०) ठकुर सुहाती, चापलूसी, झूठी प्रशंसा, पोतना ।

१४३६. **पुच्छ** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुम, पूँछ, लाङ्गूल, जन्तु विशेष, पीछे का भाग ।

१४३७. **पुच्छल्ला** (संज्ञा पु०) (हिं०) बड़ी दुम, (वि०) पिछलग्गू, खुशामदी, चापलूस ।

१४३८. **पुट** (संज्ञा पु०) (हिं०) भावना, आच्छादन, दोना, कटोरा, घोड़े की टाप, अंतरौटा, जायफल, संपुट, युगल, युग्म, मध्य, आभ्यन्तर, चूर्ण, पेषण, अश्वखुर, मिलान, मिलना, पद्म, कमल ।

१४३९. **पुटकी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पोटली, गठरी, आकस्मिक, मृत्यु, दैवी विपत्ति, आलन, पुटरिया, पुटली ।

१४४०. **पुटिका** (संज्ञा स्त्री०) इलायची, पुड़िया, संपुट ।

१४४१. **पुटित** (वि०) (सं०) युक्त, आच्छादित, आवृत्त, बन्द, सुकड़ा हुआ, सिमटा हुआ ।

१४४२. **पुटी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कटोरी, कोपीन, लंगोटी, पुड़िया, दोना, आच्छादन ।

१४४३. **पुठवाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) पृष्ठ रक्षक, सहायक, मददगार ।

१४४४. **पुण्य** (वि०) (सं०) पवित्र, पावन, शुभ, मंगलात्मक, (संज्ञा पु०) धर्म, सुकृत, शुभकर्म, उत्तमकर्म, (हिं०) पुन, परोपकार, धर्म कार्य ।

१४४५. **पुण्यकृत** (वि०) (सं०) पुण्यकर्ता, धार्मिक, सुकृति, पुण्यात्मा, पुण्यवान्, धर्मात्मा, नेक ।

१४४६. **पुण्यजन** (संज्ञा पु०) (सं०) सज्जन, धर्मात्मा, राक्षस, यक्ष, दानव।

१४४७. **पुण्यभूमि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आर्यावर्त्त, पुण्यस्थान, तीर्थस्थान, लीलास्थल।

१४४८. **पुण्यश्लोक** (वि०) (सं०) पवित्र, (संज्ञा पु०) नल, युधिष्ठिर, विष्णु।

१४४९. **पुण्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तुलसी का पौधा।

१४५०. **पुतली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आँख का तारा, पुतलिका, पुतरिया, पुतरी।

१४५१. **पुत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) सुत, आत्मज, अपत्य, सन्तान, बेटा, लड़का, पुत्र, पूत, पुत।

१४५२. **पुत्रक** (संज्ञा पु०) (सं०) बच्चा, टिड्डी, फतिंगा, शरभ, दोना।

१४५३. **पुत्रिका** (संज्ञा स्त्री) (सं०) लड़की, बेटी, कन्या, दुहिता, तनया, पुत्तलिका, पुतली, गुड़िया, आँख की पुतली, स्त्री का चित्र, दोहित्र, दोहिता, गौण पुत्र, कन्या-पुत्र।

१४५४. **पुत्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कन्या, लड़की, बेटी, दुहिता, तनया, (अँ०) डॉटर

१४५५. **पुद्गल** (संज्ञा पु०) (सं०) परमाणु, शरीर, आत्मा, देह, जीव, शिव का नाम, गंधतृण, (वि०) सुन्दर, मनोहर।

१४५६. **पुनः** (अव्यय) (हिं०) फिर, दूसरी बार, दोबारा, पीछे, उपरान्त, अनन्तर, द्वितीय बार, पुनर्वार, वारान्तर, फिर, पुनि, बहुरि।

१४५७. **पुन** (संज्ञा पु०) (हिं०) पुण्य, धर्म, सवाब (अव्यय) पुनः, फिर, दोबारा।

१४५८. **पुनर्वसु** (संज्ञा पु०) (सं०) सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व, एक मुनि, शिव, विष्णु।

१४५९. **पुनर्वितरण** (संज्ञा पु०) (सं०) फिर बाँटना, पुनः वितरण. (अँ०) रि-डिस्ट्रीब्यूशन।

१४६०. **पुनीत** (वि०) (सं०) पवित्र, पाक, पावन, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ।

१४६१. **पुरन्दर** (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र, विष्णु, चोर, ज्येष्ठा नक्षत्र, मिर्च, चव्य, चई ।

१४६२. **पुरःसर** (वि०) (सं०) संगी, साथी, अगुआ, अग्रगंता, समन्वित, मिला हुआ (संज्ञा पु०) अग्रगमन, साथ ।

१४६३. **पुरःस्थापन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रस्तुत करना, सामने रखना, (अँ०) इन्ट्रोड्यूस ।

१४६४. **पुर** (संज्ञा पु०) (सं०) नगर, शहर, कस्बा, घर, आगार, अंतःपुर, कोठा, अटारी, लोक, भुवन, देह, नक्षत्र, पुंज, राशि, पुरवट, मोट, शरीर, कोया, गुग्गल, पीली कटसरैया, दुर्ग, किला, गढ़, (वि०) पूर्ण ।

१४६५. **पुरखा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पूर्वज, पूर्वपुरुष, बड़ा-बूढ़ा, पिता, पितामह, (संज्ञा स्त्री०) पुराखिन ।

१४६६. **पुरचक** (स्त्री०) (हिं०) पुचकार, चुमकार, प्रोत्साहन, बढ़ावा, प्रेरणा, हिमायत, पृष्ठपोषण ।

१४६७. **पुरजा** (संज्ञा पु०) (फा०) टुकड़ा, खंड, धज्जी, अवयव, भाग, अंश, (अँ०) पार्ट ।

१४६८. **पुरतः** (अव्यय) (सं०) पूर्व, पहले, पीछे से, सामने से ।

१४६९. **पुरना** (क्रिया) (हिं०) पूरा होना, समाप्त होना, पूरा पड़ना ।

१४७०. **पुरबला** (वि०) (देशज) पहले का, पूर्व जन्म का, पूर्व का पूरविया, पूर्वी ।

१४७१. **पुरस्कार** (संज्ञा पु०) (सं०) पारितोषिक, आदरपूर्वक दान, साधुवाद, धन्यवाद, पूजा, आदर, सम्मान, स्वीकार, इनाम (अँ०) प्राइज़ ।

१४७२. **पुरस्कृत** (वि०) (सं०) पूजित, इनाम पाया हुआ, स्वीकृत, आहत, सम्मानित, काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में ।

१४७३. **पुरस्तात्** (अव्यय) (सं०) पूर्व, सामने, सबसे आगे, पीछे से, अन्त में, पूर्वदिक्, प्रथमकाल, अतीत, पेश्तर।

१४७४. **पुरा** (अव्यय) (सं०) पूर्व काल में, पुराने समय में, पहले, प्राचीन, पुराना, चिरन्तन, अतीत, भूत, चिरातीत, निकट, सन्निहित, (संज्ञा स्त्री०) पूर्वदिशा, गंगा, महल (संज्ञा पु०) गाँव-बस्ती।

१४७५. **पुराण** (वि०) (सं०) प्राचीन, पुरातन, पौराणिक, (संज्ञा पु०) प्राचीन आख्यान, पुरानी कथा, इतिहास, हिन्दू धर्म के ग्रन्थ विशेष, अठारह की संख्या, शिव, कार्षापण, ब्रह्मा, पुरुष, विष्णु, नारायण, भगवान्।

१४७६. **पुरातन** (वि०) (सं०) प्राचीन, पुराना, जीर्ण, प्राचीन, बहुकालीन, पूर्वकालीन, चिरन्तन, अगले समय का, पहले का, (अँ०) ओल्ड (संज्ञा पु०) विष्णु।

१४७७. **पुराना** (वि०) (सं०) वृद्ध, अतरुण, जीर्ण, चिरकाली, बूढ़ा, जरत, जीन, प्राचीन, पुरानयाँ, पुरा, पुराण, पुरातन, पुण, प्रीण, प्रौढ़, चिराना, जर्जरित (अँ०) ओल्ड।

१४७८. **पुरि** (संज्ञा स्त्री) (सं०) कस्बा, शहर, नदी, शरीर, (संज्ञा पु०) राजा।

१४७९. **पुरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नगरी, शहर, जगन्नाथपुरी।

१४८०. **पुरीष** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्ठा, गू, मल, गन्द, कूड़ा, करकट, पुरीषा।

१४८१. **पुरु** (संज्ञा पु०) (सं०) देवलोक, अमरलोक, दैत्य, पुष्पपराग, शरीर, एक राजा।

१४८२. **पुरुष** (संज्ञा पु०) (सं०) मनुष्य, आदमी, नर, आत्मा, विष्णु, सूर्य, जीव, परमात्मा, शिव, पुन्नागवृक्ष, पारा, सीख, पाँव, पति, स्वामी, पूर्वज।

१४८३. **पुरुषार्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) पौरुष, उद्योग, पराक्रम, पुरुषत्व, शक्ति, साहस, सामर्थ्य, हिम्मत।

१४८४. **पुरुषार्थी** (वि०) (सं०) परिश्रमी, उद्योगी, बली, सामर्थ्य वाला, सामर्थ्यवान् ।

१४८५. **पुरुषोत्तम** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, विष्णु, जगन्नाथ, नारायण, मलमास, श्रीकृष्ण, भगवान्, निष्पाप मनुष्य ।

१४८६. **पुलक** (संज्ञा पु०) (सं०) रोमांच, हर्ष, रत्न, खनिज-पदार्थ, रत्न-दोष, एक प्रकार का गेरु (गिरिमारि) गन्धर्व-विशेष, हरताल, हाथी का रातिव ।

१४८७. **पुलाक** (संज्ञा पु०) (सं०) अंकरा, भात, पीच, पुलाव, माँड़, क्षिप्रता, जल्दी, अल्पता, संक्षेप, तुच्छ, धान्य ।

१४८८. **पुश्ती** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) टेक, सहारा, आश्रय, सहायता, मदद, थाम, पृष्ठरक्षा, तरफदारी, तकिया ।

१४८९. **पुलपुलाना** (क्रिया) (हिं०) भयभीत होना, डरना, चूसना काँपना, ढीला पड़ना, शिथिल होना ।

१४९०. **पुश्त** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) पृष्ठ, पीठ, पीढ़ी (वि०) पुश्तैनी ।

१४९१. **पुष्कर** (संज्ञा पु०) (सं०) जल, तालाब, सरोवर, नीलकमल, तलवार की म्यान, तीर, आकाश, अन्तरिक्ष, वायुमण्डल, पिंजड़ा, नशा, मद, सम्मेलन, मेल, नृत्यकला, युद्ध, लड़ाई, सर्प विशेष, ढोल, नगाड़ा, सूर्य, शिव, एक असुर, वाद्यभाण्ड, मुख, अज, पद्म, कमल, शर, बाण, द्वीप विशेष, युद्ध, असिकोप ।

१४९२. **पुष्कल** (संज्ञा पु०) (सं०) मेरुपर्वत, एक वीणा, एक डोल, (वि०) बहुत विपुल, अधिक, पूर्ण, पूरा, चटकीला, भड़कीला, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, समीप, ढेर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

१४९३. **पुष्कलक** (संज्ञा पु०) (सं०) खूँटी, मेख, कील, कस्तूरी मृग ।

१४९४. **पुष्ट** (वि०) (सं०) मोटा-ताजा, बलिष्ठ, बलवर्द्धक, बलवान्, सुदृढ़, मजबूत, पूर्ण, पूरा, तैयार, भरा हुआ, प्रतिपालित, माँसल, स्थूल, हृष्टपुष्ट, तगड़ा ।

१४६५. **पुष्टि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मुटाई, मोटाताजापन, दृढ़ता, मजबूती, अनुगंत, समर्थन, पोषण, पालन।

१४६६. **पुष्टिद** (वि०) (सं०) पुष्टि देनेवाला, ताजगी देने वाला, समृद्धिकारी।

१४६७. **पुष्प** (संज्ञा पु०) (सं०) फूल, सुमन, पुष्करमूल, रसौत, स्त्री का रज, अंजन, विकाश, लवंग, माँस, पुहुप, कुसम, प्रसून, गुल, फुलीरोग।

१४६८. **पुष्पक** (संज्ञा पु०) (सं०) फूल, लोहे का प्याला, विषरहित सर्प, कंगन, अँगीठी, सिगड़ी, रसौत, हीराकसीस, रामचन्द्र का प्रसिद्ध विमान।

१४६९. **पुष्पकेतन** (संज्ञा पु०) (सं०) पुष्पकेतु, कामदेव, पराग, मकरंद।

१५००. **पुष्पगन्धा** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, पुष्पधनु, पुष्पध्वज, पुष्पपत्री, पुष्पवाण, रतिदेव, पुष्पशर, पुष्पशरासन, पुष्पायुध, पुष्पास्त्र, पुष्पेषु।

१५०१. **पुष्पलिक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) भौंरा, भ्रमरा, भ्रमर, मधु, मकरंद, पुष्पलिक्ष, मधुमक्खी।

१५०२. **पुष्प फल** (संज्ञा पु०) (सं०) कुम्हड़ा, अर्जुन वृक्ष, कैथ।

१५०३. **पुष्पोद्यान** (संज्ञा पु०) (सं०) फुलवारी, पुष्पवाटिका, बगीचा, बाग, (अं०) गार्डन।

१५०४. **पुष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पुष्टि, पोषण, फूल, सारवस्तु, पूस का महीना, एक नक्षत्र।

१५०५. **पुष्यलक** (संज्ञा पु०) (सं०) कस्तूरी मृग, कील, खूँटा।

१५०६. **पुस्त** (संज्ञा पु०) (सं०) पलस्तर, चित्रकारी, लीपना-पोतना, (संज्ञा स्त्री०) पुस्तक, पोथी, किताब, पुश्त, पीढ़ी।

१५०७. **पुस्तक** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) किताब, पोथी, ग्रन्थ, पुस्तकी, पुस्ती।

१५०८. **पूँछ** (संज्ञा पु०) (हि०) दुम, पुच्छ, पुछल्ला, पिछलग्गू, लाङ्गूल।

१५०९. **पूँछना** (क्रिया) (हिं०) पोंछना, झाड़ना, साफ़ करना, प्रश्न करना, जिज्ञासा करना ।

१५१०. **पूँजी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मूल, धन-सम्पत्ति, जमा, पुँज, समूह, (अँ०) कैपिटल ।

१५११. **पूछना** (क्रिया) (हिं०) जिज्ञासा करना, अनुसंधान करना, टोह लगाना, प्रश्न करना, मूल्य जानना, कदर करना, टोकना ।

१५१२. **पूजन** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रद्धा, विनय, सम्मान, खातिरदारी, पूजा, अर्चन, आराधन ।

१५१३. **पूजना** (क्रिया) (हिं०) अर्चना करना, आराधना करना, सेवा करना, सम्मान करना, आदर करना, वंदना करना, सिर झुकाना, घूस देना, ध्यान करना ।

१५१४. **पूजा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अर्चना, आराधना, आदर-सत्कार, खातिर, आवभगत, दंड, सजा, उपासना, अर्चा, सेवा, टहल, अनुष्ठान, तप, दीक्षा, परिचर्या ।

१५१५. **पूज्य** (वि०) (सं०) पूजनीय, पूजने योग्य, माननीय, पूजित, देवता, दंड, सजा ।

१५१६. **पूति** (वि०) (सं०) सड़ा हुआ, बुसा हुआ, (संज्ञा स्त्री०) स्वच्छता, पवित्रता, दुर्गन्ध, बदबू, मुश्कबिलाव, रोहिषतृण ।

१५१७. **पूतिगंध, पुष्पगन्ध** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गंधक, दुर्गन्ध, बदबू, इंगुदी, राँगा, पूतिगंधि ।

१५१८. **पूर** (संज्ञा पु०) (सं०) भरना, अघाना, सन्तुष्ट करना, उँड़ेलना, सरोवर, तालाब, रोटी, पूड़ी, जल-समूह, जल प्रवाह, जलधारा, बाढ़ ।

१५१९. **पूरक** (वि०) (सं०) पूरणकर्ता, समापक, पूर्ण, (अँ०) कॉम्पलीमेंटरी (संज्ञा पु०) प्राणायाम विशेष, बिजौरा नींबू, पिंड, गुणक अंक ।

१५२०. **पूरण** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, सेतु, पुल, मोथा, मेह, वृष्टि, मदहपूरना, पिण्ड विशेष, पूर्ण करना, भरना, पूरा करना, भर देना ।

१५२१. **पूरना** (क्रि०) (हिं०) पूरा करना, पूर्ति करना, ढाँकना, सफल करना, सिद्ध करना, पूर्ण कराना, फूँकना, बजाना, बटना, बिनना, बुनना, बनाना।

१५२२. **पूरब** (संज्ञा पु०) (हिं) पूर्व, प्राची, (वि०) पहले का, पूर्व का, आदि का, प्राथमिक, प्रथम।

१५२३. **पूरा** (वि०) (हिं०) समूचा, समग्र, भरपूर, काफ़ी, पर्याप्त, पूर्णतया सम्पादित, पूर्णतुष्ट।

१५२४. **पूरिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूड़ी, कचौड़ी, पूरी।

१५२५. **पूरित** (वि०) (सं०) भरा हुआ, तृप्त, परिपूर्ण, गुणित।

१५२६. **पूरुष** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरुष, आत्मा।

१५२७. **पूर्ण** (वि०) (सं०) भरा हुआ, पूरा, परिपूर्ण, सर्वांगपूर्ण, एब्सोल्यूट, पर्याप्त, काफ़ी, तृप्त, भरपूर, यथेष्ट, समग्र, समूचा, समस्त, सफल, सिद्ध, (संज्ञा पु०) जल, विष्णु।

१५२८. **पूर्णक** (संज्ञा पु०) (सं०) रसोइया, कुक्कट, ताम्रचूड़, मुर्गा, एक देवयोनि।

१५२९. **पूर्णमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूर्णमास, पूर्णि (संज्ञा पु०) सूर्य, चन्द्रमा।

१५३०. **पूर्त** (संज्ञा पु०) (सं०) पालन, धर्मार्थ काम, (अँ०) चैरेटी।

१५३१. **पूर्य** (वि०) (सं०) पूरा करने योग्य, पूरणीय, पालनीय, (संज्ञा पु०) एक प्रकार की घास।

१५३२. **पूर्व** (वि०) (सं०) पहले का, पुराना, आगे का, अगला, पिछला, पीछेका, (क्रि० वि०) पहले, पेशतर, आगे (संज्ञा पु०) प्राची, पूर्व दिशा।

१५३३. **पूर्वक** (संज्ञा पु०) (सं०) पूर्व पुरुष, पुरखा, (क्रि० वि०) सहित, साथ।

१५३४. **पूर्वज** (संज्ञा पु०) (सं०) ज्येष्ठ भ्राता, पूर्व पुरखा, पुरखा, पूर्व पुरुष, ब्रह्मा, पूर्व पितामह, परदादा, प्रपितामह।

१५३५. **पूर्वतर** (वि०) (सं०) पहला, पहले का, पूर्व का ।

१५३६. **पूर्वदिगीश** (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र, मेष-सिंह-धनु (ये तीन राशियाँ) ।

१५३७. **पूर्वा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्व दिशा, प्राची ।

१५३८. **पूलक** (संज्ञा पु०) (सं०) मुट्ठा, गट्ठा, बंडल ।

१५३९. **पूषा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी (संज्ञा पु०) सूर्य ।

१५४०. **पृक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सम्बन्ध, लगाव, छूना, स्पर्श ।

१५४१. **पृक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) अन्न, अनाज ।

१५४२. **पृच्छक** (वि०) (सं०) प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु, पूछने वाला ।

१५४३. **पृच्छा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूर्व-पक्ष ।

१५४४. **पृतना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सेना, युद्ध, लड़ाई, सैन्य, कटक, विशेष संख्यायुक्त सेना, पृतन्या, फ़ौज (वि०) पृतन्यु ।

१५४५. **पृथक्** (वि०) (सं०) भिन्न, अलग, जुदा, अन्य, विच्छेद, न्यारा, अलग ।

१५४६. **पृथगात्मा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वैराग्य, विरक्ति, भेद, अन्तर, विवेक, (संज्ञा स्त्री०) पृथकता, पृथक्ता ।

१५४७. **पृथग् जन** (संज्ञा पु०) (सं०) मूर्ख, बेवकूफ़, नीच, कमीना, पापी, साधारण, प्राकृत ।

१५४८. **पृथु** (वि०) (सं०) चौड़ा, विस्तृत, विशाल, अधिक, विपुल, बड़ा, महान्, विस्तारित, अगणित, असंख्य, चतुर, तेज़, चालाक (संज्ञा पु०) शिव, महादेव, अग्नि, विष्णु, काला जीरा, अफ़ीम ।

१५४९. **पृथुक** (संज्ञा पु०) (सं०) चिड़वा, चिउरा, बच्चा, लड़का, बालक, शिशु, कुमार, हिंगुपत्री ।

१५५०. **पृथुल** (वि०) (सं०) महत्, बड़ा, विशाल, चौड़ा, लम्बा, विस्तृत, अधिक, बहुत, मोटा-ताजा, स्थूल ।

१५५१. **पृथ्वी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भूमि, जमीन, धरती, क्षिति, क्षोणी, धात्री, धरणी, ऊर्वी, जगती, वसुधा, अचला, अवनि, मही, मेदिनी,

वसुन्धरा, क्षमा, अदिति, इला, धरा, कान्ता, गौ भू, समुद्रवसना, समुद्राम्बरा समुद्रवर्णा, धारिणी, निश्चला, पुहमी, पुषा, पृथमी, भद्रा, भुँई, भूमण्डल भूमिका, सुरभि, स्थिरा, विपणा, मुद्रा, धरातल, हेमा, सागरधरा, सागर मेखल, क्षुर्णा, धर, चला, जगतीतल, ज़मीन, बड़ी इलायची, काला जीरा, हिंगपुत्री, मिट्टी, सोंठ ।

१५५२. पृदाकु (संज्ञा पु०) (सं०) बिच्छू, चीता, हाथ, तेन्दुआ, सर्प, वृक्ष ।

१५५३. पृश्नि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रश्मि, किरण, चितकबरी गाय, पिठवन, (संज्ञा पु०) अन्न, देप, जल, अमृत, (वि०) कृशकाय, दुबला, सफ़ेद, सामान्य, साधारण, मामूली, चितकबरा ।

१५५४. पृषत (संज्ञा पु०) (सं०) बिन्दु-कण, चितकबरा, हिरण, सर्प, एक प्रकार की मछली ।

१५५५. पृष्ठ (संज्ञा) (सं०) पीठ, पन्ना, सफ़ा, (अँ०) पेज ।

१५५६. पृष्ठचक्षु (संज्ञा पु०) (सं०) रीछ, भालू, केकड़ा ।

१५५७. पृष्ठपोषण (संज्ञा पु०) (सं०) समर्थन, साहाय्य, उत्साहित करना, सहायता या मदद देना ।

१५५८. पृष्ठशृंगी, पृष्ठशृङ्गी (संज्ञा पु०) (सं०) मेष, भैंसा, मेढ़ा, हिजड़ा ।

१५५९. पेंदी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मूली, गाजर या मूली की जड़, पेंदा, गुदा ।

१५६०. पेच (संज्ञा पु०) (फ़ा०) घुमाव, चक्कर, फेर, झंझट, उलझन, बखेड़ा, चालबाज़ी, चालाकी, धूर्तता, यंत्र, पुर्जा, दाँव, आभूषण, युक्ति, तरकीब, कलगी, सिरपिच, गोशपेच (आभूषण), कील, काँटा, दो पतंगों का आपस में पेंच पड़ना ।

१५६१. पेचक (संज्ञा पु०) (फ़ा०) उलूक, उल्लू, घुग्घु, खूसट, गोली, गुच्छी, पलंग, चारपाई, जूँ, बादल ।

१५६२. **पेचीदा** (वि०) (फ़ा०) पेचदार, टेढ़ा-मेढ़ा, कठिन, कुटिल, मुश्किल, आड़ा।

१५६३. **पेट** (संज्ञा पु०) (हिं०) उदर, गर्भ, हमल, जठर, अन्तःकरण, मन, दिल, रोज़ी, जीविका, गुंजाइश, अवकाश, समाई।

१५६४. **पेटक** (संज्ञा पु०) (सं०) थैला, टोकरी, पिटारा, समूह, समुदाय।

१५६५. **पेटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) मध्यभाग, विवर्ण, ब्यौरा, तफ़सील, टोकरा, सीमा, हद, नदी का पाट, पशु की अँतड़ी, वृत्त, घेरा।

१५६६. **पेटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) संदूकची, छोटा सन्दूक, कमरबन्द, चौड़ा तस्मा (कमर में बाँधने वाला), चपरास, कमरकस पिटारी।

१५६७. **पेड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) रुख, तरु, वृक्ष, विटप, विटप, दरख्त, पादप, कुट, कुज, द्रुम, बिरवा, भूमिरुह, द्रोण, साल, भूरुह, शाखी, कल्प।

१५६८. **पेपर** (संज्ञा पु०) (अँ०) कागज़, समाचार-पत्र, दस्तावेज़, तमस्सुक, सनद, लिखित कागज़, परीक्षा-प्रश्नपत्र।

१५६९. **पेय** (संज्ञा पु०) (सं०) तरल पदार्थ, दूध, जल, पानी (वि०) पीने योग्य पदार्थ।

१५७०. **पेयु** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, अग्नि, सूर्य।

१५७१. **पेयूष** (संज्ञा पु०) (सं०) सुधा, अमृत, नई ब्याही गौ का दूध, ताज़ा घी।

१५७२. **पेरना** (क्रिया) (हिं०) निचोड़ना, सताना, कष्ट देना, देर लगाना, घुमाना, प्रेरणा देना, चलाना, भेजना, पठाना।

१५७३. **पेरु** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, अग्नि, सूर्य, (वि०) रक्षक, पूरक।

१५७४. **पेलना** (क्रिया) (हिं०) ठेलना, ठूसना, ठोंसना, घुसेड़ना, तेल निकालना, त्यागना, घुसाना, धँसाना, दबाना, धक्का देना, ढकेलना, अवज्ञा करना, टालना, फेंकना, हटाना, ज़बर्दस्ती करना, प्रविष्ट करना।

१५७५. **पेला** (संज्ञा पु०) (हिं०) आक्रमण, चढ़ाई, झगड़ा, तकरार, कसूर, अपराध।

१५७६. पेलू (संज्ञा पु०) (हिं०) पति, खाविन्द, उपपति, जार, बलवान् ।

१५७७. पेश (क्रिया वि०) (फ़ा०) सामने, आगे, सम्मुख, वश ।

१५७८. पेशकश (संज्ञा पु०) (फ़ा०) नज़र, भेंट, सौगात, तोहफ़ा, उपहार, (अं०) प्रैज़ेंट, गिफ़्ट ।

१५७९. पेशबन्दी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) छल, धोखा, कपट, युक्ति ।

१५८०. पेशल (वि०) (सं०) चतुर, निपुण, धूर्त, चालाक, कोमल, मनोहर, सुकुमार, सुन्दर, (संज्ञा पु०) विष्णु ।

१५८१. पेशलता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सौन्दर्य, सुन्दरता, धूर्तता, चालाकी, कोमलता, सुकुमारता ।

१५८२. पेशवा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) नेता, सरदार, शिवाजी के प्रधान मन्त्री की उपाधि ।

१५८३. पेशा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) धन्धा, उद्यम, व्यवसाय, कार्य, काम, व्यापार, व्यभिचारी कर्म ।

१५८४. पेशानी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) माथा, ललाट, भाल, किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध, अग्रभाग ।

१५८५. पेशी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) म्यान, अंडा, जटामांसी, वज्र, पकी हुई फली, अंड, माँसपेशी, नदी, पिशाची, राक्षसी, असिकोष, उपस्थिति, हाज़री ।

१५८६. पेषण (संज्ञा पु०) (सं०) मर्दन, पीसना, चूर्ण करना, बाँटना, कूटना, निचारा, थूहड़ ।

१५८७. पैंचना (क्रिया) (देशज) अनाज फटकना, पछोरना, फेरना, पलटना ।

१५८८. पैंठ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हाट, बाज़ार, दुकान, हुंडी, पहुँच, प्रवेश, पैठ ।

१५८९. पैंड़ (संज्ञा पु०) (हिं०) डग, पग, कदम, मार्ग, रास्ता ।

१५९०. **पैंड़ा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पथ, रास्ता, रीति, प्रणाली, मार्ग, बाट, गैल।

१५९१. **पैं** (अव्यय) (हिं०) परन्तु, पर, लेकिन, अवश्य, ज़रूर, बाद, पीछे, अनन्तर, समीप, पास, प्रति, ओर, तरफ़, (प्रत्यय) ऊपर, से, द्वारा, (संज्ञा स्त्री०) दोष, त्रुटि, ऐब।

१५९२. **पैंकट** (संज्ञा पु०) (अँ०) पुलिन्दा, मुट्ठा, गठरी, बंडल।

१५९३. **पैग़ाम** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) सन्देशा, सन्देश, सन्देसा, सन्देन, (अँ०) मैसिज।

१५९४. **पैंज** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रतिज्ञा, प्रण, होड़, प्रतिद्वन्द्विता, लागडाट (संज्ञा पु०) पैंतरा।

१५९५. **पैठार** (संज्ञा पु०) (हिं०) पैठ, प्रवेश, मुहाना, द्वार, फाटक।

१५९६. **पैतृक** (वि०) मारूसी, वृपा, पुश्तैनी, परम्परागत,।

१५९७. **पैदल** (संज्ञा पु०) (हिं०) पदाती सैनिक, मोहरा, (वि०) पैदल चलने वाला, (क्रिया वि०) पाँयों-पायों, पैरों से।

१५९८. **पैदा** (वि०) (फ़ा०) उत्पन्न, प्रसूत, प्रकट, उपस्थित, प्राप्त, घटित, अर्जित, कमाया हुआ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आमदनी, आय, लाभ।

१५९९. **पैदायशी, पैदाइशी** (वि०) (फ़ा०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, जन्मजात, पुराना, पैतृक।

१६००. **पैदावार** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) उपज, उत्पादन, फसल।

१६०१. **पैन** (संज्ञा पु०) (अँ०) कलम, लेखनी, (हिं०) नाली, पनाला, छोटी नहर, निर्झरिणी।

१६०२. **पैना** (वि०)(हिं०) धारदार, नुकीला, तीखा, तेज, (संज्ञा पु०) अंकुश, नाली, पनाला, मसाला।

१६०३. **पैया** (संज्ञा पु०) (हिं०) दीन-हीन, पोला दाना, पहिया।

१६०४. **पैर** (संज्ञा पु०) (हिं०) पाँव, पग, निशान, चिह्न, खलियान, प्रदररोग, पद, चरण, पदचिह्न, पाद, पाँय, पाँ, पाँई, पगु, चलन, कदम, फुट।

१६०५. **पैरवी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) अनुसरण, अनुगमन, समर्थन, सफ़ाई, वकालत, प्रयत्न, कोशिश, खुशामद ।

१६०६. **पैरा** (संज्ञा पु०) पौरा, पयाल, (अँ०) पैराग्राफ़ ।

१६०७. **पैरी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) सीढ़ी, पैड़ी, पाँव का गहना ।

१६०८. **पैवन्द** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) चकती, थिगली, इष्ट-मित्र, जोड़, पैवंदा ।

१६०९. **पैवंदी** (वि०) (फ़ा०) वर्णसंकर, दोगला, (संज्ञा पु०) बड़ा आड़ू, शफ़तालू ।

१६१०. **पैशल्य** (संज्ञा पु०) (सं०) कोमलता, नरमी, नम्रता ।

१६११. **पैशुन्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पिशुनता, चुग़लखोरी, खलता, परनिन्दा ।

१६१२. **पैसरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) झंझट, जंजाल, बखेड़ा ।

१६१३. **पैसा** (संज्ञा पु०) (हिं०) धन, दौलत, ताँबे का सिक्का, धन, द्रव्य, रोकड़, सम्पदा ।

१६१४. **पोंगा** (संज्ञा पु०) (हिं०) भोंगा, बाँस की नली, (वि०) पोला, मूर्ख, भोंदू ।

१६१५. **पोकल** (वि०) (देशज) पुलपुला, नाज़ुक, पोल, खोखला, तत्त्वहीन, निःसार ।

१६१६. **पोंगी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटी पोली नली, (वि०) छूँछी, खोखली, मूर्ख स्त्री ।

१६१७. **पोखना** (क्रिया) (हिं०) पालना, पोसना ।

१६१८. **पोखर** (संज्ञा पु०) (सं०) तालाब, सरोवर, तड़ाग, जलाशय, पोखरा ।

१६१९. **पोच** (वि०) (हिं०) हीन, निकृष्ट, तुच्छ, क्षुद्र, अशक्त, दुर्बल, बुरा, नीच, मंद, अधम, अज्ञानी, अशुचि, दुःखित ।

१६२०. **पोट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गठरी, पोटली, बकुचा, ढेर, टाला, (संज्ञा पु०) मेल, मिलान, घर की नींव ।

१६२१. **पोटना** (क्रिया) (हिं०) समेटना, बटोरना, फुसलाना, हथियाना, बात में लाना।

१६२२. **पोटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) उदराशय, पेट की थैली, साहस, सामर्थ्य, कलेजा, बिसात, औकात, समाई, पलक, उँगली का छोर, गेंद, पक्षी का झोंझ, (संज्ञा स्त्री०) दाढ़ी-मूँछ वाली स्त्री, नौकरानी, घड़ियाल।

१६२३. **पोढ़ा** (वि०) (हिं०) पुष्ट, बलवान्, पोढ़, साहसी, दृढ़, मजबूत, कड़ा, कठोर।

१६२४. **पोत** (संज्ञा पु०) (सं०) वस्त्र, कपड़ा, घर की नींव, नौका, नाव, जहाज़, पशु-पक्षी का शावक, वत्स, बच्चा, तरणी, समुद्रयान, भूमि-कर, मालगुज़ारी, ढंग, ढब, प्रवृत्ति, बारी, दाँव, पारी, अवसर।

१६२५. **पोतदार** (संज्ञा पु०) (हिं०) खजानची, पारखी।

१६२६. **पोतन** (वि०) (सं०) पवित्र, स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र करने वाला।

१६२७. **पोतना** (क्रिया) (हिं०) लीपना, पुतना (संज्ञा पु०) पोतने का कपड़ा, अण्डकोष।

१६२८. **पोता** (संज्ञा पु०) (हिं०) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पवित्र वायु, विष्णु, पोतने का कपड़ा, लगान, भूमिकर, अण्डकोष, एक मछली, पोतने वाली मिट्टी।

१६२९. **पोताच्छादन** (संज्ञा पु०) (सं०) तम्बू, छोलदारी, डेरा।

१६३०. **पोत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) वज्र, नाव, जहाज़, हल की फाल, नाव की डाँड़।

१६३१. **पोना** (क्रिया) (हिं०) गूँथना, गाँथना, गूहना, पिरोना, यूथना, पकाना।

१६३२. **पोर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रीढ़, पीठ, उँगली की गाँठ।

१६३३. **पोल** (संज्ञा पु०) (हिं०) खाली जगह, शून्य स्थान, खोखलापन, सारहीनता, आँगन, सहन, प्रवेशद्वार, अवकाश।

१६३४. **पोला** (वि०) (हिं०) छूँछा, शून्य, रीता, रिक्त, खाली, नरम, कोमल, खोखला, सारहीन, तत्त्वहीन, पुलपुला।

१६३५. **पोली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूड़ी, (देशज) जंगली पुष्प।

१६३६. **पोशाक** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) परिधान, पहरावा, वेश, वेष।

१६३७. **पोष** (संज्ञा पु०) (सं०) पालन-पोषण, परवरिश, धन, तुष्टि, सन्तोष, वृद्धि, बढ़ती, उन्नति, अभ्युदय, पालन।

१६३८. **पोषक** (वि०) (सं०) पालने वाला, पालक, वर्द्धक, बढ़ाने वाला, सहायक, पालनकर्ता, भरणकारी।

१६३९. **पोषण** (संज्ञा पु०) (सं०) बढ़ाना, वर्द्धन, प्रतिपालन, रक्षण।

१६४०. **पोष्य** (वि०) (सं०) पालनीय, पाला हुआ, पोषित, पाल्य, (संज्ञा पु०) नौकर, चाकर, भृत्य।

१६४१. **पोस्ट** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) स्थान, जगह, पद, नौकरी, डाकखाना, डाकघर, पोस्ट आफ़िस।

१६४२. **पोस्त** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) छिलका, बकला, खाल, चमड़ा, अफ़ीम का पौधा।

१६४३. **पोहना** (क्रिया) (हिं०) पिरोना, गूँथना, छेदना, लगाना, पोतना, घुसाना, धँसाना, पीसना, घिसना, पकाना।

१६४४. **पौंडरीक, पौण्डरीक** (संज्ञा पु०) (सं०) कुष्ट रोग, स्थलपद्म, पुण्डरी, (वि०) पुण्डरीक-सम्बन्धी, कमल का।

१६४५. **पौंड्र, पौण्ड्र** (वि०) (सं०) राजा, गन्ना, ऊख, पौंडा, तिलक।

१६४६. **पौंड्रक, पौण्ड्रक** (संज्ञा पु०) (सं०) मोटा गन्ना, पौंडा, वर्णसंकर एक जाति।

१६४७. **पौ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्याऊ, पौसाला, किरण, ज्योति, दाँव।

१६४८. **पौडर** (संज्ञा पु०) (अँ०) चूर्ण, बुकनी, सौन्दर्यवर्द्धक चूर्ण।

१६४९. **पौड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सीढ़ी, पैड़ी, (देशज) कड़ी मिट्टी।

१६५०. **पौढ़ना** (क्रिया) (हिं०) झूलना, लेटना, सोना।

१६५१. **पौढ़ाना** (क्रिया) (हिं०) झुलाना, लेटाना, सुलाना।

१६५२. **पौद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा पौधा, पाँवड़ा।

१६५३. **पौदर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पैर का चिन्ह, पगडंडी।

१६५४. **पौदा, पौधा** (संज्ञा पु०) (हिं०) वृक्ष का अंकुर, छोटा वृक्ष या झाड़ी।

१६५५. **पौन** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) जीवात्मा, प्राण, प्रेतात्मा, भूत, प्रेत, तीन चौथाई।

१६५६. **पौर** (वि०) (सं०) नगर-सम्बन्धी, नगर का, नगर में उत्पन्न, पेटू।

१६५७. **पौराणिक** (वि०) (सं०) प्राचीन, पुरातन, पुराण-सम्बन्धी, पुराणपाठी, इतिहासवेत्ता।

१६५८. **पौरिक** (संज्ञा पु०) (सं०) पुलिस, पोलिस, सिपाही।

१६५९. **पौरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ड्योढ़ी, सीढ़ी, खड़ाऊँ, पौर, डेवढ़ी, द्वार।

१६६०. **पौरुष** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरुषत्व, पुरुषार्थ, साहस, पराक्रम, वीरता, बहादुरी, पुरसा (मनुष्य जितनी ऊँचाई), उद्योग, उद्यम, पुरुष का कर्म, पुरुष की शक्ति, बल, हिम्मत, ताकत।

१६६१. **पौरुषेय** (वि०) (सं०) पुरुष-सम्बन्धी, पुरुष का, पुरुषनिर्मित, पुरुषकृत, आध्यात्मिक, (संज्ञा पु०) मनुष्य-समुदाय, दिहाड़ी पर काम करने वाला मजदूर, पुरुषत्व।

१६६२. **पौरुष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) साहस, वीरता, पुरुषत्व, मनुष्यत्व।

१६६३. **पौर्णमासी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्णमासी, पूरनमासी, पौर्णमी, पौर्णिमा, पूर्णिमा।

१६६४. **पौलस्त्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पुलस्त्य का वंशज, कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, चन्द्र।

१६६५. **पौलि** (संज्ञा पु०) भुना हुआ जौ, फुलका, रोटी, खड़ाऊँ, पौरी, ड्योढ़ी।

१६६६. **पौलोमी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शची, इन्द्राणी, पुलोमजा, इन्द्र-पत्नी।

१६६७. **पौष्प** (वि०) (सं०) पुष्प-सम्बन्धी, पुष्पों का, (संज्ञा पु०) फूलों से निकला, मद्य, पुष्परेणु, पराग।

१६६८. **पौसरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पौसाला, पौसला, प्याऊ, पौशाला, प्रपा, प्रपान, जलप्रपा, सबील।

१६६९. **प्यादा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) पैदल सिपाही, दूत, हरकारा।

१६७०. **प्यार** (संज्ञा पु०) प्रेम, मुहब्बत, स्नेह, प्रीति, नेह, ममत्व, वात्सल्य, रति, राग, अनुराग (अँ०) लव।

१६७१. **प्यारा** (वि०) (हिं०) प्रेमपात्र, प्रिय, प्रेमी, स्नेही, प्रियतम।

१६७२. **प्याला** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) छोटा कटोरा, खप्पर, गर्भाशय।

१६७३. **प्यास** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तृषा, तृष्णा, पिपासा, धीति, तर्षण, (अँ०) थर्स्ट।

१६७४. **प्यौर** (संज्ञा पु०) (हिं०) पति, स्वामी, प्रियतम।

१६७५. **प्रकंपन, प्रकम्पन** (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, नरक विशेष, थरथराहट कँप-कँपी।

१६७६. **प्रकट** (वि०) (सं०) प्रगट, ज़ाहिर, प्रत्यक्ष, स्पष्ट, साफ़, आविर्भूत, प्रकाशित, व्यक्त, प्रकटित।

१६७७. **प्रकर** (संज्ञा पु०) (सं०) अगर की लकड़ी, गुलदस्ता, साहाय्य, सहायता, चलन, प्रथा, समूह, दल, गिरोह, ढेर।

१६७८. **प्रकरण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रसंग, अध्याय, आरंभिक वक्तव्य, मुखबंध, परिच्छेद।

१६७९. **प्रकरणिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाटिका।

१६८०. **प्रकर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) उत्कर्ष, उत्तमता, अधिकता, बहुतायत, प्रकर्षण ।

१६८१. **प्रकांड, प्रकाण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) वृक्ष का तना, स्कंध, डाली, शाखा, वृक्ष, पेड़, (वि०) वृहत्, अतिशय, विशाल, बहुत बड़ा, बहुत विशाल ।

१६८२. **प्रकार** (संज्ञा पु०) (सं०) भेद, किस्म, तरह, भाँति, समानता, बराबरी, ढंग, रीति, (संज्ञा स्त्री०) चहारदीवारी, परकोटा ।

१६८३. **प्रकाश** (संज्ञा पु०) (सं०) आलोक, ज्योति, विकास, स्फुटन, अभिव्यक्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, स्पष्ट होना, धूप, घाम, अध्याय, परिच्छेद, खुलना, व्यक्त होना, विकाश, फैलाव, उदय, दीप्ति, उजाला, रोशनी, तेज, चमक, (वि०) चमकीला, भड़कीला, प्रख्यात, प्रसिद्ध, फूला हुआ, विकसित, प्रस्फुटित ।

१६८४. **प्रकाशक** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, खोजी, आविष्कारकर्ता, काँसा, प्रकाशकर्ता, दीप्तिकारक, शिव, पुस्तकें छापने वाला, (अँ०) पब्लिशर ।

१६८५. **प्रकाशन** (वि०) (सं०) चमकीला (संज्ञा पु०) विष्णु, पब्लिकेशन, छपी हुई पुस्तकें ।

१६८६. **प्रकीर्ण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रकरण, अध्याय, पागल, दुर्गन्ध वाला करंज, उद्दंड, चँवर, फुटकर कविता, विस्तार, (वि०) विस्तृत, ग्रंथ-विच्छेद, बिखरा हुआ, छितराया हुआ ।

१६८७. **प्रकीर्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रसिद्धि, नामवरी, ख्याति, मशहूरी, घोषणा ।

१६८८. **प्रकीर्तित** (वि०) (सं०) कथित, भाषित, उक्त, व्याहृत, वर्णित, निरूपित ।

१६८९. **प्रकुपित** (वि०) (सं०) क्रोधान्वित, क्रोधित, क्रुद्ध ।

१६९०. **प्रकृत** (वि०) (सं०) वास्तविक, असली, अविकृत, नार्मल, प्रकृति-सम्बन्धी, यथार्थ, सत्य, स्वाभाविक ।

१२९१. **प्रकृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुदरत, स्वभाव, तासीर, मिजाज, धर्म, गुण, माया, चरित्र, (अँ०) नेचर, हैबिट।

१२९२. **प्रकृष्ट** (वि०) (सं०) मुख्य, प्रधान, खास, उत्तम, श्रेष्ठ, आकृष्ट, प्रशस्त, उत्कृष्ट, भला।

१२९३. **प्रकृष्टता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उत्तमत्ता, उत्कृष्टता श्रेष्ठता।

१२९४. **प्रकोट** (संज्ञा पु०) (सं०) शहरपनाह, परकोटा, धुस्स, परिकोटा।

१२९५. **प्रकोप** (संज्ञा पु०) (सं०) अधिक क्रोध, क्षोभ।

१२९६. **प्रक्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रम, सिलसिला, उपक्रम, मौका, अवसर, अतिक्रम, उल्लंघन।

१२९७. **प्रक्रिया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रीति, प्रकार, विधि, कार्य-प्रणाली (अँ०) प्रोसेस।

१२९८. **प्रक्लिन्न** (वि०) (सं०) भीगा हुआ, तर, करुणापूर्ण, दयामय, तृप्त, सन्तुष्ट।

१२९९. **प्रक्षीण** (वि०) (सं०) जीर्ण, लुप्त, अन्तर्धान, विनष्ट।

१३००. **प्रक्षेप** (संज्ञा पु०) (सं०) फेंकना, डालना, छितराना, बिखराना, त्यागना, छोड़ना, क्षेपक, क्षेपकांश, योजना, (अँ०) प्रोजेक्ट।

१३०१. **प्रखर** (वि०) (सं०) तीव्र, तीक्ष्ण, धारदार, पैना, चोखा, निशित, (संज्ञा पु०) खच्चर, कुत्ता, घोड़े की जीन।

१३०२. **प्रख्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रसिद्धि, ख्याति, उपमा, समता, बराबरी, समानता।

१३०३. **प्रख्यात** (वि०) (सं०) विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर, यशस्वी, कीर्तिमान्।

१३०४. **प्रगति** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) उन्नति, तरक्की, विकास (अँ०) प्रोग्रेस।

१३०५. **प्रगमन** (संज्ञा पु०) (सं०) उन्नति, तरक्की, आगे बढ़ना, लड़ाई, झगड़ा।

१३०६. **प्रगल्भ** (वि०) (सं०) चतुर, होशियार, साहसी, उत्साही, निर्भय, निडर, हाज़िरजवाब, प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभाशाली, पुष्ट, प्रतिभान्वित, वाग्मी, गम्भीर, भरा-पूरा, प्रधान, मुख्य, बकवादी, धृष्ट, निर्लज्ज, बेहया, उद्दंड, ढीठ ।

१३०७. **प्रगल्भता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुद्धिमत्ता, होशियारी, हाज़िर-जवाबी, वाक्चातुरी, प्रतिभा, निर्भयता, गम्भीरता, उद्दंडता, उद्धतता, धृष्टता, बेहयाई, बकवाद, सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह, प्रधानता, मुख्यता, अभिमान, पुष्टता ।

१३०८. **प्रगुण** (वि०) (सं०) चतुर, दक्ष, गुणवान्, अनुकूल, धर्मात्मा, सरल, ऋजु, उदार ।

१३०९. **प्रगृह्य** (संज्ञा पु०) (सं०) स्मृति, वाक्य ।

१३१०. **प्रग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) लगाम, रास, ग्रहण का आरम्भ, अनुग्रह, कृपा, आदर सत्कार, किरण, रस्सी, डोरी, उपग्रह, सोना, सुवर्ण, विष्णु, उद्धतता, हाथ, बाँह, कनियारी, मार्गदर्शक, नेता, पगहा, कैदी, बन्दी, स्तुतिपाठक, प्रगहण, प्रगाह, पकड़, थाम ।

१३११. **प्रग्रीव** (संज्ञा पु०) (सं०) तबेला, झरोखा, छोटी खिड़की, रंगी हुई बुर्जी ।

१३१२. **प्रघात** (संज्ञा पु०) (सं०) वध, मारना, युद्ध, लड़ाई ।

१३१३. **प्रचंड, प्रचण्ड** (वि०) (सं०) तीव्र, तेज, उग्र, प्रखर, भयंकर, भयानक, वेगवान्, प्रबल, कठिन, कठोर, दुःसह्य, असह, पुष्ट, बलवान्, बड़ा भारी, बहुत गरम, प्रतापी, अत्युग्र, असह्य ।

१३१४. **प्रचंडता, प्रचण्डता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तेजी, तीखापन, भयंकरता, प्रचण्डत्व ।

१३१५. **प्रचंडा, प्रचण्डा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफ़ेद दूब, दुर्गा, चंडी ।

१३१६. **प्रचय** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, राशि, ढेर, वृद्धि, बढ़ती ।

१३१७. **प्रचलन** (संज्ञा पु०) (सं०) चलन, प्रचार, प्रथा, रिवाज, प्रसार,

व्यापकता, (अँ०) करेंसी।

१७१८. **प्रचाय** (संज्ञा पु०) (सं०) राशि, ढेर, वृद्धि, अधिकता।

१७१९. **प्रचुर** (वि०) (सं०) वहुत, अधिक, विपुल, यथेष्ट, (संज्ञा पु०) चोर।

१७२०. **प्रचेता** (संज्ञा पु०) (सं०) वरुण, (वि०) प्रकृष्ट चित्त, चतुर, वुद्धिमान्।

१७२१. **प्रचेलक** (संज्ञा पु०) (सं०) घोड़ा, अश्व, (वि०) अधिक चलने वाला।

१७२२. **प्रच्छद** (संज्ञा पु०) (सं०) बेठन, कम्वल, चोगा, आच्छादन, चद्दर, उत्तरीय वस्त्र।

१७२३. **प्रच्छन्न** (वि०) (सं०) परिवेष्टित, छिपा हुआ, लपेटा हुआ, आच्छन्न, आच्छादित, गुप्त।

१७२४. **प्रच्यवन** (संज्ञा पु०) (सं०) क्षरण, टपकना, चूना।

१७२५. **प्रजन** (संज्ञा पु०) (सं०) लिंग, पुरुषेन्द्रिय, जनक।

१७२६. **प्रजनन** (संज्ञा पु०) (सं०) जन्म, योनि, प्रसव।

१७२७. **प्रजहित** (संज्ञा पु०) (सं०) पुराण, गार्हपत्य, अग्नि।

१७२८. **प्रजा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सन्तान, सन्तति, औलाद, जनसमूह, रिआया, रैयत, जनता।

१७२९. **प्रजागर** (संज्ञा पु०) (सं०) अतिशय, जागरण, अत्यन्त चिन्ता, विष्णु, प्राण, जगना, नींद आना।

१७३०. **प्रजातांत्रिक, प्रजातान्त्रिक** (वि०) (सं०) प्रजातन्त्रवादी, गण-राज्यवादी।

१७३१. **प्रजानाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, मनु, सूर्य, आग, दक्ष, राजा, नरपति, प्रजापति, महीपाल, दामाद, जामाता, सृष्टिकर्ता, पिता, बाप, विश्व-कर्मा, प्रजापाल, प्रजापालक।

१७३२. **प्रजुरना** (क्रिया) (हिं०) जलना, प्रज्वलित होना, चमकना, प्रकाशित होना।

१७३३. **प्रज्ञप्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विज्ञप्ति, सूचनापत्र, सूचना, संकेत, ज्ञान, बीजक, निवेदन, विज्ञापन, (अँ०) एडवर्टाइज़मेंट ।

१७३४. **प्रज्ञा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुद्धि, ज्ञान, एकाग्रता, सरस्वती, मति, धी ।

१७३५. **प्रज्ञान** (संज्ञा पु०) (सं०) बुद्धि, ज्ञान, चैतन्य, चिह्न, विद्वान्, निशान ।

१७३६. **प्रणत** (वि०) (सं०) दीन, नम्र, विनत, विनम्र (संज्ञा पु०) भक्त, उपासक, दास, सेवक ।

१७३७. **प्रणति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रणम, प्रणिपात, दण्डवत्, विनति, नम्रता ।

१७३८. **प्रणय** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेम, विश्वास, भरोसा, निर्माण, मोक्ष, श्रद्धा, प्रसव ।

१७३९. **प्रणयिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रेमपात्री, प्रेमिका, माशूका, भार्या, पत्नी, स्त्री, प्रेमास्पदा, वनिता, प्रिया, अङ्गना, (अँ०) डार्लिंग ।

१७४०. **प्रणयी** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेमी, पति, स्वामी, अनुरागी, अनुरक्त, आशिक, (अँ०) लवर ।

१७४१. **प्रणव** (संज्ञा पु०) (सं०) ओंकार, ओंकारमन्त्र, परमेश्वर, त्रिदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

१७४२. **प्रणाद** (संज्ञा पु०) (सं०) कोलाहल, शोरगुल ।

१७४३. **प्रणम** (संज्ञा पु०) (सं०) दंडवत्, प्रणति, प्रणिपात, प्रणिपतन, नमस्कार ।

१७४४. **प्रणायक** (संज्ञा पु०) (सं०) चमूपति, सेनापति, नेता, पथ-प्रदर्शक, सेनानायक ।

१७४५. **प्रणाली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रीति, परिपाटी, प्रथा, चाल, पद्धति, ढंग, तरीका, परम्परा, साधन, प्रकार, पनाला, धारण, (अँ०) चैनेल ।

१७४६. **प्रणाश** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, बरबादी, मौत, मृत्यु, भागना, ध्वंस, उत्पात ।

१७४७. **प्रणिधान** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रयत्न, समाधि, उपासना, चित्त की एकाग्रता, ध्यान, अर्पण, भक्ति, प्रवेश, गति, मनोयोग ।

१७४८. **प्रणिधि** (संज्ञा पु०) (सं०) चर, दूत (अँ०) सीक्रेट एजेंट, (संज्ञा स्त्री०) प्रार्थना, निवेदन, तत्परता, अवधान, मन की एकाग्रता ।

१७४९. **प्रणिहित** (वि०) (सं०) मिश्रित, प्राप्त, सौंपा हुआ, रखा हुआ, रक्षित, स्थापित, मनोयोगकृत, समाहित ।

१७५०. **प्रणीत** (संज्ञा पु०) (सं०) रचित, भेजा हुआ, लाया हुआ, फेंका हुआ ।

१७५१. **प्रणेय** (वि०) (सं०) आज्ञाकारी, अधीन वशवर्ती, अधीन ।

१७५२. **प्रतनु** (वि०) (सं०) क्षीण, दुबला, बारीक, सूक्ष्म, बहुत छोटा, तुच्छ, महीन ।

१७५३. **प्रतपन** (संज्ञा पु०) (सं०) तापना, तप्त करना, गर्मी, उत्ताप ।

१७५४. **प्रतप्त** (वि०) (सं०) उत्तप्त, गरमाया हुआ, तपाया हुआ, सताया हुआ, पीड़ित ।

१७५५. **प्रतर्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, पीड़ित करने वाला व्यक्ति।

१७५६. **प्रतान** (संज्ञा पु०) (सं०) वेल, लता, रेशा, विस्तार (वि०) विस्तृत, लम्बा-चौड़ा, रेशे वाला ।

१७५७. **प्रताप** (संज्ञा पु०) (सं०) पौरुष, मरदानगी, शक्ति, वीरता, इक़बाल, ताप, गरमी, प्रभाव, तेज़ी, प्रखरता, शूरता, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, मदार का पेड़, छत्र ।

१७५८. **प्रतारक** (वि०) (सं०) धोखेबाज़, धूर्त्त, चालाक, ठग, वंचक, खल, शठ ।

१७५९. **प्रतारण** (संज्ञा पु०) (सं०) वंचना, ठगी, धूर्त्तता, प्रतारणा, शठता ।

१७६०. **प्रति** (अव्यय) (सं०) विरुद्ध, विपरीत, सामने, बदले में, हर

एक, एकाएक, समान, सदृश, जोड़ का, मुकाबिले का, सामने, मुकाबले में, ग्रोर, तरफ़, (संज्ञा पु०) नकल, कापी ।

१७६१. **प्रतिकंठ, प्रतिकण्ठ** (अव्यय) (सं०) अलग-अलग, एक के बाद एक, गले के समीप ।

१७६२. **प्रतिकर्म** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेरित कर्म, वेश, भेस, प्रतिकार, बदला, अङ्गकर्म ।

१७६३. **प्रतिकार** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिशोध, बदला, चिकित्सा, इलाज, पलटा, उपाय ।

१७६४. **प्रतिकाश** (संज्ञा पु०) (सं०) परछाईं, झाईं, छाया, प्रतिबिम्ब, चितवन, दृष्टि ।

१७६५. **प्रतिकूल** (वि०) (सं०) विपरीत, विरुद्ध, खिलाफ़, अनुकूल, विपक्ष, उल्टा प्रतिबन्धक ।

१७६६. **प्रतिकृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, मूर्ति, तस्वीर, चित्र, प्रतिबिम्ब, छाया, प्रतिलिपि, कापी, बदला, प्रतिकार, पूजा ।

१७६७. **प्रतिक्रिया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रतिकार, बदला, प्रतिविधान, परिणाम, प्रतिफल, बदला (अँ०) रि-एक्शन ।

१७६८. **प्रतिक्षण** (अव्यय) (सं०) हर लहमे में, निरन्तर, लगातार, क्षणक्षण, पल-पल, प्रतिपद ।

१७६९. **प्रतिक्षिप्त** (वि०) (सं०) रोका हुआ, फेंका हुआ, भेजा हुआ, निंदित ।

१७७०. **प्रतिक्षेप** (संज्ञा पु०) (सं०) फेंकना, रोकना, तिरस्कार ।

१७७१. **प्रतिग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वीकार, ग्रहण, पकड़ना, विवाह, पाणिग्रहण, ग्रहण, उपराग, स्वागत, अभ्यर्थना, दानी व्यक्ति, अनुग्रह, कृपा, उगालदान, पीकदान, दान, (अँ०) कस्टडी ।

१७७२. **प्रतिघ** (संज्ञा पु०) (सं०) विरोध, सामना, मुकाबला, मारपीट, लड़ाई, रोष, क्रोध, कोप, मूर्छा, शत्रु, वैरी ।

१७७३. **प्रतिघाती** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, वैरी, (वि०) विरोधी, मुकाबला करने वाला, टक्कर मारने वाला ।

१७७४. **प्रतिच्छन्न** (वि०) (सं०) ढका हुआ, छिपा हुआ, सम्पन्न, घिरा हुआ ।

१७७५. **प्रतिच्छवि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रतिबिम्ब, छाया, झाइं, परछाईं, चित्र, तस्वीर, प्रतिकृति, प्रतिच्छाया ।

१७७६. **प्रतिज्ञा** (संज्ञा पु०) (सं०) वचनदान, शपथ, सौगन्ध, वायदा, पन, प्रण, अंगीकार, अभियोग, दावा ।

१७७७. **प्रतिदारण** (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, लड़ाई, फाड़ना, चीरना ।

१७७८. **प्रतिध्वनि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गूँज, प्रतिशब्द, गूँजना, दोहराना, प्रतिध्वान ।

१७७९. **प्रतिनिधि** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, दूत, प्रतिभू, (अँ०) रिप्रेज़ेंटेटिव ।

१७८०. **प्रतिनिवर्तन** (संज्ञा पु०) (सं०) वापस आना, लौटना, मुड़ना, पराङ्मुख होना, प्रत्यवर्त्तन, लौटाना, फेरना ।

१७८१. **प्रतिपक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिवादी, विरोधी पक्ष, विरोधी दल, शत्रु, वैरी, दुश्मन, अरि, रिपु, विपक्षी, समानता, बराबरी ।

१७८२. **प्रतिपत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) उपलब्धि, प्राप्ति, पाना, ज्ञान, अनुमान, देना, दान, प्रतिपादन, निरूपण, प्रदर्शन, इत्मिनान, मानना, कायल होना, पद-प्राप्ति, धाक, साख, आदर-सत्कार, प्रवृत्ति, निश्चय, दृढ़ विचार, परिणाम, गौरव, सुख्याति, सम्मान, सम्भ्रम, प्रगल्भता, प्रबोध, निष्पत्ति, प्रतिष्ठा, यश ।

१७८३. **प्रतिपद्** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रास्ता, मार्ग, आरम्भ, प्रथम तिथि, प्रतिपदा, परवा, बुद्धि, समझ, पंक्ति, श्रेणी, अग्नि की जन्मतिथि, पड़वा, एक प्रकार का ढोल ।

१७८४. **प्रतिपन्न** (वि०) (सं०) प्राप्त, मिला हुआ, पूरा किया हुआ, आरम्भित, अपनाया हुआ, अंगीकृत, भरा-पूरा, शरणागत, प्रमाणित, साबित,

निश्चित, प्रमाणसिद्ध, अवगत, माननीय, मान्य ।

१७८५. **प्रतिपादक** (संज्ञा पु०) (सं०) समर्थक, निरूपक, उत्पादक, बोधक, प्रतिपत्तिजनक, ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक ।

१७८६. **प्रतिपादन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिपत्ति, प्रमाण, कथन, प्रमाण, सबूत, पुरस्कार, दान, उत्पत्ति, सम्पादन, बोधन, कथन ।

१७८७. **प्रतिपुरुष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रत्येक मनुष्य, प्रतिनिधि, (अँ०) डेपुटी ।

१७८८. **प्रतिफल** (संज्ञा पु०) (सं०) छाया, प्रतिबिम्ब, परिणाम, नतीजा, तुल्यफल, समुचित फल, प्रतिकार ।

१७८९. **प्रतिबंध, प्रतिबन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) रुकावट, रोक, विघ्न, बाधा, प्रतिष्टम्भ, शर्त, (अँ०) कंडिशन ।

१७९०. **प्रतिबंधक, प्रतिबन्धक** (संज्ञा पु०) (सं०) रोकने वाला, प्रतिरोधक, बाधक, व्याघातकारक, वृक्ष, पेड़ ।

१७९१. **प्रतिबल** (वि०) (सं०) जोड़ीदार, समर्थ, सशक्त, समान बल वाला ।

१७९२. **प्रतिबाधन** (संज्ञा पु०) (सं०) विघ्न, बाधा, पीड़ा, कष्ट ।

१७९३. **प्रतिबिंब, प्रतिबिम्ब** (संज्ञा पु०) (सं०) परछाईं, छाया, मूर्ति, प्रतिमा, चित्र, तस्वीर, दर्पण, शीशा ।

१७९४. **प्रतिबुद्ध** (वि०) (सं०) जागा हुआ, प्रसिद्ध, उन्नत ।

१७९५. **प्रतिबोध** (संज्ञा पु०) (सं०) जागरण, जागना, ज्ञान, प्रतिबोधन ।

१७९६. **प्रतिभट** (संज्ञा पु०) (सं०) योद्धा, शत्रु, वैरी, वीर, प्रतिद्वन्द्वी, योद्धा ।

१७९७. **प्रतिभय** (वि०) (सं०) भयंकर, खौफ़नाक, (संज्ञा पु०) खतरा, जोखिम, जोखों, भय, डर ।

१७९८. **प्रतिभा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) असाधारण, बुद्धि, समझ, मानसिक शक्ति, बुद्धिबल, उज्ज्वलता, चमक, ज्ञान, दीप्ति, प्रगल्भता ।

१७९९. **प्रतिभात** (वि०) (सं०) चमकीला, प्रकाशवान्, ज्ञात, प्रतीत, समक्ष ।

१८००. **प्रतिभान** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभा, चमक, बुद्धि, समझ, ज्ञान, अनुमान ।

१८०१. **प्रतिभाव** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उत्तर, जवाब, प्रतिउत्तर, कथन, बयान ।

१८०२. **प्रतिभास** (संज्ञा पु०) (सं०) आकृति, प्रकाश, चमक, धोखा, भ्रम ।

१८०३. **प्रतिभेद** (संज्ञा पु०) (सं०) अन्तर, फ़र्क, आविष्कार ।

१८०४. **प्रतिमंडल, प्रतिमण्डल** (संज्ञा पु०) (सं०) मंडल, घेरा, परिवेश, दल, समूह ।

१८०५. **प्रतिमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मूर्ति, चित्र, अनुकृति, देवमूर्ति, प्रतिबिम्ब, छाया, प्रतिभा, छवि ।

१८०६. **प्रतिमान** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिबिम्ब, परछाईं, हाथी का मस्तक, समानता, बराबरी दृष्टान्त, उदाहरण, मानदण्ड, मानक, बटखरा, प्रतिछाया (अं०) स्टैंडर्ड, मॉडल ।

१८०७. **प्रतियत्न** (संज्ञा पु०) (सं०) लालच, लोभ, लिप्सा, वाँछा, संशोधन, ग्रहण, उपग्रह, बन्दी, कैदी, संस्कार ।

१८०८. **प्रतियोग** (संज्ञा पु०) (सं०) विरोध, विवाद, शत्रुता, प्रतिपक्षता ।

१८०९. **प्रतियोगिता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्द्धा, प्रतिद्वन्द्विता, मुकाबिला ।

१८१०. **प्रतियोगी** (संज्ञा पु०) (सं०) शत्रु, विरोधी, वैरी, बाधक, सहायक, साथी, मददगार, जोड़ीदार, (वि०) मुकाबला करने वाला ।

१८११. **प्रतिरक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बचाव, सुरक्षा (अं०) डिफ़ैंस ।

१८१२. **प्रतिरव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिध्वनि, झगड़ा, टंटा ।

१८१३. **प्रतिरूप** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, आकृति, मूर्ति, चित्र, तस्वीर, प्रतिनिधि, नमूना, (वि०) समान, सदृश्य, तुल्य, बराबर, कृत्रिम, बनावटी, नकली, जाली, प्रतिरूपक (अँ०) कौंटरफ़ीट।

१८१४. **प्रतिरोध** (संज्ञा पु०) (सं०) विरोध, बाधा, रोक, रुकावट, मुक़ाबला, तिरस्कार, प्रतिबिम्ब, निबन्ध।

१८१५. **प्रतिलंभ, प्रतिलम्भ,** (संज्ञा पु०) (सं०) कुचाल, कुरीति, कलंक, दोष, निन्दा, गाली, दुर्वचन, कुवाच्य, लाभ, प्राप्ति।

१८१६. **प्रतिलोम** (संज्ञा पु०) (सं०) नीच या कमीना व्यक्ति, (वि०) विपरीत, प्रतिकूल, उलटा काम करने वाला, विलोम।

१८१७. **प्रतिवाक्य** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिवचन, उत्तर, प्रतिउत्तर, प्रतिध्वनि।

१८१८. **प्रतिवाद** (संज्ञा पु०) (सं०) विरोध, विवाद, बहस, उत्तर, जवाब, खंडन, आपत्ति।

१८१९. **प्रतिवादी** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिपक्षी, विपक्षी, प्रतिस्पर्धी।

१८२०. **प्रतिवास** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुवास, सुगन्धि, पड़ोस, निकट वास, समीप वास।

१८२१. **प्रतिवेदन** (संज्ञा पु०) (सं०) विवरण, सूचना, रिपोर्ट।

१८२२. **प्रतिश्रय** (संज्ञा पु०)(सं०) यज्ञशाला, यज्ञमण्डल, घर, विश्राम, सभा।

१८२३. **प्रतिश्रव** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वीकार, अंगीकार, प्रतिज्ञा, वायदा, निश्चित. कथन, प्रण, इक़रार, सुनना।

१८२४. **प्रतिश्रुति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रतिध्वनि, स्वीकृति, अनुमति, मंजूरी, प्रतिज्ञा, इक़रार, वचन, (अँ०) प्रामिस, गारंटी।

१८२५. **प्रतिषिद्ध** (वि०) (सं०) निषिद्ध, वर्जित, निषेधित (संज्ञा पु०) प्रतिषेध।

१८२६. **प्रतिष्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कीर्ति, आदर, गौरव, सम्मान, स्थापना, उद्यापन, अवस्थापन, रखा जाना, स्थान, जगह, मान-मर्यादा, स्थिति,

ठहराव, प्रसिद्धि, ख्याति, यश, संस्कार, आश्रय, ठिकाना, पृथ्वी, शरीर इज्जत, एक छन्द।

१८२७. **प्रतिष्ठान** (संज्ञा पु०) स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना, रखना, बैठाना, जमाना, पदवी, स्थान, जगह, संस्था, जड़, मूल।

१८२८. **प्रतिसंक्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) संचार, प्रतिछाया, परछाईं।

१८२९. **प्रतिसंधि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ढूँढ़ना, खोजना, वियोग, विछोह।

१८३०. **प्रतिसर** (संज्ञा पु०) (सं०) नौकर, अनुचर, कंकण, पुष्पहार, फूलमाला, प्रभात, सेना का पिछला भाग।

१८३१. **प्रतिस्पर्द्धा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) होड़, प्रतियोगिता, झगड़ा, ईर्ष्या, मत्सरता, गुप्तद्वेष, स्पर्द्धा, डाह, जलन, (वि०) प्रतिस्पर्द्धी।

१८३२. **प्रतिहंता, प्रतिहन्ता** (संज्ञा पु०) (सं०) बाधक, रोकने वाला।

१८३३. **प्रतिहत** (वि०) (सं०) हटाया हुआ, भगाया हुआ, अवरुद्ध, रुका हुआ, निराश, चोट खाया हुआ, रोका हुआ।

१८३४. **प्रतिहति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रोकने की चेष्टा या प्रयत्न, प्रतिघात, नैराश्य, विफलता, टक्कर, गुस्सा, क्रोध।

१८३५. **प्रतिहरण** (संज्ञा पु०) (सं०) विनाश, बरबादी।

१८३६. **प्रतिहार** (संज्ञा पु०) (सं०) दरबान, द्वारपाल, द्वार, दरवाजा, ड्योढ़ी, डेवढ़ी, चोबदार, मायावी, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

१८३७. **प्रतिहास** (संज्ञा पु०) (सं०) कनेर, सफ़ेद कनेर, किसी को हँसते देख हँसना।

१८३८. **प्रतिहिंसा** (संज्ञा स्त्री) (सं०) वैर चुकाना, बदला लेना, हिंसा का प्रतिशोध।

१८३९. **प्रतीक** (वि०) (सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल, उल्टा, विलोम, औंधा, (संज्ञा पु०) चिह्न, निशान, पता, अङ्ग, अवयव, मुँह, मुख, रूप, आकृति, प्रतिरूप, स्थानापन्न वस्तु, मूर्ति, प्रतिमा, (अँ०) सिंबल।

१८४०. **प्रतीकार** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिकार, बदला, वैरशोधन, शत्रुता-निर्यातन, प्रतिफल, प्रतिशोध, इलाज, चिकित्सा, उपाय, उपशमन।

१८४१. **प्रतीक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आसरा, इन्तज़ार, प्रत्याशा, बाट देखना या जोहना, (वि०) प्रतीक्षित,

१८४२. **प्रतीत** (वि०) (सं०) ज्ञानी, विदित, ज्ञात, अवगत, विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर, प्रसन्न, हृष्ट।

१८४३. **प्रतीति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दृढ़ धारणा, दृढ़ निश्चय, यक़ीन, विश्वास, ख्याति, प्रसिद्धि, आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, आदर ज्ञान, बोध, कीर्ति, (अं०) क्रेडिट।

१८४४. **प्रतीप** (वि०) (सं०) वरुद्ध, प्रतिकूल, उल्टा, विलोम, विपरीत, विरोधी।

१८४५. **प्रतीयमान** (वि०) (सं०) ज्ञेय, बोधगम्य, अनुभूत।

१८४६. **प्रतीवाप** (संज्ञा पु०) (सं०) संक्रामक रोग, दैवी उपद्रव।

१८४७. **प्रतोद** (संज्ञा पु०) (सं०) कोड़ा, चाबुक, अंकुश।

१८४८. **प्रत्यक्‌चेतन** (संज्ञा पु०) (सं०) परमेश्वर, अन्तरात्मा।

१८४९. **प्रत्यक्ष** (वि०) (सं०) नयनगोचर, इन्द्रियगोचर, साक्षात्, स्पष्ट, सन्मुख, सामने।

१८५०. **प्रत्यय** (वि०) (सं०) नूतन, नया, शोधा हुआ, शोधित, अभिनव, शुद्ध, बोधित।

१८५१. **प्रत्यनीक** (संज्ञा पु०) (सं०) शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी, विरोधी, प्रतिवादी, विघ्न, बाधा।

१८५२. **प्रत्यय** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतीति, विश्वास, एतबार, साख, (अं०) क्रेडिट, प्रमाण, सबूत, ज्ञान, समझ, विचार, भावना, व्याख्या, कारण, हेतु, प्रसिद्धि, चिह्न, लक्षण, आवश्यकता, निर्णय, फ़ैसला, निश्चय, राय, सम्मति, स्वाद, सहायक, विष्णु।

१८५३. **प्रत्यर्थी** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिद्वन्द्वी, जोड़ीदार, वैरी, शत्रु, प्रतिवादी, मुद्दालह।

१८५४. **प्रत्यवस्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) स्थानान्तरकरण, विरोध, मुकाबिला।

१८५५. **प्रत्यवहार** (संज्ञा पु०) (सं०) संहार, मार डालना।

१८५६. **प्रत्यवाय** (संज्ञा पु०) (सं०) उलटफेर, भारी परिवर्तन,

१८५७. **प्रत्यस्तमय** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्यास्त, अवसान, समाप्ति।

१८५८. **प्रत्याख्यान** (संज्ञा पु०) (सं०) खंडन, निराकरण, निरसन, अनादर-पूर्वक लौटाना, अमान्य करना, अस्वीकार, निन्दक।

१८५९. **प्रत्यागम** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रत्यागमन, वापसी, दोबारा आना, प्रत्यावर्तन, लौटना।

१८६०. **प्रत्यादेश** (संज्ञा पु०) (सं०) खंडन, निराकरण, आकाशवाणी, उपदेश, देववाणी।

१८६१. **प्रत्यासत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समीपता, निकटता, सादृश्य, घनिष्ठता।

१८६२. **प्रत्याहार** (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्रिय-निग्रह, प्रतिकार।

१८६३. **प्रत्यूष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रातःकाल, प्रभात, तड़का, उषाकाल, सूर्य।

१८६४. **प्रथम** (वि०) (सं०) पहला, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, (क्रि० वि०) पेश्तर, पहले आगे, आदि में, शुरू में।

१८६५. **प्रथमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मदिरा, शराब, पहली विभक्ति, श्रेष्ठा, बड़ी, मुख्या।

१८६६. **प्रथित** (वि०) (सं०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, ख्यात, प्रतिष्ठित, लम्बा-चौड़ा।

१८६७. **प्रदक्षिण** (संज्ञा पु०) (सं०) परिक्रमा, मण्डलाकार घूमना, (वि०) समर्थ, योग्य, समर्पित।

१८६८. **प्रदर्श** (संज्ञा पु०) (सं०) सूरत, चितवन, आदेश, आज्ञा।

१८६९. **प्रदर्शक** (संज्ञा पु०) (सं०) गुरु, प्रकाशक, दिखानेहारा, मार्ग-दर्शक।

१८७०. **प्रदर्शन** (संज्ञा पु०) (सं०) दिखाना, प्रदर्शनी, (अँ०) डिमॉन्स्ट्रेशन।

१८७१. **प्रदर्शनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नुमाइश।

१८७२. **प्रदान** (संज्ञा पु०) (सं०) देना, दान, अर्पण, त्याग, विवाह, अंकुश।

१८७३. **प्रदिव** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पुरातन, पुराना, पर्व का दिन, (वि०) चमकाने वाला।

१८७४. **प्रदीप** (संज्ञा पु०) (सं०) दीपक, दीया, दीप, प्रकाश।

१८७५. **प्रदीपिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटी लालटेन, एक रागिनी, बिजली की बत्ती, (अँ०) इलेक्ट्रिक बल्ब।

१८७६. **प्रदीप्त** (वि०) (सं०) उज्ज्वलित, प्रकाशित, प्रकाशवान्, उज्ज्वल, जगमगाता हुआ, चमकदार।

१८७७. **प्रदीप्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आभा, चमक, रोशनी, प्रकाश।

१८७८. **प्रदेश** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रान्त, स्थान, जगह, अङ्ग, अवयव, बालिश्त, दीवार, संज्ञा, नाम।

१८७९. **प्रदोष** (संज्ञा पु०) (सं०) सन्ध्याकाल, सायंकालीन अन्धकार, अपराध, भारी दोष, आर्थिक लाभ, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, (अँ०) करप्शन।

१८८०. **प्रद्युम्न** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, रतिदेव, कृष्ण के पुत्र (वि०) अत्यन्त बली, महान् वीर।

१८८१. **प्रद्योत** (संज्ञा पु०) (सं०) किरण, रश्मि, आभा, चमक, दीप्ति, प्रद्योतन।

१८८२. **प्रद्वेष** (संज्ञा पु०) (सं०) अरुचि, घृणा, वैर, शत्रुता।

१८८३. **प्रधर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) बलात्कार, आक्रमण, हमला, दुर्व्यवहार, अपमान, तिरस्कार, प्रधर्षण।

१८८४. **प्रधान** (वि०) (सं०) मुख्य, खास, सर्वोच्च, श्रेष्ठ, (संज्ञा पु०) मुखिया, नेता, सरदार, मन्त्री, सचिव, बुद्धि, समझ, ईश्वर, परमात्मा, सेनाध्यक्ष (अँ०) चेयरमैन।

१८८५. **प्रधूपित** (वि०) (सं०) गरमाया हुआ, तपाया हुआ, चमकता हुआ, दीप्त, संतप्त।

१८८६. **प्रध्वंस** (संज्ञा पु०) (सं०) विनाश, नाश, विनष्टि, क्षय, विध्वंस।

१८८७. **प्रपंच, प्रपञ्च** (संज्ञा पु०) (सं०) संसार का जंजाल, भवजाल, संसार, जगत्, सृष्टि, क्रम, विस्तार, फैलाव, बखेड़ा, झगड़ा, झमेला, आडम्बर, ढोंग, धोखा, छल, भ्रम, प्रतारण।

१८८८. **प्रपंचित, प्रपञ्चित** (वि०) (सं०) ठगा हुआ, भटका हुआ, भूला हुआ, छला हुआ, विस्तृत, भ्रमयुक्त, प्रतारित।

१८८९. **प्रपात** (संज्ञा पु०) (सं०) किनारा, झरना, पर्वतों का पार्श्व।

१८९०. **प्रफुल्ल** (वि०) (सं०) विकसित, प्रस्फुटित, कुसुमित, खुला हुआ, विकासयुक्त, उत्फुल्ल।

१८९१. **प्रबल** (वि०) (सं०) जोर वाला, बलवान्, तेज़, प्रचंड, उग्र, भारी, महान् बली, साहसी, ढीठ, सहजोर, मजबूत।

१८९२. **प्रबोध** (संज्ञा पु०) (संज्ञा पु०) (सं०) जागना, नींद खुलना, पूरा ज्ञान, यथार्थज्ञान, ढाढ़स, दिलासा, चेतावनी, विकास, सावधानी, सावचेती सतर्कता।

१८९३. **प्रबोधन** (संज्ञा पु०) (सं०) जागरण, जगाना, नींद से उठना, ज्ञान देना, चिताना, चेतावनी देना, सावधान करना, ज्ञान देना, सान्त्वना देना।

१८९४. **प्रभंजन, प्रभञ्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) अनिल, वायु, पवन, अत्यधिक तोड़-फोड़।

१८९५. **प्रभव** (संज्ञा पु०) (सं०) निकास, जन्म, उत्पत्ति, उद्गमस्थल, उपादानकरण, शक्ति, बल, पराक्रम, जन्म-हेतु, जन्म-कारण।

१८९६. **प्रभा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आभा, दीप्ति, चमक, सूर्यबिंब, आलोक, प्रकाश, तेज।

१८९७. **प्रभाकर** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, रवि, दिन-कर, समुद्र, मदार, आक, अर्कवृक्ष।

१८९८. **प्रभाव** (संज्ञा पु०) (सं०) शक्ति, प्रादुर्भाव, उद्भव, माहात्म्य, असर, परिणाम, (अं०) इन्फ्लुएन्स, इफ़ैक्ट।

१८९९. **प्रभिन्न** (संज्ञा पु०) (सं०) मत्तहस्ती, मतवाला हाथी (वि०) विभक्त ।

१९००. **प्रभु** (संज्ञा पु०) (सं०) अधिपति, नायक, पालक, समर्थ, स्वामी, मालिक, ईश्वर, शब्द, पारा, पारद ।

१९०१. **प्रभुता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महत्त्व, बड़ाई, मालिकपन, हुकूमत, शासनाधिकार, वैभव, प्रधानता, आधिपत्य, प्रमुख ।

१९०२. **प्रभूत** (वि०) (सं०) उद्गत, उत्पन्न, बहुत, विपुल, उन्नत, प्रचुर, (संज्ञा पु०) पंचभूत, तत्त्व ।

१९०३. **प्रभूति** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्याप्तता, प्रचुरता, अधिकता, उत्पत्ति, निकास, बल, शक्ति ।

१९०४. **प्रमत्त** (वि०) (सं०) मस्त, पागल, विक्षिप्त, उन्मत्त असावधान, लापरवाह ।

१९०५. **प्रमद** (संज्ञा पु०) (सं०) मतवालापन, हर्ष, आनन्द, धतूरा, (वि०) मतवाला, मत्त ।

१९०६. **प्रमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शुद्ध और यथार्थ ज्ञान, नाप, माप, नींव, प्रमिति ।

१९०७. **प्रमाण** (संज्ञा पु०) (सं०) सबूत, सत्यता, सचाई, निश्चय, प्रतीति, दृढ़ धारणा, यकीन, मर्यादा, साख, मान, आदर, इयत्ता, हद, मान, शास्त्र, मूलधन, प्रमाण-पत्र, निदर्शन, दृष्टान्त, उदाहरण, साक्षी, लेख, प्रमृति, प्रतिपत्ति, (वि०) माननीय, सत्यवादी, नित्य, सत्य, प्रमाणित, चरितार्थ, मान्य, स्वीकार योग्य, ठीक ।

१९०८. **प्रमाता** (संज्ञा पु०) (सं०) चेतनपुरुष, द्रष्टा, साक्षी, (संज्ञा स्त्री०) दादी ।

१९०९. **प्रमाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) अत्याचार, पीड़न, उत्तेजना, मन्थन, वध, हत्या, बलात्कार, बलात्हरण, प्रमथन, विलोडन ।

१९१०. **प्रमाथी** (वि०) (सं०) दुःखदायी, पीड़क, (संज्ञा पु०) एक औषध, पीड़नकर्ता, मारणकर्ता, प्रमथनशील ।

१६११. **प्रमाद** (संज्ञा पु०) (सं०) भ्रम, भ्रान्ति, भूल-चूक, अनवधानता, असावधानी, आलस्य ।

१६१२. **प्रमानना** (क्रि०) (हिं०) ठीक समझना, सत्य मानना, प्रमाणित करना, साबित करना, स्थिर करना, ठहराना ।

१६१३. **प्रमार्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) धोना, साफ़ करना, झाड़ना, पोंछना, हटाना, दूर करना ।

१६१४. **प्रमित** (वि०) (सं०) परिमित, निश्चित, अल्प, थोड़ा, विदित, अवगत, प्रमाणित, ज्ञात ।

१६१५. **प्रमीढ़** (वि०) (सं०) गाढ़ा, घना, मोटा ।

१६१६. **प्रमीति** (संज्ञा) (सं०) मृत्यु, मौत, हत्या, वध ।

१६१७. **प्रमीला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नींद, तंद्रा, थकावट, ग्लानि, शैथिल्य, मूँदना ।

१६१८. **प्रमुख** (वि०) (सं०) प्रधान, मुख्य, प्रथम, पहला, श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित, अगुआ, मान्य, माननीय (संज्ञा पु०) आदि, आरम्भ, समूह, पुन्नाग, (अव्यय) इत्यादि, वगैरह ।

१६१९. **प्रमुग्ध** (वि०) (सं०) अचेत, बेहोश, अत्यन्त मनोहर ।

१६२०. **प्रमूढ़** (वि०) (सं०) मूर्ख, मूढ़, घबराया हुआ, व्याकुल, परेशान ।

१६२१. **प्रमोक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) मुक्ति, मोक्ष, त्याग, छोड़ना, फेंकना ।

१६२२. **प्रमोद** (संज्ञा पु०) (सं०) हर्ष, आनन्द, आह्लाद, उल्लास, सुख ।

१६२३. **प्रयत** (वि०) (सं०) पवित्र, नम्र, दीन, प्रयत्नशील, पूत, शुद्ध, नियमित, तत्पर ।

१६२४. **प्रयत्न** (संज्ञा पु०) (सं०) अध्यवसाय, प्रयास, कोशिश, यत्न, चेष्टा ।

१६२५. **प्रयाण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रस्थान, जाना, चढ़ाई, युद्धयात्रा,

आरम्भ, गमन, निर्माण, यात्रा, परलोक-गमन।

१२२६. **प्रयात** (वि०) (सं०) गत, गया हुआ, प्रस्थानित, मृत, मरा हुआ, सोया हुआ, (संज्ञा पु०) ढलुवाँ, चट्टान, आक्रमण।

१२२७. **प्रयाम** (संज्ञा पु०) (सं०) अभाव, महँगी, दुष्प्राप्यता, संयम, दीर्घता, लम्बाई, क़दर।

१२२८. **प्रयास** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग, परिश्रम, मेहनत, इच्छा, श्रम, आयास।

१२२९. **प्रयुक्त** (वि०) (सं०) सम्मिलित, प्रेरित, व्यवहारित।

१२३०. **प्रयुत** (वि०) (सं०) मिला-जुला, अस्पष्ट, सहित, समेत, (संज्ञा पु०) दस लाख की संख्या।

१२३१. **प्रयोग** (संज्ञा पु०) (सं०) इस्तेमाल, व्यवहार, घोड़ा, दृष्टान्त, निदर्शन।

१२३२. **प्रयोजन** (संज्ञा पु०) (सं०) काम, कार्य, अर्थ, अभिप्राय, आशय, उद्देश्य, मतलब, गरज, उपयोग, व्यवहार, हेतु, निमित्त।

१२३३. **प्ररेचन** (संज्ञा पु०) (सं०) रुचि दिखलाना, मोहित करना, उत्तेजित, करना।

१२३४. **प्ररोह** (संज्ञा पु०) (सं०) आरोह, चढ़ाव, उगना, जमना, उत्पत्ति, अंकुर, अँखुआँ, कोंपल।

१२३५. **प्रलंब, प्रलम्ब** (वि०) (सं०) लंबा, टँगा हुआ, लटका हुआ, निकला हुआ, शिथिल, सुस्त, (संज्ञा पु०) लटकाव, फुलाव, शाखा, डाल, टहनी, फूलमाला, कंठहार, स्तन, कुच, जस्ता, सीसा, खीरा, लतांकुर।

१२३६. **प्रलंभ, प्रलम्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) छल, धोखा, प्राप्ति, उपलब्धि।

१२३७. **प्रलपन** (संज्ञा पु०) (सं०) कहना, कथन, बकना, ऊटपटाँग, बातचीत।

१२३८. **प्रलय** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, मृत्यु, मौत, विनाश, अचेतनता, मूर्च्छा, बेहोशी, कल्पान्त, लय, युगान्त, संक्षय।

१६३६. प्रलव (संज्ञा पु०) (सं०) भलीभाँति काटना, टुकड़ा, धज्जी, लेश।

१६४०. प्रवण (संज्ञा पु०) (सं०) चौराहा, पहाड़ का किनारा, चतुष्पथ, (वि०) ढालुवाँ, झुका हुआ, रत, प्रवृत्त, नम्र, विनीत, अनुकूल, मुवाफ़िक, उत्सुक, तत्पर, उदार, स्निग्ध, निपुण, लम्बा, नपा हुआ, नीची भूमि।

१६४१. प्रवर (वि०) (सं०) मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ (संज्ञा पु०) अगर काष्ठ, संतति।

१६४२. प्रवर्तक, प्रवर्त्तक (संज्ञा पु०) (सं०) संचालक, प्रेरक, प्रयोजक, उत्साहदाता, सहायक, संस्थापक, पंच (अँ०) ऐबेटर।

१६४३. प्रवर्तन, प्रवर्त्तन (संज्ञा पु०) (सं०) प्रवृत्ति, प्रेरणा, आज्ञापन, प्रेषण, कार्य-संचालन।

१६४४. प्रवर्तित, प्रवर्त्तित (वि०) (सं०) ठाना हुआ, निकाला हुआ, उत्तेजित, प्रेरित, आज्ञापित, लगाया हुआ।

१६४५. प्रवह (संज्ञा पु०) (सं०) खूब बहाव, तेज़ बहाव, निष्कासन।

१६४६. प्रवहण (संज्ञा पु०) (सं०) लेजाना, कन्या को विवाहना, पालकी, डोली, नाव, पोत, सवारी।

१६४७. प्रवात (संज्ञा पु०) (सं०) तेज़ हवा, अन्धड़, आँधी, हवादार स्थान, ढाल, उतार (वि०) हवा से हिलाया हुआ।

१६४८. प्रवाद (संज्ञा पु०) (सं०) बात-चीत, जनश्रुति, जनरव, अफ़वाह, अपवाद, झूठी बदनामी, प्रसार, चर्चा, किंवदन्ती, उड़ती खबर।

१६४६. प्रवारण (संज्ञा पु०) (सं०) निषेध, विरोध, इच्छा पूर्ण करना, काम्यदान।

१६५०. प्रवाल (संज्ञा पु०) (सं०) मूँगा, विद्रुम, किसलय, कोंपल, सितार या तम्बूरे की लकड़ी।

१६५१. प्रवास (वि०) (सं०) देशान्तरवास, विदेशयात्रा।

१६५२. प्रवाह (संज्ञा पु०) (सं०) बहाव, जलधारा, धारा, जारी रहना,

क्रम, सिलसिला, प्रवृत्ति, झुकाव, उत्तम घोड़ा, व्यवहार, स्रोत ।

१९५३. **प्रवाहक** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेत, पिशाच, गाड़ीवान, बहानेवाला या चलाने वाला व्यक्ति ।

१९५४. **प्रविख्यात** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रेत, बालू, (वि०) नामधारी, प्रसिद्ध, मशहूर ।

१९५५. **प्रविख्याति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रसिद्धि, शोहरत, नामवरी ।

१९५६. **प्रविचार** (संज्ञा पु०) (सं०) विवेक, ज्ञान, चतुराई ।

१९५७. **प्रविभाग** (संज्ञा पु०) (सं०) विभाग, बाँट, अंश, भाग ।

१९५८. **प्रविष्ट** (वि०) (सं०) घुसा हुआ, भरती हुआ हुआ, गया हुआ, दाखिल, सम्मिलित ।

१९५९. **प्रवीण** (वि०) (सं०) निपुण, कुशल, दक्ष, होशियार, कुशल गायक या वाद्यक, बुद्धिमान् सयाना, चालाक ।

१९६०. **प्रवीणता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निपुणता, चतुराई, कुशलता, होशियारी, चालाकी, दक्षता ।

१९६१. **प्रवीर** (वि०) (सं०) योद्धा, वीर सुभट, बहादुर ।

१९६२. **प्रवृत्त** (वि०) (सं०) रत, तत्पर, प्रस्तुत, उद्यत, लगा हुआ, उत्पन्न ।

१९६३. **प्रवृत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बहाव, प्रवाह, झुकाव, रुझान, लगन, अभिरुचि, इच्छा, हाथी का मद ।

१९६४. **प्रवेश** (संज्ञा पु०) (सं०) घुसना, गति, रसाई, पहुँच, जानकारी पैठ, पैठार, पैठाव, (अं०) एडमीशन ।

१९६५. **प्रशंसा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गुण-वर्णन, श्लाघा, स्तुति, तारीफ़, सराहना ।

१९६६. **प्रशम** (संज्ञा पु०) (सं०) शमन, उपशम, शान्ति, निवृत्ति, निवारण, नाश, ध्वंस, शमता, प्रशमन ।

१९६७. **प्रशमन** (संज्ञा पु०) (सं०) शान्ति, उपशम, नाशन, मारण, वध, प्रतिपादन, अस्त्र-प्रहार, वश में करना, शमता, प्रशान्ति ।

१६६८. **प्रशमित** (वि०) (सं०) शान्त, तृप्त, अघाया हुआ, शुद्ध किया हुआ।

१६६९. **प्रशस्त** (वि०) (सं०) अच्छा, प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा, विस्तृत, लम्बा-चौड़ा, उपयुक्त, उचित, भव्य, सुन्दर, स्वच्छ।

१६७०. **प्रशस्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्तुति, प्रशंसा, सिरनामा, अभिनन्दन।

१६७१. **प्रशांत, प्रशान्त** (वि०) (सं०) अचंचल, स्थिर, निश्चल वृत्ति-युक्त, शान्त, धीर, (संज्ञा पु०) महासमुद्र।

१६७२. **प्रशासन** (संज्ञा पु०) (सं०) कर्त्तव्य, शिक्षा, राज्य-प्रबन्ध, राज्य-व्यवस्था (अं०) एडमिनिस्ट्रेशन।

१६७३. **प्रशास्ता** (संज्ञा पु०) (सं०) शासनकर्ता, मित्र, ऋत्विक्, सहकारी।

१६७४. **प्रशिष्ट** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अनुशासन, शिक्षा, उपदेश, आदेश, आज्ञा।

१६७५. **प्रश्न** (संज्ञा पु०) (सं०) जिज्ञासा, सवाल पूछने की बात, विचारणीय विषय, एक उपनिषद्, पूछना।

१६७६. **प्रश्नोत्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रश्न तथा उत्तर, सवाल-जवाब, पूछताछ।

१६७७. **प्रश्रय** (संज्ञा पु०) (सं०) आश्रय-स्थान, आधार, सहारा, प्रोत्साहन, टेक, विनय, नम्रता, शिष्टता।

१६७८. **प्रश्रयी** (वि०) (सं०) शिष्ट, सुजन, भलामानुस, शान्त, नम्र, विनीत।

१६७९. **प्रष्ठ** (वि०) (सं०) अग्रगामी, अगुआ, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य।

१६८०. **प्रसंख्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जोड़, मीजान, चिंता, (अं०) टोटल।

१६८१. **प्रसंग, प्रसङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) मेल, सम्बन्ध, संयोग, लगन, अनुरक्ति, संभोग, बात, वार्ता, उपयुक्त संयोग, अवसर, मौका, कारण, हेतु,

विषयानुक्रम, प्रकरण, प्रस्ताव, विस्तार, फैलाव, प्रसक्ति, मैथुन, उपलक्षण ।

१६८२. **प्रसक्त** (वि०) (सं०) सम्बन्धयुक्त, लगा हुआ, अटका हुआ, अनुरक्त, आसक्त, सम्बद्ध, प्रस्तावित ।

१६८३. **प्रसक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अनुमिति, आपत्ति, व्याप्ति, प्रसंग, सम्पर्क ।

१६८४. **प्रसन्न** (वि०) (सं०) संतुष्ट, तुष्ट, खुश, आह्लादित, हर्षित, अनुकूल, स्वच्छ, निर्मल, पसन्द, दयान्वित, प्रफुल्ल, (संज्ञा पु०) महादेव ।

१६८५. **प्रसन्नता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) संतोष, तुष्टि, हर्ष, आनन्द, अनुग्रह, कृपा, स्वच्छता, निर्मलता, शुद्धि, प्रसाद, प्रफुल्लता ।

१६८६. **प्रसर** (संज्ञा पु०) (सं०) फैलना, फैलाव, बढ़ना, दृष्टि-प्रसार, वेग, तेजी, समूह, राशि, व्याप्ति, प्रभाव, प्रकर्ष, युद्ध, साहस, हिम्मत, बाढ़, बढ़िया, संचार (अं०) प्रासेस ।

१६८७. **प्रसरण** (संज्ञा पु०) (सं०) बढ़ना, खिसकना, फैलना, विस्तार, व्याप्ति, उत्पत्ति, सेना का फैलाव ।

१६८८. **प्रसर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) गिराना, बरसाना, वर्षण ।

१६८९. **प्रसव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रसूति, जनन, जन्म, उत्पत्ति, बच्चा, सन्तान, फल, कुसुम, फूल ।

१६९०. **प्रसहन** (संज्ञा पु०) (सं०) हिंसक पशु, आलिंगन, सहनशीलता, क्षमा, सहन, (वि०) सहनशील ।

१६९१. **प्रसाद** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुग्रह, कृपा, प्रसन्नता, निर्मलता, सफ़ाई, स्वास्थ्य, भोग (भगवान् को अर्पित होने वाली वस्तु) भोजन, चढ़ावा, नैवेद्य, गुरु की जूठन ।

१६९२. **प्रसादक** (वि०) (सं०) अनुग्रहकारक, निर्मल, प्रीतिकर, (संज्ञा पु०) प्रसाद, देवधन, बथुए का साग ।

१६९३. **प्रसादना** (संज्ञा पु०) (सं०) चाकरी, सेवा, परिचर्या, पवित्रता, (क्रि०) (हिं०) प्रसन्न करना ।

१६९४. **प्रसादी** (वि०) (सं०) प्रसन्न करने वाला, प्यार करने वाला,

शान्त, अनुग्रहकारक, निर्मल, स्वच्छ (संज्ञा पु०) नैवेद्य, बलिदान का मांस ।

१९९५. **प्रसाधन** (संज्ञा पु०) (सं०) सजाना, शृङ्गार करना, शृङ्गार-सामग्री, सजावट का सामान, कार्य की पूर्ति, सम्पादन, निष्पादन, कंघी करना, वेश-रचना ।

१९९६. **प्रसार** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, फैलाव, संचार, गमन, प्रचार, प्रसरण ।

१९९७. **प्रसारिणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गन्ध-प्रसारिणी लता, देव-धान्य, तमाखू, लाजवन्ती ।

१९९८. **प्रसारित** (वि०) (सं०) विस्तारित, विस्तृत, फैलाया हुआ, ब्राडकास्ट किया हुआ ।

१९९९. **प्रसाह** (संज्ञा पु०) (सं०) पराजय, हार, आत्मशासन ।

२०००. **प्रसिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ज्वाला, लपट, रस्सी, रश्मि ।

२००१. **प्रसिद्ध** (वि०) (सं०) विख्यात, मशहूर, ख्यात, प्रख्यात, उजागर, नामवर, प्रतिष्ठित, प्रचलित, भूषित, अलंकृत ।

२००२. **प्रसिद्धि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ख्याति, शोहरत, बनाव, सिंगार, भूषा, अलंकार, प्रचार ।

२००३. **प्रसू** (वि०) (सं०) जन्मदात्री, उत्पादिका, (संज्ञा स्त्री०) माता, जननी, अम्बा, घोड़ी, कुश, केला, लता, नरम घास ।

२००४. **प्रसूत** (वि०) (सं०) उत्पन्न, पैदा, निकला हुआ, उत्पादित, जात, (संज्ञा पु०) कुसुम, फूल ।

२००५. **प्रसूति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रसव, जनन, उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, कारण, प्रकृति, उत्पत्ति-स्थान, सन्तति, प्रसूता स्त्री ।

२००६. **प्रसून** (संज्ञा पु०) (सं०) पुष्प, फूल, कुसुम, कली, फल, (वि०) उत्पन्न, पैदा ।

२००७. **प्रसृत** (वि०) (सं०) फैला हुआ, बढ़ा हुआ, विनीत, भेजा हुआ, प्रेरित, तत्पर, प्रचलित, इन्द्रियलोलुप, लंपट, लगा हुआ ।

२००८. **प्रसृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) फैलाव, विस्तार, सन्तान, संतति ।

२००९. **प्रसेक** (संज्ञा पु०) (सं०) सींचना, सेचन, निचोड़, छिड़काव, पसेव ।

२०१०. **प्रसेव** (संज्ञा पु०) (सं०) कुप्पा, कुप्पी, बीन की तूँबी, थैला ।

२०११. **प्रस्कंदन, प्रस्कन्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) छलांग, झपट, विरेचन, अतिसार, जुलाब, शिव, महादेव ।

२०१२. **प्रस्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) पत्थर, सेज, शैय्या, चौरस जगह, समतल, चमड़े की थैली, प्रस्तार, पाषाण, पाथर, शिला, उपल, पल्लवादि-रचित शैया ।

२०१३. **प्रस्तव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभाव, स्तुति, प्रशंसा ।

२०१४. **प्रस्तार** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, फैलाव, सेज, शैया, आधिक्य, वृद्धि, परत, तह, समतल, सीढ़ी ।

२०१५. **प्रस्ताव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रसंग, चर्चा, भूमिका, प्रस्तावना, अवसर, स्तुति, प्रकरण, वृत्तान्त, कथा, (अँ०) रेज़ोल्यूशन, आफ़र ।

२०१६. **प्रस्तावना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आरम्भ, वक्तव्य, भूमिका, प्राक्कथन, उपोद्घात, वाक्यानुष्ठान ।

२०१७. **प्रस्तुत** (वि०) (सं०) स्तुत्य, कथित, प्रासंगिक, उद्यत, तैयार, निष्पन्न, सम्पादित, उपयुक्त, प्राकरणिक, स्तुतियुक्त, उपस्थित, पेश, हाज़िर ।

२०१८. **प्रस्तुति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रशंसा, स्तुति, प्रस्तावना, तैयारी, निष्पत्ति, उपस्थिति ।

२०१९. **प्रस्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) रवानगी, गमन, कूच, मार्ग, उपदेश की पद्धति या उपाय, यात्रा, प्रयाण, निर्याण ।

२०२०. **प्रस्थापन** (संज्ञा पु०) (सं०) भेजना, प्रेरणा, स्थापन, प्रस्थान कराना, प्रेरण, प्रेषण, पठाना ।

२०२१. **प्रस्थित** (वि०) (सं०) स्थिर, दृढ़, गत, ठहरा हुआ, टिका हुआ, जाने को उद्यत ।

२०२२. **प्रस्थिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रस्थान, चढ़ाई, यात्रा, अभियान ।

२०२३. **प्रस्फुट** (वि०) (सं०) विकसित, खिला हुआ, प्रकट, स्पष्ट, साफ़, ज्ञात।

२०२४. **प्रस्फोटन** (संज्ञा पु०) (सं०) खुलना, फूटना, निकलना, विकसित करना या होना, खिलना या खिलाना, पीटना, ठोकना, फटकना, सूप।

२०२५. **प्रस्रव** (संज्ञा पु०) (सं०) बहाव, धार, निकलना, टपकना।

२०२६. **प्रस्रवण** (संज्ञा पु०) (सं०) सोता, झरना, प्रपात, निर्झर, दूध, पसीना।

२०२७. **प्रहत** (वि०) (सं०) हत, मारा हुआ, पीटा हुआ, फैलाया हुआ, अभ्यस्त, (संज्ञा पु०) ठोकर, प्रहार।

२०२८. **प्रहरण** (संज्ञा पु०) (सं०) हरण, हरना, छीनना, अस्त्र, युद्ध, प्रहार, वार, मारना, आघात पहुँचाना, फेंकना, हटाना, पर्दे वाली गाड़ी, डोली।

२०२९. **प्रहरी** (संज्ञा पु०) (सं०) पहरेदार, चौकीदार, रखवाला, घड़ियाली, यामिक, पहरुआ।

२०३०. **प्रहर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) हर्ष, आनन्द, आह्लाद, खुशी, प्रसन्नता।

२०३१. **प्रहर्षित** (वि०) (सं०) आनन्दित, हर्षित, खुश, आह्लादित, प्रफुल्लित।

२०३२. **प्रहसन** (संज्ञा पु०) (सं०) हँसी, दिल्लगी, परिहास, उपहास, मज़ाक़।

२०३३. **प्रहस्त** (संज्ञा पु०) (सं०) चपत, थप्पड़, चपेट, चावड़, तबड़ा।

२०३४. **प्रहाणि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) परित्याग, हानि, घाटा, नाश।

२०३५. **प्रहार** (संज्ञा पु०) (सं०) चोट, वार, आघात, मार।

२०३६. **प्रहास** (संज्ञा पु०) (सं०) अट्टहास, नट, शिव।

२०३७. **प्रहृत** (वि०) (सं०) फेंका हुआ, चलाया हुआ, पसारा हुआ, फैलाया हुआ, मारा हुआ, प्रताड़ित, पीटा हुआ, (संज्ञा पु०) चोट, आघात।

२०३८. **प्रहेलिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पहेली, बात, बुझौवल, कूटार्थ भाषित, दुरूह वाक्य ।

२०३९. **प्रह्व** (वि०) (सं०) विनीत, नम्र, आसक्त, अनुरक्त ।

२०४०. **प्रांजल, प्राञ्जल** (वि०) (सं०) सरल, सीधा, सच्चा, समान, बराबर, स्वच्छ और शुद्ध भाषा ।

२०४१. **प्रांत, प्रान्त** (संज्ञा पु०) (सं०) अन्त, सीमा, सिरा, छोर, किनारा, दिशा, ओर, तरफ़, खंड, प्रदेश, राज्य का एक भाग ।

२०४२. **प्रांतर, प्रान्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) सुनसान रास्ता, उजाड़, वन, जंगल, वृक्ष, कोटर, वीरान ।

२०४३. **प्राकृत** (वि०) (सं०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, सहज, भौतिक, साधारण, मामूली, संसारी, लौकिक, नीच, अधम, वास्तविक, वस्तुतः (संज्ञा पु०) एक प्राचीन भाषा ।

२०४४. **प्राकृतिक** (वि०) (सं०) प्रकृति से उत्पन्न, प्रकृति का, प्रकृति-सम्बन्धी, साधारण, मामूली, भौतिक, सांसारिक, लौकिक, नीच, स्वाभाविक, सहज (अँ०) नेचुरल ।

२०४५. **प्राक्कथन** (संज्ञा पु०) (सं०) परिचय, भूमिका, (अँ०) फ़ोर-वर्ड ।

२०४६. **प्राक्तन** (संज्ञा पु०) (सं०) भाग्य, प्रारब्ध (वि०) पुरातन, पुराना, प्राचीन ।

२०४७. **प्रागल्भ्य** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रगल्भता, वीरता, चतुरता, योग्यता, प्रधानता, प्रबलता, प्रादुर्भाव, प्राकट्य, साहस, धीरता, अहंकार, दर्प, गर्व, घमंड, औद्धत्य, अभिमान ।

२०४८. **प्राचीन** (वि०) (सं०) पूरब का, पुरातन, पुराना, वृद्ध, बुड्ढा ।

२०४९. **प्राची** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्व दिशा, पूरब, जल-आँवला, सूर्योदय दिक् ।

२०५०. **प्राचीर** (संज्ञा पु०) (सं०) चहार दीवारी, चार दीवारी, शहर पनाह, परकोटा, प्राकार ।

२०५१. **प्राचुर्य** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रचुरता, अधिकता, बहुतायत, विपुलता, बाहुल्य ।

२०५२. **प्राज्ञ** (वि०) (सं०) बुद्धि-सम्बन्धी, मानसिक, बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर, (वि०) पंडित, अभिज्ञ, विज्ञ, (संज्ञा पु०) जीवात्मा ।

२०५३. **प्राज्य** (वि०) (सं०) अधिक, बहुत, विपुल, प्रचुर, यथेष्ट, बहु, अधिक घी-युक्त ।

२०५४. **प्राड्विवाक** (संज्ञा पु०) (सं०) न्यायकर्ता, न्यायाधीश, वकील, व्यवहार-द्रष्टा, विचारक ।

२०५५. **प्राणंती, प्राणन्ती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भूख, क्षुधा, हिचक, छींक।

२०५६. **प्राण** (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, साँस, श्वास, निश्वास, बल, शक्ति, पौरुष, जीव, आत्मा, परब्रह्म, इन्द्रिय, प्रेम-पात्र, माशूका, यकार वर्ण, ब्रह्म, विष्णु, अग्नि, आग, प्रजापति ।

२०५७. **प्राण-आधार** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रिय, पति, स्वामी ।

२०५८. **प्राणथ** (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, प्रजापति, पवित्र स्थान, तीर्थ, (वि०) बलवान्, हृष्ट-पुष्ट ।

२०५९. **प्राणद** (संज्ञा पु०) (सं०) खून, लहू, जल, पानी, विष्णु, (वि०) प्राणदाता, प्राणरक्षक ।

२०६०. **प्राणनाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रिय व्यक्ति, प्रियतम, प्यारा पति, स्वामी, नाथ, प्रभु ।

२०६१. **प्राणपति** (संज्ञा पु०) (सं०) आत्मा, प्रभु, ईश्वर, हृदय, पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, प्यारा, प्राणवल्लभ ।

२०६२. **प्राणासार** (संज्ञा पु०) (सं०) बल, शक्ति, बलिष्ठ या ताकतवर व्यक्ति ।

२०६३. **प्राणी** (वि०) (हि०) जीवधारी, (संज्ञा पु०) जीव, जन्तु, मनुष्य, सचेतन ।

२०६४. **प्रातःकाल** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रात, प्रातः, प्रभात, तड़का, सवेरा, विहान ।

२०६५. **प्रातराश** (संज्ञा पु०) प्रातकालीन, भोजन, प्रातर्भोजन, जलपान, जलखवा ।

२०६६. **प्रातिहार** (संज्ञा पु०) (सं०) मायावी, ऐन्द्रजालिक, द्वारपाल, प्रतिहार, जादूगर, प्रातिहारिक ।

२०६७. **प्रादुर्भाव** (संज्ञा पु०) (सं०) आविर्भाव, उत्पत्ति, उदय ।

२०६८. **प्राधान्य** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रधानता, श्रेष्ठता, मुख्यता, प्रधानत्व ।

२०६९. **प्राध्यापक** (संज्ञा पु०)(सं०) बड़ा अध्यापक, विशेषज्ञ, (अं०) प्रोफ़ेसर ।

२०७०. **प्राध्व** (संज्ञा पु०) (सं०) लम्बी राह या रास्ता, सवारी, पहर, विनय, बन्ध ।

२०७१. **प्रापण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्राप्ति, मिलना, प्रेरण, ले आना, पहुँचाना ।

२०७२. **प्राप्त** (वि०) (सं०) लब्ध, पाया हुआ, समुपस्थित, उत्पन्न, आसादित, उपलब्ध, गृहीत ।

२०७३. **प्राप्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उपलब्धि, प्रापण, मिलना, रसीद, पहुँच, आगमन, अर्थागम, अर्जन, भाग्य, प्रारब्ध, व्याप्ति, प्रवेश, मेल, संगीत, लाभ, अधिगम, उपार्जन ।

२०७४. **प्राभव** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभुत्व, अधिकार, प्रधानता, श्रेष्ठता ।

२०७५. **प्रामाणिक** (वि०)(सं०) शास्त्रसिद्ध, ठीक, सत्य, यथार्थ, मान्य, प्रमाण-युक्त, सबूत वाला, परखा हुआ ।

२०७६. **प्रमाद्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पागलपन, उन्माद, अड़ना ।

२०७७. **प्राय** (संज्ञा पु०) (सं०) समान, बराबर, लगभग, उम्र, मृत्यु ।

२०७८. **प्रायः** (अव्यय) (सं०) अक्सर, करीब-करीब, अधिकतर, लगभग, बहुधा, तकरीबन ।

२०७९. **प्रायण** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रवेश, आरम्भ, जन्मान्तर,

स्थानान्तर, भूख हड़ताल से मरना ।

२०८०. **प्रायशः** (अव्यय) (सं०) प्रायः, बहुधा, अक्सर ।

२०८१. **प्रायश्चित्त** (संज्ञा पु०) (सं०) अफ़सोस, दुःख, पछतावा, पाप-नाशक कर्म, पाप क्षय करने वाला कर्म, प्रायश्चिति ।

२०८२. **प्रारंभ, प्रारम्भ** (संज्ञा पु०) शुरू, आरम्भ, आदि ।

२०८३. **प्रारब्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) भाग्य, किस्मत, अदृष्ट, पूर्व कर्म, ललाट ।

२०८४. **प्रार्थना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माँगना, चाहना, विनती, विनय, याचना, निवेदन ।

२०८५. **प्रालेय** (संज्ञा पु०) (सं०) हिम, पाला, बर्फ़, तुषार ।

२०८६. **प्रावण** (संज्ञा पु०) (सं०) कुदाल, फावड़ा, बेलचा ।

२०८७. **प्रावर** (संज्ञा पु०) (सं०) परकोटा, हाता, घेरा ।

२०८८. **प्रावरण** (संज्ञा पु०) (सं०) ओढ़नी, चादर, ढक्कन, प्रच्छादन, आच्छादन ।

२०८९. **प्रावृत्त** (संज्ञा पु०) (सं०) घूँघट, बुरका, ओढ़नी ।

२०९०. **प्रावृत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) घेरा, हाता, बाड़ा, आत्मज्ञान, आड़, रोक ।

२०९१. **प्रावृषेण्य** (संज्ञा पु०) (सं०) कदम्ब वृक्ष, कुटज, धार कदम्ब, प्रचुरता, विपुलता, ईति (वि०) वर्षाकाल में उत्पन्न ।

२०९२. **प्रावृष्य** (वि०) (सं०) वर्षाकालीन, (संज्ञा पु०) धार कदम्ब, कुटज, कुरैया, विकंटक, वैदूर्य ।

२०९३. **प्राशित** (वि०) (सं०) भक्षित, (संज्ञा पु०) पितृतर्पण, पितृ-यज्ञ, भक्षण ।

२०९४. **प्रासंगिक, प्रासङ्गिक** (वि०) (सं०) प्रसंग-सम्बन्धी, अकालिक, आनुषंगिक, नैमित्तिक ।

२०९५. **प्रासाद** (संज्ञा पु०) (सं०) बड़ा मकान, महल, राजभवन, देवा-लय, मन्दिर ।

२०९६. **प्रासादिक** (वि०) (सं०) दयालु, कृपालु, सुन्दर, प्रसाद-सम्बन्धी

२०९७. **प्रियंगु, प्रियङ्गु** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कँगनी (अन्न), पीपल, कुटकी, राई, राजिका, प्रियंगू ।

२०९८. **प्रिय** (वि०) (सं०) प्यारा, मुन्दर, मनोहर, हरा, स्नेह पात्र, प्रियतम, प्रेमी, प्रणयी, (संज्ञा पु०) पति, स्वामी, जामाता, दामाद, कार्तिकेय, हिरन, जीवक (औषध), ऋद्धि, कँगनी, हित, भलाई, बेंत, हरताल, धारा कदम्ब, ईश्वर ।

२०९९. **प्रियक** (संज्ञा पु०) (सं०) पीत शालक, कदम्ब वृक्ष, केसर, धारा कदम्ब, चित्र-मृग, चितकबरा हिरन, पक्षी, मधुमक्खी, कँगनी ।

२१००. **प्रियतम** (वि०) (सं०) सर्वप्रिय, परमप्रिय, (संज्ञा पु०) पति, स्वामी, मारशिखा वृक्ष ।

२१०१. **प्रियदर्शन** (वि०) (सं०) मनोहर, सुन्दर, खूबसूरत, (संज्ञा पु०) तोता, खिरनी वृक्ष, एक गन्धर्व ।

२१०२. **प्रिया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नारी, स्त्री, पत्नी, भार्या, इलायची, चमेली, मल्लिका, मदिरा, शराब, प्रेमिका, प्रणयिनी, प्यारी, प्रेयसी, वल्लभा, माशूका, कँगनी, एक छन्द ।

२१०३. **प्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रेम, प्रीति, कान्ति, चमक, इच्छा, तृप्ति, तर्पण ।

२१०४. **प्रीण** (वि०) (सं०) प्रसन्न, सन्तुष्ट, प्राचीन, पुरातन, पहले का, अगला ।

२१०५. **प्रीति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सन्तोष, हर्ष, आनन्द, प्रेम, स्नेह, मुहब्बत, प्यार, प्रणय, स्नेह, प्रीत ।

२१०६. **प्रूफ़** (संज्ञा पु०) (सं०) (अँ०) प्रमाण, सबूत, मुद्रित वस्तु का नमूना ।

२१०७. **प्रेंखा, प्रेङ्खा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हिलना, झूलना, घोड़े की चाल, यात्रा, भ्रमण, नाच ।

२१०८. **प्रेक्षणक** (संज्ञा पु०) (सं०) खेल, तमाशा, स्वाँग, लीला ।

२१०९. **प्रेक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) देखना, बुद्धि, प्रज्ञा, दृष्टि, निगाह, शोभा, झाँकी, आज्ञा, ज्ञान, विचार, आलोचन, मनन ।

२११०. **प्रेक्षागार** (संज्ञा पु०) (सं०) रंगशाला, नाट्यशाला, मंत्रणागृह, प्रेक्षागृह ।

२१११. **प्रेत** (संज्ञा पु०) (सं०) मृतात्मा, मृतक प्राणी, दुष्ट, स्वार्थी, कल्पित-देवयोनि, भूत, पिशाच, मृतक ।

२११२. **प्रेत-गृह** (संज्ञा पु०) (सं०) श्मशान, मरघट, कबरिस्तान ।

२११३. **प्रेति** (संज्ञा पु०) (सं०) मरण, मरना, अन्न, अनाज ।

२११४. **प्रेम** (संज्ञा पु०) (सं०) मुहब्बत, प्रीति, प्यार, माया, लोभ, स्नेह, प्रियता, प्रणय ।

२११५. **प्रेमा** (संज्ञा पु०) (सं०) स्नेह, स्नेही, इन्द्र, वायु ।

२११६. **प्रेमी** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुरागी, आसक्त, आशिक, प्रेमयुक्त, स्नेही, प्यारा, स्नेह-भाजन ।

२११७. **प्रेयर** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) स्तुति, प्रार्थना, ईश्वर-भजन ।

२११८. **प्रेरणा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दबाव, जोर, उत्तेजना, उकसाना ।

२११९. **प्रेषण** (संज्ञा पु०) (सं०) भेजना, रवानगी ।

२१२०. **प्रेषित** (वि०) (सं०) प्रेरित, भेजा हुआ, रवाना किया हुआ ।

२१२१. **प्रेष्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रेमिका, पत्नी, जाँघ, (संज्ञा पु०) प्रेष्ठ ।

२१२२. **प्रेष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) नौकर, दास, दूत, सेवक, भृत्य, (वि०) भेजने योग्य ।

२१२३. **प्रेष्यता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दासत्व, दूतत्व ।

२१२४. **प्रैष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेषण, भेजना, संकट, विपत्ति, कष्ट, दुःख, विक्षिप्तता, पागलपन, उन्माद ।

२१२५. **प्रैष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) नौकर, सेवक, दासत्व ।

२१२६. **प्रोक्षित** (वि०) (सं०) सींचा हुआ, लगा हुआ, प्रवासगत, विदेशगम्य, परदेशी।

२१२७. **प्रोग्राम** (संज्ञा पु०) (अं०) कार्यक्रम, कार्यक्रम-सूचकपत्र।

२१२८. **प्रोथ** (वि०) (सं०) विख्यात, प्रसिद्ध, स्थापित, भीषण, भयानक (संज्ञा पु०) घोड़े का नथुना, सूअर का थूथन, कमर, पेड़, चूचड़, गर्त्त, गड्ढा, गर्भाशय।

२१२९. **प्रोष्ठ** (संज्ञा पु०) (सं०) बैल, साँड़, तिपाई, काठ का मूढ़ा, (अं०) स्टूल।

२१३०. **प्रोह** (संज्ञा पु०) (सं०) तर्क, हाथी का पैर, गाँठ, जोड़।

२१३१. (वि०)(सं०) गम्भीर, गूढ़, पुराना, निपुण, चतुर, प्रवृद्ध, प्रगल्भ, पका हुआ।

२१३२. **प्रौढ़ि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रौढ़ता, धृष्टता, ढिठाई, शक्ति, सामर्थ्य, वाद-विवाद, प्रगल्भता।

२१३३. **प्लवंग, प्लवङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्दर, वानर, मृग, हिरन, पाकरवृक्ष, कपि।

२१३४. **प्लव** (संज्ञा पु०) (सं०) बाढ़, मुर्गा, कारंडव पक्षी, मेंढक, बन्दर, भेड़, नागरमोथा, चांडाल, दुश्मन, शत्रु, नहाना, तैरना, गोपालकरंज, अन्न, शब्द, एक जलपक्षी, मेष, जलकाक, पानी, नौका, नाव, तरणि, (वि०) तैरता हुआ, झुकता हुआ, क्षणभंगुर।

२१३५. **प्लवग** (संज्ञा पु०) (सं०) मेंढक, बन्दर, हिरन, जलपक्षी, सूर्य का सारथी, सिरस का पेड़।

२१३६. **प्लवन** (संज्ञा पु०) (सं०) तैरना, उछलना, कूदना।

२१३७. **प्लॉट** (संज्ञा पु०) (सं०) भूमि-भाग, कथावस्तु, षड्यन्त्र।

२१३८. **प्लास्टर** (संज्ञा पु०) (अं०) पलस्तर, लेप।

२१३९. **प्लुक्षि** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेम, आग, अग्नि।

२१४०. **प्लुत** (संज्ञा पु०) (सं०) तीन मात्राओं वाला स्वर, विशेष, टेढ़ी चाल, (वि) काँपता हुआ, चलने वाला प्लावित, तरोबार।

२१४१. **प्लुष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेम, जलना, पूर्ति।

२१४२. **प्लेग** (संज्ञा पु०) (सं०) भीषण, संक्रामक, रोग, ताऊन, महामारी।

२१४३. **प्लेट** (संज्ञा पु०) (सं०) (अँ०) तश्तरी, रकाबी, थाली।

(फ)

२१४४. **फंग** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रेम, फंदा, अनुराग।

२१४५. **फंजिका, फञ्जिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दंती वृक्ष, जवासा, देवताड़, फञ्जी।

२१४६. **फंद, फन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्धन, जाल, फाँस, फन्दा, छल, धोखा, मर्म, रहस्य, कष्ट, दुःख।

२१४७. **फंदना, फन्दना** (क्रि०) (हिं०) फँसना, फाँदना, लाँघना, भटकना, उलझना, रुकना।

२१४८. **फक** (वि०) (हिं०) स्वच्छ, सफ़ेद, बदरंग, हैरान।

२१४९. **फकत** (वि०) (अँ०) केवल, सिर्फ़, पर्याप्त, बल।

२१५०. **फ़कीर** (संज्ञा पु०) (अँ०) भिखमंगा, भिक्षुक, साधु, निर्धन व्यक्ति।

२१५१. **फकीरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भिगमंगापन, साधुता, निर्धनता, एक प्रकार का अँगूर।

२१५२. **फक्कड़**, (वि०) (हिं०) मस्त, विरंग, उच्छृंखल, हुड्ड, बखेड़िया, झगड़ालू, लड़ाकू, उद्दण्ड व्यक्ति, गन्दी बातें, गाली-गलौज।

२१५३. **फटक** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्फटिक, बिल्लौर, पत्थर, (क्रि० वि०) झट, तत्क्षण तुरन्त।

२१५४. **फटकना** (क्रि०) (हिं०) पटकना, धुनना, फड़फड़ाना, पछोरना, दुःखी होना।

२१५५. **फटफटाना** (क्रि० वि०) (हिं०) प्रयास करना, फड़फड़ाना, व्याकुल होना, हाथ-पैर धुनना, कूदना, छटपटाना, व्यर्थ बकवास करना।

२१५६. **फटा** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) साँप का फन, छल, धोखा, घमंड, शेखी, (वि०) सछिद्र, फाँकदार, दरका हुआ, फटा हुआ।

२१५७. **फड़कन** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धड़कन, उत्सुकता, (वि०) भड़कने वाला, तेज़, चंचल।

२१५८. **फड़फड़ाना** (क्रि०) (हिं०) घबराना, उत्सुक होना, तड़फड़ाना, फटफटाना, दुःखी होना, छटपटाना।

२१५९. **फणधर** (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, नाग, सर्प, शिवजी।

२१६०. **फणिजिह्वा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बड़ी सतावर, महासमंगा, फणिजिह्विका।

२१६१. **फणिज्झक** (संज्ञा पु०) (सं०) फणिजा, काली तुलसी, नींबू।

२१६२. **फणिपति** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्पराज, शेषनाग, अनन्त, वासुकी।

२१६३. **फणिलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) फणिवल्ली नागवल्ली, पान।

२१६४. **फर्णींद्र, फणीन्द्र** (संज्ञा पु०) (सं०) शेषनाग, वासुकी, बड़ा सर्प, अजगर, सर्पराज, फणिपति।

२१६५. **फणी** (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, सर्प, केतु, सीसा, महुवा, सर्पिणी औषध।

२१६६. **फ़तह** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) विजय, जीत, सफलता, फ़ते, फ़्तेह, जय।

२१६७. **फ़तूर** (संज्ञा पु०) (अ०) दोष, विकार, बाधा, विघ्न, उपद्रव, हानि, नुकसान।

२१६८. **फन** (संज्ञा पु०) (हिं०) फण, बाल, भटवाँस, नाग का मुँह, (फ़ा०) फ़न—विद्या, हुनर, गुण, खूबी, छलने का ढंग, मकर।

२१६९. **फनगा** (संज्ञा पु०) (हिं०) फतिंगा, अंकुर, कल्ला, अखफोड़ा, टिड्डी।

२१७०. **फ़ना** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) नाश, बरबादी।

२१७१. **फफोला** (संज्ञा पु०) (हिं०) छाला, झलका, स्फोट, स्फोटक।

२१७२. **फबती** (संज्ञा पु०) (हिं०) व्यंग्य, चुटकी, उपहास, परिहास, चुहल, चुटकुला।

२१७३. **फबन** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शोभा, शृंगार, सजावट, छवि।

२१७४. **फबीला** (वि०) (हिं०) सुन्दर, सुहाना, शोभायुक्त, सजीला, रम्य, शोभायमान।

२१७५. **फर** (संज्ञा पु०) (हिं०) फल, सामना, मुकाबिला, बिछौना, बिछावन, फलक, माला की नोक।

२१७६. **फ़रक़** (संज्ञा पु०) (अ०) अलगाव, पार्थक्य, अन्तर, दूरी, भेद, कमी, कसर, दुराव, परायापन (क्रि०) अलग, पृथक्।

२१७७. **फरकाना** (क्रि०) (हिं०) हिलाना, संचालित करना, फड़फड़ाना, अलग करना, फड़कना, कांपना, स्फुरण होना, थरथराना।

२१७८. **फ़रचा** (वि०) (हिं०) शुद्ध, पवित्र, साफ़, सुथरा, जो जूठा न हो।

२१७९. **फ़रजंद, फ़रजन्द** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) पुत्र, लड़का, बेटा, फ़रज़िन्द।

२१८०. **फ़रजी** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) शतरंज का एक मोहरा (वज़ीर) (वि०) नकली, बनावटी, कल्पित।

२१८१. **फरद** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) लेख, सूची, रजाई का पल्ला, चादर, (वि०) अनुपम, बेजोड़।

२१८२. **फरफंद** (संज्ञा पु०) (हिं०) छल, कपट, धोखा, नखरा।

२१८३. **फरमा** (संज्ञा पु०) (अ०) ढाँचा, डौल, साँचा।

२१८४. **फ़रश** (संज्ञा पु०) (अ०) बड़ी दरी, धरातल, समतल भूमि, (अँ०) फ़्लोर।

२१८५. **फरसा** (संज्ञा पु०) (हिं०) परशु, कुठार, कुल्हाड़ी, फवड़ी।

२१८६. **फरहर** (वि०) (हिं०) शुद्ध, निर्मल, साफ़, स्पष्ट, प्रसन्न, खिला हुआ, तेज, चालाक, अलग-अलग।

२१८७. **फरहरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) झंडा, पताका, ध्वजा, केतु,

(वि०) शुद्ध, निर्मल, पृथक्-पृथक्, स्पष्ट, खिला हुआ, प्रसन्न ।

२१८८. फराखी (संज्ञा स्त्री०) (फा०) चौड़ाई, विस्तार, फैलाव, सम्पन्नता ।

२१८९. फरागत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) छुट्टी, छुटकारा, मुक्ति, बेफ़िक्री, मल-त्याग ।

२१९०. फ़रीक (संज्ञा पु०) (अ०) विपक्षी, मुकाबले वाला, प्रतिद्वन्द्वी ।

२१९१. फरुही (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा फावड़ा, मथानी, फरवी, मुरमुरा, लाई, भुना हुआ चावल ।

२१९२. फ़रेब (संज्ञा पु०) (फा०) छल, कपट, धोखा, (वि०) फ़रेबी ।

२१९३. फ़र्ज (संज्ञा पु०) (अ०) कर्तव्य, कर्म, उत्तरदायित्व, मान लेना, कल्पना ।

२१९४. फरींटा (संज्ञा पु०) (हिं०) तेज़ी, क्षिप्रता, वेग, खर्राटा, बाँस का टुकड़ा ।

२१९५. फ़लक (संज्ञा पु०) (हिं०) आकाश, अन्तरिक्ष ।

२१९६. फल (संज्ञा पु०) (सं०) वृक्षफल, परिणाम, नतीजा, कर्म-भोग, लाभ, गुण, प्रभाव, प्रतिकार, बदला, प्रतिफल, हल की फाल, लोहे का फाल, फलक, ढाल, धर्म, उद्देश्य, सिद्धि, जायफल, प्रयोजन, क्षेत्रफल, मूल का ब्याज, सूद, कंकोल, इष्टसिद्धि, अभिप्राय (अं०) फ्रूट ।

२१९७. फलक (संज्ञा पु०) (सं०) तख्ता, पट्टी, चादर वरक, तबक, पत्र, पृष्ठ, चौकी, मेज, फल, हथेली, अस्तिखंड, नागकेसर, चर्म, ढाल, काष्ठ, पदक, पटरा, तख्ता (अ०) आकाश, अन्तरिक्ष ।

२१९८. फलतः (सं०) इसलिए, फलस्वरूप, परिणामतः ।

२१९९. फ़लाँ (वि०) (फा०) अमुक, कोई, अनिश्चित (व्यक्ति या बातें) फलाना ।

२२००. फलाँग (संज्ञा स्त्री०) (हि०) कुदान, उछाल, छलाँग ।

२२०१. फलित (वि०) (सं०) फला हुआ, पूर्ण, पूरा, सम्पन्न (संज्ञा पु०) वृक्ष, पेड़, छरीला, पत्थर-फल ।

२२०२. फलिनी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुधिया, दूर्वा, जल-पीपल, मेंहदी, [illegible], [illegible], [illegible], इलायची, प्रियंगु, अग्निशिखा (वृक्ष)।

२२०३. फली (वि०) (सं०) फलयुक्त, फलवान्, सफल, (संज्ञा पु०) [illegible], मूसली, आमड़ा।

२२०४. फल्गु (वि०) (सं०) व्यर्थ, निरर्थक, साधारण, सामान्य, छोटा, क्षुद्र, [illegible] [illegible]।

२२०५. फसकना (क्रि०) (हिं०) मसकना, बैठना, धँसना, फटना, [illegible], [illegible], [illegible], ढीला होना, शिथिल होना।

२२०६. फ़सल (संज्ञा स्त्री०) (अ०) ऋतु, मौसम, समय, काल, पैदावार।

२२०७. फ़साद (संज्ञा पु०) (अ०) विकार, खराबी, उपद्रव, उत्पात, लड़ाई, झगड़ा।

२२०८. फसादी (वि०) (फ़ा०) उपद्रवी, झगड़ालू, लड़ाका, नटखट, दंगाई।

२२०९. फ़हम (संज्ञा स्त्री०) (अ०) समझ, ज्ञान, विवेक।

२२१०. फाँक (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टुकड़ा, खंड।

२२११. फाँकड़ा (वि०) (देशज) तिरछा, बाँका, तगड़ा, हृष्ट, पुष्ट।

२२१२. फाँटना (क्रि०) (हिं०) बाँटना, विभाग करना, काढ़ा बनाना।

२०१३. फाँद (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) उछाल, फंदा, पाश, जाल, फाँसी, फसड़ी।

२२१४. फाँदना (क्रि०) (हिं०) उछलना, कूदना, फँसाना, लाँघना।

२२१५. फाँस (संज्ञा पु०) (सं०) सूक्ष्म काँटा, पाश, फंदा, बेंत की तीली या कमची।

२२१६. **फाइन** (संज्ञा पु०) (अँ०) अर्थ-दंड, जुर्माना, (वि०) अच्छा, बढ़िया।

२२१७. **फाटक** (संज्ञा पु०) (हि०) बड़ा द्वार, दरवाज़ा, तोरण, काजी हौस, मुख्य द्वार, सदर दरवाज़ा, मूर्ना।

२२१८. **फाड़खाऊ** (वि०) (हि०) कटखन्ना, क्रोधी, बिगड़ैल, आतंक, भयानक।

२२१९. **फाब** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शोभा, छवि, फबन।

२२२०. **फ़ायदा** (संज्ञा पु०) (अ०) लाभ, नफ़ा, प्रयोजन-सिद्धि, अच्छा फल, भला परिणाम, उत्तम प्रभाव, अच्छा असर।

२२२१. **फाल्गुन** (संज्ञा पु०) (सं०) फागुन का महीना, दूर्वा नामक सोमलता, अर्जुन वृक्ष, अर्जुन।

२२२२. **फिट** (अव्यय) (हिं०) धिक, छी, (वि०) (अँ०) ठीक, उपयुक्त।

२२२३. **फिटकार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धिक्कार, लानत, शाप, कोसना, तिरस्कार, गाली, हलकी मिलावट, वास।

२२२४. **फितरती** (वि०) (अ०) चतुर, चालाक, धोखेबाज़, फ़ितूरी।

२२२५. **फ़ितूर** (वि०) (अ०) विकार, ख़राबी, कमी, न्यूनता, घाटा, झगड़ा, उपद्रव।

२२२६. **फ़ितूरी** (वि०) (अ०) लड़ाका, झगड़ालू, फ़सादी, उपद्रवी।

२२२७. **फिरंगी** (वि०) (हिं०) गोरा, योरुपियन, (वि०) फिरंग देश का रहने वाला।

२२२८. **फिरंट** (वि०) (हिं०) फिरा हुआ, विपरीत, विरुद्ध, खिलाफ़, झगड़ालू, विरोधी।

२२२९. **फिर** (क्रि० वि०) (हिं०) दोबारा, पुनः, पुनि, बहुरि, बाद, पश्चात्, भविष्य में, आगे, पीछे, अनन्तर, उपरान्त, उस अवस्था में, आगे बढ़ कर, आगे चलकर, इसके अतिरिक्त, इसके अलावा।

२२३०. **फिरकी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) फिरहरी, चकई।

२२३१. **फिरना** (क्रि०) (हिं०) घूमना, भ्रमण करना, पर्यटन करना,

रमना, घोड़ना, मुड़ना, ठहरना, डोलना, सैर करना, विचरना, चक्कर खाना, आविष्ट होना, उल्टा होना, विपरीत होना।

२२३२. फिराक (संज्ञा पु०) (अ०) वियोग, बिछोह, चिन्ता, सोच, खटका, खोज, टोह।

२२३३. फिलासफी (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दर्शनशास्त्र, सिद्धान्त, तत्त्व, गूढ़ बात।

२२३४ फिसलना (क्रिया) (हि०) खसकना, गिरना, रपटना।

२२३५. फी (अव्यय) (अ०) प्रत्येक, हरएक, (संज्ञा स्त्री०) (हि०) हेठापन, निकृष्टता, उलाहना।

२२३६. फीका (वि०) (हि०) स्वादहीन, बेज़ायका, मलिन, कान्तिरहित, प्रभाहीन, प्रभावहीन, बेरौनक, मन्द, व्यर्थ।

२२३७. फील्ड (संज्ञा पु०) (अ०) मैदान, खेत।

२२३८. फीस (संज्ञा स्त्री०) (अ०) कर, शुल्क, उजरत, पारिश्रमिक, मूल्य।

२२३९ फुंदी, फुन्दी (संज्ञा स्त्री०) (हि०) गाँठ, फँदा, टीका, बिन्दी।

२२४०. फुट (वि०) (हि०) एकाकी, अकेला, पृथक्, अलग (संज्ञा पु०) (अं०) १२ इंच का पैमाना।

२२४१. फुटपाथ (संज्ञा पु०) (अं०) पटरी, पगडंडी।

२२४२. फुनगी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कली, कोंपल, मंजरी, अंकुर।

२२४३. फुर (वि०) (हि०) सत्य, सच्चा, यथार्थ, ठीक, (संज्ञा पु०) उड़ने का शब्द।

२२४४. फुरती (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शीघ्रता, जल्दी, चुस्ती।

२२४५. फुरना (क्रिया) (हिं०) निकलना, स्फुटित होना, प्रकाशित होना, चमक उठना, झलक पड़ना, फड़कना, हिलना, उच्चरित होना, सत्य ठहरना, पूरा उतरना, असर करना, सफल होना, सूझना, उपजना, ध्यान में आना।

२२४६. **फुरसत** (संज्ञा पु०) (अ०) अवकाश, अवसर, समय, निवृत्ति, छुट्टी, रोग-निवृत्ति, आराम।

२२४७. **फुलका** (संज्ञा पु०) (हिं०) रोटी, छाला, फफोला।

२२४८. **फुसलाना** (क्रिया) (हिं०) बहलाना, अनुकूल करना, सन्तुष्ट करना, मनाना।

२२४९. **फुहार** (संज्ञा पु०) (हिं०) छींटा, जलकण, झड़ी, हल्की वर्षा, झींसी।

२२५०. **फूँकना** (क्रि०) (हिं०) फूँक मारना, जादू-टोना पढ़ना, जलाना, भस्म करना, प्रज्वलित करना, बरबाद करना, नष्ट करना, सताना, दुःख देना, फैलाना, प्रचारित करना।

२२५१. **फूँदा** (संज्ञा पु०) (हिं०) फुँदना, झब्बा, फुफुँदी, नीबी।

२२५२. **फूई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) घी का फूल, फफूँदी, भुकड़ी।

२२५३. **फूटना** (क्रि०) (हिं०) भग्न होना, दरकना, फटना, नष्ट होना, प्रस्फुटित होना, खिलना, बिखरना, फलाना, साथ छोड़ना, टूटना, टुकड़े-टुकड़े होना।

२२५४. **फूल** (संज्ञा पु०) (हिं०) पुष्प, सुमन, कुसुम, सत्त, सार, पुष्प, गर्भाशय।

२२५५. **फूलना** (क्रि०) (हिं०) खिलना, सूजना, हुलसना, आनन्दित होना, फैलाना, विकसित होना, स्थूल होना, मोटा होना, प्रसन्न होना, घमंड होना, मुँह फुलाना, रूठना।

२२५६. **फेंकना** (क्रि०) (हिं०) पटकना, गिराना, गँवाना, खोना, परित्याग करना, लापरवाही से रख देना, अपव्यय करना, झटकना, पटकना, पटा चलाना, प्रक्षेपण करना, त्यागना, निकाल देना, अलग करना।

२२५७. **फेंटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) कमर का घोड़ा, कमरबंद, छोटी पगड़ी, कटि-बन्धन, पटुका, मुरेठा, साफ़ा।

२२५८. **फेनक** (संज्ञा पु०) (सं०) झाग, फेन, एक मिठाई, वातासफेनी।

२२५९. **फेनल** (वि०) (सं०) फेनयुक्त, झागदार, फेनिल।

२२६०. फेर (संज्ञा पु०) (हिं०) घुमाव, चक्कर, परिवर्तन हेर-फेर, गड़बड़ झगड़ा, बखेड़ा, झोंका, भ्रम, चालबाज़ी, धूर्तता, उपाय, युक्ति, ढंग, झगड़ा-टंटा, विनिमय, हानि, घाटा, नुकसान, दिशा, असमंजस, दुविधा, पलटाव, बदले, बुरे दिन, प्रभाव, कठिनता, सियार, शृगाल, गीदड़, (अव्यय) पुनः, फिर।

२२६१. फेरना (क्रि०) (हिं०) गति बदलना, घुमाना, मोड़ना, लौटाना, वापिस देना, फेरा देना, मंडलाकार चलाना, मरोड़ना, पोतना, लेप करना, परिवर्तित करना, रुख बदलना, विपरीत करना, विरुद्ध करना, चाल चलना।

२२६२. फेरफार (संज्ञा पु०) (हिं०) परिवर्तन, उलट-फेर, घुमाव-फिराव, पेच, चक्कर, टालमटोल, बहाना, अन्तर, फ़र्क।

२२६३. फेरव (संज्ञा पु०) (सं०) शृगाल, सियार, गीदड़, राक्षस, फेरु, (वि०) धूर्त, चालबाज़, हिंस्र, दुःखदायी।

२२६४. फेरवट (संज्ञा पु०) (हिं०) फेरा, घुमाव-फिराव, चक्कर, अन्तर, फ़र्क।

२२६५. फेरा (संज्ञा पु०) (हिं०) परिक्रमण, चक्कर, घुमाव, लपेट, आवर्त्त, घेरा, मंडल।

२२६६. फेरी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) परिक्रमा, प्रदक्षिणा, चक्कर, भिक्षा माँगना।

२२६७. फेल (संज्ञा पु०) (अ०) कार्य, काम, कर्म, (वि०) (सं०) उच्छिष्ट, जूठा, (अं०) अनुत्तीर्ण, असफल।

२२६८. फ़ेस (संज्ञा पु०) (अं०) चेहरा, मुख, सामना, सामने का भाग।

२२६९. फ़ैज़ (संज्ञा पु०) (फ़ा०) लाभ, फल, परिणाम।

२२७०. फैल (संज्ञा पु०) (हिं०) काम, कार्य, क्रीडा, खेल, नखरा, मक्कर, हठ, दुराग्रह, (संज्ञा स्त्री०) फैला हुआ, लम्बा-चौड़ा, विस्तृत।

२२७१. फैलना (क्रि०) (हिं०) विस्तृत होना, पसरना, मोटा

होना, आवृत करना, भरना, संख्या बढ़ना, प्रचलित होना, प्रसिद्ध होना, मचलना, बिथरना ।

२२७२. **फैलाना** (क्रि०) (हिं०) पसारना, छितराना, बढ़ती करना, बढ़ाना, प्रकट करना, हिसाब या लेखा लगाना, गणित करना, आयोजन करना, बिछाना, प्रचार करना ।

२२७३. **फैलाव** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) विस्तार, प्रसार, लम्बाई, चौड़ाई, प्रचार, पसराव, बिछाव ।

२२७४. **फ़ैशन** (संज्ञा पु०) (अँ०) ढंग, तर्ज़, रीति, प्रथा, बनाव-सिंगार का ढंग ।

२२७५. **फ़ैसला** (संज्ञा पु०) (अ०) निर्णय, निपटारा ।

२२७६. **फोंफर** (वि०) (हिं०) पोला, फोक, निःसार ।

२२७७. **फोक** (संज्ञा पु०) (हिं०) सीठी, भूसी, फीकी या नीरस वस्तु ।

२२७८. **फोकट** (वि०) (हिं०) तुच्छ, निःसार, मुफ्त, व्यर्थ, छूँछा, कंगाल, दरिद्र ।

२२७९. **फोता** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) भूमिकर, अण्डकोष, कमरबन्द, पटुका, रुपये रखने की थैली ।

२२८०. **फोतेदार** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कोषाध्यक्ष, खजाँची, रोकड़िया ।

२२८१. **फ़ौज** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सेना, झुंड, समूह ।

२२८२. **फौत** (वि०) (अ०) मृत, गत, नष्ट, (संज्ञा पु०) मृत्यु, मरण, निधन ।

२२८३. **फ़ौरन** (क्रि०) (अ०) तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, जल्दी ।

२२८४. **फ्री** (वि०) (अँ०) स्वतन्त्र, मुक्त ।

(ब)

२२८५. **बंका** (वि०) (हिं०) तिरछा, टेढ़ा, बाँका, पराक्रमी, बलशाली ।

२२८६. **बंकाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टेढ़ापन, तिरछापन, वक्रता ।

२२८७. **बंग** (वि०) (हिं०) टेढ़ा, उद्दंड, अज्ञानी, (संज्ञा पु०) बंगाल ।

२२८८. बंगा (वि०) (हिं०) टेढ़ा, मूर्ख, बेवकूफ़, उद्दंड ।

२२८९. बंचकता (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चालबाजी, छल, धूर्त्तता, बंचकताई ।

२२९०. बंचना (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ठगी, (क्रि०) ठगना, छलना, धूतना ।

२२९१. बंटवाना (क्रि०) (हिं०) वितरण करना, पिसवाना ।

२२९२. बंद, बन्द (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बाँध, फीता, तनी, बंधन, क़ैद, (वि०) बुझा हुआ, रुका हुआ ।

२२९३. बंदगी, बन्दगी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) प्रणाम, नमस्कार, बंदना, उपासना, सलाम ।

२२९४. बंदा, बन्दा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) सेवक, दास, मैं ।

२२९५. बंदारु, बन्दारु (वि०) (हिं०) वन्दनीय, पूजनीय, आदरणीय ।

२२९६. बंदी, बन्दी (संज्ञा पु०) (सं०) भाट, चारण, कैदी, (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) दासी, चेरी, बंदेरी, (हिं०) क़ैदी ।

२२९७. बंध, बन्ध (संज्ञा पु०) (सं०) बंधन, गाँठ, गिरह कैद, बाँध, निबन्ध-रचना, बन्द, लगाव, फँसाव, शरीर ।

२२९८. बंधन, बन्धन (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिबन्ध, रुकावट, कारागार, कैदखाना, जोड़, वध, हिंसा, रस्सी, जंजीर, बेड़ी, शिव, महादेव ।

२२९९. बंधाना (क्रि०) (हिं०) बँधवाना, कैद कराना, धारण करना ।

२३००. बंधु, बन्धु (संज्ञा पु०) (सं०) भाई, मित्र, बन्धूक पुष्प, पिता ।

२३०१. बंधुता, बन्धुता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भाईचारा, दोस्ती, मैत्री, भ्रातृत्व ।

२३०२. बंधुर, बन्धुर (संज्ञा पु०) (सं०) मुकुट, ताज, हंस, सारस, काकड़ासींगी, पक्षी, विहङ्ग, (वि०) सुन्दर, मनोहर, नम्र ।

२३०३. बंधुल, बन्धुल (संज्ञा पु०) (सं०) वेश्या पुत्र, दुराचारिणा-

पुत्र, (वि०) सुन्दर, आकर्षक, नम्र ।

२३०४. **बँधेज** (संज्ञा पु०) (हिं०) लेन-देन का भाव, बँधान, बाजीकरण, प्रतिबन्ध, रुकावट ।

२३०५. **बंध्य, बन्ध्य** (संज्ञा पु०) (सं०) बाँध, (वि०) बाँधने योग्य, बाँझ (स्त्री) ।

२३०६. **बंब, बम्ब** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रणनाद, नगाड़ा, डंका, (अं०) बम ।

२३०७. **बंबा, बम्बा** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्रोत, सोता, नल ।

२३०८. **बंसी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बाँसुरी, मुरली, वंशी, बाजा, मछली फँसाने का औजार ।

२३०९. **बक** (संज्ञा पु०) (सं०) बगुआ, अगस्त का फूल, बगला, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बड़बड़ाहट, प्रलाप, बकवाद, बकबक ।

२३१०. **बकवास** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) बकवाद, बकबक, वाचालता, व्यर्थ की बातें ।

२३११. **बकसीस** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दान, इनाम, पारितोषिक, बख्शीश ।

२३१२. **बकुची** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा बकुचा, छोटी गठरी, सोमराजी, कृष्णफला ।

२३१३. **बकुर** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, तुरही, बिजली ।

२३१४. **बकुल** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, महादेव, मौलसरी का पेड़ या फूल ।

२३१५. **बखान** (संज्ञा पु०) (हिं०) वर्णन, कथन, प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति ।

२३१६. **बखानना** (क्रि० स०) (हिं०) वर्णन करना, प्रशंसा करना, तारीफ़ करना, स्तुति करना, गाली देना, बुरा-भला कहना ।

२३१७. **बखूबी** (क्रि० वि०) (फ़ा०) अच्छी तरह से, भली प्रकार से, पूर्णतया, पूरी तरह से ।

२३१८. **बखेड़ा** (संज्ञा पु०) (हि०) झंझट, झगड़ा, लड़ाई, दंगा, आडंबर, व्यर्थ विस्तार, कठिनता, मुश्किल।

२३१९. **बखेरना** (क्रि०) (हि०) फैलाना, छितराना, बिखराना।

२३२०. **बख्त** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) भाग्य, किस्मत, तक़दीर।

२३२१. **बख्शना** (क्रि० स०) (फ़ा०) देना, प्रदान करना, छोड़ना, त्यागना, क्षमा करना।

२३२२. **बख्शीश** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) बख्शिश, दान, इनाम, उपहार।

२३२३. **बखर** (संज्ञा पु०) (हि०) महल, प्रासाद, बड़ा मकान, घर, कोठरी, आँगन, मकान।

२३२४. **बगल** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) काँख, पार्श्व, पास की जगह, कक्ष, किनारा, समीप।

२३२५. **बगा** (संज्ञा पु०) (हि०) जामा, बागा, बगला।

२३२६. **बगाना** (क्रि० स०) (हि०) घुमाना, फिराना, टहलाना, (क्रि०) भागना।

२३२७. **बगावत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) विद्रोह, बलवा, अराजकता।

२३२८. **बघार** (संज्ञा पु०) (हि०) तड़का, छौंक, बघारने की महक।

२३२९. **बच** (संज्ञा पु०) (हि०) वचन, वाक्य, बात, (संज्ञा स्त्री०) औषधि विशेष, उग्रगंधा, षड्ग्रंथा, कोंगा।

२३३०. **बचत** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बचा हुआ भाग, लाभ, मुनाफ़ा, अवशिष्ट, अवशेष, शेष, बाक़ी।

२३३१. **बचन** (संज्ञा पु०) (हि०) वाणी, वाक्, बात, वाक्य, कथन, कौल, करार, प्रण।

२३३२. **बचाना** (क्रि०) (हि०) रक्षा करना, प्रभावित होने देना, अलग रखना, छिपाना, चुराना, दूर रखना, उद्धार करना, छिपाना, शेष रखना, शेष बचा रखना।

२३३३. **बच्चा** (संज्ञा पु०) (हि०) नवजात शिशु, लड़का, बालक, (वि०) अज्ञान, अनजान।

२३३४. **बजना** (क्रि०) (*हिं०*) शस्त्रों का चलना, अड़ना, हठ करना, ज़िद करना, प्रख्याति पाना, प्रसिद्ध होना, मारपीट होना, समय बीतना, (संज्ञा पु०) बाजा, रुपया।

२३३५. **बजरी** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) कंकड़, छोटे-छोटे पत्थर, ओला, कँगूरा, बाजरा।

२३३६. **बजा** (वि०) (*फ़ा०*) उचित, ठीक, सही, सत्य।

२३३७. **बजारी** (वि०) (*हिं०*) बाज़ारी, बाज़ारू, साधारण, सामान्य।

२३३८. **बट** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) वट, गोल, वृक्ष, बट्टा, मार्ग, रास्ता, रस्सी का बल, बाट, बटखरा।

२३३९. **बटना** (क्रि०) (*हिं०*) ऐंठना, वल देना, रस्सी बनाना, मरोड़ना, विभक्त होना (संज्ञा पु०) उबटना, रस्सी बटने का औज़ार।

२३४०. **बटमार** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) ठग, डाकू, लुटेरा, डकैत, धूर्त, कपटी, धोखेबाज़।

२३४१. **बटला** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) देग, देगचा, देगची, बटलोई, बटली।

२३४२. **बटवारा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) भाग, तकसीम, विभाग, विभाजन, बाँट, (*अँ०*) पार्टीशन।

२३४३. **बटा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) गोल, गेंद, रोड़ा, ढेला, पथिक, यात्री।

२३४४. **बटी** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) गोली, वाटिका, बगीचा, उपवन, घड़ी।

२३४५. **बटोरना** (क्रि०) (*हिं०*) समेटना, इकट्ठा करना, जमा करना, एकत्रित करना।

२३४६. **बटोहिया** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) बटोही, राही, पथिक, मुसाफ़िर, यात्री, पान्थ।

२३४७. **बट्टा** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) दलाली, दस्तूरी, टोटा, हानि, घाटा,

कलंक, दाग, कूटने का पत्थर, लोढ़ा, गोल डिब्बा, उबली हुई सुपारी, डिबिया, दर्पण, तौलने का बाट।

२३४८. बट्टू (संज्ञा पु०) (देशज) नाली, बोड़ा, लोबिया, धारीदार, धारवाला वस्तु।

२३४९. बड़ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बकवाद, प्रलाप, (संज्ञा पु०) बरगद वृक्ष।

२३५०. बड़प्पन (संज्ञा पु०) (हिं०) बड़ाई, श्रेष्ठता, महत्त्व, गौरव, प्रधानता, महानता।

२३५१. बड़वा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बड़वाग्नि, घोड़ी, दासी, अश्विनी नक्षत्र, सूर्य, पत्नी, संज्ञा।

२३५२. बड़ा (वि०) (हिं०) विस्तृत, लम्बा-चौड़ा, विशाल, श्रेष्ठ, महत्त्वपूर्ण, अधिक आयु वाला, महान्, प्रधान, मुख्य, बृहद्, (संज्ञा पु०) दाल का बड़ा।

२३५३. बड़ाई (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बड़प्पन, श्रेष्ठता, महिमा, महत्त्व, प्रशंसा, तारीफ़, उच्चता, विशालता।

२३५४. बड़ेरा (वि०) (हिं०) बड़ा, प्रधान, बृहत्, मुख्य, मुखिया।

२३५५. बढ़ाना (क्रि०) (हिं०) अधिकाना, वृद्धि करना, अधिक करना, विस्तृत करना, (सं०) फैलाना, व्यापक करना, प्रबल करना, उन्नत करना, तरक्की देना, आगे चलाना, फैलाना, सस्ता बेचना, दूकान बन्द करना, दीपक बुझाना, चुकना, समाप्त होना।

२३५६. बढ़ाव (संज्ञा पु०) (हिं०) विस्तार, फैलाव, अधिकता, ज्यादती, उन्नति, वृद्धि, तरक्की।

२३५७. बढ़ावा (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रोत्साहन, उत्साह, उत्तेजना, उकसाना।

२३५८. बढ़िया (वि०) (हिं०) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, रमणीय, महँगा।

२३५९. बताना (क्रि०) (हिं०) कहना, जताना, समझाना, हृदयंगम कराना, निर्देश करना, दिखाना, बतलाना, सिखलाना।

२३६०. **बतौर** (अव्यय) (अ०) तरह, पर, रीति से, सदृश, समान।

२३६१. **बत्ती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दीपक, चिराग़, मोमबत्ती, पलीता, वाती, दिया।

२३६२. **बद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) जाँघ की गिलटी, गोहिया, बाघी, पलटा, बदला, एवज़, पक्ष, जोखिम, (वि०) (फ़ा०) दुष्ट, खल, नीच, बुरा, ख़राब, अधम, निकृष्ट।

२३६३. **बदकारी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) कुकर्म, व्यभिचार।

२३६४. **बदगोई** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) निन्दा, चुग़ली।

२३६५. **बदज़ात** (वि०) (फ़ा०) नीच, तुच्छ, कमीना, छोटा, लुच्चा, लफंगा।

२३६६. **बदतमीज़** (वि०) (फ़ा०) अशिष्ट, असभ्य, गँवार, बेहूदा।

२३६७. **बदन** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) शरीर, देह, तन, काया।

२३६८. **बदना** (क्रि०) (हिं०) कहना, वर्णन करना, स्वीकार करना, नियत करना, ठहराना, बाज़ी लगाना, शर्त लगाना, होड़ लगाना, निश्चित करना।

२३६९. **बदनाम** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) कुख्यात, कुप्रसिद्ध।

२३७०. **बदनामी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) निन्दा, अपकीर्ति, लोकनिन्दा, अपयश, कुकीर्ति, बेइज़्ज़ती।

२३७१. **बदनुमा** (वि०) (फ़ा०) कुरूप, भद्दा, भोंड़ा।

२३७२. **बदबख़्त** (वि०) (फ़ा०) अभागा, बदकिस्मत।

२३७३. **बदमाश** (वि०) (फ़ा०) दुर्वृत्त, दुष्ट, पाजी, दुराचारी, गुंडा, कुकर्मी, शैतान।

२३७४. **बदमाशी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दुर्वृत्ति, खोटाई, दुष्टता, नीचता, व्यभिचार, लंपटता, लुच्चापन, शैतानी।

२३७५. **बदर** (संज्ञा पु०) (सं०) बेर, कपास, बिनौला (हिं०) मेघ, बादल (क्रि० वि०) (फ़ा०) बाहर (जैसे शहर बदर करना)।

२३७६. **बदल** (संज्ञा पु०) (अ०) हेर-फेर, परिवर्तन, पलटा, प्रतिकार,

एवज़, बादल ।

२३७७. **बदला** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रतिकार, लेन-देन, व्यवहार, विनिमय, झगड़ा, एवज़, परिणाम, फल, नतीजा ।

२३७८. **बदली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बादल, मेघ, तबादला, (अँ०) ड्रॉमकरेस ।

२३७९. **बदसलूकी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अशिष्टता, कुव्यवहार, बुराई, अपकार ।

२३८०. **बदहवास** (वि०) (फा०) बेहोश, अचेत, व्याकुल, उद्विग्न, भ्रान्त, शिथिल ।

२३८१. **बदा** (वि०) (हिं०) भविष्य में लिखा हुआ, भवितव्य, अदृष्ट, होनहार, भावी ।

२३८२. **बदी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कृष्णपक्ष, अन्धेरा, पाख, (फा०) अपकार, बुराई, अहित, कमीनापन ।

२३८३. **बदौलत** (क्रि० वि०) (फा०) आसरे से, द्वारा, अवलम्ब से कृपा से, कारण से, वजह से ।

२३८४. **बद्दू** (वि०) (हिं०) अपमानित, बदनाम ।

२३८५. **बद्ध** (वि०) (सं०) बँधा हुआ, बन्धन में पड़ा हुआ, निर्धारित, निर्दिष्ट, बैठा हुआ, जमा हुआ, सटा हुआ, जुड़ा हुआ ।

२३८६. **बधाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) वृद्धि, बढ़ती, मंगलोत्सव, गाना-बजाना, मंगल, चार, मुबारकबाद, उपहार ।

२३८७. **बधिक** (संज्ञा पु०) (हिं०) हत्यारा, जल्लाद, व्याध, बहेलिया ।

२३८८. **बधूटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पुत्रवधू, पुत्र की स्त्री, सुहागिन, बहू, युवती ।

२३८९. **बधूरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) अँधड़, बगूला, चक्रवात ।

२३९०. **बन** (संज्ञा पु०) (सं०) जंगल, कानन, अरण्य, समूह, जल, पानी, बाग़, बग़ीचा, निरौनी, निन्दाई, कपास, शादियाना, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बना, भेस, सजावट, सजधज ।

२३९१. **बनक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बनावट, सजावट, सज-धज, बाना, वेष, वन की उपज या पैदावार ।

२३९२. **बनज** (संज्ञा पु०) (हिं०) वाणिज्य, व्यापार, कमल, शंख, मछली।

२३९३. **बनजारा** (संज्ञा पु०) (हिं०) व्यापारी, बनिया, सौदागर, खानाबदोश व्यापारी।

२३९४. **बनड़ा** (संज्ञा पु०) (देशज) दूल्हा, वर।

२३९५. **बनत** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बनावट, रचना, मेल, अनुकूलता।

२३९६. **बनना** (क्रि०) (हिं०) रचा जाना, तैयार होना, ठीक होना, वसूल होना, प्राप्त होना, निभना, हो सकना, मरम्मत होना, पटना, सुन्दर होना, स्वाँग रचना, सिंगार करना, सजना, मूर्ख सिद्ध होना।

२३९७. **बनमाली** (संज्ञा पु०) (हिं०) कृष्ण, विष्णु, मेघ, बादल, वन की माला धारण करने वाला।

२३९८. **बनाना** (क्रि०) (हिं०) रचना, तैयार करना, ठीक करना, उपार्जित करना, वसूल करना, प्राप्त करना, प्रस्तुत करना, सजाना, सुधारना, जोड़ना, मिलाना, पकाना, उत्पन्न करना, सिरजना, जीर्णोद्धार करना, मूर्ख सिद्ध करना

२३९९. **बनाव** (संज्ञा पु०) (हिं०) बनावट, रचना, सजावट, तरकीब, युक्ति।

२४००. **बनावट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रचना, निर्माण, ढोंग, दिखावा, आडम्बर, डील-डौल, आकार, संगठन, नकल, कृत्रिमता।

२४०१. **बनिज** (संज्ञा पु०) (हिं०) व्यापार, सौदा, वाणिज्य, लेन-देन, आदान-प्रदान, धनी-पथिक (ठग)।

२४०२. **बनिता** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) स्त्री, औरत, पत्नी, महिला।

२४०३. **बनिया** (संज्ञा पु०) (हिं०) वैश्य, मोदी, व्यापारी, हटवानिया, बनी, किराना बेचने वाला।

२४०४. **बनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) वनस्थली, वनभाग, वाटिका, बाग, नववधू, स्त्री, नायिका, कपास, (संज्ञा पु०) बनिया।

२४०५. **बपु** (संज्ञा पु०) (हिं०) शरीर, देह, अवतार, रूप।

२४०६. बपुरा (वि०) (हि०) बेचारा, अशक्त, अनाथ, ग़रीब, रंक, असहाय, दीन, कंगाल।

२४०७. बम (संज्ञा पु०) (हि०) विस्फोटक पदार्थ, बम्ब।

२४०८. बयना (क्रि०) (हि०) बोना, बीज लगाना, वर्णन करना, कहना।

२४०९. बयार (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बयारि, हवा, पवन, वायु, बतास।

२४१०. बयाला (संज्ञा पु०) (हि०) झरोखा, ताख, आला।

२४११. बर (संज्ञा पु०) (हि०) बलवर्द, रेखा, लकीर, ज़िद करना, (फ़ा०) फल (अव्यय) बरन्, बल्कि, (फ़ा०) ऊपर (वि०) (फ़ा०) बड़ा-बड़ा, श्रेष्ठ, पूरा, (हि०) अच्छा, उत्तम।

२४१२. बरकत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अधिकता, लाभ, फ़ायदा, प्रसाद, कृपा, समाप्ति, अन्त, एक।

२४१३. बरकरार (वि०) (फ़ा०) स्थिर, कायम, मौजूद, उपस्थित।

२४१४. बरखा (संज्ञा स्त्री०) (हि०) वर्षा, बारिश, वृष्टि, मेंह, वर्षा-ऋतु।

२४१५. बरजना (क्रि० (हि०) रोकना, मना करना, निषेध करना, इन्कार करना, वर्जन करना।

२४१६. बरजोर (वि० (हि०) प्रबल, बलवान्, (क्रि०) बलपूर्वक, जबर-दस्ती, बहुत ज़ोर से।

२४१७. बरतन (संज्ञा पु० (हि०) धातु, मिट्टी, पात्र, भाँडा, बासन, भाण्ड, बरताव, व्यवहार।

२४१८. बरतरफ़ (वि०) (फ़ा०, अ०) किनारे, अलग, बर्खास्त।

२४१९. बरदान (संज्ञा पु०) (हि०) आशीर्वाद, प्रसाद, उपहार, इनाम।

२४२०. बरन (संज्ञा पु०) (हि०) वर्ण, रंग, अक्षर, लिखावट, (अव्यय) बल्कि, प्रत्युत।

२४२१. बरना (क्रि० स०) (हि०) ग्रहण करना, अङ्गीकार करना, बरण करना, स्वीकार करना, ब्याह करना, दान देना, मना करना,

रोकना, वलना, जलना. (संज्ञा पु०) एक वृक्ष ।

२४२२. **बरबस** (क्रि० वि०) (हिं०) बलपूर्वक, हठात्, ज़बरदस्ती, व्यर्थ, फ़ज़ूल ।

२४२३. **बरबाद** (वि०) (फ़ा०) नष्ट, विनष्ट, चौपट, सत्यानाश ।

२४२४. **बरबादी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) नाश, विनाश, ख़राबी, तबाही ।

२४२५. **बरषा** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) वर्षा, वृष्टि, बरसात, वर्षाकाल ।

२४२६. **बरसना** (क्रि०) (हिं०) मेह पड़ना, ओसाया जाना, पानी पड़ना, वृष्टि होना, बहुत अधिक गुस्सा करना ।

२४२७. **बरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) बड़ा (पीठी का बना हुआ), बरगद का पेड़, बहुँटा, टाँड़ ।

२४२८. **बराक** (संज्ञा पु०) (हिं०) शिव, युद्ध, लड़ाई, (वि०) नीच, पापी, अधम, शोचनीय, वेचारा, बापुरा ।

२४२९. **बराना** (क्रि०) (हिं०) बचाना, रक्षा करना, हिफ़ाज़त करना, सिंचाई करना, पृथक् रहना, अलग रहना, परहेज़ करना, बचा जाना, चुनना, छाँटना, बालना, जलाना ।

२४३०. **बराबर** (वि०) (फ़ा०) तुल्य, एक-सा, समतल, समान पद या मर्यादा वाला, ठीक, समान, (क्रि०वि०) (हिं०) साथ-साथ, लगातार, निरंतर, एक साथ, एक पंक्ति में, सर्वदा, हमेशा, सदा, साथ ।

२४३१. **बराबरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) समता, समानता, सदृश्य, तुलना, मुकाबला ।

२४३२. **बरामद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गंगबरार, ज़मीन, आमदनी, निकासी, (वि०) प्राप्त ।

२४३३. **बरियाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ताकतवरी, बलप्रयोग, ज़बरदस्ती, ज़ोरावरी (क्रि० वि०) हठात्, बलात् ।

२४३४. **बरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गोल टिकिया, बटी, कली, बड़ी, (फ़ा०) (वि०) छूटा हुआ, मुक्त ।

२४३५. **बरुआ** (संज्ञा पु०) (हिं०) वटु, ब्रह्मचारी, उपनयन, ब्राह्मणकुमार ।

२४३६. बरे (क्रि० वि०) (हिं०) ज़ोर से, बलपूर्वक, ज़बरदस्ती, ऊँचे स्वर से (फ़ा०) बदले में, वास्ते, निमित्त ।

२४३७. बरोक (संज्ञा पु०) (हिं०) फलदान, सेना, फ़ौज, (क्रि० वि०) (हिं०) बलपूर्वक, ज़बरदस्ती ।

२४३८. बर्क (संज्ञा स्त्री०) (अ०) बिजली, विद्युत, (वि०) तेज़, चालाक, पूर्णतया अभ्यस्त ।

२४३९. बर्बर (संज्ञा पु०) (सं०) घुँघराले बाल, असभ्य आदमी, अत्याचारी व्यक्ति, अस्त्रों की झनकार, एक मछली, एक कीड़ा, एक पौधा, (वि०) जंगली, असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड, अत्याचारी ।

२४४०. बर्राक (वि०) (अ०) तेज़, तीव्र, चतुर, चालाक, चमकीला, जगमगाता हुआ, बहुत उजला, सफ़ेद, पूर्णतया अभ्यस्त ।

२४४१. बल (संज्ञा पु०) (सं०) शक्ति, सामर्थ्य, ताकत, ज़ोर, बूता, सँभार, आश्रय, सहारा, भरोसा, सेना, फ़ौज, पार्श्व, पहलू, बलदेव, बलराम, वरुण नामक वृक्ष, (संज्ञा पु०) (हिं०) झुकाव, सिकुड़न, ऐंठन, मरोड़, फेरा, लपेट, चक्करदार घुमाव, लचक, गुलझट, शिकन, कसर, कमी, अन्तर, टेढ़ापन, कज, खम ।

२४४२. बलज (संज्ञा पु०) (सं०) नगर का द्वार, द्वार, अन्न का ढेर, शस्य, फ़सल, खेत, युद्ध ।

२४४३. बलभद्र (संज्ञा पु०) (सं०) बलराम, बलदेव, बलदाऊ, बलवीर, लोध का पेड़, नीलगाय, जंगली गाय ।

२४४४. बलवा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) दंगा, हुल्लड़, खलबली, विद्रोह, बग़ावत ।

२४४५. बलवान् (वि०) (सं०) बलिष्ठ, ताकतवर, शक्तिशाली, सामर्थ्यवान्, दृढ़, मज़बूत, बलवन्त, समर्थ, सशक्त ।

२४४६. बला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, लक्ष्मी (अ०) आपत्ति, विपत्ति, आफ़त, दुःख, कष्ट, भूत, प्रेत, रोग, व्याधि ।

२४४७. बलाक (संज्ञा पु०) (सं०) बक, बगला ।

२४४८. बलात्कार (संज्ञा पु०) (सं०) सतीत्व-अपहरण, ज़बरदस्ती,

अन्याय, अत्याचार ।

२४४९. **बलाय** (संज्ञा पु०) (हि०) विपत्ति, आपत्ति, बला, दुःख, कष्ट, व्याधि ।

२४५०. **बलि** (संज्ञा पु०) (सं०) मालगुजारी, राज-कर, उपहार, भेंट, भूतयज्ञ, अक्ष्य अन्न, खाने की वस्तु, चढ़ावा, नैवेद्य, भोग, न्योछावर ।

२४५१. **बलिदान** (संज्ञा पु०) (सं०) देवभोग, वनित, वलिकर्म, शहीद होना, कुर्बान होना ।

२४५२. **बलिष्ठ** (वि०) (सं०) अतिशय बलवान्, अधिक बलवान्, बलशाली, समर्थ, (संज्ञा पु०) (सं०) उष्ट्र, ऊँट ।

२४५३. **बलिहारी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) निछावर, कुर्बान ।

२४५४. **बली** (वि०) (सं०) बलवान्, ताकतवर ।

२४५५. **बल्कि** (अव्यय) (फ़ा०) वरन्, अन्यथा, प्रस्तुत, अच्छा यह कि, बेहतर है।

२४५६. **बल्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अतिवला, अश्वगंधा, प्रसारिणी, चंगोनी, शिम्रौडी ।

२४५७. **बल्लम** (संज्ञा पु०) (हिं०) सोटा, डंडा, छड़, बरछा, भाला, नेजा ।

२४५८. **बल्ला** (संज्ञा पु०) (हिं०) लम्बा शहतीर, डाँड़, बल्ली, (अँ०) बैट ।

२४५९. **बवंडर** (संज्ञा पु०) (हि०) चक्रवात, बगूला, प्रचण्डवायु, आँधी, तूफ़ान, अन्धड़, झगड़ा, उपद्रव ।

२४६०. **बवना** (क्रि० स०) (हिं०) छितराना, बिखराना ।

२४६१. **बस** (वि०) (फ़ा०) पर्याप्त, भरपूर, बहुत, काफ़ी (अव्यय) (फ़ा०) पर्याप्त, काफ़ी, यथेष्ट, सिर्फ़, केवल, (संज्ञा पु०) काबू, अधिकार, (अँ०) यात्री बस ।

२४६२. **बसना** (क्रि० अ०) (हिं०) स्थिर होना, रहना, आबाद होना, आकर रहना, टिकना, ठहरना, डेरा करना, वास करना, सुगन्धपूर्ण होना,

संज्ञा पु०) वेठन, थैली, बस्तन, बसना ।

२४६३. **बसाना** (क्रि० स०) (हिं०) जनपूर्ण करना, आबाद करना, टिकाना, ठहराना, बैठाना, रखना, बस्ती बसाना, (क्रि० अ०) महकना, दुर्गन्ध देना ।

२४६४. **बसेरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) खोंता, घोंसला, निवास ।

२४६५. **बस्ता** (संज्ञा पु०) (फा०) वेठन, बसना, थैला ।

२४६६. **बहकना** (क्रि० अ०) (हिं०) भटकना, मार्ग-भ्रष्ट होना, चूकना, विचलित होना, धोखा खाना, भूलना, लक्ष्यच्युत होना, उद्देश्य-भ्रष्ट होना ।

२४६७. **बहकाना** (क्रि० स०) (हिं०) भुलावा देना, बहलाना, भुलाना, भ्रमित करना, धोखा देना ।

२४६८. **बहना** (क्रि० अ०) (हिं०) प्रवाहित होना, इधर-उधर हो जाना, कहीं चला जाना, फिसल जाना, आवारा होना, कुमार्गी होना, गर्भपात होना, (जानवरों के लिए) जल्दी अंडे देना, वहन करना, धारण करना, निर्वाह करना, निबाह करना, उठना, चलना, (सम्पत्ति या धन) नष्ट होना ।

२४६९. **बहराना** (क्रि० स०) (हिं०) बहलाना, बहकाना, फुसलाना ।

२४७०. **बहलाना** (क्रि० स०) (हिं०) चित्त प्रसन्न करना, बहकाना, भुलावा देना, मनोरंजन करना, मन-बहलाव करना, भुलाना, फिराना, घुमाना ।

२४७१. **बहस** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) वाद, विवाद, दलील, तर्क, युक्ति, झगड़ा, होड़, बाजी ।

२४७२. **बहादुर** (वि०) (फा०) शूरवीर, पराक्रमी, उत्साही ।

२४७३. **बहाना** (क्रि० स०) (हिं०) प्रवाहित करना, गँवाना, व्यर्थ व्यय करना, सस्ता बेचना, डालना, फेंकना, ढालना (संज्ञा पु०) (फा०) झूठी बात, मिस, हीला, तुच्छ, निमित्त ।

२४७४. **बहार** (संज्ञा पु०) (फा०) वसन्त ऋतु, यौवन, जवानी, शोभा, सौन्दर्य, रमणीयता, सुहावनापन, विकास, प्रफुल्लता, फूल, कौतुक, तमाशा ।

२४७५. बहाल (वि०) (फ़ा०) पूर्ववत् स्थित, ज्यों का त्यों, भला-चंगा, स्वस्थ, प्रसन्न, खुश ।

२४७६. बहिन (संज्ञा पु०) (हि०) बहन, भगिनी सोदरा ।

२४७७. बहिरंग (वि०) (सं०) बाहरी, बाह्य, बाहरवाला ।

२४७८. बहिष्कार (संज्ञा पु०) (सं०) बाहर करना, निकालना, हटाना, दूर करना, अलग करना, त्यागना, छोड़ना ।

२४७९. बहु (वि०) (सं०) विपुल, प्रचुर, बहुत से, अनेक, सम्पन्न, बहुतायत, अधिक, बहुत ।

२४८०. बहुक (संज्ञा पु०) (सं०) केकड़ा, आक, मदार, पपीहा, चातक ।

२४८१. बहुत (वि०) (हिं०) अधिक, अनेक, यथेष्ट, काफ़ी, (क्रि० वि०) खूब, ज़्यादा ।

२४८२. बहुताई (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बहुतायत, अधिकता, आधिक्य, अधिकाई, समाई, सरसाई ।

२४८३. बहुधा (क्रि० वि०) (सं०) प्रायः, अकसर ।

२४८४. बहुपत्रिका (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भूम्यामलकी, महाशतावरी, मेथी, वच ।

२४८५. बहुपत्री (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तुलसी का पौधा, जतुका, भूम्यामलकी, लिगिना, वृहती, दूबिया घास ।

२४८६. बहुफला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भूम्यामलकी, खीरा, क्षविका, छोटा करेला, जंगली करेला, काकामची ।

२४८७. बहुल (वि०) (सं०) अधिक, बहुत, ज़्यादा, प्रचुर, (संज्ञा पु०) आकाश, गगन, सफ़ेद मिर्च, कृष्ण वर्ण, कृष्ण पक्ष, काला रंग, अग्नि, महादेव ।

२४८८. बहुलता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बहुतायत, अधिकता, बाहुल्य, फ़ालतूपन, व्यर्थता ।

२४८९. बहुला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गाय, नील, इलायची, कार्त्तिका, नक्षत्र ।

२४९०. **बहू** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) वधू, स्त्री, पत्नी, दुलहिन, पतोहू, पुत्र-वधू।

२४९१. **बहेंगवा** (संज्ञा पु०) (हि०) भुजंगा, करचोटिया, पक्षी, (वि०) घुमक्कड़, आवारा, बहेतू।

२४९२. **बाँ** (संज्ञा पु०) (हि०) बार, दफ़ा, बेर, गाय का शब्द।

२४९३. **बाँक** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बाँह का कंगन, आभूषण, पाजेब, कमान, धनुष, छुरी, खंजर, टेढ़ापन, लोहे का शिकंजा, गन्ना छीलने का औज़ार (वि०) (हि०) बाँका, तिरछा, टेढ़ा, घुमावदार, बहादुर, वक्र।

२४९४. **बाँकपन** (संज्ञा पु०) (हि०) टेढ़ापन, तिरछापन, अलबेलापन, बनावट, सजावट, छवि, शोभा।

२४९५. **बाँका** (वि०) (हि०) टेढ़ा, तिरछा, अत्यन्त साहसी, वीर, बहादुर, लुच्चा, छैला, अकड़ैत, (संज्ञा पु०) एक कीड़ा।

२४९६. **बाँग** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) शब्द, आवाज़, पुकार, चिल्लाहट, अज़ान, मुर्गे की आवाज़।

२४९७. **बाँगड़ू** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) एक भाषा, (वि०) (हि०) मूर्ख, बेवकूफ़, उजड्ड, जंगली।

२४९८. **बाँचना** (क्रि० स०) (हि०) पढ़ना, पाठ करना, बाकी रहना, बच रहना, बचाना, छोड़ देना।

२४९९. **बाँट** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) विभाजन, भाग, हिस्सा, अंश।

२५००. **बाँटना** (क्रि०) (हि०) हिस्सा लगाना, विभाग करना, वितरण करना, भाग करना।

२५०१. **बाँदी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) दासी, लौंडी, सेविका, परिचारिका।

२५०२. **बाँध** (संज्ञा पु०) (हि०) पुश्ता, बन्द, मेंड़, आड़, बन्ध, (अँ०) डैम।

२५०३. **बाँधना** (क्रि० स०) (हि०) गाँठ लगाना, कैद करना, बन्द-करना, पाबंद करना, प्रेमपाश में बाँधना, मकान बनाना, योजना बनाना, मन

में बैठाना, स्थिर करना।

२५०४. **बांधव, बान्धव** (संज्ञा पु०) (सं०) भाई, बंधु, नातेदार, मित्र, दोस्त।

२५०५. **बाँस** (संज्ञा पु०) (हि०) वंश वृक्ष, एक पेड़, रीढ़ (पीठ की हड्डी)।

२५०६. **बाँह** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) भुजा, हाथ, शक्ति, बल, सहायक, मददगार, सहारा, मदद, भरोसा।

२५०७. **बाच** (वि०) (हि०) वर्णनीय, अच्छा, सुन्दर, बढ़िया।

२५०८. **बाचना** (क्रि० अ०) (हि०) बचना, सुरक्षित रहना, (क्रि० स०) बचाना, सुरक्षित रखना, पढ़ना, बाँचना।

२५०९. **बाज** (संज्ञा पु०) (अ०) एक शिकारी पक्षी, एक बगला, (वि०) (फ़ा०) वंचित, रहित, (फ़ा०) (वि०) बगैर, बिना (संज्ञा पु०) (हि०) घोड़ा, बाजा।

२५१०. **बाजना** (क्रि० अ०) बाजा बजना, लड़ना, भिड़ना, कहलाना, पुकारा जाना, प्रसिद्ध होना, लगना, आघात पहुँचना, जा पहुँचाना, (वि०) (हि०) बजने वाला, जो बजता हो।

२५११. **बाज़ार** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) पैंठ, हाट, मंडी, (अं०) मार्केट।

२५१२. **बाज़ारी** (वि०) (फ़ा०) बाज़ार-सम्बन्धी, बाज़ार का, मामूली, साधारण, मर्यादा रहित, अशिष्ट, अनिश्चित।

२५१३. **बाजि** (संज्ञा पु०) (हि०) घोड़ा, बाण, पक्षी, अड़ूसा, (वि०) (हि०) चलने वाला।

२५१४. **बाज़ी** (संज्ञा स्त्री) (फ़ा०) शर्त, बदान, दाँव, होड़।

२५१५. **बाज़ु** (संज्ञा पु०) (अव्यय) बिना, बग़ैर, अतिरिक्त, सिवा।

२५१६. **बाज़ू** (संज्ञा पु०) (हि०) भुजा, बाहु, बाँह, बाजूबन्द, भुजबन्द (गहना), डैना (पक्षी)।

२५१७. **बाट** (संज्ञा पु०) (हि०) बटखरा, बट्टा, राह, रास्ता, पन्थ, डगर।

२५१८. **बाढ़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बढ़ाव, अधिकता, वृद्धि, जलप्लाव, सैलाब, सान, (छुरी की धार)।

२५१९. **बाण** (संज्ञा पु०) (सं०) तीर, शर, सायक, धन, पाँच की संख्या, स्तन, नकुल, निशाना, लक्ष्य, नीली कटसरैया, आग, स्वर्ग, मोक्ष।

२५२०. **बात** (संज्ञा स्त्री०) वाक्य, कथन, वचन, वाणी, चर्चा, ज़िक्र, प्रसङ्ग, प्रचलित प्रसङ्ग, अफवाह, किंवदन्ति, प्रवाद, मामला, परिस्थिति, संदेश, संदेसा, कथोपकथन, वार्तालाप, बनावटी कथन, मिस, बहाना, प्रतिज्ञा, कौल, साख, प्रतीति, विश्वास, मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्ज़त, उपदेश, नसीहत, रहस्य, भेद, अभिप्राय, आशय, तात्पर्य, विशेष गुण, ख़ूबी, मर्म, गूढ़ अर्थ, मसला, प्रश्न, सवाल, समस्या, इच्छा, कामना, चाह, काम, कार्य, आचरण, व्यवहार, बर्ताव, सम्बन्ध, तअल्लुक, स्वभाव, प्रकृति, लक्षण, वस्तु, पदार्थ, दाम, मोल, उचित पथ, उपाय, कर्तव्य।

२५२१. **बाद** (संज्ञा पु०) (हिं०) तर्क, बहस, विवाद, झगड़ा, झकझक, नुक्ताचीनी, शर्त, बाज़ी, (अव्यय) (अ०) उपरान्त, पीछा, (वि०) छोड़ा हुआ, दस्तूरी, अतिरिक्त, सिवाय, (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बात, हवा, (अव्यय) (हिं०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बिना मतलब।

२५२२. **बादर** (संज्ञा पु०) (हिं०) बादल, मेघ, (वि०) प्रसन्न, खुश, (संज्ञा पु०) (सं०) मोटा खद्दड़।

२५२३. **बादरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कपास का पौधा, बदरी या बेर का वृक्ष, जल, पानी, रेशम, दक्षिणावर्त शंख।

२५२४. **बादल** (संज्ञा पु०) (हिं०) घन, मेघ, घटा, बदल, वारिद, जलधर, जलद, जलप्लावन, जलवाह, खचर, नभोगज, पयोधर, पयोज, पाथोधर, अम्बर, धराधर, अम्बुद, पयद, गगनचर, जगजीवन, धाराधर, धारावर, धूमज, अम्बुधर।

२५२५. **बादशाह** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बड़ा राजा, शासक, सर्वश्रेष्ठ पुरुष, सरदार, शतरंज का मोहरा, ताश का पत्ता।

२५२६. **बादशाही** (संज्ञा स्त्री०)(फ़ा०) राज्याधिकार, शासन, हुकूमत,

मनमाना व्यवहार, (वि०) बादशाह के योग्य ।

२५२७. **बादामी** (वि०) (फा०) बादाम के रंग का या बादाम के आकार का, अण्डाकार, (संज्ञा पु०) एक छोटी चिड़िया, छोटी डिबिया, बादामी घोड़ा ।

२५२८. **बादी** (वि०) (फा०) वायु विकार-सम्बन्धी (संज्ञा स्त्री०) वात-विकार (संज्ञा पु०) (हिं०) मुद्दई, प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु ।

२५२९. **बाध** (संज्ञा पु०) (सं०) बाधा, अड़चन, रुकावट, रोक, कष्ट, पीड़ा, कठिनता, मुश्किल, अर्थ की असम्मति ।

२५३०. **बाधक** (संज्ञा पु०) (सं०) रोकने वाला, कष्टदायक, हानि-कारक, दुःखदायी, प्रतिबन्धक, विघ्नकारक, प्रसूति-सम्बन्धी पीड़ा ।

२५३१. **बाधा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अड़चन, विघ्न, रुकावट, संकट, दुःख, कष्ट, पीड़ा, भय, डर, आशंका, क्लेश ।

२५३२. **बान** (संज्ञा पु०) (हिं०) बाण, शर, तीर, एक तरह की आ-तिशबाजी, रंग, आब, कान्ति, मूँज की रस्सी, (संज्ञा स्त्री०) टेव, अभ्यास, आदत, सजधज, बनाव-सिंगार ।

२५३३. **बानक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) परिस्थिति, संयोग, वेष, भेस, सजधज ।

२५३४. **बाना** (संज्ञा पु०) (हिं०) पहनावा, वस्त्र, पोशाक, वेश-विन्यास, भेस, रीति, स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार, चाल, बुनावट, बुनन, बुनाई, (क्रि०) खुलना, खोलना ।

२५३५. **बानी** (संज्ञा स्त्री०) वाणी, बोली, वचन, मनौती, मन्नत, सरस्वती, महात्मा का उपदेश, रंग, वर्ण, आभा, दमक, कपसा (मिट्टी) ।

२५३६. **बापुरा** (वि०) (हिं०) बेचारा, दीन-हीन, तुच्छ, दुखिया, बापड़ा, असमर्थ ।

२५३७. **बाब** (संज्ञा पु०) (अ०) परिच्छेद, अध्याय, मुकद्दमा, प्रकार, तरह, विषय, अभिप्राय, आशय, मतलब ।

२५३८. **बाबा** (संज्ञा पु०) (तुर्की) पिता, पिता का पिता, दादा, बूढ़ा, साधु, संन्यासी।

२५३९. **बाम** (बाम) (संज्ञा स्त्री०) (हि०) गहना, (संज्ञा पु०) (वि०) बायाँ (फ़ा०) अटारी, कोठा, छत, कुम्मा (संज्ञा पु०) (हि०) महादेव, कामदेव।

२५४०. **बायँ** (वि०) (हि०) बायाँ, खाली।

२५४१. **बायन** (संज्ञा पु०) (हि०) उपहार, पेशगी, बयाना।

२५४२. **बायाँ** (वि०) (हि०) विपरीत, उलटा, हानि करने वाला, विरोधी, शत्रु, वाम, वामाङ्ग, बाईं ओर।

२५४३. **बार** (संज्ञा पु०) (हि०) द्वार, दरवाज़ा, आश्रम, स्थान, ठिकाना, (संज्ञा स्त्री०) काल, समय, विलम्ब, देर, वेर, अतिकाल, दफ़ा, मरतबा, दिन, वेला, अवसर, देरी (संज्ञा पु०) घेरा, बाड़, किनारा, छोर, धार, बाढ़।

२५४४. **बारगह** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) ड्योढ़ी, खेमा, डेरा, प्रताप, ऐश्वर्य।

२५४५. **बारजा** (संज्ञा पु०) (हि०) बरामदा, कोठा, अटारी, छोटा दालान।

२५४६. **बारदाना** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) टूटा-फूटा सामान, रसद।

२५४७. **बारम्बार** (क्रि० वि०) (हि०) बारबार, लगातार, पुनः-पुनः, प्रतिक्षण, प्रतिपल।

२५४८. **बारना** (क्रि०) (हि०) मना करना, बिलगाना, अलग-अलग करना, निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना, बालना, जलाना, (संज्ञा पु०) एक वृक्ष।

२५४९. **बारा** (वि०) (हि०) बाल्यावस्था वाला, (संज्ञा पु०) (हि०) बालक, लड़का।

२५५०. **बारिश** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) वर्षा, वृष्टि, वर्षाऋतु, बरसात, मेंह का बरसना।

२५५१. **बारी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) किनारा, तट, हाशिया, छोर, बाढ़, ओंठ, धार, बाड़, घर, मकान, खिड़की, झरोखा, बन्दरगाह, मौका, पारी, छोटी लड़की, बालिका, युवती, जल, पानी, फुलवारी, खेत, क्यारी, बाड़ी, बाग, बगीचा ।

२५५२. **बारीक** (वि०) (फ़ा०) महीन, पतला, बहुत छोटा, सूक्ष्म, गम्भीर, गूढ़ ।

२५५३. **बारीकी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) पतलापन, महीनपन, गुण, विशेषता, खूबी ।

२५५४. **बाल** (संज्ञा पु०) (सं०) बालक, बच्चा, लड़का, नासमझ, अनजान, पशु का बच्चा, केश, शिरोरुह ।

२५५५. **बालक** (संज्ञा पु०) (सं०) लड़का, पुत्र, छोटा बच्चा, शिशु, अबोध व्यक्ति, अनजान आदमी, हाथी का बच्चा, घोड़े का बच्चा, बछेड़ा, बाल, केश, सुगन्ध वाला, कंगन, अँगूठा, हाथी की पूँछ, छोकरा, छोटा ।

२५५६. **बालत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) बालकता, बचपन, लड़कपन, बाल्य, लड़काई, बालपन ।

२५५७. **बालम** (संज्ञा पु०) (हिं०) पति, स्वामी, प्रणयी, प्रेमी, प्रियतम, प्यारा ।

२५५८. **बाला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) षोडशी स्त्री, पत्नी, भार्या, स्त्री, औरत, पुत्री, कन्या, चीनी, ककड़ी, छोटी इलायची, नीली कटसरैया, नारियल, घीग्वार, घृत कुमारी, हलदी, बेले का पौधा, खैर का पेड़ ।

२५५९. **बालाई** (वि०) (फ़ा०) ऊपरी, ऊपर का ।

२५६०. **बालिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटी लड़की, कन्या, पुत्री, बेटी, छोटी इलायची, (कान में पहनने की) बाली, बालू ।

२५६१. **बालिश** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तकिया, (संज्ञा पु०) बालक, शिशु, मूर्ख या अबोध व्यक्ति, (वि०) अबोध, अज्ञानी, नासमझ, बेवकूफ़, अज्ञ ।

२५६२. **बालुका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रेत, बालू, कपूर, ककड़ी, कद्दूर ।

२५६३. बालू (संज्ञा पु०) (हिं०) रेत, रेणुका, बालुका, रेती रेणु, सिकता।

२५६४. बालेय (संज्ञा पु०) गदहा, खर, चावल, (वि०) कोमल, मुलायम, बलि देने योग्य।

२५६५. बाव (संज्ञा पु०) (हिं०) वायु, हवा, बाई, अपान वायु, पाद, बयार।

२५६६. बावर (वि०) (हिं०) पागल, बावला, मूर्ख, बेवकूफ (संज्ञा पु०) (फ़ा०) यकीन, विश्वास।

२५६७. बावला (वि०) (हिं०) पागल, मूर्ख, विक्षिप्त, उन्मुक्त, सिड़ी।

२५६८. बाशिदा, बाशिन्दा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) निवासी, रहने वाला।

२५६९. बाष्कल (संज्ञा पु०) (सं०) योद्धा, वीर।

२५७०. बाष्प (संज्ञा पु०) (सं०) आँसू, भाप, लोहा, एक जड़ी।

२५७१. बास (संज्ञा पु०) (हिं०) निवास, रहने का स्थान, गन्ध, महक, वस्त्र, कपड़ा, पोशाक, छोटा वस्त्र, (संज्ञा स्त्री०) वासना, इच्छा, अग्नि, आग, सुगन्ध।

२५७२. बासना (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) इच्छा, चाह, वांछा, गन्ध, महक, अभिलाषा, मनोरथ (क्रि०) सुगन्धित करना, महकाना, बास देना।

२५७३. बासर (संज्ञा पु०) (हिं०) दिन, सवेरा, प्रातःकाल, सुबह।

२५७४. बासा (संज्ञा पु०) (देशज) अड़ूसा, भोजनालय, रहने का स्थान, डेरा, (संज्ञा पु०) (हिं०) एक घास।

२५७५. बारना (क्रि०) (हिं०) ढोना, लादना, चलाना, हाँकना, बहाना, प्रवाहित करना, खेत जोतना, धारण करना, कंघी करना, अस्त्र चलाना, फेंकना, छोड़ना, त्यागना।

२५७६. बाहर (क्रि० वि०) (हिं०) बग़ैर, सिवा, (अव्यय) अन्यत्र, दूसरा स्थान, परदेश, अन्य देश।

२५७७. बाहरी (वि०) (हिं०) बाहर का, बाहर वाला, पराया, ग़ैर, ऊपरी।

२५७८. **बाहुबल** (संज्ञा पु०) (सं०) पराक्रम, बहादुरी, शारीरिक शक्ति।

२५७९. **बाहुल** (संज्ञा पु०) (सं०) कार्त्तिक का महीना, अग्नि, आग, हाथ का दस्ताना, (जो युद्ध के समय काम आता है)।

२५८०. **बाहुल्य** (संज्ञा पु०) (सं०) बहुतायत, अधिकता, व्यर्थता, फ़ालतूपन, बहुलता, आधिक्य, अधिकाई।

२५८१. **बाह्य** (वि०) (सं०) बाहिर का, बाहिरी, (संज्ञा पु०) भार ढोने वाला पशु, सवारी।

२५८२. **बिग** (संज्ञा पु०) (हिं०) ताना, व्यंग्य, काकोक्ति, आक्षेप-पूर्ण वाक्य (अं०) बड़ा।

२५८३. **बिंदी, बिन्दी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शून्य, बिन्दु, सिफ़र, गोल टीका, चिह्न, नुक़ता, दाग़।

२५८४. **बिंब, बिम्ब** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रतिबिंब, अक्स, छाया, कमंडलु, प्रतिमूर्ति, कुन्दरू फल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल, गिरगिट, सूर्य, आभास, झलक।

२५८५. **बिंबक, बिम्बक** (संज्ञा पु०) (सं०) साँचा, कुन्दरू, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल।

२५८६. **बिकरार** (वि०) (हिं०) व्याकुल, विकल, बेचैन, कठिन, भयानक, भयंकर।

२५८७. **बिकराल** (वि०) (हिं०) विकराल, डरावना, भयंकर, भयानक, विकट, कठोर।

२५८८. **बिकल** (वि०) (हिं०) व्याकुल, घबराया हुआ, उद्विग्न, बेचैन।

२५८९. **बिकसना** (क्रि० अ०) (हिं०) विकसित होना, खिलना, फूलना, प्रसन्न होना, स्फुटित होना।

२५९०. **बिकार** (संज्ञा पु०) (हिं०) विकृति, विक्रिया रोग, पीड़ा, दुःख, दोष, ऐब, पापकर्म, कुवासना, (वि०) विकराल, विकट, भीषण।

२५९१. **बिकारी** (वि०) (हि०) हानिकारक, अहितकर, विकृत ।

२५९२. **बिगड़ना** (क्रि०) (हि०) विकार होना, खराब होना, भ्रष्ट होना, क्रुद्ध होना, अप्रसन्न होना, विरोध करना, व्यर्थ खर्च होना, अनबनाव होना, विरोधी होना, काम न होना ।

२५९३. **बिगड़ैल** (वि०) (हि०) हठी, ज़िद्दी, क्रोधी स्वभाव का, बुरे चालचलन वाला ।

२५९४. **बिगाड़** (संज्ञा पु०) (हि०) दोष, ख़राबी, मनमुटाव, वैमनस्य, झगड़ा, लड़ाई, विरोध, तोड़, भङ्ग, हानि, क्षति ।

२५९५. **बिगाड़ना** (क्रि० स०) (हि०) नष्ट करना, कुमार्ग में लगाना, भ्रष्ट होना, सतीत्व-हरण करना, स्वभाव खराब करना, व्यर्थ खर्च करना, बहकाना, विरोध करना ।

२५९६. **बिगाना** (वि०) (फ़ा०) पराया, ग़ैर, अपरिचित, अनजान, अजनबी ।

२५९७. **बिगूचना** (क्रि०) (हि०) असमंजस में पड़ना, पकड़ा जाना, दबाया जाना, दबोचना, धर दबाना ।

२५९८. **बिगोना** (क्रि०) (हि०) नष्ट करना, बिगाड़ना, बहकाना, दुराना, छिपाना, तंग करना, दिक करना, बिताना, भ्रम में डालना ।

२५९९. **बिग्रह** (संज्ञा पु०) (हि०) विग्रह, शरीर, देह, लड़ाई, झगड़ा, कलह, विभाग ।

२६००. **बिघरना** (क्रि०) (हि०) विघटित करना, विनष्ट करना, बिगाड़ना, तोड़ना, फोड़ना ।

२६०१. **बिचकना** (क्रि०) (हि०) मुँह टेढ़ा होना, भड़कना, चौंकना, सतर्क होना ।

२६०२. **बिचलना** (क्रि०) (हि०) विचलित होना, मुकरना, इन्कार करना, साहस छोड़ना, हिम्मत हारना, फिसलना, बिछलना, खसकना, स्खलित होना ।

२६०३. **बिचहुत** (संज्ञा पु०) (हि०) अन्तर, फ़र्क, दुविधा, सन्देह ।

२६०४. **बिचारना** (क्रि०) (हिं०) सोचना, विचारना, पूछना, प्रश्न करना, गौर करना, ध्यान करना, निर्णय करना, समझना, बूझना, जाँचना।

२६०५. **बिचेत** (वि०) (हिं०) मूच्छित, बेहोश, अचेत, बदहवास।

२६०६. **बिछोह** (संज्ञा पु०) (हिं०) विरह, वियोग, जुदाई।

२६०७. **बिजन** (वि०) (हिं०) एकान्त, एकाकी, अकेला, (संज्ञा पु०) (हिं०) सुनसान या निर्जन स्थान, पंखा।

२६०८. **बिजली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) विद्युत्, चपला, चंचला, तड़ित्, दामिनी, सौदामिनी, घन-वाम, नीलांजना, गो, क्षणकप्रभा, आकालकी, अनिर्मी, अशनि, क्षणिका, घनज्वाला, चटुला, चला, तन्वित, तमोमणि, रोहिणी, ह्रादि, अधीरा, चाँकी, दृग्भू, सुत्रा, सूर्यपुत्री, स्तनयित्नु, छनदा, आर्द्रानि, छनछवि, जलवालिका, अकालकुन, अचिर प्रभा, अरुणा, अद्रिछिद्र।

२६०९. **बिजायठ** (संज्ञा पु०) (हिं०) बाजूबन्द, अंगद, भुज, बाजू।

२६१०. **बिजोरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) बिजौरा, नींबू का वृक्ष, (वि०) (हिं०) कमजोर, अशक्त, निर्बल।

२६११. **बिट** (संज्ञा पु०) (हिं०) नायक-सखा (नाटक में), वैश्य, विष्ठा, कीट, नीच या खल व्यक्ति।

२६१२. **बिडंबना** (क्रि०) (हिं०) नकल, उपहास, हँसी, निन्दा, बदनामी।

२६१३. **बिडर** (वि०) (हिं०) बिखरा, छितराया, अलग-अलग, निर्भय, निडर, धृष्ट, ढीठ।

२६१४. **बिड़ाल** (संज्ञा पु०) बिलाव, बिल्ली, आँख का डेला, एक राक्षस।

२६१५. **बित** (संज्ञा पु०) (हिं०) शक्ति, सामर्थ्य, कद, आकार, धन, द्रव्य।

२६१६. **बिताना** (क्रि०) (हिं०) गँवाना, काटना, गुजारना, व्यतीत करना।

२६१७. **बिदकना** (क्रि०) (हिं०) फटना, चिरना, घायल होना,

उलझी होना, अटकना, झिझकना ।

२६१८. बिहन (संज्ञा पु०) (हिं०) अनाजदाना, दाना, बीज, बोना, बोज, नाज, नाज बोना ।

२६१९. बिदा (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रस्थान, रवानगी, गमन, गौना, विसर्जन, जाने की आज्ञा ।

२६२०. बिगड़ (संज्ञा स्त्री०) (अ०) खराबी, बुराई, कष्ट, तकलीफ़, विपत्ति, झगड़ा, अत्याचार, जुल्म, दुर्दशा, दुर्गति ।

२६२१. बिध (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रकार, तरह, भाँति, विधि, ब्रह्मा, व्यवहार, रीति, आय-व्यय का लेखा ।

२६२२. बिधना (संज्ञा पु०) (हिं०) ब्रह्मा, करतार, विधाता, प्रजापति, (क्रि०) (हिं०) छिदना, छेदना ।

२६२३. बिनती (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) विनय, चिरौरी, प्रार्थना, निवेदन, अनुनय, अनुरोध, अभ्यर्थना, इष्ट-वंदन, मनौती, अर्ज़ ।

२६२४. बिनय (अव्यय) (हिं०) छोड़कर, रहित, अतिरिक्त, बिन, बग़ैर ।

२६२५. बिनानी (वि०) (हिं०) ज्ञानवान्, ज्ञानी, अनजान, (संज्ञा स्त्री०) विचार, विवेचन, गौर ।

२६२६. बिपच्छ (संज्ञा पु०) (हिं०) शत्रु, बैरी, (वि०) प्रतिकूल, विमुख, नाराज़ ।

२६२७. बिनय (अव्यय) (हिं०) छोड़कर, रहित, अतिरिक्त, बिन, बग़ैर ।

२६२८. बिमन (वि०) (हिं०) दुःखी, उदास, सुस्त, चिन्तित ।

२६२९. बिरथा (वि०) (हिं०) व्यर्थ, फ़ज़ूल, निरर्थक ।

२६३०. बिरला (वि०) (हिं०) कोई-कोई, इक्का-दुक्का ।

२६३१. बिरादरी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) भाईचारा, बन्धुत्व ।

२६३२. बिरियाँ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अवसर, बारी, पाला, समय, बेला, वक़्त, बार, दफ़ा ।

२६३३. **बिरोग** (संज्ञा पु०) (हिं०) वियोग बिछोह, चिन्ता, दुःख, कष्ट ।

२६३४. **बिलकुल** (क्रि० वि०) (अ०) पूरा-पूरा, सब, निपट, निरा ।

२६३५. **बिलखना** (क्रिया) (हिं०) देखना, निरखना, सिसकना, रोना, उदास होना, विलाप करना, सिकुड़ना ।

२६३६. **बिलग** (वि०) (हिं०) अलग, पृथक्, भिन्न, जुदा, न्यारा, आन, अन्य, दूसरा, (संज्ञा पु०) पार्थक्य ।

२६३७. **बिलावल** (संज्ञा पु०) (सं०) एक राग, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रेमिका, पत्नी, स्त्री, प्रियतमा ।

२६३८. **बिलोना** (क्रिया) (हिं०) मथना, डालना, उँड़लना ।

२६३९. **बिल्ली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बिलाई, बिल्ल, मार्जार, दीप्त-लोचन, दुत, पूतिका, बिडाली, बिलारी, बिलाव, बिलैया, बिल्ला, (अं०) कैट ।

२६४०. **बिसमिल्ला, बिसमिल्लाह** (संज्ञा पु०) (अ०) श्रीगणेश, आरम्भ, शुरू, आदि ।

२६४१. **बिसयक** (संज्ञा पु०) (हिं०) देश, प्रदेश, रियासत, राज्य ।

२६४२. **बिसरना** (क्रिया) (हिं०) भूलना, विस्मृत करना, याद न रहना ।

२६४३. **बिसवासी** (वि०) (हिं०) विश्वास करने वाला, विश्वासी, बेऐतबार, विश्वासघाती ।

२६४४. **बिसात** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) हैसियत, औकात, जमा, पूँजी, सामर्थ्य, शक्ति, हक़ीक़त, चौपड़ का कपड़ा ।

२६४५. **बिसारना** (क्रिया) (हिं०) भुलाना, विस्मृत करना ।

२६४६. **बिस्तारना** (क्रिया) (हिं०) फैलाना, विस्तृत करना ।

२६४७. **बिहरना** (क्रिया) (हिं०) घूमना, फिरना, सैर करना, विहार करना, फटना, टूटना, फूटना, विदीर्ण होना ।

२६४८. **बिहान** (संज्ञा पु०) (हिं०) सवेरा, प्रातःकाल, प्रात, भोर, भिनसरा ।

२३४९. **बिहाना** (क्रिया स०) (हि०) छोड़ना, त्यागना, निर्वाह करना, समय काटना, गुज़रना, व्यतीत होना, बीतना ।

२३५०. **बिहिश्त** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) स्वर्ग, वैकुंठ ।

२३५१. **बींद** (संज्ञा पु०) (हि०) दूल्हा, वर ।

२३५२. **बींदना** (क्रिया स०) (हि०) अनुमान करना, अन्दाज़ से जाँचना ।

२३५३. **बीच** (संज्ञा पु०) (हि०) मध्य, माँझ, माँह, भीतर, बीच का अन्तर, अवकाश, भेद, अन्तर, फ़र्क, मौका, अवसर ।

२३५४. **बीचि** (क्रिया वि०) (हि०) अन्दर, में, दरमियान (संज्ञा स्त्री०) वीचि, लहर, तरंग ।

२३५५. **बीचु** (संज्ञा पु०) (हि०) अवसर, मौका, अन्तर, फ़र्क ।

२३५६. **बीज** (संज्ञा पु०) (सं०) बीया, जड़, मूल, प्रधान कारण, मूल प्रकृति, हेतु, कारण, वीर्य, शुक्र, (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बिजली ।

२३५७. **बीजक** (संज्ञा पु०) (सं०) सूची, तालिका, फ़ेहरिस्त, असना का वृक्ष, बिजौरा नीबू, बीज, चालान ।

२३५८. **बीजपूर, बीजपूरक** (संज्ञा पु०) बिजौरा नींबू, चकोतरा ।

२३५९. **बीजमन्त्र** (संज्ञा पु०) (सं०) गुर, मूलमन्त्र ।

२३६०. **बीजी** (वि०) (हि०) बीज विषयक, बीजवाला, (संज्ञा स्त्री०) गिरी, मींगी, गुठली, (संज्ञा पु०) पिता ।

२३६१. **बीझा** (वि०) (हि०) निर्जन, एकान्त स्थान, घना, सघन ।

२३६२. **बीतना** (क्रि०) (हि०) समय गुज़रना, विगत होना, वक्त कटना, दूर होना, जाता रहना, घटित होना, घटना, पड़ना, व्यतीत होना, पूरा होना, समाप्त होना ।

२३६३. **बीनना** (क्रि० स०) (हि०) चुनना, छाँटना, अलग करना, बुनना ।

२३६४. **बीबी** (संज्ञा स्त्री) (फ़ा०) कुलीन स्त्री, कुलवधू, पत्नी, भार्या,

अविवाहिता लड़की, कन्या, स्त्री, मेहरारू, मेहरिया, मेम।

२६६५. **बीभत्स** (वि०) (सं०) घृणित, क्रूर, पापी, (संज्ञा पु०) मानवी रस।

२६६६. **बीमारी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) रोग, व्याधि, झंझट, दुर्व्यसन, बुरी आदत।

२६६७. **बीर** (संज्ञा पु०) (हि०) भाई, भ्राता, भैया, कान का गहना, वीर, (संज्ञा स्त्री०) सखी, सहेली, तरनाबीरी, चरागाह, स्त्री, औरत।

२६६८. **बील** (वि०) (हि०) पोल, खाली, (संज्ञा पु०) बेल, औषध-विशेष, मन्त्र।

२६६९. **बीसी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) कौड़ी, (संज्ञा पु०) तोलने का काँटा, तुला।

२६७०. **बुँद** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बूँद, बिंदु, कतरा, वीर्य, (वि०) थोड़ा-सा, जरा सा, (संज्ञा पु०) (सं०) तीर, आभूषण विशेष।

२६७१. **बुक** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) पुस्तक, किताब।

२६७२. **बुक्का** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हृदय, कलेजा, गुरदे का मांस, रक्त, लहू, बकरी, (संज्ञा पु०) (हिं०) अबरक का चूर्ण, बुकरा, मुट्ठी भर, चुटकी।

२६७३. **बुखार** (संज्ञा पु०) (अँ०) वाष्प, भाप, ज्वर, ताप, दुःख, हृदय का उद्वेग।

२६७४. **बुजुर्ग** (वि०) (फा०) वृद्ध, बड़ा, पाजी, दुष्ट, (संज्ञा पु०) (फा०) बाप, दादा, पूर्वज, पुरखा।

२६७५. **बुझाना** (क्रि०) (हिं०) शान्त करना, ठंडा करना, पानी का छौंकना, बुतवा देना, आग ठंडी करना, दिया बुझाना।

२६७६. **बुत** (संज्ञा पु०) (फा०) मूर्त्ति, प्रतिमा, प्रियतम।

२६७७. **बुद्ध** (संज्ञा पु०) (फा०) जागरित, ज्ञानवान्, ज्ञानी, विद्वान्, बुद्धिमान्, पंडित, सर्वज्ञ, सुगत, विदित, ज्ञात, (संज्ञा पु०) महात्मा गौतम।

२६७८. (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अक्ल, समझ, मनीषा, धी, धीषणा,

विवेक, [illegible], प्रज्ञान, मेधा, मेधा, धारणाशक्ति, बूझ, मति, सिद्धि, समझ, चेतना, मनीषा।

२२७९. बुद्धिमत्ता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समझदारी, अक्लमन्दी।

२२८०. बुध (संज्ञा पु०) (सं०) देवता, बुद्धिमान् या विद्वान् आदमी, बुध ग्रह, चन्द्रमा का पुत्र, बुधवार।

२२८१. बुधान (संज्ञा पु०) (सं०) कवि, गुरु, प्रियवादी।

२२८२. बुनिया (संज्ञा पु०) (हि०) जुलाहा, बुनकर।

२२८३. बुनियाद (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) नींव, जड़, मूल, आधार, [illegible], [illegible]।

२२८४. बुनियादी (वि०) (फ़ा०) आधारिक, मूल, बिलकुल, प्रारंभिक।

२२८५. बुरकना (क्रि० स०) (हि०) छिड़कना, भुरभुराना (संज्ञा पु०) (हि०) [illegible] मिट्टी की [illegible]।

२२८६. बुरा (वि०) (हि०) निकृष्ट, मंद, खराब, दुष्ट, नीच, अधम, निकम्मा।

२२८७. बुराई (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बुरापन, खराबी, खोटापन, नीचता, अवगुण, दोष, निंदा, शिकायत, दुष्टता, अधमता, अधमाई।

२२८८. बुरादा (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कुनाई, चूरा, चूर्ण।

२२८९. बुर्द (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) ऊपरी लाभ या आमदनी, नफ़ा, [illegible], [illegible]।

२२९०. बुलबुला (संज्ञा पु०) (हि०) पानी का बुल्ला, बुदबुदा, बुल्का।

२२९१. बुलाना (क्रि० स०) पुकारना, आवाज़ देना, हाँक मारना, आह्वान करना, निमंत्रित करना।

२२९२. बुल्लन (संज्ञा पु०) (देशज) मुख, चेहरा, (संज्ञा पु०) (हि०) पानी का बुलबुला।

२२९३. बुहारना (क्रि० स०) (हि०) झाड़ना, झाड़ू देना, बुहारी लगाना, साफ़ करना।

२२९४. **बुहारी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) झाड़ू, सोहनी, बढ़नी, बढ़नि।

२२९५. **बूँद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बिंदु, कतरा, टोप, वीर्य, जलकण, जलबिन्दु, छींटा।

२२९६. **बूँदी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) वृष्टि, वर्षा की बूँद, एक मिठाई।

२२९७. **बू** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) गंध, बास महक, बदबू, दुर्गन्ध।

२२९८. **बूझ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) समझ, बुद्धि, पहेली, बुझौवल, ज्ञान, पहिचान, अक्ल।

२२९९. **बूझना** (क्रि० स०) (हिं०) समझना, जानना, पूछना, उत्तर निकालना, हृदयङ्गम करना, जानना, पहेली।

२३००. **बूट** (संज्ञा पु०) (हिं०) पेड़, वृक्ष, पौधा, अन्नविशेष, चणक, चना, (अं०) जूता।

२३०१. **बूटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) छोटा वृक्ष, पौधा, छोटा बूटा, बेल।

२३०२. **बूड़ना** (क्रि० स०) (हिं०) डूबना, ग़र्क होना, लीन होना, निमग्न होना, जल में डूबना।

२३०३. **बूढ़** (वि०) (हिं०) बुड्ढा, (संज्ञा पु०) लाल रंग, बीरबहूटी।

२३०४. **बूता** (संज्ञा पु०) (हिं०) सामर्थ्य, शक्ति, बल।

२३०५. **बूथड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (देशज) चेहरा, आकृति, शक्ल, सूरत।

२३०६. **बूरा** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) साँड, बैल, इन्द्र, मोरपंख।

२३०७. **बूर** (संज्ञा पु०) (हिं०) शक्कर, चीनी, महीन चूर्ण।

२३०८. **बृहती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बनभंटा, कटाई, उपरना, उत्तरीय वस्त्र, वाक्य, कंटकारि।

२३०९. **बृहत्** (वि०) (सं०) बहुत बड़ा, विशाल, भारी, चौड़ा, बहुत विस्तारयुक्त, दृढ़, बलिष्ठ, पर्याप्त, उच्च, ऊँचा।

२३१०. बृहत्फल (संज्ञा पु०) (सं०) कुम्हड़ा, कटहल, जामुन, चिचड़ा ।

२३११. बृहत्फली (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चिरचौंटी, महेन्द्रवारुणी, कुम्हड़ा, कद्दू ।

२३१२. बृहद्बला (संज्ञा पु०) (सं०) महाबला, सफ़ेदलोध, [illegible] ।

२३१३. बृहद्भानु (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, चित्रक, चीतावृक्ष, सूर्य ।

२३१४. बृहद्रथ (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र, यज्ञपात्र ।

२३१५. बेंच (संज्ञा स्त्री०) (अं०) न्यायकर्त्ता, न्यायालय, अदालत, बैठने का तख्ता ।

२३१६. बेंड़ (संज्ञा पु०) (देशज) नकद रुपया-पैसा, पड़ाव ।

२३१७. बेंड़ा (वि०) (हिं०) आड़ा, तिरछा, कठिन, मुश्किल ।

२३१८. बेंदी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टिकली, बिंदी, शून्य, सुन्ना, सिफ़र ।

२३१९. बेअन्त (क्रि० वि०) (हिं०) असीम, बेहद, सीमारहित ।

२३२०. बेइन्साफ़ी (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) अन्याय, बेइन्साफ़ ।

२३२१. बेइज्ज़त (वि०) (फ़ा०) अप्रतिष्ठित, अपमानित, बेक़दर ।

२३२२. बेईमान (वि०) (फ़ा०) अधर्मी, अविश्वसनीय, धोखेबाज, कपटी ।

२३२३. बेक़रार (वि०) (फ़ा०) व्याकुल, विकल, बेचैन ।

२३२४. बेकली (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) व्याकुलता, विकलता, बेचैनी, घबराहट ।

२३२५. बेकस (वि०) (फ़ा०) निःसहाय, निराश्रय, ग़रीब, लाचार, मोहताज, दीन, अनाथ, दरिद्र ।

२३२६. बेक़ाबू (वि०) (फ़ा०) विवश, लाचार ।

२३२७. बेकार (वि०) (फ़ा०) निठल्ला, निकम्मा, निरर्थक, व्यर्थ, बेरोज़गार, (क्रि० वि०) व्यर्थ, बेफ़ायदा, बिना काम, निष्प्रयोजन ।

२३२८. बेख़ (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) जड़, मूल, (संज्ञा पु०) (हिं०) भेस, स्वरूप, नकल, स्वांग ।

२३२९. बेखटक (वि०) (हिं०) निस्संकोच, बेधड़क, निर्भय, भय-

शून्य, निडर, निधड़क ।

२७३०. **बेख़बर** (वि०) (फ़ा०) अनजान, नावाकिफ़, बेहोश, बेसुध ।

२७३१. **बेगम** (संज्ञा स्त्री०) (तुर्की) रानी, राजपत्नी, पत्नी, [illegible] ।

२७३२. **बेगरज** (क्रि० वि०) (फ़ा०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, (वि०) बेपरवाह ।

२७३३. **बेगाना** (वि०) (फ़ा०) गैर, दूसरा, पराया, अनजान, नावाकिफ़ ।

२७३४. **बेगि** (क्रि० वि०) (हि०) जल्दी से, चटपट, तुरन्त ।

२७३५. **बेचारा** (वि०) (फ़ा०) गरीब, दीन ।

२७३६. **बेचैन** (वि०) (अ०) व्याकुल, विकल ।

२७३७. **बेजा** (वि०) (फ़ा०) अनुचित, नामुनासिब ।

२७३८. **बेजान** (वि०) (फ़ा०) मुरदा, मृतक, निर्बल, कमज़ोर ।

२७३९. **बेजोड़** (वि०) (हिं०) जोड़-रहित, अद्वितीय, निरुपम ।

२७४०. **बेटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पुत्र, सुत, लड़का, छोकरा ।

२७४१. **बेटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पुत्री, लड़की, कन्या, बिटिया, तनया, दुहिता ।

२७४२. **बेड** (संज्ञा पु०) (अं०) नीचे का भाग, तला, बिस्तर, बिछौना ।

२७४३. **बेड़ा** (संज्ञा पु०) (हि०) नाव, झुंड, समूह, घरनई, चौबड़ा, खटला, (वि०) कठिन, विकट, मुश्किल ।

२७४४. **बेड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटी नाव, नौका, छोटा बेड़ा, बन्धन सूत्र, पैकड़ी, पाँव की जंजीर ।

२७४५. **बेडौल** (वि०) (हिं०) कुरूप, भद्दा, बेढंगा, बदशक्ल ।

२७४६. **बेढंग, बेढंगा** (वि०) (हि०) बेतरतीब, कुरूप, भद्दा ।

२७४७. **बेढब** (क्रि० वि०) (हिं०) अनुचित रूप से, बेतरह, (वि०) (हि०) बेढंगा, भद्दा, बीहड़ ।

२७४८. **बेतकल्लुफ़ी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) सरलता, सादगी ।

२३३९. **बेतहाशा** (क्रि० वि०) (फ़ा०) बहुत तेज़ी से, शीघ्रता से, बहुत घबराकर, बिना सोचे-समझे।

२३४०. **बेताब** (वि०) (फ़ा०) असक्त, दुर्बल, विकल, व्याकुल।

२३४१. **बेताल** (संज्ञा पु०) (हि०) भाट, बन्दी।

२३४२. **बेतुका** (वि०) (हि०) बेढंगा, बेहूदा।

२३४३. **बेदम** (वि०) (फ़ा०) मृतक, निर्जीव, मृतप्राय, अधमरा, जर्जर, बोदा, बिना दम के, थका हुआ।

२३४४. **बेदर्द** (वि०) (फ़ा०) कठोर हृदय, निर्दय।

२३४५. **बेदाग** (वि०) (फ़ा०) साफ़, बिना ऐब का, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, निष्कलङ्क, बेकसूर।

२३४६. **बेधड़क** (क्रि० वि०) (हि०) संकोच-रहित, निःसंकोच, आशङ्का-रहित, भय-रहित, बेखौफ़, निडर होकर, निर्द्वन्द्व, निडर, निर्भय।

२३४७. **बेन** (संज्ञा पु०) (हि०) वंशी, मुरली, बाँसुरी, वेणु, बाँस, (संज्ञा पु०) (अ०) वायु, हवा।

२३४८. **बेना** (संज्ञा पु०) (हि०) खस, उशीर, बाँस, पंखा।

२३४९. **बेनागा** (वि०) (फ़ा०) निरन्तर, लगातार, नित्य।

२३५०. **बेनु** (संज्ञा पु०) (हि०) वेणु, मुरली, वंशी, बाँस।

२३५१. **बेपरद** (वि०) (फ़ा०) अनावृत, नंगा, नग्न।

२३५२. **बेपरवा**, **बेपरवाह** (वि०) (फ़ा०) बेफ़िक्र, परम उदार, मनमौजी।

२३५३. **बेपरवी** (वि०) (हि०) निर्दय, बेरहम।

२३५४. **बेबस** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) पराधीन, परवश।

२३५५. **बेर** (संज्ञा पु०) (हि०) बदरी वृक्ष, बदरी फल, (संज्ञा स्त्री०) बार दफ़ा, विलम्ब, देर, बेला।

२३५६. **बेरा** (संज्ञा पु०) (हि०) समय, बेला, तड़के, भोर, कच्चा कुआँ।

२३५७. **बेल** (संज्ञा पु०) (हि०) बिल्व फल, महाफल, (संज्ञा स्त्री०)

लता, वल्ली, संतान, वंश, डाँड़ ।

२७६८. **बेलना** (क्रिया) (*हि०*) फैलाना, बढ़ाना, रोटी पीटना ।

२७६९. **बेला** (संज्ञा पु०) (*हि०*) लहर, कटोरा, किनारा, समय, पुष्प विशेष ।

२७७०. **बेली** (संज्ञा पु०) (*हि०*) साथी, संगी, मित्र, दोस्त ।

२७७१. **बेलौस** (वि०) (*हि०*) सच्चा, खरा, बेमुरव्वत, स्पष्ट वक्ता ।

२७७२. **बेवकूफ़** (वि०) (*फ़ा०*) मूर्ख, नासमझ, निर्बुद्धि, अनाड़ी, अज्ञानी ।

२७७३. **बेवफ़ा** (वि०) (*फ़ा०*) दुःशील, बेमुरव्वत, कृतघ्न, अकृतज्ञ ।

२७७४. **बेशरम** (वि०) (*फ़ा०*) निर्लज्ज, बेहया ।

२७७५. **बेशुमार** (वि०) (*फ़ा०*) अगणित, असंख्य, अनगिनत ।

२७७६. **बेहतर** (वि०) (*फ़ा०*) ठीक, अच्छा ।

२७७७. **बेहद** (वि०) (*फ़ा०*) असीम, अपरिमित, अपार, बहुत अधिक ।

२७७८. **बेहन** (संज्ञा पु०) (*हि०*) बीज, (वि०) पीला, ज़र्द ।

२७७९. **बेहर** (वि०) (*देशज*) अलग, पृथक्, स्थावर, अचर, (संज्ञा पु०) बावली, वापी ।

२७८०. **बेहरा** (संज्ञा पु०) (*देशज*) एक घास, चिपटी पेटारी, (वि०) अलग, पृथक्, जुदा ।

२७८१. **बेहाल** (वि०) (*फ़ा०*) व्याकुल, विकल, बेचैनी ।

२७८२. **बेहूदा** (वि०) (*फ़ा०*) अशिष्ट, असभ्य ।

२७८३. **बेहोश** (वि०) (*फ़ा०*) मूर्च्छित, बेसुध, अचेतन, चेतना-रहित ।

२७८४. **बैठक** (संज्ञा पु०) (*हि०*) आसन, चौपाल, आधार, जमावड़ा, जमाव, संग, मेल ।

२७८५. **बैठना** (क्रि०) (*हि०*) स्थित होना, आसन जमाना, आसीन होना, अभ्यस्त होना, पिचक जाना, लागत लगना, खर्च होना, अस्त होना,

प्रतीक्षा करना, निश्चेष्ट रहना, उपेक्षित होना, उपवेशन करना, काम-धन्धा बिगड़ना।

२३८६. **बैठाना** (क्रि०) (हिं०) स्थिर रखना, उपविष्ट करना, ठीक जमाना, धँसाना, ठुकाना, स्थापन करना, नियत करना।

२३८७. **बैसड़ा** (वि०) (हिं०) आवारा, गुण्डा, छोकरा।

२३८८. **बैर** (संज्ञा पु०) (हिं०) शत्रुता, दुश्मनी, अदावत, वैमनस्य, दुर्भाव, बैर, द्वेष, विद्वेष, विरोध, प्रतिद्वन्द्विता।

२३८९. **बैरी** (वि०) (हिं०) शत्रु, द्वेषी, दुश्मन, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी।

२३९०. **बैलून** (संज्ञा पु०) (अं०) गुब्बारा।

२३९१. **बैस** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आयु, उम्र, यौवन, जवानी, वयस, अवस्था, उमर, वैश्य।

२३९२. **बैहर** (वि०) (हिं०) भयानक, क्रोधी, (संज्ञा स्त्री०) वायु, हवा।

२३९३. **बोझ** (संज्ञा पु०) (हिं०) ढेर, भार, भारीपन, गुरुत्व, वज़न, उत्तरदायित्व।

२३९४. **बोट** (संज्ञा स्त्री०) (अं०) नाव, नौका, छोटी नाव।

२३९५. **बोदा** (वि०) (हिं०) मूर्ख, गावदी, सुस्त, मट्ठर, फुसफुसा, अदृढ़, निर्बल, अशक्त, निर्जीव, असमर्थ, नासमझ, मूर्ख।

२३९६. **बोध** (संज्ञा पु०) (सं०) ज्ञान, जानकारी, धीरज, सन्तोष, तसल्ली, समझ, बुद्धि, विवेक, मति।

२३९७. **बोधन** (संज्ञा पु०) (सं०) जताना, बोध कराना, सूचित करना, जगाना, प्रज्वलित करना, दीपदान, मन्त्र जगाना।

२३९८. **बोवला** (संज्ञा पु०) (देशज) रेत, बालू, बाजरे का भूसा।

२३९९. **बोबा** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्तन, थन, गट्ठर, गठरी, गाँठ, माल, सम्पत्ति।

२४००. **बोय** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गन्ध, बास, सुगन्ध।

२४०१. **बोरना** (क्रि०सं०) (हिं०) डुबाना, भिगोना, कलंकित करना,

रंग देना, रंगना ।

२८०२. **बोल** (संज्ञा पु०) (हिं०) वचन, वाणी, ताना, व्यंग्य, प्रतिज्ञा, कथन, वादा, वाद्य-शब्द, गीत का शब्द, अदद, संख्या ।

२८०३. **बोलता** (संज्ञा पु०) (हिं०) आत्मा, जीवनतत्व, प्राण, मनुष्य, हुक्का, फ़क़ीर, (वि०) वाचाल, वाक्पटु ।

२८०४. **बोली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) वाणी, अर्थयुक्त शब्द, सार्थक बात, भाषा, बात, नीलामी की भाषा ।

२८०५. **बौंड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) फली, छीमी, दमड़ी, छदाम ।

२८०६. **बौरई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पागलपन, सनक ।

२८०७. **बौरहा** (वि०) (हिं०) पागल, विक्षिप्त, बावला, उन्मत्त, सिड़ी ।

२८०८. **बौरा** (वि०) (हिं०) बावला, पागल, विक्षिप्त, भोला, नादान, गूंगा ।

२८०९. **बौराह** (वि०) (हिं०) बावला, पागल, सनकी, उन्मत्त ।

२८१०. **ब्यापना** (क्रि०) (हिं०) व्याप्त होना, फैलना, प्रभाव दिखाना, घेरना, ग्रसना ।

२८११. **ब्याली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सर्पिणी, साँपिन, नागिन ।

२८१२. **ब्योंची** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) युक्ति, उपाय, व्यवस्था, ढब, ढंग, तरीक़ा, आयोजन, उपक्रम, अवसर, संयोग, प्रबन्ध, व्यवस्था, समाई, उलटी, वमन, कै ।

२८१३. **ब्योरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) वृत्त, विवरण, वृत्तान्त, समाचार, (अं०) रिपोर्ट ।

२८१४. **ब्रध्न** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, वृक्षमूल, जड़, विवश, मदार का पौधा, सीसा, जस्ता, घोड़ा, शिव, एक रोग ।

२८१५. **ब्रह्म** (संज्ञा पु०) (सं०) ईश्वर, परमात्मा, आत्मा, चैतन्य, ब्राह्मण, ब्रह्मा, ब्रह्मराक्षस, वेद, एक की संख्या, तप, तपस्या ।

२८१६. **ब्रह्मकृत** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, शिव, इन्द्र ।

२८१७. **ब्रह्मगति** (संज्ञा पु०) (सं०) मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष, नजात ।

२८१८. **ब्रह्मचारिणी** (संज्ञा स्त्री०) ब्रह्मचर्यधारिणी, दुर्गा, पार्वती, सरस्वती, भारंगिबूटी।

२८१९. **ब्रह्मानंद** (संज्ञा पु०) ब्रह्मानन्द, ब्रह्मतत्व, मोक्ष, मुक्ति।

२८२०. **ब्रह्मपुत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) मन, नारद, वशिष्ठ, मरीची, एक विष, सनत्कुमार, ब्राह्मण का बेटा।

२८२१. **ब्रह्ममंडूकी, ब्रह्ममण्डूकी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मजीठ, भारङ्गी, मण्डूकपर्णी।

२८२२. **ब्रह्मांड** (संज्ञा पु०) सम्पूर्ण विश्व, विश्वगोलक, जगत्, संसार, खोपड़ी कपाल।

२८२३. **ब्रह्मा** (संज्ञा पु०) (सं०) विधाता, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

२८२४. **ब्राह्मणी** (संज्ञा स्त्री) (सं०) ब्रह्मा की स्त्री, सरस्वती।

२८२५. **ब्राह्म** (वि०) (सं०) ब्रह्म-सम्बन्धी (संज्ञा पु०) एक पुराण, विवाह-विशेष, नारद, नक्षत्र।

२८२६. **ब्राह्मण** (संज्ञा पु०) (सं०) द्विज, विप्र, शिव, विष्णु, अग्नि, पहला वर्ण।

२८२७. **ब्राह्मी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शक्ति, सरस्वती, वाणी, रोहणी नक्षत्र।

(भ)

२८२८. **भंग, भङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) तरंग, लहर, पराजय, हार, खंड, टुकड़ा, कुटिलता, टेढ़ापन, भेद, रोग, गमन, स्रोत, विध्वंस, विनाश, बाधा, अड़चन, भय, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भाँग।

२८२९. **भंगि, भङ्गि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विच्छेद, कुटिलता, टेढ़ाई, विन्यास, अङ्गनिवेश, अन्दाज, लहर, कल्लोल, भंग, व्याज, प्रतिकृति।

२८३०. **भंगिमा, भङ्गिमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुटिलता, टेढ़ापन, अंगनिवेश, अंदाज, लहर, प्रतिकृति।

२८३१. **भंगुर, भङ्गुर** (वि०) (सं०) नाशवान्, टेढ़ा, कुटिल।

२८३२. **भंजन, भञ्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) तोड़ना, भंग करना भंग, ध्वंस, नाश, मदार, आक, भाँग।

२८३३. **भंड, भण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) भाँड़, (वि०) धूर्त, पाखंडी।

२८३४. **भंडन, भण्डन** (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, कवच, हानि आदि।

२८३५. **भंडना** (क्रि०) (हि०) बिगाड़ना, हानि पहुँचाना, तोड़ना, भंग करना, नष्ट-भ्रष्ट करना, बदनाम करना।

२८३६. **भँडरिया** (वि०) (हि०) पाखंडी, ढोंगी, धूर्त, मक्कार।

२८३७. **भंडा** (संज्ञा पु०) (हि०) बर्तन, पात्र, भाँडा, भँडार, भेद, रहस्य।

२८३८. **भंड़ार** (पु०) (हि०) कोष, खजाना, कोठार, उदर, पेट। पाकशाला, अग्निकोष।

२८३९. **भंडारा** (संज्ञा पु०) (हि०) समूह, झुंड, पेट।

२८४०. **भंडीर, भण्डीर** (संज्ञा पु०) (हि०) सिरसा, चौलाई, वट, भँडभाड़।

२८४१. **भँवर** (संज्ञा पु०) (हि०) जल का आवर्त्त, भौंरा, यमकातर, गर्त्त, गड्ढा, प्रेमी, पति।

२८४२. **भँवरी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) भँवर, फेरी, गश्त, परिक्रमा, भाँवर, भौंरी।

२८४३. **भक्त** (वि०) (सं०) बाँटा हुआ, अनुयायी, पक्षपाती, सेवक, तत्पर, (संज्ञा पु०) भात, साधु, ओदन, धन, उपासक, पुजारी।

२८४४. **भक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बाँटना, भाग, विभाग, अंग, अवयव, खंड, पूजा, अर्चना, श्रद्धा, विश्वास, सेवा, शुश्रूषा, रचना, स्नेह, अनुराग, देवी, उपचारभंगी, गौणवृत्ति।

२८४५. **भक्तोपसाधन** (सं० पु०) (सं०) रसोइया, पाचक, परिवेशक।

२८४६. **भक्ष्यकार** (संज्ञा पु०) (सं०) पाचक, हलवाई, रसोइया।

२८४७. **भग** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, ऐश्वर्य, इच्छा, माहात्म्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति, धन, चन्द्रमा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, गुदा, योनि।

२८४८. **भगर** (संज्ञा पु०) (डिंगल) छल, फरेब, ढोंग, (हिं०) सड़ा हुआ।

२८४९. **भगवत्** (संज्ञा पु०) (सं०) ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु, शिव, बुद्ध, सूर्य, कार्त्तिकेय, जिन (वि०) पूजनीय, ऐश्वर्ययुक्त।

२८५०. **भगवती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) देवी, सरस्वती, गौरी, गंगा, दुर्गा।

२८५१. **भगवान्** (वि०) (हिं०) ऐश्वर्यवाला, पूज्य, (संज्ञा पु०) ईश्वर, आदरणीय व्यक्ति, शिव, विष्णु, कार्त्तिकेय, बुद्ध, जिन, नारायण।

२८५२. **भगिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बहन, सहोदरा, बहिन, दीदी, भगनी, भग्नी।

२८५३. **भगोल** (संज्ञा पु०) (सं०) नक्षत्र, चक्र, खगोल।

२८५४. **भजन** (संज्ञा पु०) (सं०) भाग, खंड, सेवा, पूजा, स्मरण, जप, कीर्त्तन, ध्यान, निरन्तर रटन, गान।

२८५५. **भजना** (क्रि० अ०) (हिं०) रटना, जपना, भजन करना, सेवा करना, भागना, भाग जाना, पहुँचना, प्राप्त होना, ध्याना।

२८५६. **भट** (संज्ञा पु०) (सं०) योद्धा, सैनिक, सिपाही, पहलवान, वीर, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल, एक वर्णसंकर जाति, भाट, चारण।

२८५७. **भट्ट** (संज्ञा पु०) (हिं०) भाट, सूर, योद्धा।

२८५८. **भट्टारक** (संज्ञा पु०) (सं०) ऋषि, पंडित, सूर्य, राजा, देवता, देव, [illegible] (वि०) मान्य, पूज्य।

२८५९. **भड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हल्की नाव (डिंगल), वीर, योद्धा, ढोंग।

२८६०. **भड़कदार** (वि०) (हिं०) चमकीला, रोबदार, सजीला।

२८६१. **भड़ाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) सुभट, योद्धा, लड़ाका।

२८६२. **भद्दा** (वि०) (हिं०) कुरूप, अश्लील, गन्दा, असुन्दर।

२८६३. **भद्र** (वि०) (सं०) सभ्य, सुशिक्षित, कल्याणकारी, श्रेष्ठ, साधु, (संज्ञा पु०) क्षेमकुशल, कल्याण, चंदन, महादेव, बैल, खंजन पक्षी,

हस्तिका, पर्वत, सुमेरु, कदम्ब, स्वर्ण, सोना, मोथा।

२८६४. **भद्रता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शिष्टता, भलमनसी।

२८६५. **भद्रा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आकाशगंगा, व्योमनदी, गाय, दुर्गा, पृथ्वी, बाधा, विघ्न, अड़चन, जीवंती, शमी, बरियारी, प्रसारिणी लता, बाच, दंती, हलदी, चंसुर, कटहल, रास्ता, दूर्वा, नीलवृक्ष, द्वितीया तिथि, पंचमी तिथि, द्वादशी तिथि।

२८६६. **भनक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) धीमाशब्द, ध्वनि, उड़ती खबर, आहट।

२८६७. **भयंकर, भयङ्कर** (वि०) (सं०) डरावना, भयानक, भीषण, बरौना, भयकारक, भयावह, भयप्रद, भीषम, भीषक, चण्ड, घोर, तीव्र (संज्ञा पु०) एक अस्त्र, डंडुल पक्षी।

२८६८. **भयंकरता, भयङ्करता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भयानकता, भीषणता।

२८६९. **भय** (संज्ञा पु०) (सं०) डर, खौफ, शंका, त्रास, भीति, कुब्जक पुष्प।

२८७०. **भयानक** (वि०) (सं०) भयंकर, डरावना, भयप्रद, (संज्ञा पु०) बाघ, राहु।

२८७१. **भर** (वि०) (हिं०) कुल, पूरा, सब, तमाम, पूर्ण, (संज्ञा पु०) भारी, बोझ, (सं०) युद्ध, लड़ाई।

२८७२. **भरट** (संज्ञा पु०) (सं०) कुम्हार, सेवक, नौकर, चाकर।

२८७३. **भरण्य** (संज्ञा पु०) (सं०) दाम, मूल्य, वेतन, तनख्वाह।

२८७४. **भरण्यु** (संज्ञा पु०) (सं०) ईश्वर, चन्द्रमा, अग्नि, मित्र।

२८७५. **भरत** (संज्ञा पु०) (सं०) अभिनेता, नट, शबर, तंतुवाय, जुलाहा, खेत, क्षेत्र, श्रीराम के भाई (संज्ञा पु०) (देशज) ठठेरा, काँसा धातु, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मालगुजारी।

२८७६. **भरना** (क्रि० स०) (हिं०) पूजा करना, उलटना, उँड़ेलना, ऋण चुकाना, पूर्ति करना, निर्वाह करना, निबाहना, काटना, डसना, पोतना,

सहना, ताना, दुःखपाना, दुःख सहना, गुप्त निन्दा करना ।

२८७७. **भरनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) करघे की ढरकी, नार, छछूँदर, मोरनी, जंगली, बूटी, गारुड़ी-मन्त्र ।

२८७८. **भरपूर** (वि०) (हिं०) पूरा-पूरा, पूर्ण, अतिशय पूर्ण, (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, भलीभाँति (संज्ञा पु०) ज्वार (समुद्र का) ।

२८७९. **भरभेंटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) सामना, मुकाबला, मुठभेड़ ।

२८८०. **भरम** (संज्ञा पु०) (हिं०) भ्रान्ति, सन्देह, धोखा, रहस्य, भेद, भ्रम, संशय, भेद ।

२८८१. **भरमना** (क्रि०) (हिं०) घूमना, चलना, भटकना, धोखा खाना, (संज्ञा स्त्री०) भूल, ग़लती, धोखा, भ्रम ।

२८८२. **भरमाना** (क्रि० स०) (हिं०) बहकाना, भटकाना, ठगना, व्यर्थ घुमाना, छलना ।

२८८३. **भरु** (संज्ञा पु०) (हिं०) बोझ, वज़न, (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, समुद्र, मालिक, स्वामी, स्वर्ण, सोना, शंकर ।

२८८४. **भरोसा** (संज्ञा पु०) (हिं०) आश्रय, आसरा, सहारा, अवलम्ब, आशा, उम्मेद, दृढ़विश्वास, यक़ीन, निष्ठा भाव, आश्वासन, श्रद्धा ।

२८८५. **भर्ग** (संज्ञा पु०) (हिं०) शिव, महादेव, सूर्य का तेज (संज्ञा पु०) (हिं०) ज्योति, दीप्ति, चमक ।

२८८६. **भर्ता** (संज्ञा पु०) (हिं०) अधिपति, स्वामी, पति, खाविन्द, विष्णु, करतार, भतार, भर्तार, पालनेवाला, रक्षक, प्रतिपालक, मालिक ।

२८८७. **भर्त्सन** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निन्दा, शिकायत, डाँट-डपट, कुत्सा, तिरस्कार ।

२८८८. **भर्सन** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) निन्दा, अपवाद, शिकायत, डाँट-डपट, फटकार ।

२८८९. **भल** (संज्ञा पु०) (सं०) वध, हत्या, दान, निरूपण, (वि०) भला, सज्जन, उत्तम, श्रेष्ठ ।

२८९०. **भलमनसाहत** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भलमनसाहत, भलमनसी,

सज्जनता, सौजन्य, मनुष्यत्व ।

२८९१. भला (वि०) (हिं०) अच्छा, बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ, शीलवान् सद्गुणी, (संज्ञा पु०) कल्याण, कुशल, भलाई, लाभ, नफ़ा, प्राप्ति ।

२८९२. भलाई (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भलापन, उपकार, नेकी, हित, लाभ, अच्छापन, कुशलक्षेम, कल्याण, मंगल ।

२८९३. भल्ल (संज्ञा पु०) (सं०) वध, हत्या, दान, भालू, भाला, बरछी, बर्छा ।

२८९४. भव (संज्ञा पु०) (हिं०) जन्म, उत्पत्ति, मेघ, बादल, शिव, कुशल, संसार, जगत्, कारण, हेतु, प्राप्ति, सत्ता, कामदेव, माँस, जन्म-मरण का दुःख, (हिं०) डर, भय, (वि०) शुभ, कल्याणकारक, उत्पन्न, जमा हुआ ।

२८९५. भवत् (संज्ञा पु०) (सं०) भूमि, ज़मीन, विष्णु, (वि०) मान्य, पूज्य ।

२८९६. भवन (संज्ञा पु०) (हिं०) जगत्, संसार, (सं०) घर, गृह, स्थान, वास, मकान, आश्रय-स्थल, प्रासाद, महल, जन्म, उत्पत्ति, सत्ता ।

२८९७. भव्य (वि०) (सं०) शानदार, शुभ, मंगलकारक, सत्य, सच्चा, योग्य, लायक, प्रसन्न, श्रेष्ठ, बड़ा, भावी, उज्ज्वल, सुन्दर, (संज्ञा पु०) (सं०) कमरख, करेला, नीम ।

२८९८. भव्या (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पार्वती, उमा, गजपीपल ।

२८९९. भाँग (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भंग, विजया, बूटी, पत्ती, भंगा, चपला, जया, भंजन ।

२९००. भाँड (संज्ञा पु०) (हिं०) विदूषक, मसखरा, हँसी, दिल्लगी, निर्लज्ज, बेहया, विनाश, बरबादी, बरतन, भाँड़ा, रहस्योद्घाटन, उपद्रव, उत्पात, बहुरूपिया ।

२९०१. भांडार, भाण्डार (संज्ञा पु०) (हिं०) खज़ाना, कोश, (अँ०) स्टाक ।

२९०२. भाँति (अव्यय) (हिं०) तरह, किस्म, प्रकार, रीति,

मर्यादा, तरह, तरह का, कई तरह का।

२९०३. भाँवर (सं० स्त्री०) (हिं०) घुमाव, भाँवरी, परिक्रमा, चक्कर लगाना।

२९०४. भा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा, छटा, छवि, किरण, रश्मि, बिजली, विद्युत्, उजारा, (अव्यय) (हिं०) चाहे, या अथवा।

२९०५. भाइ (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रेम, प्रीति, स्वभाव, विचार, (संज्ञा स्त्री०) प्रकार, तरह, भाँति, चालढाल, रंगढंग, चमक, दीप्ति।

२९०६. भाउ (संज्ञा पु०) (हिं०) भाव, चित्तवृत्ति, विचार, प्रेम, प्रीति, उत्पत्ति, जन्म।

२९०७. भाऊ (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रेम, स्नेह, मुहब्बत, भावना, स्वभाव, हालत, अवस्था, महत्त्व, महिमा, स्वरूप, आकृति, शक्ल, सत्ता, प्रभाव, वृत्ति, विचार।

२९०८. भाग (संज्ञा पु०) (हिं०) हिस्सा, खंड, अंश, पार्श्व, नसीब, भाग्य, किस्मत, सौभाग्य, खुशनसीबी, माथा, ललाट, प्रातःकाल, भोर, वैभव, ऐश्वर्य, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, बाँट, विभाग।

२९०९. भागिता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हिस्सेदारी, साझेदारी, भागीदारी।

२९१०. भागी (संज्ञा पु०) (हिं०) हिस्सेदार, साझी, अधिकारी, हक़दार, शिव, (वि०) भाग्ययुक्त।

२९११. भाग्य (संज्ञा पु०) (सं०) दैव, नियति, विधि, भवितव्यता, प्रारब्ध, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, भाग, भोग, होनहार, सुकृत्, अदृश्य, कपाल, दैव्य, मुक़दर, तक़दीर, नसीब, किस्मत।

२९१२. भाजन (संज्ञा पु०) (सं०) बरतन, भाँडा, आधार, पात्र, योग्य, आढ़त, परिमाण, (देशज) बासन।

२९१३. भाट (संज्ञा पु०) (हिं०) चारण, बन्दी, खुशामदी व्यक्ति, राजदूत, स्तुतिनायक।

२६१४. **भाटक्** (संज्ञा पु०) (सं०) भाड़ा, किराया, (अँ०) रेट।

२६१५. **भाठ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पेटा, किनारा, धारा, बहाव।

२६१६. **भाण** (संज्ञा पु०) (सं०) मिस, व्याज, ज्ञान, बोध, सुधि, चेत, स्मरण, एक नाटक, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बहन, भगिनी।

२६१७. **भात** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रभात, सवेरा, दीप्ति, प्रकाश, भक्त, पका हुआ चावल, ओदन।

२६१८. **भाथा** (संज्ञा पु०) (हिं०) तरकश, तूणीर, बड़ी, भाथी, तूण।

२६१९. **भान** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रकाश, रोशनी, दीप्ति, चमक, ज्ञान, आभास, प्रतीति, स्मरण, बोध, सुधि, चेत, भ्रम (देशज) तुंग वृक्ष।

२६२०. **भानना** (क्रि०) (हिं०) तोड़ना, भंग करना, नष्ट करना, मिटाना, दूर करना, काटना, समझना।

२६२१. **भाना** (क्रि० अ०) (हिं०) अच्छा लगना, पसन्द आना, जान पड़ना, ज्ञात होना, शोभा देना, सोहना, फलना, सुहाना, चमकना।

२६२२. **भानु** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, रवि, किरण, राजा, आक, मंदार।

२६२३. **भानुज** (संज्ञा पु०) (सं०) यमराज, कर्ण, शनिश्चर, अश्विनी-कुमार द्वय, राजा।

२६२४. **भानुमती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गङ्गा, जादूगरनी।

२६२५. **भानुसुत** (संज्ञा पु०) (सं०) यमराज, कर्ण, मनु, शनिश्चर।

२६२६. **भाम** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रोध, प्रकाश, दीप्ति, सूर्य, बहनोई।

२६२७. **भामनी** (वि०) (सं०) प्रकाशक, मालिक, (संज्ञा पु०) परमेश्वर।

२६२८. **भामा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्त्री, औरत, क्रुद्ध स्त्री।

२६२९. **भाय** (संज्ञा पु०) (हिं०) भाई, परिणाम, दर, भाव, भाँति, ढंग।

२६३०. **भार** (संज्ञा पु०) (सं०) बोझ, विष्णु, देखभाल, सँभाल, आश्रय, सहारा, वज़न, गुरुत्व।

२९३१. **भारत** (संज्ञा पु०) (सं०) भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, नट, अग्नि, कथा, घोर युद्ध, महाभारत, पुत्र ।

२९३२. **भारती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वचन, वाणी, सरस्वती, ब्राह्मी, ब्राह्मी बूटी, वाक्य, भारुई पक्षी ।

२९३३. **भारद्वाज** (संज्ञा पु०) (सं०) द्रोणाचार्य, मंगलग्रह, भरदूल पक्षी, हड्डी, एक मुनि, अगस्त्य मुनि ।

२९३४. **भारी** (वि०) (हिं०) असह्य, कठिन, भीषण, कराल, विशाल, बड़ा, अधिक, बहुत, दूभर, प्रबल, सूजा हुआ, गम्भीर, शान्त, गुरु, गुरुवा, बड़ा महँगा, मोटा, बुलन्द, बृहत्, विशाल ।

२९३५. **भारीपन** (संज्ञा पु०) (हिं०) गुरुत्व, गरिष्ठता ।

२९३६. **भार्गव** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरुष, परशुराम, शुक्राचार्य, गज, हाथी, मार्कण्डेय, हीरा, च्यवन, श्योनाक, कुम्हार, नीला अँगरा, जमदग्नि ।

२९३७. **भार्गवी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पार्वती, लक्ष्मी, दूर्वा, दूब, नीली दूब, सफ़ेद दूब ।

२९३८. **भाल** (संज्ञा पु०) (सं०) माथा, कपाल, ललाट, तेज, (संज्ञा पु०) (हिं०) भाला, बरछा, गाँसी, रीछ, भालू ।

२९३९. **भालना** (क्रि०) (हिं०) ध्यानपूर्वक देखना, ढूँढ़ना, खोजना, तलाश करना ।

२९४०. **भालांक, भालाङ्क** (संज्ञा पु०) (सं०) रोहित मछली, शिव, कछुआ, करपत्र अस्त्र ।

२९४१. **भावंता** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रिय, प्रीतम, प्रेमपात्र, होनहार, चाहिता, अभिलषित, इष्ट, मनोहर, भावी ।

२९४२. **भाव** (संज्ञा पु०) (सं०) मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य, आत्मा, जन्म, चित्त, चीज़, वस्तु, पदार्थ, क्रिया-कृत्य, पंडित, विद्वान्, विभूति, जन्तु, जानवर, विषय, पर्यालोचन, प्रेम, मुहब्बत, योनि, संसार, उपदेश, कल्पना, ढंग, तरीका, प्रकार, तरह, इच्छा, स्वभाव, मिज़ाज, दशा, अवस्था, हालत, विश्वास, भरोसा, भावना, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, दर, मूल्य, निर्ख, उद्देश्य,

नाज़, नखरा, चोचला, लीला, पदार्थ, (अँ०) रेट ।

२६४३. **भावक** (क्रि० वि०) (हिं०) थोड़ा-सा, किंचित्, भाव, मनोविकार, (वि०) भावपूर्ण, भाव से भरा, (संज्ञा पु०) भक्त, प्रेमी, अनुरागी, भाव, (वि०) उत्पादक ।

२६४४. **भावगति** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) इच्छा, इरादा, विचार ।

२६४५. **भावन** (संज्ञा पु०) (सं०) भावना, ज्ञान, विष्णु ।

२६४६. **भावना** (सं० स्त्री०) (सं०) विचार, ख़्याल, कल्पना, इच्छा, चाह, ध्यान, पर्यालोचना, (क्रि० अ०) (हिं०) अच्छा लगना, पसन्द आना, (वि०) प्रिय, प्यारा ।

२६४७. **भावित** (वि०) (सं०) विचारा हुआ, सोचा हुआ, चिन्तित, विचारित, सुगन्वित, समर्पित, भेंट किया हुआ, मिलाया हुआ ।

२६४८. **भावी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) होनी, भाग्य, तक़दीर, होनहार, भवितव्यता, (वि०) भविष्यत् में होने वाला, आगामी, उत्तरकाल ।

२६४९. **भाषण** (संज्ञा पु०) (सं०) बातचीत, कथन, व्याख्यान, वक्ता ।

२६५०. **भाषणा** (क्रि० अ०) (हिं०) बोलना, कहना, खाना, भोजन करना ।

२६५१. **भाषांतर, भाषान्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) उल्था, तरजुमा, अनुवाद ।

२६५२. **भाषा** (संज्ञा पु०) (सं०) बोली, ज़बान, आधुनिक हिन्दी, एक रागिनी, वाक्य, वाणी, सरस्वती, अभियोगपत्र ।

२६५३. **भास** (संज्ञा पु०) (सं०) दीप्ति, चमक, प्रभा, मयूख, किरण, इच्छा, गोशाला, गीध, गृध्र, कुक्कुर, स्वाद, मिथ्याज्ञान, शुकुन्त पक्षी ।

२६५४. **भासना** (क्रि० अ०) (हिं०) चमकना, मालूम होना, देख पड़ना, फँसना, लिप्त होना, कहना, बोलना, विदित होना, ज्ञात होना, प्रकट होना ।

२६५५. **भासुर** (संज्ञा पु०) (सं०) स्फटिक, बिल्लौर, वीर, बहादुर, (वि०) चमकीला, चमकदार, दीप्तिशील, दीप्तिमान् ।

२९५६. भास्कर (संज्ञा पु०) (सं०) सुवर्ण, सोना, सूर्य, अग्नि, आग, वीर, शिव, महादेव, रवि, आक वृक्ष, मदार वृक्ष ।

२९५७. भास्वत् (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, आक, मदार, दीप्ति, चमक, वीर, बहादुर, (वि०) चमकदार, चमकीला ।

२९५८. भास्वर (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, दिन, कोढ़ की दवा, (वि०) चमकदार, चमकीला, दीप्तियुक्त, तेजस्वी, प्रतापी ।

२९५९. भिंग (संज्ञा पु०) (हिं०) बिलनी, भृङ्गी, भौंरा (संज्ञा स्त्री०) बाबा ।

२९६०. भिसार (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रातःकाल, सुबह, सवेरा, प्रातः, विहान ।

२९६१. भिक्षा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) याचना, माँगना, भीख, सेवा, चाकरी, नौकरी, भिक्षण, चाह, चाहना ।

२९६२. भिक्षु (संज्ञा पु०) (सं०) भिखमंगा, भिखारी, बौद्ध-संन्यासी, संन्यासी, गोरख मुंडी, याचक, चतुर्थाश्रमी, परिव्राजक, साधु, महात्मा ।

२९६३. भिटना (संज्ञा पु०) (देशज) छोटा, गोल फल, (वि०) (हिं०) स्पर्श होना, छू जाना, अपवित्र होना ।

२९६४. भिड़ना (क्रि०) (हिं०) टक्कर खाना, टकराना, लड़ना, झगड़ना, पास पहुँचना, प्रसंग करना, मैथुन करना, मिलना, सटना, सट जाना, मुठभेड़ करना, सामना करना ।

२९६५. भित्ति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दीवार, डर, भय, टुकड़ा ।

२९६६. भिन्न (वि०) (सं०) अलग, पृथक्, जुदा, दूसरा, अन्य, पराया, अपर ।

२९६७. भिष्टा (संज्ञा पु०) (हिं०) मल, गन्दगी, गू, विष्ठा, बीठ, टट्टी ।

२९६८. भींचना (वि०) (हिं०) खींचना, कसना, दबाना, मूँदना, ढाँपना, बन्द करना, निचोड़ना ।

२९६९. भींजना (क्रि०) (हिं०) गीला होना, भीगना, गद्गद् होना,

हेल-मेल बढ़ाना, नहाना, स्नान करना, समा जाना ।

२९७०. **भी** (अव्यय) (*हिं०*) अवश्य, निश्चय ही, ज़रूर, अधिक, ज़्यादा, विशेष, तक, लौं, (संज्ञा स्त्री) (*हिं०*) भय, डर, त्रास, आशंका, भीति ।

२९७१. **भीख** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) भिक्षा, खैरात, याचना ।

२९७२. **भीड़** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) जनसमूह, समुदाय, संग, जमावड़ा, संकट, आपत्ति, मुसीबत, दुःख ।

२९७३. **भीड़ना** (क्रि० स०) (*हिं०*) लगाना, मिलाना, मलना, बन्द करना ।

२९७४. **भीत** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) दीवार, भित्तिका, चटाई, छत, गच, खंड, टुकड़ा, दरार, स्थान, कसर, त्रुटि, अवसर ।

२९७५. **भीतरिया** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) प्रधान पुजारी, रसोइया, (वि०) भीतरी, अन्दर का ।

२९७६. **भीतर** (क्रि० वि०) (*हिं०*) अन्दर, अन्तःकरण, हृदय, रनिवास, ज़नानखाना, अन्तर में, बीच, मध्य ।

२९७७. **भीतरी** (वि०) (*हिं०*) अन्दर का, गुप्त, छिपा हुआ ।

२९७८. **भीति** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) डर, भय, खौफ़, त्रास, शंका, कम्प, दावार ।

२९७९. **भीती** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) दीवार, डर, भय ।

२९८०. **भीम** (संज्ञा पु०) (*सं०*) भयानक रस, शिव, विष्णु, भीमसेन, अम्लवेल, (वि०) भीषण, भयानक, भयंकर, बहुत बड़ा, भैरव, भयजनक ।

२९८१. **भीमता** (संज्ञा स्त्री०) (*सं०*) भयानकता, भयंकरता, डरावनापन ।

२९८२. **भीर** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) कष्ट, दुःख, विपत्ति, आफ़त, भीड़, (वि०) डरा हुआ, भयभीत, डरपोक, डरनेवाला, कायर ।

२९८३. **भीरु** (वि०) (*सं०*) डरपोक, कायर, बुज़दिल, भयशील,

(संज्ञा पु०) सियार, गीदड़, शृगाल, बाघ, (संज्ञा स्त्री०) शतावरी, कंटकारी, बानरी, छाया।

२९८४. **भीरुक** (संज्ञा पु०) (सं०) वन, जंगल, चादर, उल्लू, (वि०) डरपोक, कायर।

२९८५. **भीरुता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कायरता, बुजदिली, डर, भय।

२९८६. **भीलुक** (संज्ञा पु०) (सं०) भालू, (वि०) भीरु, डरपोक।

२९८७. **भीष** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भीख, भिक्षा, खैरात।

२९८८. **भीषण** (वि०) (सं०) भयानक, डरावना, विकट, घोर, भयंकर, भैरव, भयजनक, भयावह, (संज्ञा पु०) भयानक रस, कुन्दरू, कबूतर, शिव, सलाई, ब्रह्मा, भटकटैया, बाज पक्षी।

२९८९. **भीष्म** (संज्ञा पु०) (सं०) भीष्मपितामह, देवव्रत, गांगेय, भयानक रस, राक्षस, शिव, महादेव, (वि०) भीषण, भयंकर।

२९९०. **भुक्खड़** (वि०) (हिं०) भूखा, पेटू, दरिद्र, कँगाल।

२९९१. **भुक्त** (वि०) (सं०) भक्षित, खाया हुआ, भोगा हुआ, खादित, भोगा, खा चुका।

२९९२. **भुगतना** (क्रि० सं०) (हिं०) भोगना, सहना, झेलना, (क्रि०) पूरा होना, निबटना, चुकना, बीतना।

२९९३. **भुगतान** (संज्ञा पु०) (हिं०) मूल्य देना, मूल्य चुकाना, चुकान, (अँ०) पेमेंट।

२९९४. **भुगताना** (क्रि० सं०) (हिं०) पूरा करना, सम्पादन करना, बिताना, चुकाना, दुःख देना, दण्ड देना, भोगवाना, सहाना, सहवाना।

२९९५. **भुजंग, भुजङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, सर्प, अहिभुजंगा, जार, स्त्री का उपपति, सीसा धातु।

२९९६. **भुजंगभोगी, भुजङ्गभोगी** (संज्ञा पु०) (सं०) गरुड़, मोर।

२९९७. **भुज** (संज्ञा पु०) (सं०) भुजा, बाहु, बाँह, हाथ, सूँड, शाखा, डाली, किनारा, मेंड़, फेंटा, लपेट।

२९९८. **भुजमूल** (संज्ञा पु०) (सं०) खवा, मोढ़ा, काँख।

२९९९. **भुजांतर, भुजान्तर** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रोड़, गोद वक्ष, छाती।

३०००. **भुजिष्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दासी, गणिका, वेश्या।

३००१. **भुरकना** (क्रि०) (हिं०) भूलना, भुरभुराना, बुरकना, भुरभुरा होना।

३००२. **भुरकाना** (क्रि०)(हिं०) भुरभुरा करना, छिड़कना, भुरभुराना, भुलवाना, बहकाना।

३००३. **भुलाना** (क्रि०) (हिं०) भ्रम में डालना, विस्मृत कराना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भटकना, राह भूलना, भूल जाना, बिसरना।

३००४. **भुव** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, आग, स्वर्ग, आकाश, अम्बर, भूमण्डल, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पृथ्वी, भौंह, भ्रू।

३००५. **भुवन** (संज्ञा पु०) (सं०) जगत्, जल, जन, लोग, लोक, सृष्टि, प्राणी, जीव, चौदह की संख्या।

३००६. **भुवन्यु** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, अग्नि, चन्द्र, प्रभु।

३००७. **भूँजना** (क्रि०) (हिं०) भूनना, तलना, पकाना, सताना, दुःख देना, भोगना, भोग करना।

३००८. **भू** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, स्थान, जगह, सत्ता, प्राप्ति, यज्ञाग्नि, भूमि, धरती, (हिं०) भौंह, भ्रू, (संज्ञा पु०) (सं०) रसातल।

३००९. **भूकाक** (संज्ञा पु०) (सं०) बाज़ पक्षी, नीला कबूतर, क्रौंच पक्षी।

३०१०. **भूख** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) क्षुधा, क्षारिका, क्षुत, भूक, आवश्यकता, ज़रूरत, समाई, गुंजाइश, कामना, अभिलाषा, रुचि, अन्नलिप्सा, जाठर, आहारेच्छा, बुभुक्षा (अँ०) हँगर।

३०११. **भूखा** (वि०) (हिं०) क्षुधित, इच्छुक, अभिलाषी, दरिद्र, ग़रीब, बुभुक्षित, क्षुधातुर, अस्थि पंजर, निरशन, उपवासी, क्षुधान्वित, क्षुधालु, तृषित, भुक्खड़, भुखालू, भोकस, अनाहारी।

३०१२. **भूचक्र** (संज्ञा पु०) (सं०) विषुवतरेखा, अयनवृत, क्रांतिवृत, मध्यरेखा, भूमण्डल।

३०१३. **भूटानी** (वि०) (हिं०) भूटान-सम्बन्धी, (संज्ञा पु०) भूटान का निवासी, भूटानी घोड़ा।

३०१४. **भूत** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्राणी, जीव, सत्य, वृत्त, कार्तिकेय, कृष्णपक्ष, योगीन्द्र, लोध, मृतशरीर, शव, प्रेत, जिन, पिशाच, शैतान, बीता हुआ, अतीतकाल, रुद्रानुचर।

३०१५. **भूतकेश** (संज्ञा पु०) (सं०) सफ़ेद तुलसी, सफ़ेद दूब, इन्द्र-वारुणी, जटामांसी।

३०१६. **भूतनाशन** (संज्ञा पु०) (सं०) रुद्राक्ष, सरसों, भिलावाँ।

३०१७. **भूतल** (संज्ञा पु०) (सं०) धरातल, संसार, दुनिया, पाताल, पृथ्वीतल, धरती, भूमि, भूमण्डल, जगत्।

३०१८. **भूतसंसार** (संज्ञा पु०) (सं०) जगत्, संसार, अखिल ब्रह्मांड।

३०१९. **भूतहंत्री, भूतहन्त्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नीली दूब, बाँझ-ककोड़ी।

३०२०. **भूतात्मा** (संज्ञा पु०) (सं०) शरीर, परमेश्वर, शिव, विष्णु, जीवात्मा, युद्ध, देह, ब्रह्मा, परमेष्ठी।

३०२१. **भूतावास** (संज्ञा पु०) (सं०) संसार, देह, विष्णु, बहेड़े का पेड़।

३०२२. **भूधर** (संज्ञा पु०) (सं०) पहाड़, गिरि, शैल, पर्वत, शेषनाग, राजा, विष्णु, वाराह अवतार, भूमि, धारण कर्त्ता।

३०२३. **भूमि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ज़मीन, भू, पृथ्वी, धरती, स्थान, जगह, जीभ, देश, प्रदेश, प्रान्त, (अँ०) एस्टेट, बेस।

३०२४. **भूमिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रचना, मुखबन्ध, पृष्ठभूमि, आमुख, प्रस्तावना, उपक्रम, कथामुख, (हि०) भूमि, ज़मीन।

३०२५. **भूमिज** (संज्ञा पु०) (सं०) सोन, सीसा, धातु, मंगलग्रह, भूमि-कदम्ब, नरकासुर, (वि०) भूमि से उत्पन्न।

३०२६. **भूमिभृत्** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्वत, पहाड़, राजा।

३०२७. **भूमिसुत** (संज्ञा पु०) (सं०) मङ्गलग्रह, नरकासुर, वृक्ष, केवांच, कौंच।

३०२८. **भूय** (अव्यय) (सं०) पुनः, फिर, बहुत अधिक, बार बार।

३०२९. **भूरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) मटमैला रंग, भूमिल रंग, यूरोपियन, गोरा, चीनी, कच्ची चीनी।

३०३०. **भूरि** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, स्वर्ण, सोना, (वि०) बहुत अधिक, प्रचुर, बड़ा, भारी, ढेर, बहु।

३०३१. **भूरितेजस** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, सोना, स्वर्ण।

३०३२. **भूरुह** (संज्ञा पु०) (सं०) वृक्ष, शालवृक्ष, अर्जुन वृक्ष, पेड़, रूख, गाद।

३०३३. **भूल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ग़लती, चूक, दोष, अपराध, अशुद्धि, विस्मृति, त्रुटि।

३०३४. **भूलना** (क्रि०) (हिं०) याद न रखना, विस्मृत करना, ग़लती करना, खो देना, विस्मरण होना, विसरना, चूकना, याद न रहना, ग़लती होना, धोखे में आना, अनुरक्त होना, लुभाना, घमण्ड में होना, इतराना, गुम होना, खो जाना।

३०३५. **भू-सुत** (संज्ञा पु०) (सं०) मंगलग्रह, नरकासुर, वृक्ष, पौधा।

३०३६. **भृंगी, भृङ्गी** (संज्ञा पु०) (सं०) वटवृक्ष, (संज्ञा स्त्री०) भौंरी, बिलनी कीड़ा, अतिविषा, अतीस, भाँग, लखोरी।

३०३७. **भृंगेष्टा, भृङ्गेष्टा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) घीकुआर, भारंगी, युवती स्त्री।

३०३८. **भृगु** (संज्ञा पु०) (सं०) परशुराम, शुक्राचार्य, शुक्रवार, शिव, जमदग्नि, कगार, (अँ०) क्लिफ़।

३०३९. **भृगुज** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरुष, भार्गव, शुक्राचार्य।

३०४०. **भृत** (संज्ञा पु०) (सं०) दास (वि०) भरा हुआ, पूरित पाला-पोसा हुआ।

३१४१. **भृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सेवा, नौकरी, मज़दूरी, वेतन, तनख़्वाह, मूल्य, दाम, कमाई, महीना, दैनिक वेतन, पालन करना, पालना, वृत्ति, भत्ता (अँ०) एलिमनी।

३०४२. भ्रमि (संज्ञा पु०) (सं०) भँवर, चक्रवात, वतंडर (वि०) घूमने वाला।

३०४३. भेंट (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मिलना, मुकाबला, उपहार, नज़राना, दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, सौगात।

३०४४. भेद (संज्ञा पु०) (सं०) रहस्य, मर्म, तात्पर्य, अन्तर, फ़र्क, प्रकार, किस्मत, जाति।

३०४५. भेदिया (संज्ञा पु०) (हिं०) गुप्तचर, जासूस, भेदी, अमलबेत, चर, भेदने की क्रिया (वि०) भेदन करने वाला।

३०४६. भेव (संज्ञा पु०) (हिं०) रहस्य, भेद, बारी, पारी, स्वभाव, प्रकृति, भेद, मर्म, भीतरी बातें, भंग, सलाह, जुदाई, फूट।

३०४७. भेषज (संज्ञा पु०) (सं०) औषध, हवा, जल, पानी, सुख, विष्णु, दवा।

३०४८. भेस (संज्ञा पु०) (हिं०) वेष, भेष, रूप, आकार, आकृति।

३०४९. भैजन (वि०) (हिं०) डरावना, भयप्रद, भयानक, भयप्रद।

३०५०. भैरव (वि०) (सं०) भयानक, विकट, (संज्ञा पु०) (सं०) शंकर, महादेव, भयानक शब्द, कपाली, वाद विशेष, राग विशेष, (वि०) भयानक, भयंकर, भीषण, कराल।

३०५१. भैषज (संज्ञा पु०) (सं०) औषध, दवा, लवा पक्षी, वैद्य।

३०५२. भोंदू (वि०) (हिं०) मूर्ख, सीधा, सीधा-सादा, भोला, बेवकूफ़, भोला, अनजान, अनभिज्ञ।

३०५३. भोक्ता (वि०) (सं०) भोगी, खाऊ, अधिक, खवैया ऐयाश, पेटू (संज्ञा पु०) विष्णु, पति, प्रेत विशेष।

३०५४. भोग (संज्ञा पु०) (सं०) दुःख, कष्ट, सुख, विलास, स्त्री संभोग, फल, कर्मफल, प्रारब्ध, देह, भक्षण, आहार करना, मान, परिमाण, पालन, घर, धन, साँप, फल, अर्थ, पुर, नैवेद्य, आय, आमदनी, भाड़ा, किराया, अधिकार।

३०५५. भोगवान् (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, गति, गान, नाट्य, (वि०)

बहुत भोग करने वाला।

३०५६. **भोगी** (संज्ञा पु०) (सं०) भोगनेवाला, साँप, राजा, ज़मींदार, शेषनाग, नाई, नागिन, (वि०) (सं०) सुखी, विलासी, विषयी, भुगतनेवाला, खानेवाला, ऐश्वर्यवान्, आनन्दी, व्यसनी, दुराचारी, प्रारब्धी।

३०५७. **भोग्य** (सं० पु०) (सं०) खाद्य-पदार्थ, भोगने योग्य, सुख, दुःख, कर्म, (संज्ञा पु०) (सं०) धन, धान्य, भोगवन्धक।

३०५८. **भोज** (संज्ञा पु०) (हिं०) दावत, जेवनार, भोज्य पदार्थ, खाद्य-पदार्थ।

३०५९. **भोना** (क्रि०) (हिं०) लीन होना, अनुरक्त होना, घूमना, संचारित होना।

३०६०. **भोर** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रातःकाल, तड़का, धोखा, भ्रम, भूल, सवेरा, बिहान, (वि०) सीधा-सादा, भोला।

३०६१. **भोरा** (वि०) (हिं०) भोला, सीधा, सरल, छलहीन, निष्कपट, भोंदू।

३०६२. **भोराई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भोलापन, सिधाई, सरलता।

३०६३. **भोला** (वि०) (हिं०) सीधा-सादा, सरल, मूर्ख।

३०६४. **भोलापन** (संज्ञा पु०) (हिं०) सरलता, सादगी, सिधाई, मूर्खता, बेवकूफ़ी।

३०६५. **भौंगर** (वि०) (देशज) मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट, (संज्ञा पु०) इस नाम की क्षत्रिय जाति।

३०६६. **भौंरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) बड़ी मधु मक्खी, सारंग, काला मड़, नाभी, लट्टू, मूँड़ी, भाँवर, तहखाना, खत्ता, खात, भ्रमर, अलि, षट्पद, मधुप, अलिन, मधुकर, मधुव्रत, चंचरीक, पुष्पकीट, पुष्पनिक्ष, पुष्पलिक्ष, भँवर, मधुरसिक, मधुराज, मधुसदन, मिलिंद।

३०६७. **भौंरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भाँवर, चक्कर, आवर्त्त, बाटी, अङ्गाकड़ी (रोटी)।

३०६८. **भौंह** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं०*) भौं, भृकुटी, त्यौरी, भ्रू, कोदंड, भँव ।

३०६९. **भौ** (संज्ञा पु०) (*हिं०*) संसार, जगत्, (*देशज*) भय, डर, शंका, त्रास ।

३०७०. **भौतिक** (संज्ञा पु०) (*सं०*) शिव, मोती, उपद्रव, आधि-व्याधि, शरीरेन्द्रियाँ, (वि०) भूत-सम्बन्धी, भूत का, अद्‌भुत, पार्थिव, शरीर-सम्बन्धी ।

३०७१. **भौम** (वि०) (*सं०*) भूमि-सम्बन्धी, भूमि का, (संज्ञा पु०) मंगलग्रह, लाल पुनर्नवा, अम्बर, पुच्छल तारा ।

३०७२. **भ्रम** (सं० पु०) (*सं०*) मिथ्या ज्ञान, धोखा, संशय, सन्देह, शक, भ्रान्ति, एक रोगी, नल, पनाला, मूर्च्छा, बेहोशी, भ्रमण, भोर, शुभह, त्रुटि, दगदगा, ग़लतफ़हमी, मान, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त ।

३०७३. **भ्रमण** (संज्ञा पु०) (*सं०*) घूमना, फिरना, विचरण, आना-जाना, यात्रा, सफ़र, चक्कर, फेरी, पर्यटन, भाँवर, फिरना, जोंक ।

३०७४. **भ्रमर** (संज्ञा पु०) (*सं०*) भौंरा, अलि, मधुप, भँवरा ।

३०७५. **भ्रमी** (वि०) (*हिं०*) शंकित, चकित, धौंचक, (संज्ञा स्त्री०) घूमना, फिरना, चक्कर लगाना ।

३०७६. **भ्रष्ट** (वि०) (*सं०*) दूषित, पतित, बदचलन, अधर्मी, दुराचारी, गिरा हुआ, अधःपतित ।

३०७७. **भ्रांत, भ्रान्त** (संज्ञा पु०) (*सं०*) राजधतूरा, मस्त हाथी, घूमना-फिरना, भ्रमण (वि०) भूला, भटका, घबराया हुआ, उन्मत्त ।

३०७८. **भ्रांति, भ्रान्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) धोखा, भ्रम, सन्देह, संशय, शक, भूल, पागलपन, भ्रमण, भूलचूक, मोह, प्रमाद, भँवरी, घुमेर ।

३०७९. **भ्रामक** (वि०) (*सं०*) घुमानेवाला, धूर्त, चालबाज़, (संज्ञा पु०) गीदड़, चुम्बक, पत्थर, कांतिलोहा, रोग विशेष, मूर्च्छारोग, मिर्गी ।

३०८०. **भ्रामर** (संज्ञा पु०) (*सं०*) मधु, शहद, चुम्बक, पत्थर, अप-स्मार रोग (वि०) भ्रमर-सम्बन्धी, भ्रमर का ।

(म)

३०८१. **मंगनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सगाई, कुड़माई, उधार।

३०८२. **मंगल, मङ्गल** (संज्ञा पु०) (सं०) कल्याण, भलाई, विष्णु, शुभ, कुशल, क्षेम।

३०८३. **मंगला, मङ्गला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पतिव्रता, स्त्री, पार्वती, दुर्गा, सफ़ेद दूब, हलदी, नीली दूब।

३०८४. **मंगल्य, मङ्गल्य** (वि०) (सं०) मंगलकारक, शुभ, साधु, सुन्दर, (संज्ञा पु०) (सं०) त्रायमाण लता, सिंदूर, चन्दनकाष्ठ, जीवक वृक्ष, कैत, रीठा, दही, सोना, सुवर्ण, जीरा, मसूर, गोरोचन, बैल, पीपल, विभिन्न तीर्थ स्थानों का एकत्र जल।

३०८५. **मंगल्या, मङ्गल्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गन्धद्रव्य विशेष, चन्दन विशेष, हलदी, दूब, रोचना, शंख-पुष्पी, सफ़ेदवच, जीवंती, ऋद्धिलता।

३०८६. **मंच, मञ्च** (संज्ञा पु०) (सं०) खाट, मचान, मंचक।

३०८७. **मंजरी, मञ्जरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कोंपल, पराग, मोती, तुलसी, तिल का पौवा, बैंत, अशोक वृक्ष।

३०८८. **मंजिल** (संज्ञा पु०) (अ०) लक्ष्य, पड़ाव, मंजल, ठहराव, तल्ला, खंड, (अं०) स्टोरी।

३०८९. **मंजुल, मञ्जुल** (वि०) (सं०) मनोहर, सुन्दर, खुबसूरत (संज्ञा पु०) कुंज, किनारा।

३०९०. **मंजूषा, मञ्जूषा** (संज्ञा पु०) (सं०) छोटा पिटारा, छोटा डिब्बा, पिटारी, पिंजरा, पत्थर, मजीठ, मंजूसा।

३०९१. **मंड, मण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) माँड, पिच्छ, सार, भूसा, सजावट, एक साग, मेंढक, एरंड, जूस।

३०९२. **मंडन** (संज्ञा पु०) (सं०) सजाना, संवारना, सिद्ध करना, समर्थन करना, भरना, पूरित करना, भूषण, अलङ्कार, गहना, आभूषण।

३०९३. **मंडना** (क्रिया) (हिं०) सजाना, शृंगार करना, सिद्ध करना, समर्थन करना, पुष्टिकरण करना, दलित करना, मर्दित करना।

३०९४. **मंडल, मण्डल** (संज्ञा पु०) (सं०) परिधि, चक्कर, घेरा, गोल विस्तार, गोलाई, परिवेश, क्षितिज, कुत्ता, एक गधा, द्रव्य, पहिया, समूह समुदाय, चक्र, गोल चिह्न, परिवेश, संघात, कुल, जनपद, जिला, सूबा ।

३०९५. **मंडली, मण्डली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समूह, समाज, समुदाय दूब, गुडुच, कम्पनी (संज्ञा पु०) वटवृक्ष, बिल्ली, सूर्य, सर्प विशेष ।

३०९६. **मंडा, मण्डा** (संज्ञा पु०) (देशज) पेड़ा, दूध की मिठाई (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अमलकी, सुरा ।

३०९७. **मंडित, मण्डित** (वि०) (सं०) सजाया हुआ, छाया हुआ, पूरित, भरा हुआ, भूषित, शृंगारित, अलंकृत, वेष्टित, लड़ित, सुशोभित ।

३०९८. **मंडूक, मण्डूक** (संज्ञा पु०) (सं०) मेंढक, एक ऋषि, भेक, बेंग, मुनि विशेष, (वि०) सुस्त ।

३०९९. **मंत्र, मन्त्र** (संज्ञा पु०) (सं०) गुप्त सलाह, रहस्यात्मक बात, वेदमन्त्र, घर में छिपा रहनेवाला ।

३१००. **मंत्रज्ञ, मन्त्रज्ञ** (संज्ञा पु०) (सं०) गुप्तचर, जासूस, चर, दूत, (वि०) मन्त्र जाननेवाला ।

३१०१. **मंथ, मन्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) मथना, बिलोना, हिलाना, मलना, मारना, ध्वस्त करना, कम्पन, मथानी, सूर्य-किरण ।

३१०२. **मंथन, मन्थन** (संज्ञा पु०) (सं०) मथना, बिलोना, मथानी, गहरी छान-बीन, अवगाहन, सार निकालना ।

३१०३. **मंथर, मन्थर** (संज्ञा पु०) (सं०) बाल का गुच्छा, कोष, खजाना, क्रोध, कोप, मथानी, बाधा, रोक, अड़चन, गुप्तचर, मक्खन, दुर्ग, हरिण, भँवर, बैशाख मास (वि०) मन्द, धीमा ।

३१०४. **मंथान, मन्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) मथानी, रई, शिवजी, मन्दराचल पर्वत, अमलतास ।

३१०५. **मंद, मन्द** (वि०) (सं०) धीमा, सुस्त, आलसी, मूर्ख, शिथिल, ढीला, दुष्ट, खल (संज्ञा पु०) शनि, यम, अभाग्य, प्रलय, हाथी विशेष ।

३१०६. **मंदता, मन्दता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आलस्य, धीमापन, क्षीणता।

३१०७. **मंदर, मन्दर** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वर्ग, दर्पण, मोती का हार, (वि०) (सं०) मन्द, धीमा, मठा।

३१०८. **मंदा, मन्दा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वल्लीकरंज, लताकरंज, (वि०) (हिं०) धीमा, मन्द, ढीला, स्थिल, सस्ता, घटिया।

३१०९. **मंदाकिनी, मन्दाकिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आकाशगंगा, एक छन्द का नाम।

३११०. **मंदार, मन्दार** (संज्ञा पु०) (सं०) आक का पौदा, मदार, स्वर्ग, हाथी, धतूरा, हाथ, मन्दराचल, पर्वत।

३१११. **मंदिर, मन्दिर** (संज्ञा पु०) (सं०) वास-स्थान, घर, देवालय, नगर, शिविर, समुद्र।

३११२. **मंदिल, मन्दिल** (संज्ञा पु०) (हिं०) घर, देवालय।

३११३. **मंशा** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मंसा, कामना, इच्छा, इरादा।

३११४. **मंसा, मंशा** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) अभिरुचि, इच्छा, आशय, अभिप्राय, संकल्प।

३११५. **मकुर** (संज्ञा पु०) (सं०) दर्पण, आईना, कली, बकुलवृक्ष।

३११६. **मक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रोध, गुस्सा, समूह, दोष का छिपाव।

३११७. **मग** (संज्ञा पु०) (सं०) मगध देश, (हिं०) मार्ग, रास्ता, डगर, बाट, राह, पैंडा।

३११८. **मगज** (संज्ञा पु०) (हिं०) मस्तिष्क, दिमाग़, गिरी, मींगी।

३११९. **मगन** (वि०) (हिं०) प्रसन्न, खुश, बेहोश, मूर्च्छित, लीन, आनन्दित, हर्षित, प्रफुल्लित।

३१२०. **मगरा** (वि०) (हिं०) घमंडी, सुस्त, अकर्मण्य, ज़िद्दी, धृष्ट, उद्दंड, अहंकारी।

३१२१. **मग़ज** (संज्ञा पु०) (अ०) मस्तिष्क, दिमाग़, भेजा, मींगी गूदा।

३१२२. **मग्न** (वि०) (सं०) डूबा हुआ, तन्मय, लीन, लिप्त, मदमस्त, (संज्ञा पु०) पर्वत विशेष।

३१२३. **मघ** (संज्ञा पु०) (सं०) पुरस्कार, इनाम, हर्ष, आनन्द, पुष्प विशेष।

३१२४. **मचवा** (संज्ञा पु०) (हिं०) खाट, पलंग, चौकी का पावा, नाव, छोटा खटोला।

३१२५. **मचिलई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) इतराहट, मचलापन, मचलाहट।

३१२६. **मजदूर** (संज्ञा पु०) (फा०) श्रमिक, मजूर, मोटिया, कुली, सेवक, परिचारक, भृत्य, कामकाजी, दास (वि०) मेहनती।

३१२७. **मजबूत** (वि०) (अँ०) दृढ़, पुष्ट, पक्का, अचल, स्थिर, सबल, तकड़ा, हृष्ट-पुष्ट।

३१२८. **मजबूती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दृढ़ता, पुष्टता, बल, साहस।

३१२९. **मजलिस** (संज्ञा पु०) (अँ०) सभा, जलसा, समाज, महफ़िल, नाचरंग, समूह।

३१३०. **मजा** (संज्ञा पु०) (फा०) आनन्द, सुख, स्वाद, हँसी, दिल्लगी।

३१३१. **मजाक** (संज्ञा पु०) (अँ०) हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी, ठठोली, प्रवृत्ति, रुचि।

३१३२. **मजेदार** (वि०) (फा०) स्वादिष्ट, आनन्ददायक, बढ़िया, मनोरंजक।

३१३३. **मजेदारी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) स्वाद, आनन्द, लुत्फ़।

३१३४. **मज्जना** (क्रि० अ०) (हिं०) डूबना, नहाना, स्नान करना, अनुरक्त होना।

३१३५. **मटकनि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गति, चाल, नाचना, नृत्य, नखरा।

३१३६. **मटिया** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मिट्टी, मृत शरीर, शव, (वि०) मटमैला, खाकी।

३१३७. **मठ** (संज्ञा पु०) (सं०) निवास स्थान, छात्रावास, विद्यालय, विद्यामन्दिर, देवालय, मन्दिर, पाठशाला, देवागार, महन्त-निवास।

३१३८. **मढ़ना** (क्रि०) (हिं०) तोपना, आवरण करना, छिपा देना, कपड़ा चढ़ाना, थोपना, लपेट लेना, जिल्द चढ़ाना, मचना, आरम्भ होना।

३१३९. **मढ़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा मठ, छोटा घर, छोटा मंडप, धर्मशाला, झोंपड़ी, छोटा मन्दिर, देवालय, कुटि।

३१४०. **मणि, मणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वहुमूल्य रत्न, जवाहिर, भगांकुर, योनिर्लिंग, लिंग, घड़ा, पत्थर विशेष, नग।

३१४१. **मतंग, मतङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथी, बादल, गज, करी, एक मुनि।

३१४२. **मत** (संज्ञा पु०) (सं०) सम्मति, राय, भाव, आशय, धर्म, पन्थ, समुदाय, मजहब, ज्ञान, पूजा, अभिप्राय, सिद्धान्त, रीति, ढब, विचार, धर्मपन्थ, (अँ०) वोट।

३१४३. **मतलब** (संज्ञा पु०) (अँ०) अभिप्राय, आशय, तात्पर्य, अपना हित, स्वार्थ, विचार, उद्देश्य, अर्थ, मानी, सम्बन्ध, वास्ता।

३१४४. **मतवाला** (वि०) (हिं०) मस्त, मदमस्त, पागल, उन्मत्त, मदमाता, अहंकारी, अभिमानी।

३१४५. **मति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समझ, बुद्धि, सलाह, सम्मति, इच्छा, ख्वाहिश, स्मृति, मेधा, मनीषा, धी, (वि०) बुद्धिमान्, चतुर, (अव्यय) (हिं०) सदृश्य, समान।

३१४६. **मत** (वि०) (सं०) मस्त, मतवाला, पागल, प्रसन्न, खुश, उन्मत्त, (संज्ञा पु०) धतूरा, कोयल, (संज्ञा स्त्री०) मात्रा।

३१४७. **मत्था** (संज्ञा पु०) (हिं०) भाल, ललाट, माथा, सिर, कपाल, मूँड़, मथा, मस्तक।

३१४८. **मत्सर** (संज्ञा पु०) (सं०) डाह, जलन, क्रोध, गुस्सा, द्वेष, ईर्ष्या, हसद, (वि०) कृपण, कंजूस।

३१४९. **मत्स्य** (संज्ञा पु०) (सं०) मछली, नारायण, बारहवीं राशि,

मीन राशि, मांछ, मीन, पुराण विशेष ।

३१५०. **मथना** (क्रि०) (हिं०) बिलोना, नष्ट करना, ध्वंस करना, खोज करना, महना, घी निकालना, (संज्ञा पु०) मथानी, रई ।

३१५१. **मद** (संज्ञा पु०) (सं०) हर्ष, आनन्द, वीर्य, कस्तूरी, नशा, मद्य, शराब, विक्षिप्तता, पागलपन, शहद, गर्व, घमंड, उन्माद, कामदेव, उमंग, कामोन्मत्तता, मोह, (संज्ञा स्त्री०) (अं०) विभाग, सरिश्ता, खाता, रक़म, बात, पद, शीर्षक, अधिकार, ऊँची लहर, (अं०) आइटम, (वि०) (सं०) मत्त, मतवाला ।

३१५२. **मदकल** (वि०) (सं०) मत, मतवाला, बावला, पागल ।

३१५३. **मदगंधा, मदगन्धा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मद्य, शराब, अलसी, अतसि ।

३१५४. **मदजिलु** (संज्ञा पु०) (सं०) मद्य, शराब, कामदेव, कलवार, मेघ ।

३१५५. **मदद** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सहायता, सहारा, सहयोग, (अं०) हैल्प ।

३१५६. **मदन** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, प्रेम, अनुराग, कामक्रीड़ा, आलिंगन, खैर, मौलसिरी, मोम, भ्रमर, मैना, खंजनपक्षी, वसन्त ऋतु ।

३१५७. **मदनक** (संज्ञा पु०) (सं०) मदन वृक्ष, मैनफल, मोम, खैर, दौना, धतूरा, मौलसिरी ।

३१५८. **मदन शलाका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मैना, कोकिला, कोयल ।

३१५९. **मदनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुरा, शराब, कस्तूरी, मेथी, अतिपुष्प, वायवृक्ष ।

३१६०. **मदार** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथी, धूर्त, सूअर, (हिं०) आक-वृक्ष, मदारी ।

३१६१. **मदारी** (संज्ञा पु०) (हिं०) कलंदर, बाजीगर, इन्द्रजाली, सपेरा, नटवर, नट ।

३१६२. **मदिरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुरा, दारु, मद्य, आसव, शराब ।

३१६३. **मदोन्मत्त** (वि०) (सं०) मदान्ध, घमंडी, मदोद्धत, मदमाता, गर्वीला, अभिमानी।

३१६४. **मद्धे** (अव्यय) (हिं०) बीच में, विषय में, बावत, हिसाब में।

३१६५. **मधु** (संज्ञा पु०) (सं०) शहद, मकरन्द, पानी, जल, शराब, सुधा, अमृत, घी, मक्खन, दूध, मिसरी, मुलेठी, अशोक वृक्ष, महादेव, वसन्त ऋतु, चैत्रमास, पुष्प रस, मद्य, (वि०) मीठा, स्वादिष्ट।

३१६६. **मधुक** (संज्ञा पु०) (सं०) महुए का फूल या पेड़, मुलेठी, जेठीमधु।

३१६७. **मधुकर** (संज्ञा पु०) (सं०) भौंरा, कामी पुरुष, घमरा, भँगरा, भ्रमर।

३१६८. **मधुकरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वाटी, भौंरी, भ्रमरी, मधूकरी, अतिथि भिक्षा।

३१६९. **मधुप** (संज्ञा पु०) (सं०) भौंरा, मधुमक्खी, उद्धव, (वि०) मधु पीनेवाला।

३१७०. **मधुपुष्प** (संज्ञा पु०) (सं०) अशोक वृक्ष, बकुलवृक्ष, महुआ, सिरस वृक्ष।

३१७१. **मधुर** (क्रि०) (सं०) मीठा, सुन्दर, मनोरंजक, सुस्त, मट्ठर (पशु), मंदगामी, सुनिष्ट, हलका, (संज्ञा पु०) (सं०) मीठा रस, लाल ऊख, थान, गुड़, जीवक वृक्ष, मटर, महुआ, जंगली बेर, विष, लेहा, काकोली।

३१७२. **मधुरता** (संज्ञा पु०) (सं०) मिठास, मधुरई, सौन्दर्य, सुन्दरता, कोमलता, सुकुमारता।

३१७३. **मधुरसा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दाख, मुरब्बा, गम्भारी, दुधिया, शतपुष्पी, प्रसारिणी लता।

३१७४. **मधुरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मदुरानगर, मथुरानगर, शतपुष्पा, मीठा नींबू, मुलेठी, मेदा, महाभेदा, काकोली, सतावर, सेम, सौंफ़, मसूर, मीठी खजूर।

३१७५. **मधुराई** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मधुरता, मधुरिमा, मिठास,

सुन्दरता, कोमलता ।

३१७६. मधुस्रवा (संज्ञा पु०) (सं०) मलेठी, मूर्वा, संजीवनी बूटी, मधूलिका, (संज्ञा पु०) महुए का वृक्ष ।

३१७७. मध्य (संज्ञा पु०) (सं०) कमर, कटि, अन्तर, फ़र्क़, पश्चिम दिशा, विश्राम (वि०) उपयुक्त, ठीक, बीच का, अधम, नीच, अन्तराल, माँझ, मँझार ।

३१७८. मध्यम (त्रि०) (सं०) मध्य का, बीच का, औसतमान का, (संज्ञा पु०) स्वर विशेष, राग विशेष, मध्य देश ।

३१७९. मध्यमा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटा जामुन, कनियारि, विवाह योग्य कन्या, काकोली, बीच की अँगुली ।

३१८०. मन (संज्ञा पु०) (हिं०) इच्छा, इरादा, विचार, चित्त, हृदय, आत्मा, अन्तःकरण, उर, दिल, अन्तर, वक्षःस्थल, पित्तस्थान, ब्रह्मपुर, भीतर, मनुवा, मानस, जीय, जी, जीवनाधार, तबीयत, (हिं०) मणि, रत्न, बाट ।

३१८१. मनचला (वि०) (हिं०) निडर, धीर, साहसी, रसिक, चंचल, अधीर ।

३१८२. मनचाहा (वि०) (हिं०) इच्छित, चाहा हुआ, अभिलषित, यथेष्ट ।

३१८३. मनन (संज्ञा पु०) (सं०) चिन्तन, सोचना, स्मरण, ध्यान, बिचार ।

३१८४. मनमोहन (वि०) (हिं०) प्यारा, लुभानेवाला, प्रिय, मोहक, मोहनेवाला, मनभावन, मनोहर, सुन्दर, सुहावना, (संज्ञा पु०) श्रीकृष्ण, सदाबहार (वृक्ष) ।

३१८५. मनशा (संज्ञा स्त्री०) (अ०) इच्छा, इरादा, अर्थ, तात्पर्य, मतलब, अभिलाष, मनसा, मनोरथ, राय, सम्मति, कामना ।

३१८६. मनसब (संज्ञा पु०) (अ०) पद, स्थान, वृत्ति, कर्म, काम, अधिकार ।

३१८७. मनसा (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कामना, इच्छा, संकल्प,

इरादा, अभिलाषा, मनोरथ, मन, बुद्धि, अभिप्राय, तात्पर्य, प्रयोजन (संज्ञा स्त्री०) एक देवी (क्रि०) मन से, मन के द्वारा।

३१८८. **मनसूबा** (संज्ञा पु०) (अ०) युक्ति, आयोजन, ढंग, विचार, इरादा।

३१८९. **मनस्कान्त** (संज्ञा पु०) (सं०) अभिलाषा, मनोरथ, (वि०) प्रिय, प्यारा।

३१९०. **मनस्ताप** (संज्ञा पु०) (सं०) आन्तरिक पछतावा, अनुताप, पश्चात्ताप, मनःकष्ट, मानसिक दुःख।

३१९१. **मनहूस** (वि०) (अ०) अशुभ, बुरा, अप्रिय-दर्शन, सुस्त, आलसी।

३१९२. **मना** (वि०) (अ०) निषिद्ध, वर्जित, अनुचित, नामुनासिब।

३१९३. **मनिया** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गुरिया, मनिका, कण्ठी, माला, मनका।

३१९४. **मनियार** (वि०) (हिं०) उज्ज्वल, चमकीला, स्वच्छ, शोभा-युक्त।

३१९५. **मनीषी** (वि०) (सं०) पंडित, ज्ञानी, बुद्धिमान्, अक्लमन्द।

३१९६. **मनु** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, अन्तःकरण, मन, मन्तर, ब्रह्मा, मनुआ, (अव्यय) (हिं०) मानों, जैसे।

३१९७. **मनुआँ** (संज्ञा पु०) (हिं०) मन, मनुष्य, (देशज) देवकपास, नर्मा।

३१९८. **मनुष्यता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आदमीपन, दयाभाव, शील, सभ्यता, शिष्टता, व्यवहारज्ञान, मनुष्यपन, मनुसाई, इन्सानियत, आदमीयत।

३१९९. **मनुसाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पुरुषार्थ, पराक्रम, बहादुरी, मनुष्यता, आदमीयत।

३२००. **मनुहार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मनावन, खुशामद, विनय, प्रार्थना, शान्ति, तृप्ति, आदर-सत्कार।

३२०१. **मनुहारना** (क्रि०) (हिं०) मनाना, खुशामद करना, विनय करना, प्रार्थना करना, आदर-सत्कार करना।

३२०२. **मनोज** (वि०) (सं०) वेगवान्, पितृतुल्य, (संज्ञा पु०) विष्णु, तीर्थ विशेष।

३२०३. **मनोज्ञ** (वि०) (सं०) सुन्दर, मनोहर, मनभावन, रमणीय, मनोरम, सुगढ़।

३२०४. **मनोज्ञता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुन्दरता, मनोहरता, खूबसूरती, मनोरमा, सुषमा।

३२०५. **मनोज्ञा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कलौंजी, जावित्री, मदिरा।

३२०६. **मनोहर** (वि०) (सं०) सुन्दर, मनोज्ञ, स्वर्ण, सोना, कुन्दपुष्प, सुघड़।

३२०७. **मन्यु** (संज्ञा पु०) (सं०) स्तोत्र, कर्म, शोक, योग, क्रोध, दीनता, अहंकार, अग्नि, शिव।

३२०८. **ममता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ममत्व, अपनापन, स्नेह, प्रेम, मोह, लोभ, गर्व, अभिमान।

३२०९. **मय** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊँट, अश्वतर, खच्चर, घोड़ा, सुख, (प्रत्यय) युक्त।

३२१०. **मया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चिकित्सा, (हि०) माया, भ्रमजाल, संसार, जगत्, जीवन, प्रेमपाश, मोह, ममता, दया, अनुकम्पा।

३२११. **मयूख** (संज्ञा पु०) (सं०) दीप्ति, प्रकाश, किरण, रश्मि, ज्वाला तेज, ज्योति, शोभा, कील, पर्वत।

३२१२. **मयूरक** (संज्ञा पु०) (सं०) चिचड़ा, मोर, तूतिया, मयूर, पक्षी विशेष, शिखी, केकी।

३२१३. **मर** (संज्ञा पु०) (सं०) मृत्यु, संसार, जगत्, पृथ्वी, प्राणवियोग, मौत।

३२१४. **मरक** (संज्ञा पु०) (सं०) मृत्यु, मरण, महामारी, मरी (हि०) संकेत, इशारा।

३२१५. **मरघट** (संज्ञा पु०) (सं०) मसान, श्मसान, मुर्दाघाट, शव-दाह-स्थान, भूमिशय्या, समाधि, अन्तःशय्या, मृत्युशय्या, मरनघाट, आदहन, चिताभूमि, चितभूमि, प्रेतगेह, पितृकानन, कब्रिस्तान, (वि०) मनहूस, रोना, विकराल आकृतियुक्त ।

३२१६. **मरजाद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सीमा, हद, प्रतिष्ठा, आदर, महत्त्व, रीति, नियम, परिपाटी, मर्यादा ।

३२१७. **मरजी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) इच्छा, कामना, प्रसन्नता, खुशी, स्वीकृति, आज्ञा ।

३२१८. **मरण** (संज्ञा पु०) (सं०) मृत्यु, मौत, प्राण-वियोग, वछनाग ।

३२१९. **मरतबा** (संज्ञा पु०) (हिं०) पद, ओहदा, बार, दफ़ा ।

३२२०. **मरदई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मनुष्यत्व, साहस, वीरता, बहादुरी, मरदानगी, शौर्य ।

३२२१. **मरदना** (क्रिया) (हिं०) मसलना, मलना, ध्वंस करना, चूर्ण करना, माँड़ना, गूँधना ।

३२२२. **मरना** (क्रि० अं०) (हिं०) कष्ट उठाना, दुःख सहना, मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना, बेकाम हो जाना, पराजित होना, हारना, पछताना, रोना, डाह करना, जलना, प्राण छूटना, मर जाना, प्राणान्त होना ।

३२२३. **मरनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मृत्यु, मौत, दुःख, कष्ट, हैरानी ।

३२२४. **मरभुक्खा** (वि०) (हिं०) भुक्खड़, कँगाल, दरिद्र, बिनखाया, खाऊ, पेटू ।

३२२५. **मरातिब** (संज्ञा पु०) (अ०) पद, ओहदा, तल्ला, पृष्ठ, मंज़िल ।

३२२६. **मरायल** (वि०) (हिं०) निःसत्व, सत्यहीन, मरियल, निबल, बार-बार मार खाने वाला, (संज्ञा पु०) घाटा, टोटा ।

३२२७. **मराल** (संज्ञा पु०) (सं०) हंस, बत्तख, घोड़ा, हाथी, बादल, काजल, कारंडव पक्षी, दुष्ट, खल, राजहंस, मेघ, पक्षी-विशेष ।

३२२८. **मरियम** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अविवाहित लड़की, कुमारी,

कन्या, पतिव्रता ।

३२२९. **मरीचि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) किरण, कान्ति, ज्योति, मृग-तृष्णा, राशि, मरीचिका ।

३२३०. **मरु** (संज्ञा पु०) (सं०) मरुस्थल, रेगिस्तान, मारवाड देश, निर्जल देश, मरुआ-पेड़ ।

३२३१. **मरुत्** (संज्ञा पु०) (सं०) पवन, प्राण, सोना, मरुआ, गठिवन, असबर्ग, सौन्दर्य, वायु ।

३२३२. **मरुभूमि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रेगिस्तान, निर्जल देश, शुष्क देश ।

३२३३. **मरुवक** (संज्ञा पु०) (सं०) मरुआ, नागदौना, तिल का पौदा, व्याघ्र, बाघ, राहु ।

३२३४. **मरोड़** (संज्ञा पु०) (हिं०) भाव, घुमाव, ऐंठन, व्यथा, क्षोभ, घमंड, क्रोध, गुस्सा, वल, पेट का दर्द ।

३२३५. **मरोड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ऐंठन, घुमाव, बल, गुत्थी, गाँठ ।

३२३६. **मर्क** (संज्ञा पु०) (सं०) देह, शरीर, वायु, हवा, बन्दर, मर्कट ।

३२३७. **मर्कट** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्दर, बानर, कपि, कीश मकड़ा, मर्कक ।

३२३८. **मर्कटी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वानरी, मकड़ी, कौंछ, अपामार्ग, अजमोदा ।

३२३९. **मर्करा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुरंग, तहखाना, भाँडा, बर्तन, बाँझ स्त्री ।

३२४०. **मर्तबा** (संज्ञा पु०) (अ०) पद, पदवी, बार, बेर, दफ़ा ।

३२४१. **मर्त्य** (संज्ञा पु०) (सं०) शरीर, भूलोक, मनुष्य, मरणधर्मा, मनई, मानव ।

३२४२. **मर्द** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) मनुष्य, पुरुष, नर, पुरुषार्थी, व्यक्ति,

वीर, पति, खसम।

३२४३. **मर्दन** (संज्ञा पु०) (सं०) कुचलना, रौंदना, मसलना, नाश करना, उजाड़ना, गात्रमर्दन, अंगचम्पी, मलन, रगड़न, मालिश, ध्वंस, नाश, (वि०) कुचलने वाला।

३२४४. **मर्दाना** (वि०) (फा०) पुरुष-सम्बन्धी, मनुष्योचित, वीरोचित, वीर, साहसी, पुरुषों-सा।

३२४५. **मर्म** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वरूप, रहस्य, भेद, सन्धि-स्थान, अभिप्राय, आशय।

३२४६. **मर्यादा, मर्य्यादा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीमा, हद, तट, किनारा, सदाचार, नियम, मान, प्रतिष्ठा, गौरव, धर्म, पत, देश।

३२४७. **मर्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) क्षमा, माफ़ी, घर्षण, रगड़, तितिक्षा, शान्ति, सहन, (वि०) ध्वंसक, विनाशक।

३२४८. **मल** (संज्ञा पु०) (सं०) मैल, गन्दगी, विष्ठा, गू, दोष, विकार, पाप, दोष, बुराई, प्रकृतिदोष।

३२४९. **मलकना** (क्रि०) (हिं०) हिलना-डोलना, इतराना, इठलाना, मटकना, नखरे से चलना, मटक कर चलना।

३२५०. **मलना** (क्रि०) (हिं०) मसलना, मींजना, मालिश करना, मरोड़ना, ऐंटना, घसना, मर्दन करना, साफ़ करना, रगड़ना।

३२५१. **मलबा** (संज्ञा पु०) (हिं०) कूड़ा-कर्कट, कतवार, मल, कूड़ा, मैल, टूटी-फूटी इमारत के अवशेष।

३२५२. **मलय** (संज्ञा पु०) (सं०) मलाबार देश और वहाँ का निवासी, सफ़ेद चन्दन, शलांग, पर्वत विशेष, दक्षिणाचल, चन्दनाद्रि, देश विशेष, उपद्वीप विशेष।

३२५३. **मलाई** (संज्ञा स्त्री०) (देशज) साढ़ी, सार, तत्व, दूध की मलाई, मलने की मज़दूरी।

३२५४. **मलाका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कामिनी स्त्री, कामातुर स्त्री, वेश्या, दूती, हथिनी।

३२५५. **मलाल** (संज्ञा पु०) (अ०) उदासी, उदासीनता, दुःख, रंज।

३२५६. **मलिका** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) रानी, अधीश्वरा, पुष्प विशेष, मृत्तिका पात्र, दोना।

३२५७. **मलिन** (वि०) (सं०) मैल, गन्दला, दूषित, खराब, बदरंग पापात्मा, पापी, धुँधला, धीमा, फीका, म्लान, विषण्ण, उदासीन, असुन्दर, अस्वच्छ, अशुद्ध, (संज्ञा पु०) पाशुपत, सोहागा, मट्ठा, हंसा, दस्तामूठ, पाप, दोष, काला, अगर।

३२५८. **मलिनमुख** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, आग, बैल की पूँछ, प्रेत, (वि०) मलिन मुँहवाला, क्रूर, खल।

३२५९. **मलिम्लुच** (संज्ञा पु०) (सं०) मलमास, अधिकमास, अग्नि, चोर, पवन, वायु, तस्कर, वायु, हवा।

३२६०. **मलीमस** (संज्ञा पु०) (सं०) लोहा, पीला, कसीस, पाप (वि०) पापी, मैला, काला।

३२६१. **मलोला** (संज्ञा पु०) (हि०) मानसिक व्यथा, दुःख, रंज, अरमान, उत्कट इच्छा, लालसा।

३२६२. **मल्ल** (संज्ञा पु०) (सं०) पहलवान, पट्ठा, दीप, कपोल, पात्र, बलवान बाहुयोद्धा।

३२६३. **मल्लु, मल्लू** (संज्ञा पु०) (सं०) भालू, रीछ, बंदर।

३२६४. **मवाद** (संज्ञा पु०) (अ०) सामग्री, मसाला, सामान, पीब, मल, गंदगी।

३२६५. **मशक** (संज्ञा पु०) (सं०) मच्छर, डाँस, मच्छड़, मसा (रोम), मसक, धाँस।

३२६६. **मशक्कत** (संज्ञा स्त्री) (अ०) श्रम, परिश्रम, मेहनत।

३२६७. **मषि** (संज्ञा स्त्री) (सं०) काजल, सुरमा, स्याही, मस, रोशनाई।

३२६८. **मसका** (संज्ञा पु०) (फा०) नवनीत, मक्खन, घी, कायस्थ।

३२६९. **मसकीन** (वि०) (अ०) ग़रीब, दीन, बेचारा, साधु, सन्त, दरिद्र,

कंगाल, भोला, सुशील।

३२७०. **मसखरा** (वि०) (अ०) हँसोड़, विदूषक, नक्काल।

३२७१. **मसखरापन** (संज्ञा पु०) (अ०) हँसी दिल्लगी, ठट्ठा, ठठोली।

३२७२. **मसखरी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) हँसी, मज़ाक, दिल्लगी, चुलबुलाहट।

३२७३. **मसला** (संज्ञा पु०) (अ०) कहावत, लोकोक्ति, समस्या, विचारणीय विषय।

३२७४. **मसाला** (संज्ञा पु०) (हिं०) साधारण सामग्री, उपकरण, मिर्च, तेल, आतिशबाजी, सुन्दर युवती (बाजारू)।

३२७५. **मसि** (संज्ञा स्त्री) (हिं०) रोशनाई, काजल, कालिख।

३२७६. **मसूरिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शीतला, माता, चेचक, छोटी माता, कुटनी।

३२७७. **मसूसना** (क्रि०) (हिं०) ऐंठना, मरोड़ना, निचोड़ना, ज़ब्त करना, कुढ़ना, कलपना।

३२७८. **मसोसना** (क्रि०) (हिं०) ज़ब्त करना, कुढ़ना मनोवेग को रोकना, ऐंठना, मरोड़ना, निचोड़ना।

३२७९. **मसोसा** (संज्ञा पु०) (हिं०) मानसिक पीड़ा, पश्चात्ताप, पछतावा।

३१८०. **मसौदा** (संज्ञा पु०) (अ०) प्रारूप, प्रालेख, युक्ति, तरकीब।

३२८१. **मस्कर** (संज्ञा पु०) (सं०) वंश, खानदान, ज्ञान, गति।

३२८२. **मस्करी** (संज्ञा पु०) (हिं०) संन्यासी, भिक्षु, चन्द्रमा, मज़ाक, दिल्लगी।

३२८३. **मस्त** (वि०) (फ़ा०) मतवाला, मदोन्मत्त, परम आनंदित, मदपूर्ण, अभिमानी, प्रसन्न, निश्चिन्त।

३२८४. **महँगी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) महँगापन, दुर्भिक्ष, अकाल, दुःसमय।

३२८५. **महत्** (वि०) (सं०) महान्, बृहत्, बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, श्रेष्ठ,

मान्य, माननीय, पूज्य, श्रद्धेय (संज्ञा पु०) ब्रह्म, राज्य, जल ।

३२८६. **महता** (संज्ञा पु०) (हिं०) मुखिया, महतो, सरदार, मुंशी, लेखक (संज्ञा स्त्री०) अभिमान, घमंड, महत्तत्व, विज्ञान शक्ति, (संज्ञा पु०) चौधरी ।

३२८७. **महताब** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) चाँदनी, चन्द्रिका, आतिशबाजी, (संज्ञा पु०) चन्द्रमा ।

३२८८. **महती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बनभंटा, वीणा (नारद की) महिमा, बड़ाई, (वि०) बहुत बड़ी, महान् ।

३२८९. **महत्तत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) बुद्धितत्व, जीवात्मा, महता ।

३२९०. **महत्त्व** (संज्ञा पु०) (सं०) बड़प्पन, बड़ाई, गुरुता, श्रेष्ठता, उत्तमता, उच्चता, प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, बड़प्पन (अं०) इम्पौरटैंस ।

३२९१. **महदूद** (वि०) (अ०) परिमित, सीमित, मर्यादित ।

३२९२. **महनीय** (वि०) (अ०) प्रतिष्ठा पात्र, माननीय, पूज्य, महान्, महत् ।

३२९३. **महफिल** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सभा, जलसा, गोष्ठी, सम्मेलन, समूह ।

३२९४. **महबूब** (संज्ञा पु०) (अ०) प्रेमपात्र, मित्र-दोस्त, प्यारा, प्रिय, प्रेमी, आशिक, पति ।

३२९५. **महबूबा** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) प्रेमिका, माशूका, प्यारी, प्रियतमा, पत्नी ।

३२९६. **महमंत, महमन्त** (वि०) (हिं०) मदमस्त, उन्मत्त, मदमत्त ।

३२९७. **महर** (संज्ञा पु०) (हि०) प्रधान, मुख्य, नेता (वि०) (डि०) दयालु, दयावान् (वि०) (हिं०) सुगन्धित ।

३२९८. **महरम** (संज्ञा पु०) (अं०) भेदी, जानकार, (संज्ञा स्त्री०) अंगिया ।

३२९९. **महरि, महरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) घरवाली, मालकिन, दहिंगल या ग्वालिन नामक पक्षी ।

३३००. **महल** (संज्ञा पु०) (अ०) बड़ा मकान, प्रासाद, रनिवास, अन्तःपुर, बड़ा कमरा, अवसर, मौका, मधुमक्खी, डंगर ।

३३०१. **महसूल** (संज्ञा पु०)(अ०) कर, टैक्स, चुंगी, भाड़ा, किराया, लगान, मालगुज़ारी ।

३३०२. **महा** (वि०) (सं०) बहुत अधिक, सर्वश्रेष्ठ, सबसे बड़ा, बहुत बड़ा (संज्ञा पु०) (हिं०), मट्ठा, छाछ (वि०) उत्तम, महान् ।

३३०३. **महाकंद, महाकन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) लहसुन, प्याज़ ।

३३०४. **महाकच्छ** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, वरुणदेव, पर्वत, पहाड़ ।

३३०५. **महागंध, महागन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्दन, कुटज, जलबेंत ।

३३०६. **महागंधा, महागन्धा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नागवला, केवड़ा, चामुण्डा ।

३३०७. **महागणपति** (संज्ञा पु०) (सं०) गणपति, गणेश, शिव का एक अनुचर ।

३३०८. **महागद** (संज्ञा पु०)(सं०) बुख़ार, ज्वर, औषध विशेष, रोग ।

३३०९. **महाघोष** (संज्ञा पु०) (सं०) भारी शब्द, हाट, बाज़ार ।

३३१०. **महाचंड, महाचण्ड** (वि०) (सं०) प्रचंड, भयानक (संज्ञा पु०) यमदूत ।

३३११. **महाजन** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, साधु, धनी व्यक्ति, धनवान्, बनिया, व्यापारी, भलामानुस, कोठीवाल, ऋण देने वाला, साहूकार, (अँ०) क्रेडिटर ।

३३१२. **महात्मा** (संज्ञा पु०) (सं०) महादेव, महत्तत्व, परमात्मा (वि०) (सं०) साधु, महापुरुष, सदाचारी, श्रेष्ठ, उच्च, महाशय, महानुभाव, धार्मिक ।

३३१३. **महातम** (संज्ञा पु०)(सं०) माहात्म्य, उपकारिता, उपयोगिता, प्रसिद्धि, बड़ाई, अन्धकार, अन्धेरा ।

३३१४. **महाद्रुम** (संज्ञा पु०) (सं०) पीपल, ताड़, महुआ ।

३३१५. **महाधन** (वि०) (सं०) बहुमूल्य, धनी (संज्ञा पु०) (सं०)

स्वर्ण, सोना, धूप, सुगन्ध धूप, कृषि, खेती ।

३३१६. **महाधिवक्ता** (संज्ञा पु०) (सं०) महाव्यावहारिक, अभिभाषक, सरकारी ऐडवोकेट, (अं०) ऐडवोकेट जनरल ।

३३१७. **महाध्यक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रधान शासक, प्रशासक, मुख्य प्रदेष्टा (अं०) चीफ़ कमिश्नर ।

३३१८. **महानंद, महानन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) मुरली (दस अंगुली वाली) मुक्ति, मोक्ष ।

३३१९. **महानंदा, महानन्दा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुरा, शराब, माघ-शुक्ला नवमी ।

३३२०. **महानग्न** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेमी, उपपति, यार, प्राचीन-कालीन उच्च राजकर्मचारी ।

३३२१. **महानाद** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथी, ऊँट, सिंह, मेघ, बादल, शंख, ढोल, शिव ।

३३२२. **महानील** (संज्ञा पु०) (सं०) नीलम-रत्न, भृंगराज पक्षी, गुग्गुल, एक नाग, एक पर्वत, सबसे बड़ी संख्या ।

३३२३. **महानुभाव** (वि०) (सं०) महाशय, प्रशस्त हृदय, विशाल-हृदय ।

३३२४. **महापथ** (संज्ञा पु०) (सं०) लम्बा-चौड़ा मार्ग, परलोक मार्ग, मृत्यु, मौत, सुषुम्ना नाड़ी, शिव ।

३३२५. **महापद्म** (संज्ञा पु०) (सं०) संख्या, सफ़ेद कमल, दैत्य ।

३३२६. **महापुष्प** (संज्ञा पु०) (सं०) कुन्द वृक्ष, काला मूंग, लाल कनेर, सुश्रुत कीड़ा ।

३३२७. **महापुरुष** (वि० पु०) (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, सुजान, सज्जन, उत्तम पुरुष, दुष्ट, पाजी (संज्ञा पु०) नारायण ।

३३२८. **महाप्रभु** (संज्ञा पु०) (सं०) ईश्वर, शिव, विष्णु, इन्द्र, राजा, परमात्मा, परमेश्वर चैतन्यदेव, वल्लभाचार्य ।

३३२९. **महाबल** (वि०) (सं०) अतिशय बलवान्, (संज्ञा पु०)

बुद्ध, वायु, सीसा, एक नाग ।

३३३०. **महाबला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सहदेवी (जड़ी बूटी), पीपल, नील ।

३३३१. **महाबलि** (संज्ञा पु०) (सं०) गुफ़ा, आकाश, मन ।

३३३२. **महाबली** (वि०) (सं०) बलवान्, पराक्रमी, पराक्रमशाली, वीर, ताकतवर ।

३३३३. **महामंत्री, महामन्त्री** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रधान मन्त्री, प्रधान-सचिव, महामात्य (अँ०) प्राइम मिनिस्टर ।

३३३४. **महामात्य** (संज्ञा पु०) (सं०) महामन्त्री, प्रधान सचिव ।

३३३५. **महामाया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अनादि, अविद्या, प्रकृति, दुर्गा, गंगा, (संज्ञा पु०) विष्णु, शिव (वि०) मायावी ।

३३३६. **महामारी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) संक्रामक रोग, प्लेग, मरी, मरक ।

३३३७. **महामुनि** (संज्ञा पु०) (सं०) बड़ा मुनी, ठग, धोखेबाज़ (व्यंग्य), बुद्ध, व्यास, अगस्त्य ऋषि, काल, कृपाचार्य, तुंबुरु वृक्ष ।

३३३८. **महायोगी** (संज्ञा पु०) (सं०) शिवजी, विष्णु, मुर्गा ।

३३३९. **महारजत** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वर्ण, सोना, धतूरा ।

३३४०. **महारस** (संज्ञा पु०) (सं०) काँजी, खजूर, कसेरु, पारा, सोना, अरब, मक्खी, रूपामक्खी, ईंगुर, अभ्रक, जामुन वृक्ष, कांतिसार, लोहा ।

३३४१. **महाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) टोला, पाड़ा, भाग, हिस्सा, पट्टी ।

३३४२. **महालय** (संज्ञा पु०) (सं०) तीर्थ, नारायण, एक तीर्थ ।

३३४३. **महाविद्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महाकाली, काली, तारा, षोडशी, मुक्तेश्वरी, भैरवी छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, कमलात्मका, दुर्गा ।

३३४४. **महावीर** (संज्ञा पु०) (सं०) हनुमान्, गरुड़, देवता, सिंह, सफ़ेद घोड़ा, बाज़पक्षी, अत्यधिक वीर, शूर, कोकिल, जैनियों के २४वें गुरु ।

३३४५. **महावीर्य** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, वाराही कन्द, बहादुर ।

३३४६. **महावृक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) सेंहुड़, करंज, ताड़, महापीलु।

३३४७. **महाश्वेता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सरस्वती, दुर्गा, चांदनी, सफ़ेद अपराजिता।

३३४८. **महासुख** (संज्ञा पु०) (सं०) सजावट, शृंगार, बुद्धदेव।

३३४९. **महिवक, महिन्वक** (संज्ञा पु०) (सं०) चूहा, नेवला, छींका।

३३५०. **महिमा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महत्त्व, गौरव, बड़ाई, प्रभाव, प्रताप, श्लाघा, बड़प्पन, प्रशंसा, तारीफ़।

३३५१. **महिषी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भैंस, रानी, सैरिंध्री, औषध विशेष, भैंसा, पटरानी, महारानी, बड़ी रानी।

३३५२. **मही** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, धरणी, धरती, मिट्टी, अवकाश, देश, स्थान, नदी, सेना, झुंड, समूह, गाय, हुरहुर, दही, छाँछ।

३३५३. **महीधर** (संज्ञा पु०) (सं०) पर्वत, शेषनाग, एक छन्द।

३३५४. **महीन** (वि०) (हिं०) पतला, कोमल, धीमा स्वर, बारीक, झीना।

३३५५. **महीना** (संज्ञा पु०) (हिं०) मास, द्विपक्ष, माह, मन्थ, (अँ०) मासिक आय।

३३५६. **महेलिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महिला, रमणी, स्त्री, नारी, बड़ी इलायची, मालकंगनी।

३३५७. **महेश** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, ईश्वर, शंकर, आशुतोष, ईश, ईशान, उमापति, उमेश, कैलाशपति, कामपाल, गंगेश, महादेव, गिरींद्र, गजनाथ, गिरीश, गिरनाथ, जटाचीर, जटाजूट, त्रिपुरदहन, त्रिशूलपाणि, नन्दी, नन्दीश, नाथ, नारायणप्रिय, भूतनाथ, भूतेश, भूपति, गिरिजापति, योगिराज, नीलकंठ।

३३५८. **महेश्वर** (संज्ञा पु०) (सं०) महादेव, शिव, ईश्वर, परमेश्वर, स्वर्ण, सोना, सफ़ेद मदार।

३३५९. **महोदधि** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, सागर।

३३६०. **महोदय** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महाशय, महानुभाव, महाराज,

कान्यकुब्ज देश, स्वर्ग, आधिपत्य, महाफूल, स्वामी, अहंकार (स्त्री०) महोदया।

३३६१. **महौषध** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लहसुन, सोंठ, भूम्यांहुल, वाराहीकन्द, गोंठी, वत्सनाभ, बछनाग, अतीस, पीपल (वि०) उत्तम औषध।

३३६२. **महौषधि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) संजीवनी, लजालू, दूब।

३३६३. **महौषधी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफेद भटकटैया, ब्राह्मी, कुटकी, अतिबला, हिलमोचिका।

३३६४. **माँग** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) चाह, आवश्यकता, छोर, केश-विन्यास, याचना, (अँ०) डिमांड।

३३६५. **मांगल्य, माङ्गल्य** (वि०) (सं०) मंगलकारक, शुभ (संज्ञा पु०) माङ्गलिकता।

३३६६. **मांगल्यकाया, माङ्गल्यकाया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दूब, हल्दी, ऋद्धि, गोरोचन, हर्रे।

३३६७. **माँचा** (संज्ञा पु०) (हि०) खाट, मँजा, छोटी पीढ़ी, मचान, मंच, पलंग, खट्वा।

३३६८. **माँजना** (क्रि०) (हिं०) साफ करना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना, मलना, रगड़ना, माँझा देना, अभ्यास करना, उबलना, उजरा करना।

३३६९. **माँझ** (अव्यय) (हिं०) भीतर, मध्य, बीच, अन्तर, अन्दर, (संज्ञा पु०) अन्तर, फ़रक, नदी के बीच की रेतीली भूमि।

३३७०. **माँझी** (संज्ञा पु०) (हिं०) केवट, मध्यस्थ, ज़ोरावर, बलवान्, कर्णधार, मल्लाह, नाविक।

३३७१. **माँडना** (क्रि०) (हिं०) मलना, मसलना, गूँधना, लेप करना, घोतना, मचाना, चलना, कुचलना, रोंधना।

३३७२. **माँडनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) संजाफ, मग्जी, किनारा।

३३७३. **माँत** (वि०) (हिं०) मरत, उन्मत्त, बेसुध, पागल, दीवाना, बेरौनक, उदास, हारा हुआ, पराजित, मात।

३३७४. **माँद** (वि०) (हिं०) श्रीहीन, उदास, फीका, हलका, मात, पराजित, हारा हुआ, (संज्ञा स्त्री०) देश, गुफ़ा, विवर, खोह, तालाब का पानी।

३३७५. **माँदगी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) रोग, बिमारी, थकावट।

३३७६. **माँसल** (वि०) (सं०) माँसपूर्ण, मोटा-ताजा, पुष्ट, मजबूत, दृढ़।

३३७७. **माँसी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जटामांसी, काकोली, मांसरोहिणी, इलायची।

३३७८. **मा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माता, जननी, लक्ष्मी, ज्ञान, प्रकाश, दीप्ति।

३३७९. **माकूल** (वि०) (अ०) उचित, ठीक, वाजिब, अच्छा, बढ़िया, कायल, यथेष्ट, पूरा।

३३८०. **माक्षिक** (संज्ञा पु०) (सं०) शहद, मधु, सोना माखी, रूपा-माखी।

३३८१. **माख** (संज्ञा पु०) (हिं०) अप्रसन्नता, नाराजगी, घमंड, अभिमान, पछतावा, रुष्ट, रोष, क्रोध।

३३८२. **मागधी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छोटी पीपल, सफ़ेद खांड, जुही, जूथिका, जीरा, छोटी इलायची, मगध की भाषा, मगध की राजकुमारी।

३३८३. **माचल** (वि०) (हिं०) हठी, जिद्दी, मचला, मचाने वाला, (संज्ञा पु०) (सं०) ग्रह, बीमारी कैदी, चोर।

३३८४. **माटी** (संज्ञा पु०) (हिं०) मिट्टी, मृत्तिका, मृत-शरीर, शव, देह, धूल, रज।

३३८५. **माठर** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्राह्मण, कलवार।

३३८६. **माड़ना** (क्रि० अ०) (हिं०) मचाना, ठानना, करना, मण्डित करना, भूषित करना, पहनना, धारण करना, आदर करना, पूजना, मलना, मसलना।

३३८७. **मात** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) माता, माँ, (अ०) पराजय, हार, (वि०) (अ०) पराजित, (हिं०) मतवाला।

३३८८. **माता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्त्री, जननी, माँ, कोई पूजनीय बड़ी स्त्री, गौ, भूमि, विभूति, लक्ष्मी, खेती, इन्द्रवारुणी, जटामांसी, शीतला, अम्बा, अम्ब, जनित्री, धात्री, महतारी, मात, मैया, जन्मदात्री, मातृका, सावित्री, अतिपातक, (वि०) (हिं०) मतवाला।

३३८९. **मातुल** (संज्ञा पु०) (सं०) मामा, मदनवृक्ष, धतूरा, साँप।

३३९०. **मातुला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मातुलानी, मामी, सन, प्रियंगु, भाँग।

३३९१. **मातृका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माता, उपमाता, विमाता, सौतेली माँ, धात्री, धाय, एक देवी।

३३९२. **मात्रा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) परिणाम, मिकदार, बारहखड़ी, परिच्छेद, शक्ति, अवयव, अंग, रूप, मोताद, रेखा, स्वर।

३३९३. **माद** (संज्ञा पु०) (सं०) अभिमान, घमंड, शेखी, हर्ष, प्रसन्नता, मस्ती।

३३९४. **मादन** (वि०) (सं०) मादक, उन्मादकारी, नशेवाला (संज्ञा पु०) लौंग, मदनवृक्ष, धतूरा, नशीली वस्तु, एक कामबाण।

३३९५. **माद्दा** (संज्ञा पु०) (अ०) मूलतत्व, योग्यता, सामर्थ्य, मवाद, पीव, शब्द का मूल, शब्द की व्युत्पत्ति।

३३९६. **माधव** (संज्ञा पु०) (सं०) एक लता, तुलसी, दुर्गा, कुटनी शहद की चीनी, मदिरा विशेष, महुवे का मधु, लता विशेष, वासन्ती लता।

३३९७. **माधवी** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, वैसाख मास, महुआ वृक्ष, वसंत ऋतु, काला उड़द।

३३९८. **माधुरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मधुरता, मिठास, मिठाई, मीठापन, शोभा, मदिरा, शराब।

३३९९. **माधुर्य** (संज्ञा पु०) (सं०) मधुरता, लावण्य, सौन्दर्य, मिठाई, मिठास, पांचाली, मीठापन।

३४००. **माध्यस्थ** (संज्ञा पु०) (सं०) पंच, मध्यस्थ, दलाल, पुरोहित, कुटनी ।

३४०१. **माध्यस्थ्य** (संज्ञा पु०) (सं०) मध्यस्थता, तटस्थता, निरपेक्षता सामर्थ्य, बीच-बचाव ।

३४०२. **मान** (संज्ञा पु०) (सं०) परिमाण, मिक़दार, पैमाना, घमंड, प्रतिष्ठा, सम्मान, इज़्ज़त, रूठना, अभिमान, शक्ति, ग्रह, मंत्र, आदर ।

३४०३. **मानना** (क्रि० अ०) (हिं०) सहमत होना, राज़ी होना, प्रसन्न होना ।

३४०४. **मानव** (संज्ञा पु०) (हिं०) मनुष्य, आदमी, मनुज ।

३४०५. **मानस** (संज्ञा पु०) (सं०) मन, हृदय, मानसरोवर, कामदेव, संकट, मनुष्य, आदमी, दूत, चर, मान ।

३४०६. **मानसिक** (वि०) (सं०) मन-सम्बन्धी, मन का, मन से उत्पन्न (संज्ञा पु०) विष्णु ।

३४०७. **माना** (क्रि०) (हिं०) नापना, तौलना, जाँचना, परखना ।

३४०८. **मानी** (वि०) (हिं०) अहंकारी, घमंडी, गौरवान्वित, सम्मानित, मनोयोगी (संज्ञा पु०) कुंभ, घड़ा, साधारण छेद (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अर्थ, तात्पर्य, मतलब, तत्त्व, रहस्य, प्रयोजन, कारण, हेतु ।

३४०९. **मान्य** (वि०) (हिं०) मानने योग्य, माननीय, सम्मान्य, पूजनीय, पूज्य, प्रार्थनीय, सत्कार, योग्य, पूज्य, (संज्ञा पु०) विष्णु, शिव, मैत्रावरुण ।

३४१०. **माफ़िक** (वि०) (हिं०) अनुकूल, अनुसार, योग्य ।

३४११. **माम** (संज्ञा पु०) (हिं०) ममता, ममत्व, प्रेम, अहंकार ।

३४१२. **मामता** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम, अनुराग ।

३४१३. **मामल** (संज्ञा पु०) (अ०) परिपाटी, रीति, प्रथा, टेव, लत ।

३४१४. **मामला** (संज्ञा पु०) (अ०) काम, व्यापार, झगड़ा, विवाद, मुकदमा, प्रधान विषय ।

३४१५. **मामूली** (वि०) (अ०) नियमित, सामान्य, साधारण ।

३४१६. **माय** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) माता, माँ, जननी, (संज्ञा पु०) (सं०) पीतांबर, असुर।

३४१७. **माया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, धन, संपत्ति, अविद्या, अज्ञानता, छल, कपट, प्रकृति, जादू, ममत्व, अपनापन, इन्द्रजाल, कृपा, मोह, दया, करुणा, अनुकम्पा, प्रेम, स्नेह, धोखा, सम्पत्ति, योगमाया, इन्द्रजाल-विद्या।

३४१८. **मायावी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छलिया, फ़रेबी, धूर्त, जादूगर, परमात्मा, बिल्ली, छली, कपटी, राक्षस विशेष।

३४१९. **मार** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, विष, ज़हर, धतूरा, विघ्न, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आघात, चोट, लक्ष्य, निशाना, मारपीट, लड़ाई, माला, प्रहार, लड़ाई, (अव्यय) (हिं०) अत्यन्त, बहुत।

३४२०. **मारना** (क्रि०) (हिं०) प्राण लेना, वध करना, प्रहार करना, पीटना, ज़रब लगाना, फेंकना, बन्द कर देना, नष्ट कर देना, शिकार करना, चलाना, संचालित करना, लगाना, जीतना, प्रभाव कम करना, बिगड़ना।

३४२१. **मार्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) रास्ता, पंथ, पथ, मृगशिरा नक्षत्र, विष्णु, लाल जपामार्ग, गुदा, कस्तूरी, सड़क, बाट, राह।

३४२२. **मार्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) सफ़ाई, लोव वृक्ष, परिष्कारकरण, शोधन।

३४२३. **मार्तंड, मार्तण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, आक, मदार, सूअर, सोनामाखी।

३४२४. **माल** (संज्ञा पु०) (सं०) क्षेत्र, कपट, जंगल, वन, विष्णु, हरताल, मल्ल, पट्ठा, पहलवान (हिं०) (संज्ञा स्त्री०) माला, हार।

३४२५. **मालती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) युवती, चाँदनी, ज्योत्स्ना, रात्रि, रात, पाठा, पाढ़ा, पुष्प विशेष, मोदिनी, मल्लिका, मुक्तबन्धना, मदयन्तिका।

३४२६. **माला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पंक्ति, अवली, गजरा, समूह, झुंड, दूब, भुईं आँवला, पुष्पहार।

३४२७. **मालिक** (संज्ञा पु०) (सं०) माली, धोबी, रजक, (संज्ञा पु०) ईश्वर, स्वामी, पति, खसम।

३४२८. **मालिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पंक्ति, माला, शराब, सप्तला, सीतला, मुरा, अलसी, चमेली, मद्य, पुत्री, मालिन ।

३४२९. **मालिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मालिन, चंपानगरी, गौरी, गङ्गा, कलियारी, दुरालभा, जवासा ।

३४३०. **मालिन्य** (संज्ञा पु०) (सं०) मलीनता, मैलापन, अन्धकार, अँधेरा ।

३४३१. **माली** (संज्ञा पु०) (हिं०) पुष्प-व्यवसायी, मालाकार, एक छन्द ।

३४३२. **मावा** (संज्ञा पु०) (हिं०) माँड़, सत, सार, मसाला, प्रकृति, अण्डे की पिलाई, खोआ ।

३४३३. **माष** (संज्ञा पु०) (सं० उड़द, माशा, मसा, अन्न विशेष (वि०) मूर्ख ।

३४३४. **मास्टर** (संज्ञा पु०) (अँ०) स्वामी, मालिक, शिक्षक, अध्यापक, गुरु, टीचर ।

३४३५. **माह** (संज्ञा पु०) (हिं०) माघ, माष, उड़द, मास, महीना, तीस दिन ।

३४३६. **माहताबी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) तरबूज़, चकोतरा, नींबू ।

३४३७. **माहात्म्य** (संज्ञा पु०) (सं०) महिमा, महत्त्व, आदर, मान, बड़ाई, प्रभाव, प्रताप ।

३४३८. **माहुर** (संज्ञा पु०) (हिं०) विष, ज़हर, भारी दुष्ट, चालबाज़ आदमी, गरल, हलाहल ।

३४३९. **मिज़ाज** (संज्ञा पु०) (अ०) प्रकृति, तासीर, स्वभाव, तबीयत, गर्व, घमंड, शेखी ।

३४४०. **मिटाना** (क्रि० स०) (हिं०) रेखा, दाग़, चिह्न दूर करना, नष्ट करना, चौपट करना, रद्द करना, बिगाड़ना ।

३४४१. **मिट्टी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, मृत्तिका, माटी, धूल, खाक, शरीर, बदन, मृतशरीर, शव, लाश ।

३४४२. **मिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीमा, हद, काल की अवधि,

मान, परिमाण, अन्त, मर्याद।

३४४३. **मिती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तारीख, दिन, दिवस, तिथि, हिन्दुस्तानी तारीख।

३४४४. **मित्र** (संज्ञा पु०) (सं०) दोस्त, सहायक, शुभचिन्तक, बन्धु, सुहृद्, हितू, प्रेमी, मीत, संगी, स्नेही, अनुचर, आर्य, प्रीता, सहचर, सहवासी, हितैषी, सूर्य, देवता, अर्तास।

३४४५. **मिथ्या** (वि०) (सं०) असत्य, झूठ, अयथार्थ, मृषा।

३४४६. **मियाँ** (संज्ञा पु०) (फा०) स्वामी, मालिक, खसम, पति, शिक्षक, उस्ताद, महाशय।

३४४७. **मिरजा** (संज्ञा पु०) (फा०) मीर, राजकुमार, मुगलों की पदवी, (वि०) कोमल, सुकुमार।

३४४८. **मिरजाई** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) नेतृत्व, सरदारी, अभिमान, घमंड।

३४४९. **मिलन** (संज्ञा पु०) (सं०) मिलाप, भेंट, मिश्रण, मिलावट, मेल, साक्षात्कार, संयोग।

३४५०. **मिलना** (क्रि०) (हिं०) सम्मिलित होना, मिश्रित होना, साथ लगना, सटना, सामना, मुलाकात होना, भेंट होना, मेल-मिलाप करना, मैथुन करना, लाभ होना, आलिंगन होना, भेंटना, पता लगाना, चिपकना, जुड़ना, प्राप्त होना, पाना, बराबर होना।

३४५१. **मिलाप** (संज्ञा पु०) (हिं०) मेल, मित्रता, भेंट, मुलाकात, संयोग, संभोग, मिलाई, प्रेम, मिताई।

३४५२. **मिलिटरी** (संज्ञा पु०) (अँ०) सेना, फौज, सैनिक योद्धा।

३४५३. **मिल्क** (संज्ञा पु०) (अ०) जमींदार, जागीर, धन-सम्पत्ति, अधिकार, हक़, (अँ०) दूध।

३४५४. **मिश्र** (वि०) (सं०) मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त, श्रेष्ठ, बड़ा, मिश्रित, (संज्ञा पु०) रक्त, लहू, सन्निपात, मूली, वैद्य, प्रतिष्ठित मनुष्य, पूज्य, माननीय।

३४५५. **मिश्रक** (संज्ञा पु०) (सं०) खारी नमक, जस्ता, मूली, नंदनवन, (वि०) मेलक, मिलानेवाला, मूलक।

३४५६. **मिष** (संज्ञा पु०) (सं०) छल, कपट, हीला, बहाना, डाह, ईर्ष्या, होड़, स्पर्द्धा, दर्शन, सींचना, सेचन।

३४५७. **मिषि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जटामांसी, सोआ, खस, उशीर, सौंफ़, अजमोदा।

३४५८. **मिष्ट** (संज्ञा पु०) (सं०) मीठा रस (वि०) मीठा, मधुर सेंका हुआ, भूना हुआ।

३४५९. **मिस** (संज्ञा पु०) (अ०) बहाना, हीला, पाखंड, आडम्बर, व्याज, सबब, (संज्ञा स्त्री०) कुंवारी लड़की, कुमारी (संज्ञा पु०) (फ़ा०) तांबा।

३४६०. **मिसकीन** (वि०) (अ०) बेचारा, दीन, ग़रीब, निर्धन, सीधा-सादा।

३४६१. **मिसहा** (वि०) (हिं०) बहानेबाज़, कपटी, ढोंगी।

३४६२. **मिसाल** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) उपमा, उदाहरण, लोकोक्ति, कहावत, नज़ीर।

३४६३. **मिसि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जटामांसी, बालछड़, सौंफ़, सोआ, अजमोदा, खस।

३४६४. **मिसिल** (वि०) (अ०) समान, तुल्य, बराबर, (संज्ञा स्त्री०) कागजात।

३४६५. **मिहिर** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, बादल, चन्द्रमा, पवन, वृद्धजन, आक, मदार, राजा, रवि, दिवाकर, (वि०) वृद्ध, बुड्ढा।

३४६६. **मीठा** (वि०) (हिं०) मधुर, स्वादिष्ट, ज़ायकेदार, धीमा, सुस्त, मद्धिम, हलका, नामर्द, नपुंसक, प्रिय, रुचिकर, मृदु, सरस, रुचिर, रसाल, (संज्ञा पु०) मिठाई, मिष्ठान्न, गुड़, हलुआ, मीठा नींबू।

३४६७. **मीन-मेख** (संज्ञा पु०) (हिं०) सोच-विचार, आगा-पीछा, असमंजस, दोष निकालना।

३४६८. **मीनाक्षी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गाडर दूब, ब्राह्मी बूटी, शक्कर, चीनी, कुबेर की कन्या, (वि०) मछली की सी आँखों वाली।

३४६९. **मीर** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, सीमा, हद, जल, (अ०) सरदार, सैयद, नेता।

३४७०. **मीवर** (वि०) (सं०) हिंसक, पूज्य, (संज्ञा पु०) सेनानायक, चमूपति।

३४७१. **मुंड, मुण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) खोपड़ी, सिर, राहुग्रह, नाई, हज्जाम, वृक्ष का ठूँठ, मंडूर, कपाल, मस्तक (वि०) मुंडा हुआ, बिना बाल का, अधम, नीच।

३४७२. **मुंडी, मुण्डी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) राँड़, विधवा, महाजनी भाषा (सं०) गोरखमुण्डी, ओषधि-विशेष, (संज्ञा पु०) मुंडा हुआ, नापित, नाई, संन्यासी।

३४७३. **मुंशी** (संज्ञा पु०) (अ०) मुहर्रिर, लेखक।

३४७४. **मुँह** (संज्ञा पु०) (हिं०) सामना, साहस, हिम्मत, मुख, मुखड़ा, वदन, आकृति, आनन, स्वरूप, आकार, (अँ०) फ़ेस।

३४७५. **मुअम्मा** (संज्ञा पु०) रहस्य, भेद, पहेली।

३४७६. **मुआफ़िक** (वि०) (अ०) अनुकूल, सदृश, समान, ठीक-ठाक, इच्छानुसार।

३४७७. **मुआफ़िकत** (संज्ञा स्त्री) (अ०) अनुरूपता, अनुकूलता, मित्रता, दोस्ती।

३४७८. **मुक़दमा** (संज्ञा पु०) (अ०) अपराध, अभियोग, दावा, नालिश, मुआमिला।

३४७९. **मुक़र्रर** (वि०) (अ०) निश्चित, नियत, नियुक्त (क्रि० वि०) दोबारा, फिर से, अवश्य ही।

३४८०. **मुक़ाबला** (संज्ञा पु०) (अ०) तुलना, मिलान, सामना, मुठभेड़, विरोध, विरुद्धता।

३४८१. **मुक़ाबिल** (क्रि० वि०) सम्मुख, सामने (वि०) सामने वाला,

समान (संज्ञा पु०) प्रतिद्वंद्वी, शत्रु ।

३४८२. **मुक़ाम** (संज्ञा पु०) (अ०) स्थान, जगह, पड़ाव, टिकान, ठहरने की क्रिया, अवसर, मौका ।

३४८३. **मुकुंद, मुकुन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, पारा, कुंदरू, सफ़ेद कनेर, पोई साग, गंभारी, एक रत्न ।

३४८४. **मुकु** (संज्ञा पु०) (सं०) छुटकारा, उत्सर्ग, मुक्ति, मोक्ष ।

३४८५. **मुकुर** (संज्ञा पु०) (सं०) शीशा, दर्पण, कली, बकुल का वृक्ष, मोतिया, वेर का, पेड़, आदर्श, आइना, आरसी, कुम्हार का डंडा ।

३४८६. **मुकुल** (संज्ञा पु०) (सं०) कली, शरीर, आत्मा, एक छन्द, जमालगोटा, पृथ्वी, कलिका, बौर ।

३४८७. **मुक्त** (वि०) (सं०) स्वच्छन्द, बन्धन रहित, खुला, छूटा, त्यक्त, मुक्तिप्राप्त, मोक्ष प्राप्त, खुला हुआ, जन्म-मरण-रहित, छोड़ा गया, फेंका गया ।

३४८८. **मुक्ता** (संज्ञा स्त्री०) मोती, रासना, रत्न विशेष, मौक्तिक ।

३४८९. **मुक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बन्धन, छुटकारा, रिहाई, रिलीज़, मोक्ष, निर्वाण, श्रेष्ठ, निःश्रेयस, अपवर्ग, परित्राण, मोचन, उद्धार, निस्तरण, निस्तार, परमगति, परमधाम, परमपद, परमफल, परमार्थ, परामृत, परिमोक्ष, प्रमोक्ष, ब्रह्मगति, ब्रह्मपद, ब्रह्मलोक, विमुक्त, विमोचन, शान्ति, अमृत, अक्षर, तरनतारन, सिद्धि, गंगागति, सुखसार, अमृतत्व, आत्मसिद्धि ।

३४९०. **मुख** (संज्ञा पु०) (सं०) मुँह, आनन, घर का द्वार, आदि, आरम्भ, नाटक, वेद, पक्षी की चोंच, जीरा, बडहर, बदन, मुखड़ा (वि०) प्रधान, मुख्य, नेता ।

३४९१. **मुखर** (वि०) (सं०) बकवादी, प्रधान, अग्रगण्य (संज्ञा पु०) कौवा, काक, शंख, अप्रियवादी, दुर्मुख, बकवादी, ।

३४९२. **मुख़ालिफ़** (वि०) (अ०) विरोधी, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी, बैरी ।

३४९३. **मुखिया** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रधान, नेता, सरदार, अगुआ, पहला, अग्रगण्य ।

३४९४. मुख्तलिफ़ (वि०) (अ०) भिन्न, अलग, पृथक्, अनेक प्रकार का विभिन्न।

३४९५. मुख्तसर (वि०) (अ०) संक्षिप्त, छोटा, अल्प, थोड़ा।

३४९६. मुख्य (वि०) (सं०) प्रधान, प्रथम कल्प, श्रेष्ठ, मुखिया, अग्रगण्य, अग्रणी, अनुत्तम, उत्कृष्ट, उत्तम, ऋषभ, परम, प्रकृष्ट, (अँ०) चीफ़।

३४९७. मुग्ध (वि०) (सं०) मूढ़, मूर्ख, सुन्दर, नवीन, नया, आसक्त, मोहित, विस्मित, मनोहर, मनोज्ञ।

३४९८. मुग्धता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मूढ़ता, भोलापन, सुन्दरता, ख़ूबसूरती, मोहता।

३४९९. मुग्धमति (वि०) (सं०) मूर्ख, मूढ़, सीधा-सादा, मनोज्ञ।

३५००. मुचिर (संज्ञा पु०) (सं०) दाता, उदार, धर्म, वायु, देवता।

३५०१. मुजर्रद (वि०) (अ०) अकेला, एकांकी, अविवाहित, बिनव्याहा।

३५०२. मुटाई (संज्ञा पु०) (हिं०) मोटापन, स्थूलता, पुष्टि, घमंड, अहंकार, मोटाई।

३५०३. मुट्ठी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मुष्टिक, मूठ, बकोट, बकट्टा।

३५०४. मुठभेड़ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) टक्कर, भिड़ंत, भेंट, सामना, हाथापाई।

३५०५. मुदिता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हर्ष, आनन्द, आह्लादता, निहालता, प्रसन्नता, खुशी।

३५०६. मुद्दई (संज्ञा पु०) (अ०) वादी, शत्रु, वैरी, प्रार्थी।

३५०७. मुद्दत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अवधि, बहुत दिन।

३५०८. मुद्रा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मोहर, सील, सिक्का, अँगूठी, छल्ला, छापा, अङ्क, रुपया, (अँ०) टाइप।

३५०९. मुद्रिक (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मुद्रिका, अंगूठी, कुश की बनी अँगूठी (पवित्री), पैंती, मुद्रा, सिक्का।

३५१०. **मुद्रित** (वि०) (सं०) सीलड, मुँदा हुआ, मुँहबन्द, छोड़ा हुआ, अंकित, छापा हुआ।

३५११. **मुधा** (क्रि० वि०) (सं०) व्यर्थ, बेफ़ायदा, झूठ, निरर्थक (वि०) व्यर्थ का, निष्प्रयोजन, मिथ्या, झूठ।

३५१२. **मुनशी** (संज्ञा पु०) (अ०) मुंशी, लेखक, पंडित, विद्वान्।

३५१३. **मुनादी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) ढिंढोरा, डुग्गी।

३५१४. **मुनाफ़ा** (संज्ञा पु०) लाभ, नफ़ा, फ़ायदा।

३५१५. **मुनि** (संज्ञा पु०) (सं०) ऋषि, तपस्वी, त्यागी, जिन, पलास वृक्ष, पियाल वृक्ष, योगी, वेदज्ञ, महात्मा।

३५१६. **मुफ्त** (वि०) (अ०) व्यर्थ, बेफ़ायदा।

३५१७. **मुरकना** (क्रि० अ०) (हिं०) झुकना, मुड़ना, लौटना, वापिस होना, फिरना, घूमना, मोच खाना, हिचकना, रुकना, विनष्ट होना, चौपट होना।

३५१८. **मुरकाना** (क्रि० स०) (हिं०) फेरना, घुमाना, लौटाना, घुमाना, वापस करना, नष्ट करना, चौपट करना।

३५१९. **मुरदा** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्राण रहित शरीर, शव (वि०) मरा हुआ, मृत, बे-दम, मुरझाया हुआ।

३५२०. **मुरशिद** (संज्ञा पु०) (अ०) गुरु, पथ-प्रदर्शक, पूज्य, धूर्त्त, चालाक, चतुर।

२५२१. **मुरहा** (वि०) (हिं०) अनाथ, यतीम, नटखट, उपद्रवी, चुल्बी, ऐंठा, मयूर, मोर, (संज्ञा पु०) (सं०) श्रीकृष्ण।

३५२२. **मुराद** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अभिलाषा, कामना, इच्छा, आशय, अभिप्राय, मन्नत, मनोरथ।

३५२३. **मुरीद** (संज्ञा पु०) (अ०) अनुगामी, अनुयायी, शिष्य, चेला।

३५२४. **मुलाक़ात** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मिलन, भेंट, मेल-मिलाप, रति-क्रीड़ा।

३५२५. **मुलायम** (वि०) (अ०) नरम, हलका, सुकुमार, नाजुक।

३५२६. **मुलाहिज़ा** (संज्ञा पु०) (अ०) निरीक्षण, संकोच, रियायत ।

३५२७. **मुल्क** (संज्ञा पु०) (अ०) देश, प्रदेश, प्रांत, संसार ।

३५२८. **मुश्क** (संज्ञा पु०) (फा०) मृगमद, कस्तूरी, बू, (संज्ञा स्त्री०) (देशज) बाहु, भुजा ।

३५२९. **मुश्किल** (वि०) (अ०) कठिन, दुष्कर, (संज्ञा स्त्री०) कठिनता, दिक्कत ।

३५३०. **मुष्क** (संज्ञा पु०) (सं०) चोर, अंडकोष, मोरवा वृक्ष, ढेर, राशि, (वि०) मांसल ।

३५३१. **मुष्टि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मुट्ठी, मुक्का, घूसा, मूंठ, बेंत, मोखावृक्ष, चोरी, अकाल, दुर्भिक्ष, मूठी, मुक्का ।

३५३२. **मुसम्मात** (वि०) (अ०) नाम्नी, नामधारिणी, (संज्ञा स्त्री०) औरत, स्त्री ।

३५३३. **मुसीबत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) कष्ट, तकलीफ़, विपत्ति, संकट ।

३५३४. **मुस्तकिल** (वि०) (अ०) स्थिर, अटल, दृढ़, मज़बूत ।

३५३५. **मुस्तहक़** (वि०) (अ०) उपयुक्त पात्र, अधिकारी, हक़दार ।

३५३६. **मुस्तैद** (वि०) (अ०) तत्पर, सन्नद्ध, तैयार, चुस्त, चालाक ।

३५३७. **मुहताज** (वि०) (अ०) निर्धन, ग़रीब, अधीन, आश्रित, निर्भर, आकांक्षी, चाहने वाला ।

३५३८. **मुहब्बत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) प्रेम, प्रीति, प्यार, मित्रता, इश्क, लगन, स्नेह ।

३५३९. **मुहरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) आगा, निशाना, मुखाकृति, हरावल अगाड़ी, शतरंज की गोटी ।

३५४०. **मुहासिल** (संज्ञा पु०) (अ०) आय, आमदनी, लाभ, नफ़ा, चन्दा, कर ।

३५४१. **मुहिम** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) विकट काम, युद्ध, लड़ाई, आक्रमण, अभियान, आन्दोलन ।

३५४२. **मूँगा** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रवाल, विद्रुम, जड़, अंभोधिवल्लभ, सिन्धु, लताग्र, रक्तवर्णक।

३५४३. **मूक** (वि०) (सं०) गूँगा, अवाक्, दीन, विवश, लाचार, अनबोल, शान्त, वाक्-शक्ति-रहित, सीधा-मादा।

३५४४. **मूका** (संज्ञा पु०) (हिं०) मोखा, मुक्का, घूँसा।

३५४५. **मूठ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मुट्ठी, मुष्टि, मुठिया, दस्ता, जादू, टोना।

३५४६. **मूढ़** (वि०) (सं०) मूर्ख, वेवकूफ़, स्तब्ध, चकित, अज्ञानी, अनजान, अनभिज्ञ।

३५४७. **मूर** (संज्ञा पु०) (हिं०) मूल, जड़, जड़ी, मूलधन, असल।

३५४८. **मूर्ख** (वि०) (सं०) वेवकूफ़, मूढ़, अज्ञ, अज्ञान, अनजान, अनभिज्ञ, अबोध, अकर्मण्य, अपटु, अप्रज्ञ, नासमझ, नालायक, निर्बुद्धि, बुद्धिहत, बुद्धिहीन, मकुआ, भोंदू, अविबुध, अविवेकी, असयाना, नादान।

३५४९. **मूर्च्छा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निर्वेश, प्रमोह, प्रलय, मोह, तावर, नष्टचेष्टता, सम्मोह, अचेतन, अवस्था, वेहोशी।

३५५०. **मूर्च्छित** (वि०) (सं०) अचेत, वेसुध, मूर्च्छा-प्राप्त।

३५५१. **मूर्त्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शरीर, देह, कठिनता, ठोसपन, आकृति, स्वरूप, सूरत, शक्ल, प्रतिमा, विग्रह, चित्र, तस्वीर, पुतली।

३५५२. **मूर्त्तिमान्** (वि०) (सं०) स-शरीर, प्रत्यक्ष, गोचर, साक्षात्।

३५५३. **मूल** (संज्ञा पु०) (सं०) जड़, कंद, आरम्भ, प्रारम्भ, शुरुआत, उद्भवस्थल, पूँजी, आधार, नींव, पड़ोस, सामीप्य, निकुंज, कुल, ज़िमीकंद, पिप्पलीमूल, पुष्करमूल, दुर्गराष्ट्र, वंश, (वि०) मुख्य, प्रधान।

३५५४. **मूलक** (संज्ञा पु०) (सं०) मूली, जड़, विष कंदमूल, मूल-स्वरूप, मुरई, (वि०) जनक, उत्पन्न करने वाला।

३५५५. **मूला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मूल नक्षत्र, सतावर, पृथ्वी।

३५५६. **मूली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मोटी, जड़ी-बूटी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ज्येष्ठी, छिपकली।

३५५७. **मूल्य** (संज्ञा पु०) (सं०) धन, दाम, कीमत, मूल, मोलभाव, निरख, दर, (अँ०) प्राइस।

३५५८. **मृग** (संज्ञा पु०) (सं०) चौपाया जानवर, पशु, हिरन, हाथी विशेष, मृगशिरस नक्षत्र, अगहन मास, मकर राशि, खोज, अन्वेषण, कुरङ्ग।

३५५९. **मृगया** (संज्ञा पु०) (सं०) शिकार, आखेट, अहेर।

३५६०. **मृगी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हिरणी, हिरनी, कस्तूरी, अपस्मार रोग, मिर्गी, रोग-विशेष।

३५६१. **मृणाल** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कमलनाल, भसीड़, उशीर, खस, कमल की जड़।

३५६२. **मृत्यु** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मरण, मौत, निधन, यमराज, ब्रह्मा, विष्णु, माया, कलि, कामदेव, एक साममन्त्र।

३५६३. **मृदु** (वि०) (सं०) कोमल, मुलायम, नरम, सुकुमार, नाजुक, धीमा, मन्द (संज्ञा स्त्री०) घृतकुमारी, कोमलता, जूही का फूल (संज्ञा पु०) शनि ग्रह।

३५६४. **मृदुता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कोमलता, धीमापन।

३५६५. **मृदुल** (वि०) (सं०) कोमल, नरम, कोमल हृदय व्यक्ति दयामय, कृपालु, नाजुक, सुकुमार, (संज्ञा पु०) जल, अंजीर।

३५६६. **मृदुलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कोमलता, सुकुमारता, नरमी।

३५६७. **मृषा** (अव्यय) (सं०) झूठ-झूठ, व्यर्थ; (वि०) झूठा, मिथ्या, असत्य।

३५६८. **मृष्टि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफ़ाई, पवित्रता, शोधन।

३५६९. **मेड़** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) सीमा, हद, मर्यादा, बाँध, आड़ घेरा।

३५७०. **मेख** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) कील, काँटा, पच्चड़, खूँटा।

३५७१. **मेखला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) करधनी, तगड़ी, किंकिणी, मंडल, मँडरा, कफ़नी, अलफी, नर्मदा नदी, यज्ञवेष्टन सूत्र, क्षुद्रघंटिका।

३५७२. मेघ (संज्ञा पु०) (सं०) बादल, मोथा, मुस्तक, तंडुलीय शाक गगन, मार्गविशेष ।

३५७३. मेघनाद (संज्ञा पु०) (सं०) वरुण, पलाशवृक्ष, इन्द्रजीत (रावण का पुत्र), बिल्ली, मोर, मेघ का गर्जन ।

३५७४. मेच (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पलंग, पर्यङ्क, खाट ।

३५७५. मेचक (संज्ञा पु०) (सं०) अन्धकार, अँधेरा, नीलांजन, धूआँ, बादल, महिसन, पीतशाल, काला नमक, (वि०) श्यामल, काला ।

३५७६. मेद (संज्ञा पु०) (हिं०) चरबी, कस्तूरी ।

३५७७. मेदिनी (संज्ञा स्त्री०) पृथ्वी, धरती, मेदा, धारिणी, धरित्री, भूमि ।

३५७८. मेधावी (वि०) (सं०) बुद्धिमान्, पंडित, विद्वान्, मेधिर, मेधायुक्त, मतिमान्, (पु०) तोता, शुक, मद्य, मदिरा, अभिज्ञ ।

३५७९. मेना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मेनका, हिमालय-पत्नी, स्त्री, वाक् ।

३५८०. मेमोरियल (संज्ञा पु०) (अँ०) स्मारक चिह्न, यादगार, प्रार्थना-पत्र ।

३५८१. मेरु (संज्ञा पु०) (सं०) पर्वत-विशेष, सुमेरु पर्वत ।

३५८२. मेल (संज्ञा पु०) (सं०) मिलाप, समागम, एकता, सुलह, मित्रता, दोस्ती, संगति, अनुकूलता, अनुरूपता, जोड़, टक्कर, समता, ढंग, चाल, तरह, मिश्रण, मिलावट, संयोग (संज्ञा स्त्री०) (अ०) डाक, डाकगाड़ी ।

३५८३. मेलना (क्रि०) (हिं०) मिलाना, डालना, रखना, पहनना, धारण करना छोड़ना, इकट्ठा होना ।

३५८४. मेला (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) समागम, मिलाप, अंजन, स्याही रोशनाई, महानील (संज्ञा पु०) भीड़, उत्सव, रौला, समूह, समुदाय, देव-दर्शन ।

३५८५. मेली (वि०) (हिं०) मिलनसार, संगी, साथी, मित्र, मिलाप, परिमित, जाना हुआ ।

३५८६. मेवासा (संज्ञा पु०) (हिं०) गढ़, किला, सुरक्षित स्थान, घर ।

३५८७. **मेष** (संज्ञा पु०) (हिं०) भेड़, एक औषध, मुमना, जीवनाशक, मेषराशि, पहली राशि ।

३५८८. **मेह** (संज्ञा पु०) (सं०) मूत्र, प्रमेह रोग, मेघ, मेढ़ा, मूत्ररोग, (हिं०) मेघ, बादल, मेह, वर्षा ।

३५८९. **मेहमान** (संज्ञा पु०) (फा०) अतिथि, पाहुना ।

३५९०. **मै** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) शराब, मद्य, मदिरा ।

३५९१. **मैत्र** (संज्ञा स्त्री०) अनुराधानक्षत्र, सूर्यलोक, गुदा, मलद्वार, ब्राह्मण, मित्रता, बन्धुता, प्रेम, स्नेह, (वि०) मित्र-सम्बन्धी, मित्र का ।

३५९२. **मैथुन** (संज्ञा पु०) (सं०) स्त्री-समागम, रति क्रीड़ा, संभोग, स्त्री-संसर्ग, सुरत ।

३५९३. **मैदान** (संज्ञा पु०) (फा०) सपाट भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-भूमि ।

३५९४. **मैना** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सारिका, मेनका, मैना पक्षी, कंजक, कादम्बरी, पाठमंजरी, पाठशालिनी, मदनशलाका, मदना, मारी, सूक्ता, कलहप्रिय, चित्रनेत्रा, चित्रलोचना, चित्राक्षी, सुमति, दूती, प्रियवादिनी ।

३५९५. **मैला** (वि०) (हिं०) मलिन, अस्वच्छ, विकारयुक्त, गंदा, गंदला, दुर्गन्धयुक्त अशुद्ध, अपवित्र (संज्ञा पु०) (हिं०) विष्ठा, कूड़ा-कर्कट, गू, टट्टी ।

३५९६. **मोकना** (क्रि०स०) (हिं०) छोड़ना, परित्याग करना, क्षिप्त करना, मेलना, धरना ।

३५९७. **मोकला** (वि०) (हिं०) लम्बा-चौड़ा, विस्तृत, छूटा हुआ (संज्ञा पु०) बहुतायत, ज़्यादती, अधिकता ।

३५९८. **मोक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्धन-मुक्ति, छुटकारा, मुक्ति, परमानन्द-प्राप्ति, मृत्यु, मौत, पतन, गिरना, पांडर वृक्ष ।

३५९९. **मोचना** (क्रि० स०) (हिं०) छोडना, गिराना, बन्धन-मुक्त करना या कराना, बहाना ।

३६००. **मोट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गठरी, पोटरी, मोटरी (संज्ञा पु०) (देशज) गठरी, बोझ, भार, चरसा, (वि०) मोटा, साधारण, सस्ता ।

३६०१. **मोटा** (वि०) (हि०) स्थूल, दलदार , दरदरा, साधारण, घटिया, मट्ठा, बेडौल, भारी, कठिन, तुन्दैल, घमंडी, अहंकारी, (संज्ञा पु०) (हिं०) मारवाँ जमीन, भार, बोझ, गट्ठड़ ।

३६०२. **मोड़ना** (क्रि० स०) (हिं०) फेरना, लौटाना, कुंठित करना, घुमाना ।

३६०३. **मोण** (संज्ञा पु०) (सं०) सूखा फल, मगर, मक्खी, टोकरा, झाबा, पिटारा ।

३६०४. **मोती** (संज्ञा पु०) (हिं०) अन्तःसार, मुक्ता, समुद्रसार, सरिका, शुक्तिका, तारा, नीरज, मंजरी, लक्ष्मी, मुक्ताहल, दधिसुत, सिन्धुजात, स्वच्छ, स्वाति-सुत, स्वातिसुवन, हिमवल, हेमवल, मौक्तिक, इन्दुरत्न, मुक्ता-फल, शुक्तिज, दुर, (फ़ा०) गौहर ।

३६०५. **मोद** (संज्ञा पु०) (सं०) आनन्द, हर्ष, खुशी, उल्लास, प्रसन्नता, आह्लाद, सुगन्ध, महक ।

३६०६. **मोदक** (संज्ञा पु०) (सं०) लड्डू (वि०) हर्षदाता, हर्षकारक, आनन्ददायक ।

३६०७. **मोदनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अजमोदा, मल्लिका, यूथिका, कस्तूरी, मदिरा, शराब, सफ़ेद जुही ।

३६०८. **मोर** (संज्ञा पु०) (हि०) मयूर, शिखी, केकी, विरही, केकिक, नीलकंठ, शिखंडी, सारंग, कलापी, भुजंगभुज, भुजंगभोजी, कालकंठ, काल-कण्ठ, काश्यपि, किन्नर, कृकवाकु, नर्तक, सर्पकाल, पवनाशनाश, फणिभुज, मधुक, हरि, स्थिरमद, अर्जुन, कुंडली, केहा, मेघनाद ।

३६०९. **मोल** (संज्ञा पु०) (हि०) भाव, दाम, कीमत, मूल्य, शुल्क ।

३६१०. **मोष** (संज्ञा पु०) (हि०) मोक्ष, मुक्ति, (सं०) चोरी, लूटना, वध, हत्या, दण्ड देना ।

३६११. **मोह** (संज्ञा पु०) (सं०) अज्ञान, भ्रम, भ्रांति, सांसारिक प्रेम, या प्यार, मूर्च्छा, बेहोशी ।

३६१२. **मोहलत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) अवकाश, अवधि, छुट्टी ।

३६१३. **मोहार** (संज्ञा पु०) (हिं०) द्वार, मुँहड़ा, अग्रभाग, बड़ी मधुमक्खी, भौंरा, सारंग, मधु का छत्ता।

३६१४. **मोहित** (वि०) (सं०) मुग्ध, आसक्त, लुब्ध, भ्रमित, मूर्च्छित, अचेत, मोह-प्राप्त।

३६१५. **मोहिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माया, जादू, वेला का फूल, वैशाख शुक्ला एकादशी, सुन्दरी, युवती, रूपवती, (वि०) मोहनेवाली।

३६१६. **मोही** (क्रि०) (हिं०) मोहक, प्रेमी, लोभी, लालची, भ्रमित, अज्ञानी।

३६१७. **मौका** (संज्ञा पु०) घटनास्थल, अवसर, समय, स्थान, जगह।

३६१८. **मौकूफ़** (वि०) (अ०) स्थगित, रोका हुआ, बरखास्त, रद्द, अवलम्बित, आश्रित।

३६१९. **मौज** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) लहर, तरंग, धुन, सुख, आनन्द, मज़ा, मर्ज़ी, विभूति, विभव।

३६२०. **मौजूद** (वि०) (अ०) उपस्थित, विद्यमान, प्रस्तुत, तैयार, हाज़िर।

३६२१. **मौत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मरण, मृत्यु, काल, अपगत, अवसान, गत, देहत्याग, देहान्त, देहावसान, स्वर्गवास, नाश, निधन, पंचता, पंचतत्व, परिगत, पतन, निपात, निवृत्ति, परिसर, परिसरण, परेत, पितरयात, प्रणाश, प्रणाशन, प्राणसंन्यास, प्राणान्त, मरनी, यम, शान्त, शून, अन्तःशैया, मीच, मीचू, त्रिधाम, देहपात, देहयात्रा, देहान्तर, सर्वजित, सर्वसंहार, सर्वहर, हातु, अमत, आई, उपरति, गंगालाभ, जगदन्तक, तहलका वेसाल, मार्ग, अजल, हिमाम, क़ज़ा, खातमा, (अँ०) डैथ।

३६२२. **मौन** (संज्ञा पु०) (सं०) अभाषण, अकथन, चुपचाप, चुप्पी, बरतन, पात्र, डब्बा, पिटारा (मूँज का बना हुआ), (वि०) चुप।

३६२३. **मौर** (वि०) (हिं०) शिरोमणी, प्रधान, मुख्य, (संज्ञा पु०) मंजरी, बौर, गरदन, कली, मुकुट, किरीट।

३६२४. **मौला** (संज्ञा पु०) (अ०) मित्र, दोस्त, सहायक, मददगार, स्वामी, मालिक, ईश्वर, खुदा, अक़बर, रहीम, करीम ।

३६२५. **मौलि** (संज्ञा पु०) (सं०) चोटी, सिरा, मस्तक, शिर, भाल, माथा, चूड़ा, मुकुट, किरीट, जूड़ा, अशोक वृक्ष, सरदार, भूमि, ज़मीन ।

३६२६. **मौलिक** (वि०) (सं०) असली (ग्रंथ या विचार) नवीन, मूल-सम्बन्धी, जड़ का ।

३६२७. **म्लान** (वि०) (सं०) मलिन, मैला, गन्दा, दुर्बल, कुम्हलाया हुआ, शुष्क, विरस, विषाद युक्त, खेदित ।

३६२८. **म्लेच्छ** (संज्ञा पु०) (सं०) हींग, यवन अन्त्यज, किरात, शवर, पापरत, वेदाचार हीन (जाति या व्यक्ति), (वि०) नीच, पापी ।

(य)

३६२९. **यंत्र, यन्त्र** (संज्ञा पु०) (सं०) मशीन, बाजा, कल, वाद्य, ताला, बन्दूक, वीणा, बीण, नियन्त्रण, पात्र-विशेष ।

३६३०. **यंत्रणा, यन्त्रणा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) क्लेश, यातना, दर्द, पीड़ा, वेदना, दुःख ।

३६३१. **यकायक** (क्रि० वि०) (फा०) अचानक, एकाएक, सहसा ।

३६३२. **यक़ीनन** (क्रि०वि०) (अ०) निश्चित, निःसन्देह, असंदिग्ध, अवश्य, बेशक ।

३६३३. **यगना** (वि०) (फा०) आत्मीय, नातेदार, अकेला, फ़र्द अनुपम, अद्वितीय, (संज्ञा पु०) (फा०) भाईबन्द, परममित्र ।

३६३४. **यज्ञ** (संज्ञा पु०) (सं०) याग, अध्वर, मख, क्रतु, जाग, होम, हवन, ज्योतिष्टोम, तीर्थ, अनुष्ठान, इष्ट, सुधामूर्ति, सुधामृत, हरिकर्म, जक, जाक ।

३६३५. यत (वि०) (सं०) रोका हुआ, संयत, नियन्त्रित, शासित, नियमित ।

३६३६. **यतन** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रयत्न, उद्योग, उपाय, चेष्टा, कोशिश, तदबीर, बन्दोबस्त।

३६३७. **यति** (संज्ञा पु०) (सं०) त्यागी, संन्यासी, यतेन्द्रिय, परिव्राजक, (संज्ञा स्त्री०) विश्राम, विराम, विरति।

३६३८. **यती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रोक, थाम, नियन्त्रण, यति, विधवा, सन्धि, मनोविकार, (संज्ञा पु०) (सं०) यति, संन्यासी, जितेन्द्रिय, श्वेताम्बर, जैन साधु।

३६३९. **यतीम** (संज्ञा पु०) (अ०) मातृ-पितृ हीन, अनाथ।

३६४०. **यत्न** (संज्ञा पु०) (सं०) उद्योग, प्रयत्न, कोशिश, उपाय, उपचार, चेष्टा, तदबीर, हिफ़ाज़त, चिकित्सा।

३६४१. **यत्रतत्र** (क्रिया वि०) (सं०) इधर, उधर, जहाँ, तहाँ, जगह-जगह।

३६४२. **यथार्थ** (अव्यय) (सं०) ठीक, उचित, जैसा है वैसा, सत्य, निश्चित।

३६४३. **यथार्थता** (अव्यय) (सं०) सचाई, सत्यता, सच्चापन।

३६४४. **यदृच्छया** (क्रिया वि०) (सं०) अकस्मात्, अचानक, दैव-संयोग से, जैसी इच्छा हो।

३६४५. **यम** (संज्ञा पु०) (सं०) यमज, जुड़वाँ बालक, निग्रह, कौआ, शनि, वायु, विष्णु, यमराज, काल, अन्तक, सूर्यपुत्र, पितृपति, पितृराज, हरि, आदित्यसूनु, जीवितेश, तरणिसुत, दंड, दंडयाम, सोम, दिनकरसुत, दिनेशात्मज।

३६४६. **यमन** (संज्ञा पु०) (सं०) बन्धन, बाँधना, ठहराना, रोकना, यमराज, राग-विशेष।

३६४७. **यमुना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, जमुनानदी, कालिंदी, रवितनया, तरणितनूजा, अंशुमति, कलिन्दतनया, कल्मापी, कालगंगा, तापी, श्यामा, तपनतनया, सावित्री, हंससुता।

३६४८. **ययी** (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, घोड़ा, मार्ग।

३३४६. **यव** (संज्ञा पु०) (सं०) वेग, तेज़ी, अन्न-विशेष, जौ, लवण विशेष ।

३३५०. **यवन** (संज्ञा पु०) (सं०) मुसलमान, म्लेच्छ, तेज़ घोड़ा, वेग, तेज़ गमन ।

३३५१. **यवनेष्ट** (संज्ञा पु०) (सं०) सीसा, मिर्च, लहसुन, शलगम, नीम, प्याज़, गाजर ।

३३५२. **यवफल** (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र जौ, कुटज, प्याज़, जटामाँसी, बाँस, प्लक्ष या पाकड़ वृक्ष

३३५३. **यश** (संज्ञा पु०) (हि०) ख्याति, नेकनामी, कीर्ति, प्रशंसा, बड़ाई नाम, नामवरी, विख्याति, सम्भव, प्रस्थिति, सुनाम ।

३३५४. **यष्टि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छड़ी, लाठी, टहनी, शाखा, डाल, मुलेठी, ताँत, लता, बेल, वहू, बाँह, लकड़ी ।

३३५५. **यष्टिक** (संज्ञा पु०) (सं०) तीतरपक्षी, मजीठ, डंडा ।

३३५६. **या** (अव्यय) (फ़ा०) विकल्पसूचकशब्द, अथवा, यह, वा, (संज्ञा पु०) (सं०) योनि, गति, चाल, रथ, गाड़ी, रोक, अवरोध, लाभ, प्राप्ति, ध्यान ।

३३५७. **याचना** (क्रिया स०) (हि०) माँगना, भीख माँगना, विनती करना ।

३३५८. **याचिका** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) निवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र, (अं०) पिटिशन ।

३३५९. **यात** (वि०) (सं०) लब्ध, पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ ।

३३६०. **यातन** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) परिशोध, बदला, पारितोषिक, इनाम ।

३३६१. **यातना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तकलीफ़, पीड़ा, दुःख, कष्ट, साँसत, दण्ड, तीव्र वेदना ।

३३६२. **यातु** (संज्ञा पु०) (सं०) पथिक, राक्षस, काल, हवा, वायु, कष्ट, यातना, हिंसा, अस्त्र, आने वाला ।

३६६३. **यात्रा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफ़र, प्रस्थान, प्रयाण, उत्सव, व्यवहार, कूच, भ्रमण, पर्यटन, गति, गमन, जाना, अवगति, पयाना ।

३६६४. **यात्रिक** (संज्ञा पु०) (सं०) पथिक, यात्री, (वि०) यात्रा, सम्बन्धी, प्रथानुकूल ।

३६६५. **याद** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) स्मरण-शक्ति, मेधा-शक्ति, स्मरण, स्मृति, (संज्ञा पु०) (हिं०) जलजन्तु ।

३६६६. **यादगार** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) स्मृति-चिह्न, स्मारक ।

३६६७. **यान** (संज्ञा पु०) (सं०) वाहन, विमान, आक्रमण, गति, सवारी।

३६६८. **यापन** (संज्ञा पु०) (सं०) चलाना, वर्तन, बिताना, व्यतीत करना, निबटाना, छोड़ना, परित्याग, मिटाना, निर्वाह, कालक्षेप ।

३६६९. **याम** (संज्ञा पु०) (सं०) एक पहर, काल, समय, देवगण, प्रहर, संयम, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रात (वि०) यम-सम्बन्धी ।

३६७०. **यामि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुलवधू, बहन, रात, पुत्री, पुत्र-वधू, दक्षिण दिशा, धर्मराज की पत्नी ।

३६७१. **यामिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात, हल्दी, रात्रि, निशा, रजनी ।

३६७२. **यामुन** (वि०) (सं०) यमुनानदी-विषयक, (संज्ञा पु०) सुरमा, अंजन ।

३६७३. **याम्य** (संज्ञा पु०) (सं०) चंदन, शिव, विष्णु, यमदूत, अगस्त्य-मुनि, (वि०) यम-सम्बन्धी, यम का, दक्षिण का ।

३६७४. **यायावर** (संज्ञा पु०) (सं०) याचना, साग्नि ब्राह्मण, अश्वमेध का घोड़ा ।

३६७५. **यावक** (संज्ञा पु०) (सं०) जौ, जौ का सत्तू, बोरोधान, साठीधान, उड़द, माष, लाख, महावर ।

३६७६. **यावत्** (अव्यय) (सं०) जब तक, जिस समय तक, सब, कुल,

(वि०) जितना, सब, कुल ।

३६७७. **युक्त** (वि०) (सं०) मिला हुआ, संयुक्त, सम्मिलित, नियुक्त, मुकर्रर, आसक्त, सम्पन्न, पूर्ण, उचित, संगत, ठीक, मुनासिब, विशिष्ट, सहित, समेत, योग्य, यथार्थ ।

३६७८. **युक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उपाय, तरकीब, ढंग, कौशल, चातुरी, चाल, रीति, प्रथा, न्याय, नीति, अनुमान, अन्दाजा, हेतु, कारण, तर्क, उचित विचार, योग, मिलन, योग्यता, प्रवीणता, चतुराई, विवेचना, मिलना ।

३६७९. **युग** (संज्ञा पु०) (सं०) जोड़ा, युग्म, जुआ, जुआठ, पुश्त, पीढ़ी, दो गोटियाँ (पाँसे की) समय, जमाना, काल, दो (संख्या), ऋद्धि-सिद्धि (औषधियाँ) ।

३६८०. **युग्म** (संज्ञा पु०) (सं०) जोड़ा, युग, द्वन्द्व, मिथुन राशि, युगलक, दो (संख्या) ।

३६८१. **युत** (वि०) (सं०) युक्त, सहित, मिला हुआ, मिलित, जड़ित (संज्ञा पु०) मिलाप ।

३६८२. **युतक** (संज्ञा पु०) (सं०) सन्देह, संशय, युग, जोड़ा, अंचल, दामन, मैत्रीकरण, संश्रय ।

३६८३. **युद्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) रण, संग्राम, लड़ाई, समर, संघर्ष ।

३६८४. **युधिष्ठिर** (संज्ञा पु०) (सं०) धर्मराज, धर्मपुत्र, पार्थ, पुण्य-श्लोक, पृथाज, अजातशत्रु, कर्णानुज ।

३६८५. **युध्म** (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, संग्राम, धनुष, वाण, अस्त्र, शस्त्र, योद्धा, शरभ ।

३६८६. **युवक** (संज्ञा पु०) (सं०) जवान, युवा, तरुण, नवीन, नौजवान ।

३६८७. **युवती** (संज्ञा पु०) (सं०) तरुणी, यौवनवती, जवान स्त्री, प्रियंगु, सोनजुही, हल्दी ।

३६८८. **यूका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जूँ, चीलर, ढील, खटमल, अजवायन, गूलर, परिमाण विशेष ।

३६८६. **यूथ** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, सेना, फौज, वृन्द।

३६९०. **यूथनाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) सेनापति, सेनाध्यक्ष, सरदार, यूथप।

३६९१. **योग** (संज्ञा पु०) संयोग, मिलान, मेल, उपाय, तरकीब, ध्यान, संगति, प्रेम, छल, धोखा, प्रयोग, दवा, औषध, धन, लाभ, फ़ायदा, नैयायिक, दूत, चर, नाम, कौशल, चतुराई, बैलगाड़ी, परिणाम, नतीजा, नियम, क़ायदा, उपयुक्तता, दग़ाबाज़, वशीकरण, सम्बन्ध, सूत्र, सद्भाव, मेल-मिलाप, वैराग्य, जोड़, तुर्भीता, जुगाड़, सुयोग, युक्ति।

३६९२. **योगक्षेत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) जीवन-निर्वाह, गुज़ारा, कुशल-मंगल, खैरियत, लाभ, (अँ०) पीस एण्ड आर्डर।

३६९३. **योगिनी** (संज्ञा पु०) (सं०) तपस्विनी, रण-पिशाचिनी, आषाढ़ कृष्णा एकादशी, आवर्ण-देवता, देवी, योगमाया, भूतिनी, डाकिनी।

३६९४. **योगीश्वर** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रीकृष्ण, शिव, योगी, सिद्ध, तपस्वी।

३६९५. **योगी** (संज्ञा पु०) (सं०) मुनि, ऋषि, तपस्वी, साधु, सन्त, जटाधर, जितेन्द्रिय, अकामी, तपोधन, तापस, त्यागी, त्रिकालज्ञ, त्रिकाल-दर्शी, देवप्रिय, धर्मात्मा, धर्मिष्ठ, मंत्वंग, बाबा, मगन, भद्र, विरक्त, बैरागी, संयमी, सत्, सरल, सौम्य, शिव, (अ०) फकीर, दरवेश, (अँ०) बैगर, डिवोटी, सेज।

३६९६. **योग्य** (वि०) (सं०) उपयुक्त, लायक, समर्थ, श्रेष्ठ, उचित, सुन्दर, दर्शनीय, आदरणीय, माननीय, यथार्थ, (संज्ञा पु०) पुण्यनक्षत्र, रथ, शकट, गाड़ी, चन्दन।

३६९७. **योग्यता** (संज्ञा पु०) (सं०) बुद्धिमत्ता, लियाकत, सामर्थ्य, अनुकूलता, उपयुक्तता, निपुणता।

३६९८. **योजन** (संज्ञा पु०) (सं०) योग, संयोग, मिलाना, परमात्मा, आठ कोस का परिमाण।

३६९९. **योजना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रयोग, व्यवहार, मिलान, मेल,

बनावट, रचना, आयोजन, घटना, स्थिति, (अँ०) प्रोजेक्ट, प्लान, स्कीम

३७००. **योनि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, जननेन्द्रिय (स्त्रियों की), भग, जल, पानी, शरीर, देह, गर्भाशय, अन्तःकरण, कमल, मदन भवन, मदनालय, मदन सदन, स्त्रीलिंग, स्त्रीव्रण।

३७०१. **यौवन** (संज्ञा पु०) (सं०) जवानी, जोबन, तरुणाई, यौवनावस्था

(र)

३७०२. **रंक, रङ्क** (वि०) (सं०) सुस्त, आलसी, दरिद्र, कंगाल, धनहीन, कृपण, कंजूस।

३७०३. **रंग, रङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) नृत्यगीत, नाच-गाना, रण-क्षेत्र, युद्धस्थल, खदिर सार, रांगा (धातु), युवावस्था, जवानी, सौन्दर्य, छवि, प्रभाव, असर, आतंक, धाक, रोब, क्रीड़ा, आनन्दोत्सव, युद्ध, लड़ाई, उमंग, मौज, आनन्द, मज़ा, हालत, दशा, दृश्य, कांड, कृपा, दया, प्रेम, अनुराग, ढब, ढंग, चाल, तर्ज़, भाँति, प्रकार, तरह, डौल, रंगत।

३७०४. **रंगभूमि, रङ्गभूमि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाट्यशाला, समरभूमि, रणक्षेत्र, अखाड़ा।

३७०५. **रंगमाता, रङ्गमाता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कुटनी, लाक्षा, लाख।

३७०६. **रंगी** (वि०) (हिं०) मौजी, आनन्दी, रंगीला, रंगीन।

३७०७. **रंगीनी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) सजावट, बनाव-सिंगार, रसिकता, रंगीलापन, बाँकापन।

३७०८. **रंगीला** (वि०) (हिं०) रसिया, रसिक, मौजी, सुन्दर, खूबसूरत, प्रेमी, अनुरागी।

३७०९. **रंच** (वि०) (हिं०) रंचक, अल्प, थोड़ा, तनिक, कुछ, ज़रा-सा मामूली।

३७१०. **रंज** (संज्ञा पु०) (फा०) दुःख, खेद, शोक, अफ़सोस।

३७११. **रंजक, रञ्जक** (संज्ञा पु०) (सं०) रङ्गरेज़, रंगसाज़, हिंगुल,

मेंहदी, भिलावाँ, (वि०) आनन्ददायक, चित्रकार ।

३७१२. **रंजन, रञ्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) पित्त, लाल चन्दन, मूँज, सोना, जायफल, कमीला वृक्ष, रंगसाज़ी, चित्रकारी ।

३७१३. **रंजनी, रञ्जनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नीली वृक्ष, मजीठ, हल्दी, पर्पटी, नागवली, जतुका-लता ।

३७१४. **रंजित, रञ्जित** (वि०) (सं०) प्रसन्न, आनन्दित, अनुरक्त ।

३७१५. **रंजीदा** (वि०) (फ़ा०) दुःखित, अप्रसन्न, असन्तुष्ट ।

३७१६. **रंध्र, रन्ध्र** (संज्ञा पु०) (सं०) छेद, सूराख़, भग, योनि, दोष, छिद्र ।

३७१७. **रंभा, रम्भा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) केला, गौरी, उत्तर दिशा, वेश्या, एक अप्सरा, रम्भाना ।

३७१८. **रई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मथानी, दलिया, सूजी, चूर्ण, (वि०) अनुरक्त, युक्त, सहित, संयुक्त, डूबी हुई, पगी हुई ।

३७१९. **रकम** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) धन, सम्पत्ति, गहना, ज़ेवर, प्रकार भाँति, धनवान्, मालदार, चलता पुरज़ा, चालाक, धूर्त्त, जवान औरत (गुंडों की बोली में) ।

३७२०. **रकाब** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) पावदान, घोड़े की काठी, रकाबी, तश्तरी ।

३७२१. **रकाबदार** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) हलवाई, खानसामा, साईस ।

३७२२. **रक़ीक़** (वि०) (अ०) तरल, द्रव, कोमल, नरम ।

३७२३. **रक्त** (संज्ञा पु०) (सं०) रुधिर, लहू, शोणित, कुंकुम, केसर, ताम्बा, कमल, सिन्दूर, हिंगुल, शिगरफ, लाल चन्दन, लाल रंग, कुसुम्भ, हिज्जल, गुलदुपहरिया, बंधूक, अस्रक, आस्र, कीलाल, क्षतज, राध, चर्मज, पुन्नाग, प्राणद, त्वज, लोहू, (अँ०) ब्लड (वि०) रंगा हुआ, अनुरक्त, लाल, ऐयाश, शुद्ध, शोधित ।

३७२४. **रक्तकंद, रक्तकन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) मूँगा, विद्रुम, प्याज़, रतालू ।

३३२५. **रक्तनेत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) रक्ताक्ष, सारस, कबूतर, चकोर, (वि०) लाल आंखों वाला ।

३३२६. **रक्तपात** (संज्ञा पु०) (सं०) खून-खराबी, मारकाट, लड़ाई-झगड़ा ।

३३२७. **रक्तांग, रक्ताङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) मंगलग्रह, कमीला, मूंगा, खटमल, केसर, लाल चन्दन ।

३३२८. **रक्ता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गुंजा, घुंघची, लाख, मजीठ, ऊँटकटारा, बच ।

३३२९. **रक्ताक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) चकोर, सारस, कबूतर, भैंस, रक्तनेत्र ।

३३३०. **रक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) रक्षक, रखवाला, रक्षा, हिफ़ाज़त, लाख, लाह ।

३३३१. **रखना** (क्रि० स०) (हिं०) ठहराना, धरना, टिकाना, रक्षा करना, सौंपना, संग्रह करना, पकड़ना, जड़ना, ज़िम्मे लगाना, मढ़ना, नियुक्त करना, आघात करना, ऋणी होना, रखेल रखना, गर्भ धारण करना, बचाना ।

३३३२. **रखवाला** (संज्ञा पु०) (हिं०) रक्षक, पहरेदार, चौकीदार ।

३३३३. **रगड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) घर्षण, हुज्जत, झगड़ा, भारी श्रम या मेहनत, संघर्षण, घिसाव ।

३३३४. **रगड़ना** (क्रि० स०) (हिं०) घर्षण करना, घिसना, पीसना, तंग करना, परेशान करना, प्रसंग करना, घोंटना, सलना ।

३३३५. **रचना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निर्माण, बनाव, स्थापित करना, उद्यम, कार्य, बाल गूंथना, केश-विन्यास, साहित्यिक कृति, बनावट, सजावट, (क्रि० स०) (हिं०) निर्माण करना, बनाना, विधान करना, निश्चित करना, सँवारना, सजाना, अनुष्ठान करना, ठानना, उत्पन्न करना, क्रम से रखना, रंगना, रंजित करना ।

३३३६. **रज** (संज्ञा पु०) (सं०) कुसुम, ऋतु, आकाश, पाप, जल, पानी, भाप, बादल, भुवन, लोम, पापड़ा, धूलि, पराग, रेत, (संज्ञा स्त्री०)

धूल, गर्द, रात, ज्योति, प्रकाश (संज्ञा पु०) (हि०) रजत, चाँदी, धोबी।

३७३७. **रजत** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चाँदी, रूपा, हाथीदाँत, हार, लहू, रक्त, सोना, रौप्य, (वि०) सफ़ेद, शुक्ल, लाल।

३७३८. **रजनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात, रात्रि, निशा, हल्दी, जतुका-लता, नील, दारुहल्दी, लाख, लाह, एक नदी, यामिनी।

३७३९. **रज़ा** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मरज़ी, इच्छा, छुट्टी, अनुमति, आज्ञा, हुक्म, स्वीकृति।

३७४०. **रण** (संज्ञा पु०) (सं०) लड़ाई, युद्ध, संग्राम, समर, जंग, रमण, शब्द, गति।

३७४१. **रत** (वि०)(सं०) अनुरक्त, आसक्त, (कार्य में) लिप्त, (संज्ञा पु०) (सं०) मैथुन, योनि, लिंग, प्रेम, प्रीति, कामकेलि, स्त्री-प्रसंग, (संज्ञा पु०) (हिं०) रक्त, लहू, ख़ून।

३७४२. **रतनारीच** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, कुत्ता, आवारा।

३७४३. **रति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मैथुन, कामक्रीड़ा, प्रेम, प्रीति, शोभा, छवि, सौभाग्य, गुप्त भेद, रहस्य, रत्ती, कामदेव की पत्नी (संज्ञा स्त्री०)रात, रात्रि।

३७४४. **रती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सौन्दर्य, शोभा, तेज, कांति, सम्भोग, मैथुन, घुँघची, गुंजा, काम-पत्नी, (वि०) थोड़ा, कम, अल्प (क्रि० वि०) ज़रा-सा, रत्ती-भर।

३७४५. **रत्ती** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शोभा, छवि, घुँघची का दाना, तौल-विशेष, (वि०) (हिं०) बहुत थोड़ा, ज़रा-सा, किंचित्।

३७४६. **रत्न** (संज्ञा पु०) (सं०) मणि, जवाहिर, नगीना, मानिक, लाल, बहुमूल्य पत्थर (वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।

३७४७. **रत्नाकर** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, रत्नसमूह, सागर, समुद्र, महोदधि।

३७४८. **रथ** (संज्ञा पु०) (सं०) बहल, स्यंदन, शरीर, पैर, तिनिस

का पेड़, गाड़ी, चक्रपाद, चक्राङ्ग, ध्वजी, युद्धयान, विमान, वेग, स्यन्दन।

३७४९. **रथ्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाली, चौक, गली, मार्ग, राह, बाट, डगर।

३७५०. **रद** (संज्ञा पु०) (सं०) दंत, दाँत, (वि०) (अ०) नष्ट, खराब, तुच्छ, निरर्थक, दशन, निष्प्रयोजन, उच्छिष्ट, उगार, उगाल, छाट, कै।

३७५१. **रद्द** (वि०) (अ०) बदला हुआ, परिवर्तित, ख़राब, निकम्मा, बेकार।

३७५२. **रद्दा** (संज्ञा पु०) (देशज) तह, स्तर।

३७५३. **रद्दी** (वि०) (फ़ा०) निकम्मा, बेकार, पुराना काग़ज़।

३७५४. **रन** (संज्ञा पु०) (हिं०) रण, युद्ध, लड़ाई, जंगल, वन, संग्राम, समर, झील, ताल।

३७५५. **रनवास** (संज्ञा पु०) (हिं०) महल, अन्तःपुर, ज़नानखाना।

३७५६. **रपट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) दौड़, ढाल, उतार, फिसलन, खिसकन, रपटन।

३७५७. **रपटना** (क्रि० अ०) (हिं०) फिसलना, झपटना, गिरना, खिसकना।

३७५८. **रपट्टा** (संज्ञा पु०) (हिं०) फिसलाव, झपट्टा, चपेट, दौड़-धूप।

३७५९. **रबड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हैरानी, गहरा श्रम, रगड़, घुमाव, चक्कर, थकाई, थकावट, दौड़-धूप।

३७६०. **रब्त** (संज्ञा पु०) (सं०) अभ्यास, मेलजोल, सम्पर्क।

३७६१. **रभस** (संज्ञा पु०) (सं०) वेग, हर्ष, प्रेमोत्साह, उत्सुकता, पछतावा, संभ्रम।

३७६२. **रम** (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, लाल अशोक, प्रेमी, पति, मदिरा-विशेष।

३७६३. **रमक** (संज्ञा पु०)(सं०) प्रेमी, उपपति, जार, (संज्ञा स्त्री०)

(हिं०) तरंग, झकोरा, झूला, अन्तिम साँस, हलका प्रभाव, स्वल्प भाग (वि०) ज़रा-सा, थोड़ा-सा ।

३७६४. **रमण** (संज्ञा पु०) (सं०) विलास, क्रीड़ा, मैथुन, गमन, पति, कामदेव, जघन, अंडकोष, गधा, चित्त-विनोद, क्रीड़ा, खेल, विहार, (वि०) सुन्दर, मनोहर, प्रिय, आनंददायी, रमनेवाला ।

३७६५. **रमणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुन्दरी, युवती स्त्री, स्त्री, ललना, महिला ।

३७६६. **रमति** (संज्ञा पु०) (सं०) नायक, स्वर्ग, कौवा, काल, कामदेव ।

३७६७. **रमना** (क्रि० अ०) (हिं०) आनन्द करना, मजा उड़ाना, व्याप्त होना, अनुरक्त होना, लीन होना, घूमना-फिरना, चल देना, विहार करना, विचरना, रमन करना, खेलना-कूदना, (संज्ञा पु०) बाग, घेरा, हाता ।

३७६८. **रमाना** (क्रि० स०) (हिं०) अनुरक्त करना, लीन करना, लुभाना, अनुकूल बनाना, ठहराना, जोड़ना, संयुक्त करना, खिलाना, फुसलाना, बुझाना ।

३७६९. **रम्य** (वि०) (सं०) सुन्दर, मनोरम, (संज्ञा पु०) चम्पा का पेड़, बक का पेड़, परवल की जड़, वीर्य ।

३७७०. **रम्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात्रि, रात, गंगा नदी, स्थल-पद्मिनी, इद्रायन, लक्षणकन्द, (वि०) मनोहारिणी, सुन्दरी ।

३७७१. **रय** (संज्ञा पु०) (हिं०) धूल, गर्द, वेग, प्रवाह, धारा, (सं०) वेग, तेजी ।

३७७२. **रयना** (क्रि० अ०) (हिं०) अनुरक्त होना, मिलना, संयुक्त होना, बोलना ।

३७७३. **ररकना** (क्रि० अ०) (हिं०) कसकना, टीसना, पीड़ा देना ।

३७७४. **रली** (संज्ञा स्त्री०) विहार, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द ।

३७७५. **रव** (संज्ञा पु०) (सं०) ध्वनि, गुंजार, नाद, आवाज़, शब्द, शोर, गुल, विवाद, आहट, (हिं०) रवि, सूर्य ।

३७७६. **रवश** (संज्ञा पु०) (सं०) कोयल, काँसा, रव, शब्द, ऊँट, विदूषक, भाँड़, (वि०) गरम, तप्त, चंचल, अस्थिर।

३७७७. **रवाँ** (वि०) (फ़ा०) प्रवाहित, बहता हुआ, चलता हुआ, छोटा हुआ, पैना, तेज़।

३७७८. **रवा** (संज्ञा पु०) (हि०) छोटा टुकड़ा, कण, दाना, सूजी, बारूद का दाना, चूर, धूल, बालू, (वि०) (फ़ा०) ठीक, उचित, प्रचलित, चलनसार।

३७७९. **रवाज** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) परिपाटी, प्रथा, चलन, रीति।

३७८०. **रवि** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, आक, अग्नि, नायक, सरदार, मार्त्तण्ड, दिवाकर।

३७८१. **रवितनय** (संज्ञा पु०) (सं०) यमराज, सावर्णिमनु, वैवस्तमनु, शनैश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।

३७८२. **रविनंद, रविनन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) कर्ण, यम, अश्विनी-कुमार, सुग्रीव, सावर्णिमनु, वैवस्तमनु, शनि।

३७८३. **रविप्रिय** (संज्ञा पु०) (सं०) लाल कमल, ताँबा, लाल कनेर, आक, मदार।

३७८४. **रविवार** (संज्ञा पु०) (सं०) इतवार, आदित्यवार, रविवासर, अतवार।

३७८५. **रविश** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) गति, चाल, तरीका, ढंग।

३७८६. **रवैया** (संज्ञा पु०) (हिं०) चलन, चाल-चलन, तरीका, ढंग।

३७८७. **रश्क** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) ईर्ष्या, डाह।

३७८८. **रश्मि** (संज्ञा पु०) (सं०) किरण, बाग, बरौनी, रोयें, मयूक, तेज, कान्ति।

३७८९. **रस** (संज्ञा पु०) (सं०) आनन्द, मज़ा, प्रेम, प्रीति, काम, क्रीड़ा, विहार, उमंग, जोश, वेग, गुण, द्रव पदार्थ, जल, पानी, रस, शोरबा, शरबत, लासा, लुआब, वीर्य, विष, राग, पारा, शिलारस, गन्धरस, हिंगुल, भाँति, तरह, विषय, बल, स्वाद, संवाद, अर्क, सार, निष्कर्ष, मेल, मिलाप,

भस्म, काढ़ा, निर्यूष द्रव, सुधा, (अं०) ज्यूस ।

३७९०. **रसगर्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) रसौत, रसांजन, हिंगुल, इंगुर ।

३७९१. **रसज्ञ** (वि०) (सं०) निपुण, कुशल, रसावनी ।

३७९२. **रसद** (वि०) (सं०) स्वादिष्ट, सुखद, (संज्ञा पु०) चिकित्सक ।

३७९३. **रसना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जीभ, जिह्वा, करधनी, गंध, भद्रा-लता, लगाम, रस्सी, चन्द्रहार, रसज्ञा ।

३७९४. **रसपति** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्द्रमा, पारा, शृंगार रस, राजा ।

३७९५. **रसराज** (संज्ञा पु०) (सं०) पारा, शृंगार रस, रसौत, रसांजन ।

३७९६. **रसा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, जीभ, नदी, रसातल, शिलारस, मेदा, अँगूर, शल्लकी, रासना, पाढ़ा, पाठा, काकोली, आम, भूमि, धरती, धरा, (संज्ञा पु०) झील, शोरबा ।

३७९७. **रसायन** (सं० पु०) (सं०) तक्र, कटि, कमर, विष, बायबिडङ्ग, कीमिया ।

३७९८. **रसायनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गुडुच, मकोय, महाकरंज, गोरखदुद्धी, मांसरोहिणी, मजीठ, कौंछ, सफ़ेद निसोथ, शंखपुष्पी, कंदगिलोय, नाड़ी ।

३७९९. **रसाल** (संज्ञा पु०) (सं०) आम, गन्ना, गेहूँ, कटहल, अम्लबेत, कुन्दुरतृण, शिलारस, आम्र (वि०) मधुर, रसीला, सुन्दर, स्वादिष्ट, शुद्ध, रसिक, रसिया (हिं०) कर, राजस्व, (अं०) टैक्स ।

३८००. **रसाला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सिखरन, श्रीखंड, दूब, दाख, जीभ, गन्ना, विदारी कन्द ।

३८०१. **रसालिका** (वि०) (हिं०) सरस, मधुर, मृदु, (संज्ञा स्त्री०) छोटा आम, सातला ।

३८०२. **रसाली** (संज्ञा पु०) (हिं०) रसिक, गन्ना, चना ।

३८०३. **रसिक** (संज्ञा पु०) (सं०) सहृदय, रसिया, प्रेमी, काव्यज्ञ, सारस पक्षी, घोड़ा, हाथी, रसज्ञ, रसज्ञाता, रसीला ।

३८०४. **रसित** (वि०) (सं०) बहता हुआ, टपकता हुआ, रस-युक्त, (संज्ञा पु०) ध्वनि, शब्द, द्राक्षासव ।

३८०५. **रसीद** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) प्राप्तिका, खबर, पता, पहुंच-पत्र, संवाद-पत्र ।

३८०६. **रसीला** (वि०) (हिं०) रसयुक्त, स्वादिष्ट, प्रेमी, बाँका, छबीला, सुन्दर, रसपूर्ण, भोगी, विलासी ।

३८०७. **रसूख** (संज्ञा पु०) (अ०) धैर्य, अध्यवसाय, विश्वास, एतबार ।

३८०८. **रसूम** (संज्ञा पु०) (अ०) नियम, कानून ।

३८०९. **रसोई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चौका, पाक, भोजन ।

३८१०. **रस्म** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मेल-जोल, प्रथा, औपचारिक प्रथा, परिपाटी, रिवाज ।

३८११. **रहना** (क्रि० अ०) (हिं०) स्थित होना, ठहरना, रुकना, थमना, निवास करना, विद्यमान होना, समय बिताना, नौकरी करना, जीवित रहना, जीना, बाकी बचना, छूट जाना, कामकाज करना, स्थापित होना; समागम करना, टिकना, बसना ।

३८१२. **रहनि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आचरण, चाल-ढाल, प्रेम, प्रीति, लगन, रीति, व्यवहार, चलन ।

३८१३. **रहम** (संज्ञा पु०) (अ०) दया, करुणा, कृपा, अनुग्रह ।

३८१४. **रहस्** (संज्ञा पु०) (सं०) गुप्त भेद, क्रीड़ा, खेल, सुख, गूढ़ तत्त्व, मर्म, एकांतता, एकांत स्थान ।

३८१५. **रहस** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, स्वर्ग, (संज्ञा पु०) (हि०) रहस्य, लीला, क्रीड़ा, आनन्द, गुप्त स्थान, एकांत स्थान, ठठोलपन, हसौवा, हसोड़पन, कृष्णलीला ।

३८१६. **रहस्य** (संज्ञा पु०) (सं०) गुप्त भेद, गूढ़ तत्त्व, हँसी, ठट्ठा, मज़ाक, गुप्त तत्त्व, गुप्त वार्ता, मर्म, सलाह, निगूढ़, गोपनीय, गुप्त ।

३८१७. **रहाट** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेतात्मा, मंत्री, आमात्य ।

३८१८. **रहीम** (वि०) (अ०) दयालु, कृपालु ।

३८१९. **राई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोटा परिमाण, राजपन, राजश्री, सरसों (संज्ञा पु०) राजा, प्रधान, स्वामी ।

३८२०. **राका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पूर्णमासी, खुजली का रोग, पूर्णिमा, पूनो ।

३८२१. **राक्षस** (संज्ञा पु०) (सं०) दैत्य, असुर, दुष्ट प्राणी, अपदेवता, अहि, अक्ष, आशर, ऊर्दर, कर्बर, कीलालय, कौणाप, मलेक्ष, मनुजादा, मांसाहारी, यातुधान, निशाचर, हनूष, पिशाच, दैत्य, क्षपाट, खचर, खर, चण्ड, दानव, तरन्त, दनुज, दानु, दितिज, दित्य, देवशत्रु, नरविष्णव, नीलाम्बर, पातालनिलय, पुरुषाद्य, पुरुषाद, पूरुषादक, भीष्म, रजनीचर, शुण्ड, सूचक, तमचर, त्रिदशारि, दस्यु, देवशत्रु, देवारि, सुरवैरी, सुर-शत्रु, सुरारि, अनुशर, अमानुष, अविबुध, अशिर, अस्रप, कैकस ।

३८२२. **राख** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भस्म, भभूत, खाक ।

३८२३. **राग** (संज्ञा पु०) (सं०) मत्सर, प्रेम, अनुराग, कष्ट, पीड़ा, मोह, अंगराज, राजा, सूर्य, चन्द्र, महावर, ईर्ष्या, द्वेष ।

३८२४. **रागी** (संज्ञा पु०) (हिं०) अनुरागी, प्रेमी, गवैया, गायक, (संज्ञा स्त्री०) रानी (वि०) लाल, सुर्ख, रँगा हुआ, विषयासक्त, प्रिय ।

३८२५. **राघव** (संज्ञा पु०) (सं०) रघुवंशी, रामचन्द्रजी, दशरथ, अज, रघुनाथ ।

३८२६. **राज** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) राज्य, शासन, प्रभुत्व, पूर्णाधिकार, राजा, भूसम्पत्ति, जमींदारी ।

३८२७. **राजकरण** (संज्ञा पु०) (सं०) न्यायालय, अदालत, राजनीति, (अँ०) इस्टेट ।

३८२८. राजद्रोह (संज्ञा पु०) (सं०) द्रोह, विद्रोह, बगावत, (अँ०) सेडिशन ।

३८२९. **राजपुत्री** (संज्ञा पु०) (सं०) राजपुत्रिका, राजकन्या, मालती, रेणुका, जूही, छछूंदर, कड़वा कद्दू ।

३८३०. **राजभद्रक** (संज्ञा पु०) (सं०) परिभद्रक, निंब, नीम, कुष्ठ,

कुड़ा, कुँदरू, आक (सफ़ेद) ।

३८३१. **राजराज** (संज्ञा पु०) (सं०) महाराज, सम्राट्, कुबेर, चन्द्रमा ।

३८३२. **राजा** (संज्ञा पु०) (हि०) भूप, महीप, नृप, नृपति, नृपाल, नरेश, अधीश, अवनिपति, क्षोणिप, छोनिप, किरीट-धारी, प्रजापति, चक्रधर, जगतीश्वर, जयपाल, दंडनायक, दंडनेता, नरदेव, पृथ्वीपाल, पृथ्वीश, पृथ्वी-राज, भुआल, भूपाल, भूमिपति, भूमीन्द्र, भूवल्लभ, मनुजाधिप, मालिक, लोक-नाथ, अधिप, गोसाईं, स्वामी, नृदेवता, गोपति, गोपीथ, जनदेव, जयपाल, (अ०) किबलाआलम, (अं०) क्राउन, ड्यूक, मौनार्क, किंग, रूलर ।

३८३३. **राजि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पंक्ति, कतार, रेखा, लकीर, राई ।

३८३४. **राजिका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पंक्ति, कतार, रेखा, लकीर, राई, क्यारी, सरसों (लाल), महुआ, कठूमर ।

३८३५. **राज़ी** (वि०) (अ०) सहमत, अनुकूल, निरोग, स्वस्थ, प्रसन्न, खुश, सुखी, (संज्ञा स्त्री०) रज़ामन्दी, अनुकूलता ।

३८३६. **राजीव** (संज्ञा पु०) (सं०) कमल, पद्म, हाथी, रैया मछली, (वि०) (सं०) धारीदार ।

३८३७. **राड़** (वि०) (हिं०) नीच, निकम्मा, कायर, (संज्ञा स्त्री०) (*राजस्थानी*) झगड़ा ।

३८३८. **रात** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) रात्रि, निशा, शर्वरी, विभावरी, रजनी, रैन, राका, यामिनी, हल्दी, नक्त, आवासति, धृताची, चक्रभेदिनी, असुरा, इन्दुकान्त, चन्द्रकान्ता, ज्योतिष्मती, कलापिनी, क्षिप, तमस्वती, तमस्विनी, तमी, तुंगी, दोषा, निशीथिनी, निशीथ्या, मालमी, सारंम, कर्वरी, ताराभूषा, त्रिजामा, अंजन, अंधिका ।

३८३९. **रात्रिचर** (संज्ञा पु०) (सं०) निशाचर, राक्षस, रात्रिञ्चर, भूत ।

३८४०. **रात्रि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निशा, रात, रैन, रजनी, हल्दी ।

३८४१. **राधन** (संज्ञा पु०) (सं०) साधन, मिलना, प्राप्ति, सन्तोष, तुष्टि।

३८४२. **राधा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रीति, प्रेम, वैशाख की पूर्णिमा, राधिका, विशाखा नक्षत्र, बिजली, आंवला, विष्णुक्रांतालता।

३८४३. **रानी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) स्वामिनी, मालकिन, बेगम, राजपत्नी, महारानी, राज्ञी।

३८४४. **राम** (संज्ञा पु०) (सं०) परशुराम, बलराम, बलदेव, ईश्वर, वरुण, घोड़ा, अशोक वृक्ष, तेजपत्ता, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, सीतापति, कौशलेय, घनश्याम, पुरुषोत्तम, राघव।

३८४५. **रामजनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रंडी, वेश्या।

३८४६. **रामट** (संज्ञा पु०) (सं०) मैनफल, हींग, चिचड़ा।

३८४७. **रामदूती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तुलसी, नागदंती, नागपुष्पी।

३८४८. **रामराम** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रणाम, नमस्कार, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मुलाकात, सामना।

३८४९. **रामा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुन्दर स्त्री, नदी, लक्ष्मी, सीता, राधा, कार्तिक नदी, एकादशी, हींग, नदी, सफ़ेद भटकटैया, घीकुआर, शीतला, अशोक, गोरोचन, सुगन्धवाला, गेरू, त्रायमात्रलता, तमालपत्र, नारी, सुन्दर स्त्री।

३८५०. **रामिल** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रेमपात्र, रमण, कामदेव, पति, स्वामी।

३८५१. **राय** (संज्ञा पु०) (हिं०) राजा, सरदार, (संज्ञा स्त्री०) (फा०) सम्मति, सलाह, अनुमति, मति, निदेश, नियोग, परामर्श, मंत्र, मंत्रण, मंत्रणा, अभिमत, अभिलाष, (वि०) (हिं०) बड़ा, बढ़िया।

३८५२. **राव** (संज्ञा पु०) (हिं०) राजा, सरदार, भाट, धनाढ्य, राय, राई।

३८५३. **रावत** (संज्ञा पु०) (हिं०) छोटा राजा, वीर, बहादुर, सेनापति, सरदार, सूरमा, सामन्त।

३८५४. **रावल** (संज्ञा पु०) (हिं०) रनिवास, राजा, सरदार, प्रधान।

३८५५. **राशि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पुंज, ढेर, समूह, भंडार, उत्तराधिकारी।

३८५६. **राष्ट्र** (संज्ञा पु०) (सं०) राज्य, देश, (अँ०) नेशन।

३८५७. **रास** (संज्ञा पु०) (सं०) कोलाहल, हल्ला, शृंखला, जंजीर, विलास, क्रीड़ा, खेल, नर्तक समाज, व्याज, (संज्ञा स्त्री०) बागडोर, लगाम।

३८५८. **रासभ** (संज्ञा पु०) (सं०) गधा, गदहा, गर्दभ, खर, खच्चर।

३८५९. **रासु** (वि०) (हिं०) ठीक, सीधा, सरल।

३८६०. **रासेरस** (संज्ञा पु०) (सं०) गोष्ठी, रासक्रीड़ा, शृंगार, उत्सव, हँसी, मज़ाक, ठट्ठा।

३८६१. **रास्ता** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) मार्ग, राह, पथ, रीति, प्रथा, चाल, उपाय, तरकीब, क़ायदा।

३८६२. **राह** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) मार्ग, रास्ता, प्रथा, चाल, रीति, नियम, क़ायदा।

३८६३. **राहगीर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) मुसाफ़िर, राही, पथिक।

३८६४. **राहत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) आराम, सुख, चैन।

३८६५. **राहित्य** (संज्ञा पु०) (सं०) अभाव, खालीपन।

३८६६. **रिंग** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) अँगूठी, छल्ला, घेरा, मंडल।

३८६७. **रिंद** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) स्वच्छन्द व्यक्ति, मनमौजी आदमी मतवाला, मस्त।

३८६८. **रिक्त** (वि०) (सं०) खाली, शून्य, ग़रीब, निर्धन, खोखला रीता, (संज्ञा पु०) (सं०) वन, जंगल।

३८६९. **रिपु** (संज्ञा पु०) (सं०) शत्रु, दुश्मन, वैरी, विरोधी, द्वेषी।

३८७०. **रियासत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) राज्य, अमलदारी, अमीरी रईसी, ऐश्वर्य, वैभव।

३८७१. **रिलना** (क्रि०) (हिं०) मिल जाना, पैठना, घुसना।

३८७२. **रिष्ट** (संज्ञा पु०) (सं०) कल्याण, मंगल, अमंगल, अभाव,

नाश, पाप, खड्ग (वि०) नष्ट, बरबाद, (हि०) प्रसन्न, मोटा-ताज़ा ।

३८७३. **री** (अव्यय) (हि०) अरी, एरी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गति, शब्द, रव, वध, हत्या ।

३८७४. **रीज्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) घृणा, निंदा, भर्त्सना ।

३८७५. **रीठ** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) तलवार, युद्ध, (वि०) (हि०) अशुभ, बुरा, खराब ।

३८७६. **रीति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ढब, ढंग, तरह, रस्म, रिवाज, नियम, क़ायदा, सीसा, पीतल, गति, स्वभाव, प्रशंसा, स्तुति, चाल-चलन, प्रकार, व्यवहार ।

३८७७. **रु** (संज्ञा पु०) (हि०) शब्द, वध, गति, (अव्यय) और ।

३८७८. **रुआब** (संज्ञा पु०) (अ०) धाक, रोब, भय, आतंक, डर ।

३८७९. **रुकना** (क्रि०) (हि०) अटकना, अवरुद्ध होना, बन्द होना, प्रतिहत होना, विरत होना, ठहरना ।

३८८०. **रुकाव** (संज्ञा पु०) (हि०) रोक, रुकावट, अवरोध, विघ्न, बाधा, अटकाव, अड़चन, मलावरोध, कब्ज, स्तम्भन ।

३८८१. **रुक्म** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वर्ण, सोना, सुवर्ण, हिरण्य, धतूरा, लोहा, नागकेसर ।

३८८२. **रुक्ष** (वि०) (सं०) रूखा, खुरदरा, नीरस, शुष्क, शील-रहित (संज्ञा पु०) वृक्ष, पेड़, घास-विशेष ।

३८८३. **रुख** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कपोल, गाल, मुख, आकृति, चेष्टा, कृपा, दृष्टि, अंग, पार्श्व, स्वभाव, व्यवहार, वृक्ष, पेड़, तरु, तरुवर, (अँ०) मूड ।

३८८४. **रुग्ण** (वि०) (सं०) रोगग्रस्त, रोगी, बिमार, बीमार, झुका हुआ, टेढ़ा, टूटा हुआ, बिगड़ा हुआ ।

३८८५. **रुचक** (संज्ञा पु०) (सं०) सज्जीखार, माला, काला नमक, मांगल्यद्रव्य, रोचना, बायबिडङ्ग, नमक, बिजौरा नीबू, दाँत, कबूतर, दक्षिण दिशा, चौकोर खंभा, आभूषण-विशेष ।

३८८६. रुचा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रकाश, शोभा, इच्छा, तोते की बोली।

३८८७. रुचि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रेम, चाह, किरण, शोभा, कांति, भूख, स्वाद, इच्छा, अभिलाषा, पसन्द।

३८८८. रुचिकारी (वि०) (सं०) रुचिकर, स्वादिष्ट, मनोहर, प्यारा, पाचक।

३८८९. रुचिता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रोचकता, अनुराग, सुन्दरता।

३८९०. रुचिर (वि०) (सं०) सुन्दर, मीठा, मनोहर, मनभावन, (संज्ञा पु०) मूली, केसर, लौंग।

३८९१. रुच्य (वि०) (सं०) रुचिकर, सुन्दर, मनोहर, (संज्ञा पु०) (सं०) सेंधा नमक, शालिधान्य, पति, स्वामी।

३८९२. रुज (संज्ञा पु०) (सं०) रोग, कष्ट, घाव, क्षत, भाँग, भंग।

३८९३. रुजा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रोग, भाँग, भंग, कुष्ठ, कोढ़, भेड़ी, पीड़ा।

३८९४. रुपया (संज्ञा पु०) (हिं०) मुद्रा, चाँदी का सिक्का।

३८९५. रुष (संज्ञा पु०) (हिं०) (सं०) क्रोध, गुस्सा।

३८९६. रुहा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दूब, अतिबला, माँसरोहिणी लता, लजालू।

३८९७. रू (संज्ञा पु०) (फ़ा०) मुँह, चेहरा, द्वार, कारण, आशा, सिरा, सामना, आगा।

३८९८. रूई (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तूल, तूलक, पिचुतूल, पिचुल, पिजा, बरदा, बण्डी, भूवार, अम्बर, सूत।

३८९९. रूखा (वि०) (हिं०) स्वाद-रहित, फीका, सूखा, शुष्क, नीरस, खुरदुरा, शील-रहित, विरक्त, उदासीन, रुक्ष, कठिन, कठोर।

३९००. रूखापन (संज्ञा पु०) (हिं०) रुखाई, खुश्की, नीरसता।

३९०१. रूढ़ (वि०) (सं०) चढ़ा हुआ, आरूढ़, उत्पन्न, जात, प्रसिद्ध, गँवार, कठोर, अकेला, अविभाज्य।

३६०२. रूढ़ि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चढ़ाई, चढ़ाव, वृद्धि, बढ़ती, उभार, उठान, जन्म, उत्पत्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, विचार, निश्चय, रीति, चाल, (अँ०) कस्टम ।

३६०३. रूदाद (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) हाल, समाचार, दशा, अवस्था, विवरण, कैफ़ियत, व्यवस्था, अदालती कार्यवाही ।

३६०४. रूप (संज्ञा पु०) (सं०) शकल, सूरत, स्वभाव, प्रकृति, सौन्दर्य, सुन्दरता, देह, शरीर, वेष, भेस, दशा, अवस्था, समान, तुल्य, सदृश, अनुरूप, भेद, विचार, चिह्न, लक्षण, चाँदी, रूपक, आकार, आकृति, (वि०) (सं०) रूप वाला, ख़ूबसूरत ।

३६०५. रूपण (संज्ञा पु०) (सं०) आरोप करना, प्रमाण, परीक्षा ।

३६०६. रूपता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुन्दरता, ख़ूबसूरती, रूपत्व ।

३६०७. रूपा (संज्ञा पु०) (हिं०) चाँदी, रजत, घटिया चाँदी, सफ़ेद घोड़ा, सफ़ेद बैल, नुकरा, श्वेत धातु ।

३६०८. रूपी (वि०) (हिं०) रूपधारी, रूप वाला, तुल्य, समान, सुन्दर, ख़ूबसूरत ।

३६०९. रूप्य (वि०) (सं०) सुन्दर, उपमेय, (संज्ञा) रूपा, चाँदी ।

३६१०. रेख (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रेखा, लकीर, चिह्न, निशान, गिनती, गणना, बिन्दु, समूह ।

३६११. रेखा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लकीर, गणना, गिनती, रूप, आकार, चिह्न, ललाट, कपाल, भाग्य, प्रारब्ध ।

३६१२. रेचक (संज्ञा पु०) (सं०) जमालगोटा, पिचकारी, जवाखार, जुलाब, दस्तावर दवा ।

३६१३. रेट (संज्ञा पु०) (अँ०) भाव, निर्ख़, चाल, गति ।

३६१४. रेणु (संज्ञा स्त्री०) (सं०) धूल, बालू, पृथ्वी, कणिका, रज ।

३६१५. रेणुका (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बालू, रेत, रज, धूल, पृथ्वी, लघु परिमाण ।

३६१६. रेल (संज्ञा पु०) (हिं०) वीर्य, रज, पारा, (संज्ञा स्त्री०)

बालू, धूल, बलुआ मैदान ।

३६१७. रेफ़ (संज्ञा पु०) (सं०) राग, शब्द, रकार, 'र' अक्षर, (वि०) कुत्सित, अधम ।

३६१८. रेल (संज्ञा पु०) (अं०) रेलगाड़ी, रेल की पटरी (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बहाव, धारा आधिक्य, भरमार ।

३६१९. रेला (संज्ञा पु०) (देशज) तेज़ बहाव, तोड़, धावा, धक्का, बाढ़ ।

३६२०. रेवड़ (संज्ञा पु०) (देशज) भेड़, झुंड, लेहड़ा, ग़ल्ला ।

३६२१. रेवती (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गाय, दुर्गा, एक बालग्रह, नक्षत्र-विशेष, सत्ताईसवाँ नक्षत्र ।

३६२२. रेवा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रति, नील का पौधा, मछली-विशेष, रागिनी-विशेष, बघेलखंड, नर्मदा नदी ।

३६२३. रैवत (संज्ञा पु०) (सं०) साममन्त्र, शिव, मेघ, बादल, पर्वत-विशेष ।

३६२४. रोक (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रुकावट, अवरोध, प्रतिबंध, मनाही, निषेध, अटक, छेक, रुकाव, अटकाव, (वि०) नकद (अं०) कैश, (संज्ञा पु०) (हिं०) नकद रुपया, नकद सौदा, नौका, दीप्ति, छिद्र ।

३६२५. रोकड़ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नकद धन, जमा, धन, पूँजी, नगद, नक़दी, रुपैया, पैसा, (अं०) कैश ।

३६२६. रोग़न (संज्ञा पु०) (फ़ा०) तेल, चिकनाई ।

३६२७. रोग (संज्ञा पु०) (हिं०) व्याधि, पीड़ा, दुःख, शारीरिक अस्वस्थता, अस्वास्थ्य, अकल्प, आतुर्य्य, आमय, ग्लानि, क्षय, क्षिद्र, बीमारी, पीड़ा, बला, विकार, मरज़, रुज, रुजा, दोषिक, स्नेहु, अमत, अमस, खिद्र, आरजा ।

३६२८. रोगी (वि०) (हिं०) बीमार, पीड़ित, अस्वस्थ, रोगग्रस्त, रोगिया, आतुर, बीमार, सरूज, मरीज़, अलील ।

३६२६. **रोचक** (वि०) (सं०) रुचिकारक, मनोरंजन, पाचक, मन-भावन, (संज्ञा पु०) भूखा, केला, लाल प्याज़ ।

३६३०. **रोचकता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मनोरंजकता, दिलचस्पी ।

३६३१. **रोचन** (वि०) (सं०) रुचनेवाला, मनोहर, रुचिकर, रोचक, लाल, शोभादायक, (संज्ञा पु०) (सं०) पसंद, हल्दी, गोरोचन, केशर, दर्पण, काला सेमर, कमीला, सफ़ेद सहिजन, प्याज़, अमलतास, करंज, अंकोट, अनार, रोली, गोरोचना ।

३६३२. **रोचना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लाल कमल, श्रेष्ठ स्त्री, गोरोचन, आकाश, काला सेमर, वंशलोचन, हल्दी, पीला रंग ।

३६३३. **रोचनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आँवला, मैनसिल, गोरोचन, सफेद निशीथ, दंती, तारा, तारका, कमीला ।

३६३४. **रोचि** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रभा, दीप्ति, शोभा, किरण, रश्मि ।

३६३५. **रोज** (संज्ञा पु०) (हिं०) रुदन, रोना-पीटना, विलाप, स्यापा, दिन, दिवस, प्रतिदिन ।

३६३६. **रोजगार** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) व्यापार, तिजारत, व्यवसाय, कारबार, पेशा, जीविका ।

३६३७. **रोजी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) रोज़ या नित्य का भोजन, जीविका, रोज़गार, आजीविका ।

३६३८. **रोटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) फुलका, भोजन, खाना, रसोई, भोज्य वस्तु, डबलरोटी ।

३६३६. **रोधन** (संज्ञा पु०) (सं०) रोक, रुकावट, अवरोध, दमन, रोकाव, अटकाव, प्रतिबन्ध, (संज्ञा पु०) (हिं०) रोना, विलाप करना ।

३६४०. **रोध्र** (संज्ञा पु०) (सं०) पाप, अपराध, जुर्म, लोध्र, लोध ।

३६४१. **रोना** (क्रि० अ०) (हिं०) आँसू बहाना, रुदन करना, बुरा मानना, चिढ़ना, पछताना, रोदन करना, डबडबाना, आर्तनाद, क्रन्द, क्रन्दन, रोदन, विलाप, परिदेव, परिदेवन ।

३६४२. **रोप** (संज्ञा पु०) (सं०) रुकावट, वृद्धि फेरना, छेद, सूराख, बाण, तीर।

३६४३. **रोपण** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊपर रखना, स्थापित करना, लगाना, जमाना, स्थित करना, उठाना, मोहित करना, मोहन, स्थापन, पेड़ लगाना, लेप लगाना।

३६४४. **रोपना** (क्रि० स०) (हिं०) जमाना, लगाना, अड़ाना, ठहराना, बीज बोना, रोकना, रोपण करना।

३६४५. **रोपित** (वि०) (सं०) रखा हुआ, स्थापित, मोहित, भ्रान्त, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ।

३६४६. **रोब** (संज्ञा पु०) (अं०) प्रभाव, आतंक, दबदबा।

३६४७. **रोम** (संज्ञा पु०) (सं०) रोआँ, लोम, छेद, छिद्र, जल, ऊन, बाल, केश, इटली की राजधानी।

३६४८. **रोर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कोलाहल, रौला, हल्ला, उपद्रव, उत्पात, हुल्लड़, धूमधाम, भीड़भाड़, (वि०) प्रचंड, तेज़, उपद्रवी, उद्धत।

३६४९. **रोरी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) तिलक, चहल-पहल, धूम, (वि०) सुन्दर, (संज्ञा पु०) एक रत्न।

३६५०. **रोल** (सज्ञा स्त्री०) (सं०) कोलाहल, शब्द ध्वनि।

३६५१. **रोला** (संज्ञा पु०) (हिं०) शोरगुल, कोलाहल, घमासान युद्ध।

३६५२. **रोशन** (वि०) (फा०) जलता हुआ, प्रदीप्त, चमकदार, प्रसिद्ध, प्रकट, ज़ाहिर।

३६५३. **रोशनाई** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) स्याही, प्रकाश, उजाला।

३६५४. **रोशनी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) उजाला, प्रकाश, दीपक दीया।

३६५५. **रोष** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रोध, गुस्सा, चिढ़, कुढ़ना, वैर-विरोध, जोश, कोप, रिस, अप्रसन्नता।

३६५६. **रोषण** (संज्ञा पु०) (सं०) पारा, कसौटी, ऊसर भूमि, (वि०) क्रुद्ध।

३९५७. **रोह** (संज्ञा पु०) (*सं*०) चढ़ना, चढ़ाई, कली, अंकुर, (संज्ञा पु०) (*देश*०) नीलगाय।

३९५८. **रोहना** (क्रि० अ०) (*हिं*०) चढ़ना, सवार होना, (क्रि० स०) चढ़ाना, सवार कराना, पहनाना।

३९५९. **रोहिणी** (संज्ञा स्त्री०) (*सं*०) गाय, बिजली, कुटकी, करंज, रीठा, महाश्वेता, काश्मरी, ब्राह्मी बूटी, एक मछली, मजीठ, नक्षत्र-विशेष।

३९६०. **रोहित** (वि०) (*सं*०) लाल रंग का (संज्ञा पु०) लाल रंग, एक मछली, केसर, रक्त, लहू, खून, कुसुम का फूल, कुंकुम, केसर, इन्द्रधनुष।

३९६१. **रौंद** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं*०) चक्कर, गश्त।

३९६२. **रौ** (संज्ञा स्त्री०) (*फ़ा*०) गति, चाल, वेग, तेज़ी, धुन, पानी का बहाव, चाल, ढंग।

३९६३. **रौद्र** (वि०) (*सं*०) रुद्र-सम्बन्धी, प्रचंड, उग्र, क्रोधपूर्ण, भयानक, भयङ्कर, (संज्ञा पु०) क्रोध, धूप, घाम, यमराज, एक केतु, रस-विशेष।

३९६४. **रौनक़** (संज्ञा स्त्री०) (*अ*०) चमक-दमक, दीप्ति, प्रफुल्लता, शोभा, सुहावनापन।

३९६५. **रौरव** (वि०) (*सं*०) भयंकर, डरावना, बेईमान, चंचल, नरक-विशेष, अति कष्टदायक।

३९६६. **रौस** (संज्ञा स्त्री०) (*फ़ा*०) गति, चाल, रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा।

३९६७. **रौहिणेय** (संज्ञा पु०) (*सं*०) बलराम, बलदेव, बछड़ा, बुध ग्रह, मरकत मणि, पन्ना।

(ल)

३९६८. **लंक, लङ्क** (संज्ञा स्त्री०) (*सं*०) कमर, कटि, लंकाद्वीप।

३९६९. **लंकनाथ, लङ्कनाथ** (संज्ञा पु०) (*सं*०) रावण, विभीषण, लंकनायक, लंकपति।

३९७०. **लंका, लङ्का** (संज्ञा स्त्री०) (*सं*०) शिबीधान्य, असन्नरग, कालचना, शाखा, डाली, सिंहलद्वीप (*अँ*०) सीलोन।

३६७१. **लंबन, लम्बन** (संज्ञा पु०) (सं०) अवलंब, सहारा, कफ़, लंबा करना, (अं०) एवेयन्स ।

३६७२. **लंबा** (वि०) (हि०) दीर्घ, बड़ा, ऊँचा, लम्बा-चौड़ा, (संज्ञा स्त्री०) लंबाई ।

३६७३. **लकड़ी** (संज्ञा पु०) (हि०) ईंधन, छड़ी, लाठी, गतका, लक्कड़, बड़ा कुन्दा ।

३६७४. **लकीर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रेखा, खत, चिह्न, धारी, पंक्ति, सतर, पाँति ।

३६७५. **लकुट** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) लाठी, छड़ी, (सं०) लुकाठ, लखोट ।

३६७६. **लक्ष** (वि०) (सं०) पैर, चिह्न, निशान, एक लाख, सौ हज़ार, कैतव, कपट, उद्देश्य, लक्ष्य ।

३६७७. **लक्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) नाम, परिभाषा, दर्शन, सारस पक्षी, चालढाल, रंगढंग, लच्छन, चिह्न, पहचान, स्वभाव, प्रकार ।

३६७८. **लक्ष्मण** (संज्ञा पु०) (सं०) चिह्न, निशान, नाग, सारस, राम के भाई, (वि०) (सं०) लक्षणयुक्त, भाग्यवान्, खुशकिस्मत, समृद्धि-शाली ।

३६७९. **लक्ष्मी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रमा, कमला, धन, सम्पत्ति, दौलत, शोभा, छवि, गृहस्वामिनी, वीर स्त्री, हलदी, शमीवृक्ष, मोती, कमल, सफ़ेद तुलसी, मेढ़ासिंगी, विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला, लोकमाता, हरिवल्लभा, श्री, चपला, सिन्धुसुता, कान्ति, जगदम्बा, पद्मा, ईश्वरा, चंचला, दुर्गा, भगवती, राजश्री, रुक्मिणी, चला, सीता, शोभा, उदधिसुता, नेत्री, नारायणी, शक्ति, सनातनी, कमलालया, जगन्मयी ।

३६८०. **लक्ष्मीपति** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, नारायण, रमा-रमापति, भगवान्, रमेश, राजा, कृष्ण, लौंगवृक्ष, सुपारीवृक्ष ।

३६८१. **लक्ष्मीपुत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) धनवान्, अमीर, कामदेव, लव, कुश ।

३६८२. **लक्ष्य** (संज्ञा पु०) (सं०) निशाना, अनुमेय, उद्देश्य (वि०) देखने योग्य, दर्शनीय ।

३६८३. **लखाउ** (संज्ञा पु०) (हिं०) लक्षण, पहचान, चिह्न ।

३६८४. **लग** (क्रि० वि) (हिं०) तक, पर्यन्त, ताईं, निकट, समीप, पास, अवधि, लौ, साथ, संग, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लगन, (अव्यय) लिए, वास्ते, साथ ।

३६८५. **लगन** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लगाव, सम्बन्ध, स्नेह, धुन, प्रीति, प्रेम, लग्न, (संज्ञा पु०) मुहूर्त्त ।

३६८६. **लगना** (क्रि० अ०) (हिं०) सटना, मिलना, जुड़ना, शामिल होना, सम्मिलित होना, मिलना, उत्पन्न होना, उगना, खर्च होना, जान पड़ना, मालूम होना, स्थापित होना, चोट पहुँचाना, आघात पहुँचाना, टक्कर खाना, टकराना, मला जाना, पोता जाना, आवश्यक होना, जारी होना, चलना, सड़ना, गलना, चिमटना, छूना, गड़ना, चुभना, धँसना, छेड़छाड़ करना, बन्द होना, सोहना, शोभना ।

३६८७. **लगव** (वि०) (हिं०) असत्य, मिथ्या, झूठ, व्यर्थ, बेकार ।

३६८८. **लगान** (संज्ञा पु०) (हिं०) पोत, उतार, टिकाव, टिकाना, मालगुजारी, किराया, भाड़ा, कर, (अँ०) रेट ।

३६८९. **लगाना** (क्रि० स०) (हिं०) सटाना, चिपकाना, शामिल करना, सम्मिलित करना, जमाना, चुनना, व्यय करना, खर्च करना, मालूम करना, स्थापित करना, आघात पहुँचाना, चोट पहुँचाना, लेप करना, पोतना, सड़ाना, गलाना, प्रज्वलित करना, जड़ना, चुगली खाना, शिकायत करना, गाड़ना, धँसाना, सटाना, छुआना, बन्द करना, अंङ्कित करना, चिह्नित करना, परचाना, सधाना, फैलाना, बिछाना, रोपना, वपन करना ।

३६९०. **लगाम** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) रास, बाग ।

३६९१. **लगार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बँधी, बँधेज, लगाव, सम्बन्ध, सिलसिला, क्रम, लौ, लगन, मेली, सम्बन्धी ।

३९९२. **लगावट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सम्बन्ध, वास्ता, प्रेम, प्रीति।

३९९३. **लग्न** (संज्ञा पु०) (सं०) साइत, मुहूर्त्त, विवाह, शादी, सहालग, बंदीजन, सूत, समय, (त्रि०) लगा हुआ, मिला हुआ, लज्जित, आसक्त।

३९९४. **लघु** (वि०) (सं०) शीघ्र, जल्दी, छोटा, संक्षिप्त, हलका, निःसार, थोड़ा, कम, नीच, दुबला, दुर्बल, नीचा (संज्ञा पु०) ह्रस्व वर्ण, काला अगर, खस, चांदी, असबरग।

३९९५. **लघुता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) छुटाई, लाघव, हलकापन, छोटापन, नीचता, निचाई।

३९९६. **लच्छ** (संज्ञा पु०) (हिं०) बहाना, मिस, व्याज, ताक, निशाना, लक्ष्य, लाख, (संज्ञा स्त्री०) लक्ष्मी।

३९९७. **लज्जा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शर्म, हया, मान-मर्यादा, इज़्ज़त, लाज, संकोच, शील, ग्लानि, कानी, पति, लाजा, झपक, दहक, आकुंठन।

३९९८. **लट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अलक, केशगुच्छ, केशलता, लटूरी, केश, लपट, लौ, अग्निशिखा।

३९९९. **लटकन** (संज्ञा पु०) (हिं०) लुभावनी चाल, आभूषण-विशेष, झुमका।

४०००. **लटका** (संज्ञा पु०) (हिं०) ढंग, ढब, बनावटी, हावभाव, टोटका, गुन, जन्तर-मन्तर, टुटका, टोना।

४००१. **लटना** (क्रि० अ०) (हिं०) दुबला, ढीला, शिथिल होना, थक जाना, विकल होना, लुभाना, ललचाना, लिप्त होना, लीन होना।

४००२. **लटपट** (वि०) (हिं०) लटपटा, लड़खड़ाता हुआ, ढीला-ढाला, अस्त-व्यस्त, टूटा-फूटा, अशक्त, सटा, चिपटा।

४००३. **लटिया** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सूत का लच्छा, आँटी, लच्छी।

४००४. **लटी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) गप, झूठी बात, बुरी बात, साधुनी, भक्त स्त्री, वेश्या, रंडी।

४००५. **लड़ंत** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लड़ाई, भिड़ंत, सामना, मुकाबला।

४००६. **लड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पंक्ति, पाँत, लड़ी, पाँति, माला, डोर, प्रेम-डोर ।

४००७. **लड़कई, लड़काई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लड़कपन, बाल्यावस्था, नादानी, चंचलता, नासमझी, बालपन, शिशुता ।

४००८. **लड़की** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बालिका, पुत्री, बेटी, छोकरी, तनया, कन्या, कुमारी, दुहिता, लल्लो, कुमारी, अपत्य, सुता, कन्यका, किशोरी, जामा, जाता, नन्दिनी, नन्दना, पुत्तरी, बालकी, बाला, बिटिया, अँगना, अतिपातक, डावरी, ढोटी, धिजा, धिय, छोरी, छोहरी, जनी, जाई, जामि ।

४००९. **लड़का** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छोकरा, पुत्र, बेटा, शिशु, सुत, तनय, आत्मज, सुवन, उद्वह, बालक, बच्चा, बाल, लाल, दहर, डिम्भ, अंगज, आयु, संतान, तनुज, नन्दन, दहेज, नार, पुत्त, पुत्तक, पूतरा, बटु, किशोर, छौना, ढोटा, दूध-मुख, जिगर, जीवन, कुंवर, कुलधर, कुलधारक, जन्य, जात ।

४०१०. **लड़ना** (क्रि० अ०) (हिं०) हानि पहुंचाना, भिड़ना, झगड़ा करना, तक़रार करना, कुश्ती करना, मल्लयुद्ध करना, विवाद करना, बहस करना, मेल मिल जाना, उपयुक्त उतरना, डंक मारना, लड़ाई करना, संग्राम करना, युद्ध करना, बखेड़ा करना ।

४०११. **लड़ाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) भिड़न्त, युद्ध, मल्लयुद्ध, कुश्ती, जंग, वाग्युद्ध, झगड़ा, तकरार, बहस, वाद-विवाद, टक्कर, अनबन, वैर, विरोध, संग्राम, सङ्गर, समर, रण, आयोधन, अभिसार, आक्रन्द, किलकिल, खटपट, गुत्थमगुत्था, अभिमर्दन, उत्थान, कंठाल, समुदय, तीक्ष्ण, तुमुल, उत्पात, कलह, कलि, प्रघात, आनर्त्त, प्रपंच, प्रहरण, बखेड़ा, बिगाड़, भूतात्मा, सन्निपात ।

४०१२. **लता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रियंगु, कोमलकांड या शाखा, स्पृक्का, अशनपर्णी, माधवी, ज्योतिष्मती, दूब, कैवर्त्तिका, सारिवा, सुन्दर स्त्री, बेल, बल्ली, वल्लरी ।

४०१३. **लतीफ़** (वि०) (अ०) स्वादिष्ट, मजेदार, बढ़िया, मनोहर ।

४०१४. **लथाड़** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) झिड़की, डाँट, पराजय, हानि ।

४०१५. **लदना** (क्रि० अ०) (हिं०) पूर्ण होना, आच्छादित होना, परलोक सिधारना, मर जाना, कैद होना ।

४०१६. **लपक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लपट, लौ, ज्वाला, चमक, कांति, वेग, झपट ।

४०१७. **लपट** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लू, गरम हवा, भभूका, ज्वाला, ज्योति, ज्वल, झल्ल, झार, दह, दहक, चारवायु, जलाक ।

४०१८. **लपटना** (क्रि० अ०) (हिं०) लिपटना, चिमटना, सटना, लग जाना, फंसना, उलझना, लगा रहना, रत रहना, मिलना, लगना ।

४०१९. **लपन** (संज्ञा पु०) (सं०) मुँह, मुख, भाषण, कथन ।

४०२०. **लपेट** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बल, ऐंठन, घेरा, परिधि, उलझन, बेटन, वेष्ठन, ढक्कन ।

४०२१. **लफंगा** (वि०) (हिं०) लंपट, व्यभिचारी, शोहदा ।

४०२२. **लब्ध** (वि०) (सं०) मिला हुआ, प्राप्त, उपार्जित, कमाया हुआ ।

४०२३. **लभ्य** (वि०) (सं०) पाने योग्य, उचित, मुनासिब, न्याय-संगत ।

४०२४. **लय** (संज्ञा पु०) (सं०) विनाश, प्रलय, नाश, गूढ़, अनुराग, प्रेम, मिल जाना, संश्लेष, स्थिरता, विश्राम, मूर्छा, बेहोशी, (संज्ञा स्त्री०) धुन, ताल ।

४०२५. **लरज़ा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कँपकँपी, थरथराहट, भूकंप, भूचाल ।

४०२६. **ललकार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आह्वान, प्रचारण, हाँक, प्रकार, डाँक, लड़ने का बढ़ावा, प्रोत्साहन-वाक्य ।

४०२७. **ललना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुन्दर स्त्री, कामिनी, जिह्वा, जीभ, महिला, नारी, कामकला ।

४०२८. **ललाट** (संज्ञा पु०) (सं०) मस्तक, माथा, सिर, कपाल, भाग्य, प्रारब्ध ।

४०२९. **ललाम** (वि०) (सं०) रमणीय, सुन्दर, लाल रंग का, सुर्ख, श्रेष्ठ, मनोहर, उत्तम, भूषण (संज्ञा पु०) अलंकार, गहना, रत्न, चिह्न, ध्वज, सींग, शृङ्ग, घोड़ा, अयाल, प्रभाव ।

४०३०. **ललित** (वि०) (सं०) सुन्दर, मनोहर, अभिलषित, मनचाहा, कपकपा, मनोज्ञ, मनभावन ।

४०३१. **ललिता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रमणी, स्वेच्छाचारिणी स्त्री, कस्तूरी, दुर्गा, सुन्दरी ।

४०३२. **लव** (संज्ञा पु०) (सं०) लवा पक्षी, जातीफल, लवंग, काटना, छेदना, विनाश, ऊन, बाल, क्षण, निमेष, पल, (वि०) लेश, अल्प, थोड़ा, न्यून, कम ।

४०३३. **लवण** (संज्ञा पु०) (सं०) नमक, नोन, (वि०) नमकीन, खारा, लावण्ययुक्त, सलोना, सुन्दर ।

४०३४. **लवणा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आभा, दीप्ति, महाज्योतिष्मती-लता, चुक, चँगेरी, अमलोनी शाक, लूनी ।

४०३५. **लसना** (क्रि०) (हिं०) चिपकाना, शोभित होना, शोभा पाना, चपकना, शोभित होना, फबना, विद्यमान होना, विराजना ।

४०३६. **लसीला** (वि०) (हिं०) लसदार, चिपचिपा, सुन्दर, शोभा-युक्त, लसलसा, गोंदैला ।

४०३७. **लस्त** (वि०) (सं०) क्रीड़ित, शोभायुक्त, थका हुआ (हिं०) शिथिल, थका हुआ, आसक्त ।

४०३८. **लहक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लपट, चमक, द्युति, शोभा, छवि, झलक, उजाला, प्रकाश ।

४०३९. **लहर** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हिलोर, तरंग, उमंग, जोश, तिरछी चाल, तिरछी रेखा, महक, लपट, लहरी, हिलोरा ।

४०४०. **लाँक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) ताज़ी कटी हुई फ़सल, भूसा,

कमर, कटि, परिमाण, मिकदार, लङ्क, लासा, भूसी ।

४०४१. **लांगलि, लाङ्गलि** (संज्ञा पु०) (सं०) कलियार-पौधा, मजीठ, जलपीपल, पिठवन, कौंछ, केवाँच, गजपीपल, चव्य, ऋषभक, नारियल ।

४०४२. **लाँगली** (संज्ञा पु०) (हिं०) बलराम, नारियल, सर्प, वानर, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कलियारी, मजीठ, पिठवन ।

४०४३. **लाइन** (संज्ञा स्त्री०) (अँ०) कतार, पंक्ति, सतर, रेखा, लकीर, बैरक, लैन, व्यवसाय, पेशा ।

४०४४. **लाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) चुगली, धान का लावा ।

४०४५. **लाग** (संज्ञा स्त्री०) (हिं) सम्पर्क, सम्बन्ध, लगाव, प्रेम, प्रीति, लगन, उपाय, युक्ति, तरकीब, प्रतिस्पर्धा, वैर, शत्रुता, जादू, टोना, भस्म, लगान, भू-कर, द्वेष, विरोध, शत्रुता, विद्वेष ।

४०४६. **लाघव** (संज्ञा पु०) (सं०) लघुता, छोटापन, कमी, न्यूनता, अल्पता, तेजी, फुरती, नपुंसकता, निरोगता, आरोग्यता, ओछाई, क्षुद्रता, नीचता, (अव्यय) फुरती से, जल्दी से ।

४०४७. **लाचार** (वि०) (फा०) विवश, मजबूर, असमर्थ, (क्रि० वि०) विवश होकर, मजबूरी से, (वि०) मजबूर, बेकाबू, बेबस, अधीन, अवश ।

४०४८. **लाज** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लज्जा, शर्म, हया, संकोच ।

४०४९. **लाज़िम** (वि०) (अ०) आवश्यक, ज़रूरी, उचित, वाजिब, मुनासिब ।

४०५०. **लाट** (संज्ञा पु०) (हिं०) देश-विशेष, खम्भा, स्तम्भ, प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।

४०५१. **लाद** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पेट, आँत, अँतड़ी, बोझ, भार, हृदय ।

४०५२. **लाभ** (संज्ञा पु०) (सं०) मिलना, प्राप्ति, उपकार, कारोबार, भलाई, मुनाफ़ा, प्रॉफिट, पाना, मिलना, सूद, आय, आमदनी, उपलब्धि, उपार्जन, समुन्नय, गृहीत, फल, फलोदय, बचत, बरकत, बाढ़, नफ़ा (अँ०) गेन ।

४०५३. **लाम** (संज्ञा पु०) (हिं०) सेना, फ़ौज, (वि०) (हिं०) फ़ासले पर, दूर ।

४०५४. **लायक** (वि०) (अं०) उचित, ठीक, उपयुक्त, मुनासिब, सुयोग्य, गुणवान्, समर्थ ।

४०५५. **लार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लसदार थूक, कतार, पंक्ति, लासा, लुआब, (क्रि० वि०) (हिं०) साथ, पीछे, (संज्ञा पु०) मणि-विशेष, दुलारा, दुलरुआ (वि०) लाल रङ्ग का, रक्तवर्ण ।

४०५६. **लार्ड** (संज्ञा पु०) (अं०) ईश्वर, मालिक, स्वामी, ज़मींदार ।

४०५७. **लाल** (संज्ञा पु०) (हिं०) बेटा, पुत्र, छोटा बच्चा, प्यारा बच्चा, प्रिय व्यक्ति, दुलार, लाड़, प्यार, लार ।

४०५८. **लालन** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रिय पुत्र, कुमार, बालक, (संज्ञा स्त्री०) (देशज) चिरौंजी, पियाल, (क्रि०) लाड़-प्यार करना ।

४०५९. **लालसा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उत्कट अभिलाषा, लिप्सा, उत्सुकता, दोहद (गर्भवती की इच्छा) मनोरथ, (वि०) चंचल ।

४०६०. **लालित** (वि०) (सं०) दुलारा, प्यारा, पोषित ।

४०६१. **लाली** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) अरुणता, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, पिसी हुई ईंट, सुरखी, हड़की, प्यारी, ललाई ।

४०६२. **लाव** (संज्ञा पु०) (सं०) लावा पक्षी, लौंग, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) आग, अग्नि, रस्सी, लहास ।

४०६३. **लावना** (क्रि० सं०) (हिं०) लाना, लगाना, स्पर्श करना, जलाना, आग लगाना ।

४०६४. **लासक** (संज्ञा पु०) (सं०) मोर, मयूर, नर्त्तक, नाचने वाला, मटका, घड़ा, (वि०) चमकने वाला ।

४०६५. **लाही** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लावा, खील, लाख, लाक्षा, तोरी, सर्षप, सरसों, महीन कपड़ा ।

४०६६. **लिंग, लिङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) चिह्न, निशान, लक्षण, शिश्न, पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिह्न, शिवलिङ्ग ।

४०६७. **लिंगी, लिङ्गी** (संज्ञा पु०) (सं०) चिह्न वाला, निशान वाला, आडंबरी, धर्मध्वजी, हाथी ।

४०६८. **लिगु** (संज्ञा पु०) (सं०) मन, मूर्ख, मृग, भू-प्रदेश ।

४०६९. **लिपटाना** (क्रि० सं०) (हि०) सटाना, भिड़ाना, युक्त करना, संलग्न करना, चिपटाना, गले लगाना, आलिंगन करना ।

४०७०. **लिप्त** (वि०) (सं०) चर्चित, खूब तत्पर, लीन, लिपा हुआ, लिपा-पुता हुआ ।

४०७१. **लिप्सा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लोभ, लालच, चाह, इच्छा ।

४०७२. **लिहाज** (संज्ञा पु०) (अ०) मुलाहिज़ा, शील-संकोच, लाज, शर्म, हया, पक्षपात, तरफ़दारी, रिआयत ।

४०७३. **लीक** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लकीर, रेखा, प्रतिष्ठा, लोक-नियम, प्रथा, चाल, सीमा, हद, कलंक, लांछन, चिह्न, पगडंडी ।

४०७४. **लीला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विचित्र काम, क्रीड़ा, विहार, खेल, विनोद, कौतुक ।

४०७५. **लुंचन, लुञ्चन** (संज्ञा पु०) (सं०) नोचना, उत्पादन, तराशना, काटना ।

४०७६. **लुंठा, लुण्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लूट, डाका, लुढ़क-पुढ़क ।

४०७७. **लुखिया** (संज्ञा स्त्री०) (देश०) धूर्त स्त्री, व्यभिचारिणी, छिनाल, वेश्या, रंडी ।

४०७८. **लुगरा** (संज्ञा पु०) (हिं०) कपड़ा, वस्त्र, ओढ़नी, जीर्ण वस्त्र, लत्ता ।

४०७९. **लुच्चा** (वि०) (हि०) दुराचारी, कुमार्गी, शोहदा, बदमाश, कमीना, कुकर्मी, अन्यायी, दुष्ट, शैतान ।

४०८०. **लुत्फ़** (संज्ञा पु०) (अ०) कृपा, मेहरबानी, खूबी, उत्तमता, मज़ा, आनन्द, रोचकता ।

४०८१. **लुप्त** (वि०) (सं०) छिपा हुआ, गुप्त, अदृश्य, ग़ायब, नष्ट, विध्वस्त, अदर्शन ।

४०८२. **लुबुधा** (वि०) (हिं०) लोभी, लालची, चाहने वाला, इच्छुक, प्रेमी।

४०८३. **लुब्ध** (वि०) (सं०) मोहित, लोभी, सतृष्ण, तृष्णायुक्त, स्वार्थी, (संज्ञा पु०) शिकारी, बहेलिया।

४०८४. **लुब्धक** (संज्ञा पु०) (सं०) शिकारी, बहेलिया, लोभी आदमी, व्याध।

४०८५. **लुभाना** (क्रि० अ०) (हिं०) मोहित होना, रीझना, ललचाना, लोभ देना, लोभ दिखाना, सुध-बुध भूलना।

४०८६. **लुरना** (क्रि० अ०) (हिं०) झूलना, लहराना, ढल पड़ना, झुक पड़ना, आकर्षित होना, प्रवृत्त होना।

४०८७. **लुहार** (संज्ञा पु०) (हिं०) कर्मार, कर्मकार, कर्मकारी, अग्निजीवी, धमक, धमन, (अँ०) स्मिथ।

४०८८. **लूता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मकड़ी, च्यूँटी, मर्म, व्रण, वृक्का।

४०८९. **लेना** (क्रि० सं०) (हिं०) ग्रहण करना, थामना, पकड़ना, मोल लेना, खरीदना, जीतना, धरना, ज़िम्मे लेना, सेवन करना, पीना, धारण करना, स्वीकार करना, संभोग करना, काटना, संचय करना, एकत्र करना।

४०९०. **लेप** (संज्ञा पु०) (हिं०) उबटन, बटना, लगाव, सम्बन्ध, पोतना, लेप।

४०९१. **लेलिह** (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, सर्प, जूँ, लीख।

४०९२. **लेलिहान** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्प, साँप, शिव, महादेव।

४०९३. **लेश** (संज्ञा पु०) (सं०) अणु, छोटाई, सूक्ष्मता, चिह्न, निशान, संसर्ग, लगाव (वि०) अल्प, थोड़ा, स्वल्प, अत्यल्प, लव, मात्रा।

४०९४. **लेस** (संज्ञा पु०) (हिं०) चेप, लस, लीप-पोत (संज्ञा स्त्री०) फीता, गोटा, बेल।

४०९५. **लेसना** (क्रि० सं०) (हिं०) जलाना, पोतना, चिपकाना, सटाना, चुगली खाना, लीपना, उत्तेजित करना।

४०९६. **लैन** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सीधी लकीर, कतार, पंक्ति।

४०९७. **लोइ** (संज्ञा पु०) (हिं०) लोग (संज्ञा स्त्री०) प्रभा, दीप्ति, लौ, शिखा, घुस्सा।

४०९८. **लोक** (संज्ञा पु०) (सं०) संसार, जगत्, स्थान, निवास, प्रदेश, दिशा, लोग, जन, समाज, प्राणी, यश, कीर्ति, जन, मनुष्य, भुवन, द्वीप।

४०९९. **लोकगाथा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रचलित गीत, जनश्रुति, अफ़वाह, लोकधुनि।

४१००. **लोकनाथ** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, लोकपाल, बुद्ध, राजा, विष्णु, शिव, लोकप, लोकनेता, लोकाधिपति, ईश्वर, परमात्मा।

४१०१. **लोकमार्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) लौकिक चलन, प्रचलित रीति, साधारण पंथ।

४१०२. **लोकयात्रा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) व्यवहार, व्यापार, आजीविका।

४१०३. **लोकसाक्षी** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, अग्नि, सूर्य।

४१०४. **लोच** (संज्ञा पु०) (हिं०) लचलचाहट, लचक, कोमलतापूर्ण सौन्दर्य, अभिलाषा।

४१०५. **लोचक** (संज्ञा पु०) (सं०) सुर्मा, अंजन, शीशफूल, मूर्ख आदमी।

४१०६. **लोचन** (संज्ञा पु०) (सं०) आँख, नयन, नेत्र, चक्षु।

४१०७. **लोचना** (क्रि० स०) (हिं०) प्रकाशित करना, चमकाना, इच्छा करना, अभिलाषा करना, (संज्ञा पु०) (सं०) नाई, हज्जाम, शीशा, दर्पण।

४१०८. **लोथ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मृत शरीर, शव, लाश, मुर्दा।

४१०९. **लोन** (संज्ञा पु०) (हिं०) नमक, लावण्य, नून, लून, लवण, निमक।

४११०. **लोना** (वि०) (हिं०) नमकीन, सलोना, सुन्दर, खारा, लवणयुक्त।

४१११. **लोप** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, क्षय, अन्तर्द्धान, अभाव, अदर्शन, अदृश्य, विध्वंस, अगोचर।

४११२. **लोभ** (संज्ञा पु०) (सं०) लालच, लिप्सा, कृपणता, कंजूसी, तृष्णा, इच्छा, ईर्ष्या, पिपासा, प्रतियत्न, प्रलोभ, लालसा।

४११३. **लोभी** (संज्ञा पु०) (सं) कंजूस, कृपण, मक्खीचूस, अनुदार, क्षुद्रहृदय, अर्थपिशाच, सूम, तद्धन, लुब्ध, शठ, लुब्धक, तृष्णालु, लुबुधा, अदान, कदर्य, कुमुद, लालची, लोलुप।

४११४. **लोर** (वि०) (हिं०) लोल, चंचल, उत्सुक, इच्छुक, (संज्ञा पु०) (हिं०) कुंडल, आँसू, लटकन, अश्रु, नयनजल।

४११५. **लोर** (वि०) (हिं०) हिलता-डोलता, कंपायमान, चंचल, परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, क्षणिक, उत्सुक, अति इच्छुक, लालची (संज्ञा पु०) लिंगेन्द्रिय।

४११६. **लोलुप** (वि०) (सं०) लोभी, लालची, परम उत्सुक, अत्यन्त लोभी, लुब्ध।

४११७. **लौ** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) लपट, ज्वाला, दीपशिखा, लगन, चाह, आशा।

४११८. **लौनी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कटाई, अँकोरा, लहना, नवनीत, नैनू।

४११९. **लौल्य** (संज्ञा पु०) (सं०) चंचलता, अस्थिरता, अव्यवस्थित-चित्तता, उत्सुकता, उत्कट कामना।

(व)

४१२०. **वंचक** (वि०) (सं) धूर्त, धोखेबाज, ठग, खल, दुष्ट, (संज्ञा पु०) (सं०) गीदड़, शृगाल, सियाल, सियार, चोर, ठग, सेंधियार, प्रतारक।

४१२१. **वंचना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) धोखा, जाल, फरेब, धूर्त्तता, ठगई।

४१२२. **वंचित, वञ्चित** (वि०) (सं०) विमुख, रहित, हीन, प्रतारित,

ठगा हुआ, शून्य।

४१२३. **वंट, वण्ट** (संज्ञा पु०) (सं०) बाँट, भाठा, मूठ, बेंठ, लँडूरा, अविवाहित व्यक्ति।

४१२४. **वंठ** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अविवाहित पुरुष, दास, बौना, वामन, कुन्त, भाला।

४१२५. **वंदना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्तुति, प्रणाम, वंदन, तिलक, नमस्कार, नियत नमस्कार।

४१२६. **वंश** (संज्ञा पु०) (सं०) बाँस, रीढ़, बाँसा, बाँसुरी, खानदान, युद्ध-सामग्री, विष्णु, फूल, वंशलोचन।

४१२७. **वंशी** (संज्ञा पु०) (सं०) बाजा, बाँसुरी, मुरली, बंसलोचन।

४१२८. **व** (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, वाण, मंत्रण, सांत्वना, वस्ति, समुद्र, शार्दूल, वस्त्र, अस्त्र, बन्दर, तलवारधारी पुरुष, मूर्वालता, वृक्ष, मद्य, प्रचेता, (वि०) (सं०) बलवान् (अव्यय) (फा०) और।

४१२९. **वकील** (संज्ञा पु०) (अ०) दूत, राजदूत, एलची, प्रतिनिधि।

४१३०. **वक्त** (संज्ञा पु०) (सं०) समय, काल, अवसर, मौका, अवकाश, फ़ुरसत, मृत्युकाल।

४१३१. **वक्तव्य** (वि०) (सं०) कहने योग्य, हीन, तुच्छ।

४१३२. **वक्तृता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वाक्-पटुता, व्याख्यान, भाषण।

४१३३. **वक्र** (वि०) (सं०) टेढ़ा, बांका, तिरछा, कुटिल, झुका हुआ, (संज्ञा पु०) (सं०) तगरपादुका, शनैश्चर, मंगल, रुद्र, पर्पट, त्रिपुरासुर, वक्रीग्रह।

४१३४. **वक्ष** (संज्ञा पु०) (हिं०) छाती, उरस्थल, बैल।

४१३५. **वचन** (संज्ञा पु०) (सं०) वाणी, बात, बोली, शब्द।

४१३६. **वजह** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) कारण, हेतु, प्रकृति, तत्त्व।

४१३७. **वज्र** (संज्ञा पु०) कुलिशपवि, विद्युत्, बिजली, हीरा, भाला, बरछा, धात्री, अभ्रक, कोकिलाक्षवृक्ष, श्वेत कुश, काँजी, वज्रपुष्प, सेहुँड़।

४१३८. (संज्ञा पु०) (सं०) बटु, बटुक, बालक, लड़का, ब्रह्मचारी, एक भैरव ।

४१३९. **वणिक्** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यापारी, वैश्य, बनिया ।

४१४०. **वत** (संज्ञा पु०) (सं०) खेद, अनुकंपा, असंतोष, विस्मय, आमंत्रण ।

४१४१. **वतीरा** (संज्ञा पु०) (अ०) रीति, ढंग, चाल-ढाल, लत, टेव ।

४१४२. **वत्स** (संज्ञा पु०) (सं०) बछड़ा, बच्चा, बालक, वत्सर, वर्ष, छाती, इन्द्रजौ ।

४१४३. **वदन** (संज्ञा पु०) (सं०) चेहरा, मुख, आस्य, मुँह, बात कहना, बोलना, अगला भाग, सामना ।

४१४४. **वधक** (संज्ञा पु०) (सं०) व्याध, शिकारी, जल्लाद, हत्यारा ।

४१४५. **वधू** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नवविवाहिता स्त्री, दुलहन, पत्नी, भार्या, पुत्रवधू ।

४१४६. **वन** (संज्ञा पु०) (सं०) जंगल, बगीचा, बाग़, जल, घर, रश्मि, नीर, अरण्य, कान्तार, विपिन ।

४१४७. **वनिता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्त्री, औरत, प्रियतमा, भार्या, प्रिय ।

४१४८. **वन्य** (वि०) (सं०) जङ्गली, (संज्ञा पु०) वनसूरन, क्षीर-विदारी, वाराहीकन्द (वि०) वनचर, वनैला ।

४१४९. **वन्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मुद्गपर्णी, गोपालककड़ी, गुंजा, भद्रमुस्ता, अश्वगंध ।

४१५०. **वपु** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शरीर, देह, रूप, काया ।

४१५१. **वबा** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) महामारी, मरी, एक रोग ।

४१५२. **वबाल** (संज्ञा पु०) (अ०) बोझ, भार, आपत्ति, कठिनाई, घोर विपत्ति, आफ़त ।

४१५३. **वय** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) बीता हुआ जीवन, उम्र, अवस्था, आयु, आयुष्य, बल, पक्षी, (संज्ञा पु०) (सं०) जुलाहा, बया पक्षी ।

४१५४. **वरंच** (अव्यय) (सं०) अपितु, बल्कि, परन्तु, लेकिन ।

४१५५. **वर** (संज्ञा पु०) (सं०) फल, सिद्धि, पति, दूल्हा, गुग्गुल, कुंकुम, केसर, दालचीनी, बालक, अदरक, सुगन्धतृण, सेंधा नमक, मौलसिरी, हल्दी, गौरा पक्षी, आशीष, आशीर्वाद, शुभचिन्तन, शुभानुध्यान, मनोरथ-सिद्धि, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, उच्चकोटि का, अच्छा, प्रधान ।

४१५६. **वरण** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊँट, वरुण वृक्ष, पुल, सेतु, वेष्ठन, लपेटता, चुनना, बीनना, आह्वान करना, निमन्त्रण करना, चुनाव, (अँ०) सेलेक्शन ।

४१५७. **वरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) त्रिफला, रेणुका, गुरुच, मेद, ब्राह्मी, बिड़ग, पाठा, हल्दी, बैंगन, अड़हुल, देवीफूल, मद्य, सोमराजी, श्वेता-पराजिता, शतमूली ।

४१५८. **वराह** (संज्ञा पु०) (सं०) सूअर, शूकर, वराहीकंद ।

४१५९. **वरिष्ठ** (वि०) (सं०) श्रेष्ठ, बड़ा, उच्चकोटि का, (संज्ञा पु०) (सं०) तीतर पक्षी, ताँबा, ताम्र, मिर्च ।

४१६०. **वरुण** (संज्ञा पु०) (सं०) जल, पानी, सूर्य, वृक्ष-विशेष ।

४१६१. **वर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) कोटि, श्रेणी, परिच्छेद, अध्याय, कक्षा, (अँ०) ग्रुप ।

४१६२. **वर्जित** (वि०) (सं०) निषिद्ध, रोका हुआ, छोड़ा, बरजा हुआ ।

४१६३. **वर्ण** (संज्ञा पु०) (सं०) स्तुति, बड़ाई, स्वर्ण, सोना, अंगराग, रूप, सूरत, कुंकुम, केसर, चित्र, तस्वीर, रंग, राग, अक्षर, जाति ।

४१६४. **वर्णक** (संज्ञा पु०) (सं०) हरताल, उबटन, चन्दन, मण्डल, चरण, रंग, चित्रकार, अभिनेता, प्रशंसक, स्तुतिकर्ता ।

४१६५. **वर्णन** (संज्ञा पु०) (सं०) बयान, चित्रण, रंगना, गुण, कथन, बखान ।

४१६६. **वर्ण्य** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रस्तुत विषय, उपमेय, कुंकुम, वन-तुलसी, (वि) वर्णन योग्य ।

४१६७. **वर्तन** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यवसाय, जीवनोपाय, जीविका,

वृत्ति, रोज़ी, बरताव, व्यवहार, फेरना, घुमाना, परिवर्त्तन, स्थिति, ठहराव, स्थापन, रखना, वर्त्तमान, बटलोई, बरतन, शल्यकंपन कर्म, विष्णु, कौआ।

४१६८. **वर्त्तमान** (वि०) (सं०) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, आधुनिक, आजकल का, हाल का, साक्षात्, (संज्ञा पु०) (सं०) वृत्तांत, समाचार, चलता व्यवहार।

४१६९. **वर्त्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बत्ती, अंजन, औषध बनाना, उबटन, अनुलंपन, गोली, वटी, वाती, नयनांजन-शलाकिका।

४१७०. **वर्द्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) भारङ्गी, काटना, तराशना, पूर्त्ति, पूरण, सीसा धातु।

४१७१. **वर्वर** (संज्ञा पु०) (सं०) पामर, नीच, घुंघराले बाल, काली वनतुलसी, हिंगल, पीला चन्दन, असभ्य, जंगली।

४१७२. **वर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) बरस, साल, संवत्, वृष्टि, जल बरसना।

४१७३. **वर्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बरसात, वृष्टि, वर्षाकाल, प्रावृट् काल।

४१७४. **वलय** (संज्ञा पु०) (सं०) मंडप, घेरा, कंकड़, चूड़ी।

४१७५. **वलाहक** (संज्ञा पु०) (सं०) मेघ, बादल, पर्वत, मोथा, मुस्तक।

४१७६. **वलि** (संज्ञा पु०) (सं०) रेखा, लकीर, बल, श्रेणी, पंक्ति, गंधक, पूजोपहार, वलि।

४१७७. **वली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) झुर्री, सिलवट, श्रेणी, पंक्ति, रेखा, लकीर, (संज्ञा पु०) (अ०) मालिक, स्वामी, शासक, साधु, फ़कीर, अभिभावक।

४१७८. **वल्लभ** (वि०) (सं०) पति, स्वामी, अध्यक्ष, मनिक, नायक, प्रिय, प्रियतम, प्रभु।

४१७९. **वश** (संज्ञा पु०) (सं०) अधिकार, काबू, कब्ज़ा, प्रभुत्व, इच्छा, चाह, जन्म, वेश्यालय, अधीन, अधिकृत, अधिकार-युक्त।

४१८०. **वश्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लगाम, नीला, पराजिता, गोरोचन।

४१८१. **वसन** (संज्ञा पु०) (सं०) वस्त्र, कपड़ा, निवास, आवरण, आच्छादन, तेजपत्ता।

४१८२. **वसु** (संज्ञा पु०) (सं०) रत्न, धन, अग्नि, रश्मि, जल, सोना, स्वर्ण, जीत, कुबेर, पीली मूँग, वृक्ष, पेड़, शिव, सूर्य, विष्णु, मौलसिरी, सरोवर, तालाब, (संज्ञा स्त्री०) दीप्ति, आभा, वृद्धौषध, (वि०) सर्वव्यापक।

४१८३. **वसुक** (संज्ञा पु०) (सं०) साँभर नमक, पांशुलवण, रेह, काला अगर, क्षारलवण, मदार वृक्ष, बड़ी मौलसिरी।

४१८४. **वस्तु** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वास्तविक सत्ता, कल्पित सत्ता, चीज़, सत्य, इतिवृत्त, पदार्थ।

४१८५. **वस्तुतः** (अव्यय) (सं०) वास्तव में, सचमुच, ठीक, यथार्थ।

४१८६. **वह** (संज्ञा पु०) (सं०) घोड़ा, वायु, मार्ग, पथ, नद, वृषभ-स्कन्ध।

४१८७. **वहम** (संज्ञा पु०) (अ०) मिथ्या धारणा, भ्रम, धोखा, झूठी शंका, सन्देह।

४१८८. **वहशत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) असभ्यता, जंगलीपन, उजड्डपन, पागलपन, अधीरता, विकलता, उदासी, डरावनापन।

४१८९. **वह्नि** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, आग, भूख, हाज़मा, चित्रक, भिलावाँ।

४१९०. **वांछा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ, स्पृहा, आकांक्षा।

४१९१. **वाकिफ़** (वि०) (अ०) जानकार, ज्ञाता, अनुभवी।

४१९२. **वागर** (संज्ञा पु०) (सं०) वारक, सान, निर्णय, भेड़िया, निर्भय, पंडित, मुमुक्षु।

४१९३. **वाङ्मय** (वि०) (सं०) वचन-सम्बन्धी, (संज्ञा पु०) साहित्य।

४१९४. **वाज** (संज्ञा पु०) (सं०) घृत, घी, यज्ञ, अन्न, जल, संग्राम, बल, पलक, वेग, मुनि, शब्द, आवाज़।

४१९५. **वाजी** (संज्ञा पु०) (हिं०) घोड़ा, अड़ूसा, हवि।

४१९६. **वाट** (संज्ञा पु०) (सं०) मार्ग, रास्ता, वस्तु, मंडप।

४१९७. **वाणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सरस्वती, वचन, वाक्शक्ति, जीभ, रसना, स्वर, बात, बोली, शब्द।

४१९८. **वात** (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, पवन, रोग-विशेष।

४१९९. **वातारि** (संज्ञा पु०) (सं०) एरंड, शतमूली, निर्गुंडी, अजवायन, थूहर, बायबिडङ्ग, ज़िमीकंद, भिलावाँ, सतावर, तिलक वृक्ष।

४२००. **वाद** (संज्ञा पु०) (सं०) बहस, विवाद, इज़्म, शास्त्रार्थ, वाक्-कलह, सम्भाषण, आलाप।

४२०१. **वादा** (संज्ञा पु०) (अ०) वचन, इक़रार, प्रतिज्ञा, प्रण।

४२०२. **वादी** (संज्ञा पु०) (हिं०) वक्ता, बोलने वाला, फ़रियादी, मुद्दई।

४२०३. **वान** (संज्ञा पु०) (सं०) चटाई, गति, सुरंग, सौरभ, सुगन्ध, सूखा फल, बाना।

४२०४. **वाम** (वि०) (सं०) बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध, टेढ़ा, वक्र, खोटा, दुष्ट, बुरा, विरोधी, शत्रु, अशुभचिन्तक, अहितकारी, (संज्ञा पु०) (सं०) कामदेव, वामदेव, वरुण, कुच, स्तन, घन।

४२०५. **वामन** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, शिव, बौना, खर्व, (वि०) छोटा, नाटा, ह्रस्व।

४२०६. **वायसी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) काकमाची, महाज्योतिष्मती, काकतुण्डी, घुंघची, काकजंघा, महाकरंज, सर्वत्र।

४२०७. **वार** (संज्ञा पु०) (सं०) द्वार, दरवाज़ा, रोक, रुकावट, अवरोध, आवरण, अवसर, दफ़ा, मरतबा, क्षण, दिन, दिवस, वासर, कुंज वृक्ष, वाण, तीर, बारी, दाँव, ठोकर, आक्रमण, घाव, पाला, वारी।

४२०८. वारण (संज्ञा पु०) (सं०) निषेध, मनाही, रोक, रुकावट, बाधा, कवच, बख्तर, हाथी, अंकुश, हरताल, काला सीसम, परिभद्र, अटकाव, रुकावट, रोक।

४२०९. वारा (संज्ञा पु०) (हिं०) लाभ, फ़ायदा, किफ़ायत, वार, (वि०) सस्ता।

४२१०. वाराही (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वाराही कंद, कँगनी, श्यामा पक्षी, सफ़ेद कुष्मांड।

४२११. वारि (संज्ञा पु०) (सं०) जल, पानी, तरल पदार्थ, ह्रीवेर, सुगन्धबाला, नीर, अप्, अम्बु, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वाणी, सरस्वती, छोटा गगरा, छोटा कलसा।

४२१२. वारिस (संज्ञा पु०) (अ०) उत्तराधिकारी, दायद।

४२१३. वारुणी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मदिरा, शराब, भूमि-आमला, शतभिषा नक्षत्र, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा, हथिनी।

४२१४. वार्ड (संज्ञा पु०) (अँ०) रक्षा, हिफ़ाज़त, बड़ा हाल कमरा।

४२१५. वार्त्ता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जनश्रुति, अफ़वाह, संवाद, वृत्तान्त, हाल, विषय, प्रसंग, बात, दुर्गा, कृषि, वाणिज्य, बातचीत, समाचार।

४२१६. वार्द्दर (संज्ञा पु०) (सं०) दक्षिणावर्त्त शंख, जल, रेशम, कार्कचिचा।

४२१७. वालुका (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रेत, बालू, शाखा, हाथ-पैर, कपूर, ककड़ी।

४२१८. वावैला (संज्ञा पु०) (अ०) रोना-कलपना, विलाप, कोलाहल, शोर, हल्ला-गुल्ला।

४२१९. वाष्प (संज्ञा पु०) (सं०) भाप, भाफ, आँसू, लोहा, भटकटैया।

४२२०. वासंत, वासन्त (संज्ञा पु०) (सं०) ऊंट, कोकिल, मलयवायु, मूँग, मैनफल।

४२२१. **वासंती, वासन्ती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मायावी लता, जूही, वसंतोत्सव, मदनोत्सव, दुर्गा, गनियारी पुष्प, लता-विशेष।

४२२२. **वास** (संज्ञा पु०) (सं०) निवास, रहना, घर-मकान, अडूसा, सुगन्ध, बू, गन्ध, महक।

४२२३. **वासना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रत्याशा, ज्ञान, संस्कार, स्मृति, हेतु, कामना, दुर्गा, मिथ्या विचार या ख़याल।

४२२४. **वास्तविकता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) यथार्थता, सत्यता।

४२२५. **वास्ता** (संज्ञा पु०) (अ०) लगाव, सम्बन्ध, मित्रता, दोस्ती।

४२२६. **वाह** (अव्यय) (फा०) आश्चर्यसूचक शब्द, धन्य, (संज्ञा पु०) (सं०) वाहन, सवारी, घोड़ा, बैल, भैंसा, वायु।

४२२७. **वाहियात** (वि०) (फा०) व्यर्थ, फजूल, बेकार, बुरा, खराब।

४२२८. **वाह्य** (क्रि० वि०) (सं०) बाहर, अलग, पृथक्, (संज्ञा पु०) रथ, यान, सवारी।

४२२९. **विंदु, विन्दु** (संज्ञा पु०) (सं०) जलकण, बूँद, बिंदी, शून्य, अनुस्वार, कण, कनी, एक रत्नदोष, (वि०) ज्ञाता, वेत्ता, दाता, जानने योग्य।

४२३०. **विकच** (वि०) (सं०) खिला हुआ, विकसित, (संज्ञा पु०) ध्वजा, क्षपणक।

४२३१. **विकट** (वि०) (सं०) भयङ्कर, भीषण, कठिन, मुश्किल, दुर्गम, वक्र, टेढ़ा, विशाल, दुःसाध्य, असाध्य, क्रूर, भयानक, (संज्ञा पु०) विस्फोटक, सोमलता।

४२३२. **विकराल** (वि०) (सं०) भीषण, भयानक, डरावना।

४२३३. **विकर्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) आकर्षण, खिंचाव।

४२३४. **विकल** (वि०) (सं०) व्याकुल, बेचैन, विह्वल, टूटा-फूटा, खंडित, अपूर्ण, अधूरा, अस्वाभाविक, असमर्थ, घबराया हुआ।

४२३५. **विकल्प** (संज्ञा पु०) (सं०) धोखा, भ्रम, आवांतरकल्प, विलक्षणता, वैचित्र्य, सन्देह, संशय, भ्रान्ति, अनिश्चय।

४२३६. **विकार** (संज्ञा पु०) (सं०) दोष, बुराई, परिणाम, उपद्रव, हानि, विकृत, परिवर्तन, परिवृत्ति, उलट-फेर, बदलाव।

४२३७. **विकाश** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रकाश, रोशनी, विस्तार, फैलाव, खिलना, प्रस्फुटन, आकाश, विषमगति, उद्भेद, व्यक्त।

४२३८. **विकास** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रसार, फैलाव, (अँ०) एवोल्यूशन।

४२३९. **विकृत** (वि०) (सं०) असाधारण, अस्वाभाविक, अपूर्ण, अधूरा, रोगी, बीमार, विरूप, अस्वच्छ, मलीन।

४२४०. **विकृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विकार, बिगाड़, अन्यथाभाव, खराबी, रोग, बीमारी, शत्रुता।

४२४१. **विक्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) पराक्रम, वीरता, बल, वीर्य, शक्ति, विष्णु, गति, प्रकार, ढंग, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।

४२४२. **विक्रय** (संज्ञा पु०) (सं०) बेचना, बिक्री, माल खपाना।

४२४३. **विक्रांत, विक्रान्त** (संज्ञा पु०) (सं०) वीर, योद्धा, सिंह, वैक्रान्तमणि, शौर्य, वीरता, (वि०) (सं०) तेजस्वी, प्रतापी।

४२४४. **विक्षिप्त** (वि०) (सं०) फैला, बिखरा, छितराया हुआ, त्यक्त, पागल, घबराया हुआ।

४२४५. **विक्षेप** (संज्ञा पु०) (सं०) बाधा, विघ्न, छावनी, सैन्य शिविर, चिल्ला चढ़ाना, प्रत्यंचा खींचना, व्याघात, व्याकुलता, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना।

४२४६. **विगत** (वि०) (सं०) बीता हुआ, रहित, विहीन, निष्प्रभ, गया हुआ, व्यतीत।

४२४७. **विग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) दूर करना, अलग करना, विभाग, कलह, झगड़ा, युद्ध, समर, आकृति, शक्ल, शरीर, मूर्त्ति, सजावट, शृंगार, विरोध, लड़ाई, संग्राम, द्वेष, देह, अङ्ग, प्रतिभा।

४२४८. **विघ्न** (संज्ञा पु०) (सं०) बाधा, रुकावट, अड़चन, पाकफला, अटकाव, अटक।

४२४९. **विचलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चंचलता, अस्थिरता, घबराहट ।

४२५०. **विचार** (संज्ञा पु०) (सं०) संकल्प, भावना, खयाल, ध्यान, सोच, अनुमान ।

४२५१. **विचित्र** (वि०) (सं०) विलक्षण, चकित, सुन्दर, अद्भुत, बहुरंगा, अनेक रंगों वाला ।

४२५२. **विच्छिन्न** (वि०) (सं०) विभक्त, अलग, पृथक्, कुटिल ।

४२५३. **विच्छेद** (वि०) (सं०) नाश, वियोग, विरह, अध्याय, परिच्छेद, अवकाश, स्थानांतरण, पार्थक्य, भेद, अन्तर ।

४२५४. **विजन** (संज्ञा पु०) (हिं०) एकान्त, निराला, निर्जन, जनरहित, जनशून्य ।

४२५५. **विजय** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जय, जीत, जीतना, विमान ।

४२५६. **विजया** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, पार्वती, हर्रे, वच, जयंती, मजीठ, अरणी, भाँग, विजयादशमी, बूटी ।

४२५७. **विज्ञ** (वि०) (सं०) जानकार, बुद्धिमान्, समझदार, विद्वान्, पंडित, प्रवीण, अभिज्ञ, चतुर, ज्ञाता ।

४२५८. **विज्ञता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, चतुरता, जानकारी, विद्वत्ता, पांडित्य, बुद्धिमत्ता ।

४२५९. **विज्ञान** (संज्ञा पु०) (सं०) ज्ञान, जानकारी, कर्म, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, आकाश, निश्चयात्मिका बुद्धि, शिल्प-ज्ञान ।

४२६०. **विज्ञापन** (संज्ञा पु०) (सं०) जानकारी कराना, सूचना देना, इश्तहार, सूचना, (अँ०) एडवरटिज़मेंट ।

४२६१. **विट** (संज्ञा पु०) (सं०) कामुक, लंपट, वेश्याचारी, धूर्त्त, चालाक, चूहा, सांभर नमक, गू, मल, जार, भड़ुआ ।

४२६२. **विटप** (संज्ञा पु०) (सं०) वृक्ष, पेड़, कोंपल, आदित्य-पत्र, रूख ।

४२६३. **विड़ाल** (संज्ञा पु०) (सं०) बिल्ली, गन्धबिलाव, मार्जार, बिलार, हरताल, आँख का पिंड।

४२६४. **वितरण** (संज्ञा पु०) (सं०) देना, अर्पण करना, बाँटना, दान, त्याग, (अं०) डिस्ट्रिब्यूशन।

४२६५. **वितान** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, फैलाव, बड़ा तम्बू, यज्ञ, समूह, मट्ठ, अवसर, अवकाश, तृणा, शून्य, खाली स्थान, चाँदनी, चँदोवा।

४२६६. **वित्त** (संज्ञा पु०) (सं०) धन, संपत्ति, आर्थिक प्रबन्ध, ऐश्वर्य, विभव, (अं०) फाइनेन्स, (वि०) (सं०) जाना हुआ, समझा हुआ, मिला हुआ, प्राप्त, प्रसिद्ध, प्रख्यात।

४२६७. **वित्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विचार, लाभ, प्राप्ति, ज्ञान, संभावना।

४२६८. **विधुर** (संज्ञा पु०) (सं०) चोर, राक्षस, क्षय, नाश, (वि०) अल्प, थोड़ा, कम, व्यथित, दुःखी।

४२६९. **विद्** (संज्ञा पु०) (सं०) तिलपुष्पी, तिलक, जानकार, जानने वाला, पंडित।

४२७०. **विदग्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) रसिक, विद्वान्, पंडित, चतुर, होशियार, प्रवीण, अनुभवी, (वि०) जला हुआ।

४२७१. **विदल** (संज्ञा पु०) (सं०) सोना, स्वर्ण, अनारदाना, चना पीठी।

४२७२. **विदा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुद्धि, ज्ञान, (हिं०) रवाना, होना, प्रस्थान।

४२७३. **विदार** (संज्ञा पु०) (सं०) चीरना, फाड़ना, युद्ध, समर।

४२७४. **विदारण** (संज्ञा पु०) (सं०) फाड़ना, हत्या करना, युद्ध, संग्राम, खपरिया, नौसादर।

४२७५. **विदित** (वि०) (सं०) जाना हुआ, ज्ञात, बूझा हुआ।

४२७६. **विदुर** (वि०) (सं०) चतुर, (संज्ञा पु०) (सं०) जानकार, ज्ञाता, पंडित, ज्ञानी ।

४२७७. **विदूषक** (संज्ञा पु०) (सं०) कामुक, भाँड़, मसखरा ।

४२७८. **विद्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गुण, दुर्गा, ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान, यथार्थ ज्ञान ।

४२७९. **विद्युत्** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बिजली, संध्या, चपला, तड़ित्, (वि०) बहुत चमकदार, चमकीला ।

४२८०. **विद्योत्** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विद्युत्, बिजली, प्रभा, चमक ।

४२८१. **विद्रुम** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रवाल, मूँगा, कोंपल, रत्न-विशेष ।

४२८२. **विद्रोह** (संज्ञा पु०) (सं०) द्वेष, बलवा, बग़ावत, विरोधी, विद्वेष, वैर ।

४२८३. **विद्वान्** (संज्ञा पु०) (सं०) सर्वज्ञ, विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा-लिखा, शिक्षित ।

४२८४. **विद्वेष** (संज्ञा पु०) (सं०) शत्रुता, वैर, विरोध, विपरीतता ।

४२८५. **विधाता** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, ईश्वर, सृष्टिकर्त्ता, भाग्य, विरंची ।

४२८६. **विधान** (संज्ञा पु०) (सं०) अनुष्ठान, व्यवस्था, प्रबन्ध, रीति, प्रणाली, रचना, निर्माण, उपाय, ढंग, पूजा, अर्चन, धन, सम्पत्ति, कानून, (अँ०) ऐक्ट ।

४२८७. **विधि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रणाली, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध, प्रकृति, नियति, भाँति, विधान, उपाय, उद्योग, भाग्य, (संज्ञा पु०) ब्रह्मा ।

४२८८. **विधु** (संज्ञा पु०) (सं०) चन्द्रमा, वायु, कपूर, ब्रह्मा, विष्णु, आयुध, जलस्नान, पाप छुड़ाना, चाँद ।

४२८९. **विधुर** (संज्ञा पु०) (सं०) दुःखी, व्याकुल, असमर्थ, रँडुआ, विकल ।

४२९०. **विनत** (वि०) (सं०) झुका हुआ, नम्र, शिष्ट, संकुचित, वक्र, टेढ़ा, प्रणत, (संज्ञा पु०) शिव ।

४२६१. **विनति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुझाव, नम्रता, सुशीलता, प्रार्थना, विनती, निवेदन, विनियोग, शासन, दंड।

४२६२. **विनम्र** (वि०) (सं०) झुका हुआ, विनीत, सुशील, (संज्ञा पु०) तगर का वृक्ष।

४२६३. **विनय** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रणति, नम्रता, प्रार्थना, अनुनय, शासन, नीति, शिक्षा, विनती, शिष्टता, शिष्टाचार।

४२६४. **विनष्ट** (वि०) (सं०) नष्ट, ध्वस्त, मृत, बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट, पतित, विनाश-प्राप्त।

४२६५. **विनाश** (संज्ञा पु०) (सं०) नाश, लोप, बिगाड़, ख़राबी, तबाही, हानि, ध्वंस, संहार, मरण।

४२६६. **विनीत** (वि०) (सं०) विनयी, सुशील, शिष्ट, नम्र, जितेन्द्रिय, संयमी, हराया हुआ, ले गया हुआ, शासित, धार्मिक, साफ़-सुथरा, (संज्ञा पु०) बनिया, वणिक्।

४२६७. **विनोद** (संज्ञा पु०) (सं०) कौतूहल, तमाशा, खेल-कूद, क्रीड़ा, प्रमोद, परिहास, प्रमोदगृह, प्रसन्नता, हर्ष, कौतुक, हँसी, ठट्ठा, मनोविनोद।

४२६८. **विन्यास** (संज्ञा पु०) (सं०) स्थापन, रखना, सजाना, रचना, जड़ना।

४२६९. **विपक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) विरोध, दूसरा पक्ष, खण्डन, शत्रु-पक्ष, विरोधी, प्रतिद्वंद्वी, खंडन, विरुद्ध पक्ष, (वि०) विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा, विपरीत, पक्षहीन।

४३००. **विपत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुःख, संकट, आफ़त, आपद, विपद्, दुर्गति।

४३०१. **विपन्न** (वि०) (सं०) दुःखी, आर्त्त।

४३०२. **विपरीत** (वि०) (सं०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा, वाम, विरोधी, शत्रु।

४३०३. **विपिन** (संज्ञा पु०) (सं०) वन, जंगल, उपवन, वाटिका, अरण्य, (वि०) भयानक, डरावना।

४३०४. **विपुल** (वि०) (सं०) वृहत्, अगाध, प्रचुर, अधिक, बहुत गंभीर, बड़ा, विस्तृत ।

४३०५. **विप्र** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्राह्मण, पुरोहित, द्विज, श्रोत्रिय, वेदज्ञ ।

४३०६. **विप्रलंभ, विप्रलम्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) वियोग, विरह, छल, धोखा, धूर्तता, बुरा काम ।

४३०७. **विप्लव** (संज्ञा पु०) (सं०) उपद्रव, अशान्ति, विद्रोह, बलवा, उथल-पुथल, हलचल, आफ़त, विपत्ति, विनाश, डांट-डपट, भभकी ।

४३०८. **विफल** (वि०) (सं०) व्यर्थ, निष्फल व्यक्ति, फल-रहित, निरर्थक ।

४३०९. **विबुध** (संज्ञा पु०) (सं०) बुद्धिमान् जन, पंडित, देवता, चन्द्रमा, शिव ।

४३१०. **विभक्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विभाग, अलगाव, पार्थक्य, अंश, बाँट, टुकड़ा, प्रत्यय ।

४३११. **विभव** (संज्ञा पु०) (सं०) धन, सम्पत्ति, ऐश्वय, शक्ति, सौन्दर्य, बहुतायत, आधिक्य, मोक्ष ।

४३१२. **विभा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रभा, चमक, दीप्ति, प्रकाश, रोशनी, किरण, रश्मि, शोभा, सुन्दरता ।

४३१३. **विभाग** (संज्ञा पु०) (सं०) बँटवारा, अंश, हिस्सा, अध्याय, महकमा, टुकड़ा, भाग, सीमा, (अँ०) डिपार्टमेंट ।

४३१४. **विभावरी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात्रि, रात, हल्दी, कुटनी, दूती ।

४३१५. **विभिन्न** (वि०) (सं०) बिलकुल अलग, पृथक्, जुदा, उलटा, हताश, निराश, कटा हुआ ।

४३१६. **विभु** (वि०) (सं०) सर्वव्यापक, बहुत बड़ा, महान्, नित्य, बलवान्, चिरस्थायी, अटल, दृढ़, स्वामी, प्रभु, व्यापक, (संज्ञा पु०) ब्रह्म, आत्मा, प्रभु, स्वामी, ईश्वर, शिव, विष्णु, भृत्य ।

४३१७. **विभूति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अधिकता, बढ़ती, विभव, ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति, लक्ष्मी, सृष्टि, प्रभुत्व, बड़ाई, भस्म, राख।

४३१८. **विभेद** (संज्ञा पु०) (सं०) विभिन्नता, अन्तर, फ़र्क, अनेक भेद, कई प्रकार, कटाव, दरार, मिश्रण, विच्छेद, भिन्नता, पृथकता।

४३१९. **विभोर** (वि०) (हि०) विह्वल, विकल, मग्न, लीन, मत्त, मस्त।

४३२०. **विभ्रंश** (संज्ञा पु०) (सं०) विनाश, ध्वंस, पतन, अवनति, ऊंचा कगार।

४३२१. **विभ्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) भ्रमण, चक्कर, भ्रम, धोखा, सन्देह, संशय, घबराहट, अस्थिरता, शोभा।

४३२२. **विभ्रांति, विभ्रान्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चक्कर, फेरा, भ्रम, सन्देह, घबराहट।

४३२३. **विमर्श** (संज्ञा पु०) (सं०) विवेचन, आलोचना, समीक्षा, परीक्षा, परामर्श, सलाह, अधीरता, असंतोष।

४३२४. **विमर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) विचार, विवेचन, आलोचना, परीक्षा, जाँच, परामर्श, अनुध्यान।

४३२५. **विमल** (वि०) (सं०) स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, निर्दोष, सुन्दर, मल-रहित, (संज्ञा पु०) (सं०) एक उपधातु, चाँदी।

४३२६. **विमलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निर्मलता, स्वच्छता, सफ़ाई, सुन्दरता, पवित्रता, निर्दोषता।

४३२७. **विमान** (संज्ञा पु०) (सं०) उड़नखटोला, वायुयान, हवाई जहाज, रथ, घोड़ा, परिमाण, अनादर, असम्मान, गाड़ी, देवयान, लोक-विशेष।

४३२८. **विमुक्त** (वि०) (सं०) स्वतन्त्र, स्वच्छन्द, त्यक्त, बरी, मोक्ष, छुटकारा, उद्धार, मुक्ति।

४३२९. **विमुख** (वि०) (सं०) विरत, विरुद्ध, अप्राप्त-मनोरथ, (व्यक्ति) निराश, अप्रसन्न, विरोधी, पराङ्मुख, फिरा हुआ।

४३३०. **विमुग्ध** (वि०) (सं०) मोहित, आसक्त, भ्रांत, घबराया हुआ, डराया हुआ, मतवाला, पागल, बेसुध, अज्ञानी, मूढ़, मूर्ख।

४३३१. **विमूढ़** (वि०) (सं०) बेमुध, अचेत, ज्ञान-रहित, नादान, मूर्ख, अज्ञानी, अनभिज्ञ, अतिशय मूर्ख ।

४३३२. **विमोह** (संज्ञा पु०) (सं०) मोह, अज्ञान, बेहोशी ।

४३३३. **वियोग** (संज्ञा पु०) (सं०) अलग होना, विरह, विच्छेद, विछोह, बिछुड़ना ।

४३३४. **वियोगी** (वि०) (सं०) विरही, पत्नी से बिछुड़ा हुआ, (संज्ञा पु०) (सं०) विरही व्यक्ति, चकवा ।

४३३५. **विरक्त** (वि०) (सं०) संसार-विमुख, उदासीन, अप्रसन्न, खिन्न, वैरागी, वासना-शून्य, वीतराग, संसार-विरागी ।

४३३६. **विरज** (वि०) (हिं०) निर्मल, स्वच्छ, साफ़, निर्दोष, बे-ऐब, क्रोध-रहित, अहंकार-शून्य, निरभिमान ।

४३३७. **विरत** (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, शिव, (वि०) (सं०) विमुख, निवृत्त, छोड़ा हुआ, विरक्त, वैरागी, बिलकुल लीन, (अँ०) रिटायर्ड ।

४३३८. **विरल** (वि०) (सं०) दुर्लभ, पतला, शून्य, निर्जन, अल्प, थोड़ा, अनुपम, अनूठा, अनोखा ।

४३३९. **विरस** (वि०) (सं०) नीरस, फीका, अप्रिय, अरुचिकर, रसहीन, बेज़ायका ।

४३४०. **विरह** (संज्ञा पु०) (सं०) वियोग, जुदाई, विछोह, बिछुड़न, (वि०) रहित, शून्य, बगैर ।

४३४१. **विराग** (संज्ञा पु०) (सं०) अरुचि, उदासीन भाव, वैराग्य, विरक्ति, ममता-त्याग ।

४३४२. **विराट्** (संज्ञा पु०) (सं०) विश्व-रूप ब्रह्म, विश्व, क्षत्रिय, कांति, दीप्ति, (वि०) बहुत बड़ा, विशाल, विस्तृत, विकराल ।

४३४३. **विराम** (संज्ञा पु०) (सं०) रुकना, ठहरना, विश्राम, यति, निवृत्ति, शान्ति, विश्रान्ति, अन्त, अवसान, समाप्ति ।

४३४४. **विरुद** (संज्ञा पु०) (सं०) यश-वर्णन, प्रशस्ति, यश ।

४३४५. **विरुद्ध** (वि०) (सं०) प्रतिकूल, खिलाफ़, अप्रसन्न, अनुचित, विपरीत।

४३४६. **विरोध** (संज्ञा पु०) (सं०) विपरीत भाव, शत्रुता, बिगाड़, व्याघात, उलटी स्थिति, नाश, द्वेष, लड़ाई, झगड़ा।

४३४७. **विरोधी** (वि०) (हिं०) विपक्षी, शत्रु, वैरी, रिपु।

४३४८. **विलंब, विलम्ब** (संज्ञा पु०) (सं०) देर, देरी, अतिकाल, अधिक समय।

४३४९. **विलग** (वि०) (हिं०) अलग, पृथक्, भिन्न, (संज्ञा पु०) (हिं०) अंतर, फ़र्क, भेद।

४३५०. **विलास** (संज्ञा पु०) (सं०) मनोविनोद, आनंद, हर्ष, मनोहर चेष्टा, काम-भोग, यथेष्ट सुख-भोग।

४३५१. **विलासी** (संज्ञा पु०) (हिं०) कामी, कामुक, क्रीड़ाशील, विनोदप्रिय, आरामतलब, वरुण वृक्ष, भोगी या आनन्दी व्यक्ति।

४३५२. **विलीन** (वि०) (सं०) अदृश्य, अदृष्ट, लुप्त, गुम, मिला हुआ, घुला हुआ, छिपा हुआ, नष्ट।

४३५३. **विलोभ** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रलोभन, मोह, माया।

४३५४. **विलोम** (वि०) (सं०) विपरीत, उलटा, आक्रम, (संज्ञा पु०) सर्प, वरुण, कुत्ता, रहट।

४३५५. **विवर, विविर** (संज्ञा पु०) (सं०) छिद्र, छेद, बिल, दरार, गर्त्त, गुफ़ा, कंदरा।

४३५६. **विवश** (वि०) (सं०) बेबस, मजबूर, पराधीन, परवश, अशक्त, अनन्योपाय।

४३५७. **विवाद** (संज्ञा पु०) (सं०) कहासुनी, वाक्युद्ध, झगड़ा, कलह, वाद, वाक्-कलह, शास्त्रार्थ।

४३५८. **विवाह** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्याह, शादी, पाणिग्रहण, परिणय।

४३५९. **विवेक** (संज्ञा पु०) (सं०) सत्य ज्ञान, विचार, निर्णयात्मिका बुद्धि, ज्ञान।

४३६०. **विवेचन** (संज्ञा पु०) (सं०) मीमांसा, तर्क-वितर्क, अनु-सन्धान, परीक्षा।

४३६१. **विशद** (वि०) (सं०) स्वच्छ, निर्मल, विमल, साफ़, स्पष्ट, व्यक्त, सफ़ेद, प्रसन्न, सुन्दर, मनोहर, अनुकूल, विस्तृत, विस्तार-युक्त, विशाल, (संज्ञा पु०) सफ़ेद रंग, कसीस, वनभंटा।

४३६२. **विशाख** (संज्ञा पु०) (सं०) कार्तिकेय, शिव, याचक, गदहपूरना।

४३६३. **विशारद** (संज्ञा पु०) (सं०) पंडित, (वि०) दक्ष, निपुण, मौलसिरी, चतुर, ज्ञाता, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ, घमंडी।

४३६४. **विशाल** (वि०) (सं०) लंबा-चौड़ा, शानदार, प्रसिद्ध, मशहूर, विस्तृत, बृहत्, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मृग-विशेष, पक्षी, चिड़िया, पेड़, वृक्ष।

४३६५. **विशिख** (संज्ञा पु०) (सं०) बाण, तीर, सर, रोगी-निवास, (वि०) शिखा-रहित, चोटी-रहित।

४३६६. **विशिष्ट** (वि०) (सं०) मिला हुआ, विलक्षण, अद्भुत, असाधारण, मुख्य, प्रधान, संयुक्त, जुटा, मिला, (संज्ञा पु०) सीसा धातु।

४३६७. **विशुद्ध** (वि०) (सं०) सत्य, सच्चा, बहुत पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल।

४३६८. **विशेष** (संज्ञा पु०) (सं०) अन्तर, फ़र्क, प्रकार, ढंग, सार, मुनासिबत, अवयव, अङ्ग, वस्तु, जाति, (वि०) अधिक, मुख्य, प्रधान, खास।

४३६९. **विश्राम** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रम मिटाना, आराम करना, सुख, चैन, आराम, थकावट दूर करना, विराम।

४३७०. **विश्रुति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रसिद्धि, शोहरत, झरना, रसना, (अँ०) पब्लिसिटी।

४३७१. **विश्व** (संज्ञा पु०) (सं०) समस्त ब्रह्मांड, संसार, जगत्, दुनिया, विष्णु, शरीर, देह, जीवात्मा, सोंठ, (वि०) पूरा, सब, कुल, बहुत।

४३७२. **विश्वकर्मा** (संज्ञा पु०) (सं०) ईश्वर, ब्रह्मा, बढ़ई, लोहार, मेमार, राज, शिव ।

४३७३. **विश्वा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अतीस, शतावर, सोंठ, पीपल, शंखिनी, चोरपुष्पी ।

४३७४. **विश्वास** (संज्ञा पु०) (सं०) एतबार, विश्वास, यकीन, प्रतीति, भरोसा, धारणा ।

४३७५. **विष** (संज्ञा पु०) (सं०) जहर, गरल, अतीस, बछनाग, कलिहारी, कालकूट, हलाहल, माहूर ।

४३७६. **विषद** (संज्ञा पु०) (सं०) हीराकसीस, अतीस, सफ़ेद रंग, बादल, (वि०) (सं०) स्वच्छ, साफ़ ।

४३७७. **विषम** (वि०) (सं०) बहुत कठिन, बहुत तीव्र, भयंकर, अनमेल, असमान, अतुल्य, कठिन, कठोर, (संज्ञा पु०) संकट, आफ़त ।

४३७८. **विषमता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) असमानता, वैर, विरोध, कठिनता, कठोरता ।

४३७९. **विषय** (संज्ञा पु०) (सं०) मजमून, भोग-विलास, स्त्री-संभोग, कामोपभोग, संपत्ति, पदार्थ, वस्तु, इन्द्रियार्थ वस्तु, बड़ा प्रदेश, राज्य, (अँ०) सबजेक्ट ।

४३८०. **विषयी** (संज्ञा पु०) (हिं०) विलासी, कामी, कामदेव, धनवान्, राजा, भोगी, संसारी ।

४३८१. **विषाण** (संज्ञा पु०) (सं०) हाथीदाँत, मेढ़ासिंगी, वाराही कन्द, इमली, सींग, शृङ्ग, सूअर का दाँत ।

४३८२. **विषाणी** (संज्ञा पु०) (सं०) सींगवाला, बैल, हाथी, सूअर, सिंघाड़ा, ऋषभक, (संज्ञा पु०) (सं०) क्षीरकाकोली, मेढ़ासिंगी, वृश्चिकाली, इमली, सिंघाड़ा, विष, आवर्त्तकी लता ।

४३८३. **विषाद** (संज्ञा पु०) (सं०) खेद, दुःख, मूर्खता, शोक, क्लेश, निश्चेष्टता ।

४३८४. **विष्कंभ, विष्कम्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, विघ्न, बाधा, अर्गल, ब्योंड़ा।

४३८५. **विष्ठा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मल, गू, पाखाना, पुरीष।

४३८६. **विष्णु** (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, वसु देवता, परमेश्वर, परमात्मा, सृष्टिपालक, देव-विशेष।

४३८७. **विसर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) दान, छोड़ना, त्यागना, मोक्ष, मृत्यु, प्रलय, वियोग, चमक, चिह्न-विशेष (:)।

४३८८. **विसर्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) छोड़ना, परित्याग, दान, त्याग, त्याग देना, (अँ०) डिसमिसल।

४३८९. **विसार** (संज्ञा पु०) (सं०) मछली, निकालना, फैलाव, विस्तार, प्रवाह, बहाव, उत्पत्ति।

४३९०. **विस्तर** (वि०) (सं०) विस्तृत, अधिक, बढ़ा हुआ (संज्ञा पु०) प्रेम, समूह, आसन, संख्या, आधार।

४३९१. **विस्तार** (संज्ञा पु०) (सं०) फैलाव, विशालता, गुच्छा, शिव, विष्णु।

४३९२. **विस्तृत** (वि०) (सं०) लंबा-चौड़ा, विस्तार वाला, विशाल, विस्तीर्ण, बड़ा।

४३९३. **विस्फार** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, फैलाव, तेज़ी, स्फूर्ति, विकास, काँपना।

४३९४. **विस्मय** (संज्ञा पु०) (सं०) आश्चर्य, ताज्जुब, गर्व, अभिमान, सन्देह, शक, अचरज, अचम्भा।

४३९५. **विहंग, विहङ्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) विहङ्गम, पक्षी, चिड़िया, पखेरू, बाण, तीर, मेघ, बादल, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह।

४३९६. **विहान** (संज्ञा पु०) (हिं०) प्रातःकाल, सवेरा, उषाकाल, सुबह।

४३९७. **विहार** (संज्ञा पु०) (सं०) टहलना, घूमना, रतिक्रीड़ा-स्थल, संघाराम, बौद्ध मठ, क्रीड़ा, खेल

४३९८. **विह्वल** (वि०) (सं०) घबराया हुआ, व्याकुल, बेचैन, चंचल ।

४३९९. **वीचि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लहर, तरंग, अवकाश, सुख, चमक ।

४४००. **वीज** (संज्ञा पु०) (सं०) मूल कारण, शुक्र, वीर्य, तेज, तांत्रिक मन्त्र, बीया ।

४४०१. **वीत** (वि०) (सं०) मुक्त, बन्धन-रहित, सुन्दर, अवगत, गत, व्यतीत, समाप्त, बीता हुआ ।

४४०२. **वीथिका** (संज्ञा पु०) (सं०) मार्ग, रास्ता, गली, तग रास्ता।

४४०३. **वीभत्स** (वि०) (सं०) घृणित, क्रूर, पापी, रस-विशेष ।

४४०४. **वीर** (वि०) (सं०) बहादुर, बलवान्, कुशल, निपुण, कर्मठ, (संज्ञा पु०) योद्धा, सिपाही, विष्णु, जिन, काली मिर्च, पुष्करमूल, कांजी, खस, उशीर, आलूबुखारा, पीली कटसरैया, वाराहीकंद, कनेर, लताकरंज, अर्जुन वृक्ष, काकोली, सिन्दूर, शालिपर्णी, लोहा, नरसल, कुश, तरोई, ऋषभक औषध ।

४४०५. **वीरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मुरामाँसी, क्षीरकाकोली, भुईंआँवला, एलुवा, केला, काकोली, शतावर, घीकुआँर, जटामाँसी, आँवला, ब्राह्मी, अतीस, मदिरा, पिठवन, खरेंटी, कुटकी, गम्भारी ।

४४०६. **वीर्य, वीर्य्य** (संज्ञा पु०) (सं०) शुक्र, रेत, बल, पराक्रमी, सामर्थ्य, बीज, निर्पिवत, पानी, पेशाब, प्रधान धातु, बल्य, बिन्दु, बुंद, बूँद, वेग, अनङ्ग, काम, कुसमायुध, गंधक, धातु, हिरण, हिरण्य, कामदेव ।

४४०७. **वृंद, वृन्द** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, यूथ, जत्था ।

४४०८. **वृक** (संज्ञा पु०) (सं०) भेड़िया, गीदड़, कौवा, चोर, क्षत्रिय, वज्र, गन्धाद्रिरोज़ा, हुंडार, अग्नि-विशेष ।

४४०९. **वृक्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) पेड़, दरख्त, तरु ।

४४१०. **वृजन** (संज्ञा पु०) (सं०) आकाश, आसमान, पाप, युद्ध, निपटारा, बल, शक्ति, शत्रु, (वि०) कुटिल, टेढ़ा ।

४४११. **वृत्त** (संज्ञा पु०) (सं०) वृत्तांत, हाल, चरित्र, वृत्ति, वर्णिक छन्द, गोला, मण्डल, घेरा, आचार, चाल-चलन, (वि०) दृढ़, मज़बूत, गोलाकार, मृत, जात, निष्पन्न, सिद्ध, ढका हुआ।

४४१२. **वृत्तांत, वृत्तान्त** (संज्ञा पु०) (सं०) समाचार, हाल, प्रक्रिया, सम्पूर्णता, प्रस्ताव, आख्यान, अवसर, मौका, भाव, बात, वार्त्ता।

४४१३. **वृत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) जीविका, जीवनोपाय, व्यवसाय, रोज़ी, पेशा, व्यापार, चाल-चलन, कार्य, स्वभाव, प्रकृति, कर्त्तव्य, (अँ०) प्रोफ़ेशन।

४४१४. **वृथा** (वि०) (सं०) व्यर्थ, फ़ज़ूल, बेकार, अनर्थक, निरर्थक, निष्प्रयोजन, बे-फ़ायदा।

४४१५. **वृद्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) बुड्ढा, पंडित, ज्ञानी, पुराना, प्राचीन, जीर्ण, डोकरा, (अँ०) ऐल्डर।

४४१६. **वृद्धा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया, अँगूठा, महा-श्रावणिका।

४४१७. **वृद्धि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बढ़ती, आधिक्य, बढ़ोतरी, ब्याज, सूद, अभ्युदय, समृद्धि, लाभ, उन्नति, मुनाफ़ा।

४४१८. **वृष** (संज्ञा पु०) (सं०) गौ का नर, साँड़, श्रीकृष्ण, पति, गेहूँ, चूहा, अड़ूसा, बैल, वृषभ, धर्म।

४४१९. **वृषभ** (संज्ञा पु०) (सं०) साँड़, बैल, बर्धा।

४४२०. **वृषल** (संज्ञा पु०) (सं०) शूद्र, बदचलन, घोड़ा, गाजर, शलगम, जाति-विशेष, सम्राट् चन्द्रगुप्त।

४४२१. **वृषली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रजस्वला स्त्री, व्यभिचारिणी स्त्री।

४४२२. **वृष्टि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वर्षा, मेंह, बारिश, मेघ, बरसात।

४४२३. **वृष्णि** (संज्ञा पु०) (सं०) मेघ, बादल, यादव वंश, श्रीकृष्ण, इन्द्र, अग्नि, वायु, ज्योति, गौ, मेढ़ा।

४४२४. **वेग** (संज्ञा पु०) (सं०) बहाव, प्रवाह, मल-मूत्र की इच्छा, ज़ोर, तेज़ी, शीघ्रता, जल्दी, प्रसन्नता, आनन्द, दृढ़ प्रतिज्ञा, उद्योग, उद्यम, धारा।

४४२५. वेणी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भीड़-भाड़, देवदाली, जल-प्रवाह, मेंड़, देवनाड़, चोटी, त्रिवेणी।

४४२६. वेणु (संज्ञा पु०) (सं०) बाँस, मुरली, बाँसुरी, वंशी।

४४२७. वेतन (संज्ञा पु०) (सं०) तनख्वाह, महीना, पारिश्रमिक, चाँदी, नगद, पगार, मजूरी, (अं०) सैलरी, वेजेज़।

४४२८. वेद (संज्ञा पु०) (सं०) वृत्त, वित्त, यज्ञांग, आर्य धर्मग्रन्थ, ज्ञान।

४४२९. वेदना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पीड़ा, व्यथा, चिकित्सा, चमड़ा, यातना, दुःख।

४४३०. वेदि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वेदी, यज्ञ-वेदी, नामांकित अंगूठी, अंगुष्ठा, पीठ, पीड़ा।

४४३१. वेदी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सरस्वती, वेदिका, हवन-स्थान, यज्ञ-स्थल, (संज्ञा पु०) पंडित, ज्ञानी, जानकार, ब्रह्मा।

४४३२. वेध (संज्ञा पु०) (सं०) बेधना, निरीक्षण, छेदना, गहरापन, गंभीरता, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, पंडित, ज्ञानी, सफ़ेद मदार, छेद, सूराख़।

४४३३. वेधा (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, पंडित, सफ़ेद मदार, दक्ष प्रजापति।

४४३४. वेला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) काल, समय, लहर, तट, सीमा, मर्यादा, वाणी, भोजन, मसूड़ा, रोग।

४४३५. वेश (संज्ञा पु०) (सं०) पोशाक, खेमा, तम्बू, घर, मकान, आकार, परिच्छद, सजावट, शोभा।

४४३६. वेशधर (संज्ञा पु०) (सं०) छद्मवेशी।

४४३७. वेष्टन (संज्ञा पु०) (सं०) घेरना, लपेटना, बेठन, मुकुट, पगड़ी, बुगल, लपेटने का कपड़ा।

४४३८. वैचित्र्य (संज्ञा पु०) (सं०) विचित्रता, विभिन्नता, फ़र्क, भेद, सुन्दरता, खूबसूरती, चित्र-विचित्र।

४४३९. **वैदेही** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीता, जानकी, राम-प्रिया, रोचना, पिप्पली, पीपल।

४४४०. **वैद्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पंडित, वासकवृक्ष, चिकित्सक, वैद्य-शास्त्र-वेत्ता।

४४४१. **वैभव** (संज्ञा पु०) (सं०) धन-सम्पत्ति, विभव, ऐश्वर्य सम्पदा।

४४४२. **वैर** (संज्ञा पु०) (सं०) शत्रुता, दुश्मनी, प्रतिहिंसा, द्वेष, विरोध।

४४४३. **व्यंग, व्यङ्ग, व्यंग्य, व्यङ्ग्य** (संज्ञा पु०) (सं०) गूढ़ अर्थ, ताना, बोली, चुटकी, मेंढक, विकलांग, अङ्गहीन।

४४४४. **व्यंजन, व्यञ्जन** (संज्ञा पु०) (सं०) चिह्न, निशान, अङ्ग, अवयव, मूँछ, दिन, उपस्थ, गुप्तचर, तरकारी, साग, वर्ण, अक्षर, स्वरहीन वर्ण।

४४४५. **व्यक्त** (वि०) (सं०) साफ़, स्पष्ट, स्थूल, बड़ा, प्रकाशित, दर्शन योग्य, (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, मनुष्य, आदमी, कृत्य, काम।

४४४६. **व्यक्ति** (संज्ञा पु०) (सं०) मनुष्य, आदमी, जन।

४४४७. **व्यग्र** (वि०) (सं०) विकल, घबराया हुआ, डरा हुआ, भयभीत, काम में लगा हुआ, व्यस्त, व्याकुल, उद्विग्न।

४४४८. **व्यतिरेक** (संज्ञा पु०) (सं०) अभाव, भेद, अन्तर, भिन्नता, अतिक्रम, अलगाव, भिन्नता।

४४४९. **व्यथा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पीड़ा, वेदना, दुःख, क्लेश, भय, डर, कष्ट।

४४५०. **व्यथित** (वि०) (सं०) दुःखित, भयभीत, व्याकुल, विकल, पीड़ित, क्लेश-ग्रस्त।

४४५१. **व्यय** (संज्ञा पु०) (सं०) खपत, नाश, बरबादी, लागत, खर्च, क्षय, नाश, (अँ०) ऐक्सपैंडीचर।

४४५२. व्यर्थ (वि०) (सं०) अर्थरहित, निरर्थक, विफल, वृथा, निकम्मा, निष्फल, (अँ०) नल्ल ।

४४५३. व्यवधान (संज्ञा पु०) (सं०) ओट, परदा, रुकावट, बाधा, विभाग, खण्ड, विच्छेद, अन्तर, दूरी ।

४४५४. व्यवसाय (संज्ञा पु०) (सं०) धंधा, पेशा, रोज़गार, व्यापार, कामधंधा, निश्चय, प्रयत्न, उद्योग, कोशिश, विचार, अभिप्राय, मतलब, शिव, विष्णु, व्यवहार, लेन-देन, (अँ०) आकुपेशन ।

४४५५. व्यवहार (संज्ञा पु०) (सं०) कार्य, काम, बरताव, लेन-देन, व्यापार, रोज़गार, न्याय, शर्त, पण, उत्तम, (अँ०) डीलिंग ।

४४५६. व्यसन (संज्ञा पु०) (सं०) विपत्ति, बुरी लत, दुःख, कष्ट, दुर्भाग्य, आसक्ति, अभ्यास, खोटी आदत ।

४४५७. व्यस्त (वि०) (सं०) घबराया हुआ, व्याकुल, व्याप्त, फेंका हुआ, उद्विग्न ।

४४५८. व्याघात (संज्ञा पु०) (सं०) विघ्न, बाधा, मार, रुकावट, रोक, अटकाव ।

४४५९. व्याघ्र (संज्ञा पु०) (सं०) बाघ, शेर, नाहर, चीता, लालरेंड, करंज ।

४४६०. व्याध (संज्ञा पु०) (सं०) शिकारी, बहेलिया, अहेरिया, (वि०) (सं०) दुष्ट, पाजी ।

४४६१. व्याप्ति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भाव, सीमा, विस्तार, फैलाव ।

४४६२. व्यायाम (संज्ञा पु०) (सं०) कसरत, पौरुष, परिश्रम, काम, सैनिक कवायद, शारीरिक श्रम, (अँ०) ऐक्सरसाइज़ ।

४४६३. व्याल (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, बाघ, राजा, विष्णु, सर्प, अहि, भुजङ्ग, (वि०) दुष्ट ।

४४६४. व्यावृत्त (वि०) (सं०) छूटा हुआ, निवृत्त, वर्जित, टूटा हुआ, खंडित, विभाजित, मनोनीत, ढका हुआ, आच्छादित, सराहा हुआ, प्रशंसित, घुमाया हुआ ।

४४६५. **व्यास** (संज्ञा पु०) (सं०) विस्तार, फैलाव, महर्षि-विशेष, पुराणकर्त्ता ।

४४६६. **व्युत्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वच्छन्दता, विरोधी आचरण, रुकावट डालना, रोकना, समाधि ।

४४६७. **व्यूह** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, निर्माण, रचना, शरीर, सेना, परिणाम, राशि ।

४४६८. **व्योम** (संज्ञा पु०) (हि०) आकाश, अन्तरिक्ष, गगन, मेघ, बादल, जल, पानी ।

४४६९. **व्रज** (संज्ञा पु०) (सं०) जाना, चलना, समूह, झुंड, मथुरा-मंडल, श्रीकृष्ण का लीला-स्थान ।

४४७०. **व्रत** (संज्ञा पु०) (सं०) भोजन करना, खाना, संकल्प, प्रतिज्ञा, पुण्य, उपवास, अनुष्ठान ।

४४७१. **व्रीड़ा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लाज, शर्म, व्रीडा, लज्जा, (अ०) हया ।

(श)

४४७२. **शंकर, शङ्कर** (वि०) (सं०) मङ्गलकारक, शुभ, लाभदायक, (संज्ञा पु०) शिव, शम्भु, महादेव, भीमसेनी कपूर, कबूतर ।

४४७३. **शंकरा** (संज्ञा पु०) (हिं) एक राग, सफ़ेद कीकर, मजीठ, शिवा, पार्वती ।

४४७४. **शंका, शङ्का** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) भय, डर, खटका, सन्देह, संशय, शक, त्रास ।

४४७५. **शंकित, शङ्कित** (वि०) (सं०) डरा हुआ, भयभीत, अनिश्चित, डरपोक, बुज़दिल ।

४४७६. **शंकु, शङ्कु** (संज्ञा पु०) (सं०) मेख, कील, खूंटी, भाला, विष, शिव, राक्षस, हंस, वाल्मीक, बाँबी, पाप, कामदेव, दाँव ।

४४७७. शंख, शङ्ख (संज्ञा पु०) (सं०) कंबु, चरण-चिह्न, एक निधि, कपाल ।

४४७८. शंठ, शण्ठ (संज्ञा पु०) (सं०) विवाहित व्यक्ति, नपुंसक, हीजड़ा, मूर्ख व्यक्ति ।

४४७९. शंबर, शम्बर (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, समर, मछली, चित्रक-वृक्ष, लोधवृक्ष, अर्जुनवृक्ष, तालवृक्ष, सांबर हिरन, मुश्कजमी, (वि०) बहुत बढ़िया, भाग्यवान्, मूर्खा ।

४४८०. शंबल, शम्बल (संज्ञा पु०) (सं०) संबल, पाथेय, तट, कुल, द्वेष, ईर्ष्या ।

४४८१. शंभु, शम्भु (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, पारा, सफ़ेद आक ।

४४८२. शक (संज्ञा पु०) (सं०) शकाब्द, तातार देश, जल, मल, (अ०) शंका, संदेह ।

४४८३. शकट (संज्ञा पु०) (सं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, भार, बोझ, शकटासुर, तिनिश वृक्ष, धवर, (एक वृक्ष) धौ, शरीर, देह, रोहिणी नक्षत्र ।

४४८४. शकल (संज्ञा पु०) (सं०) त्वचा, चमड़ा, छाल, आँवला, दालचीनी, कमलनाल, खाँड, शक्कर, टुकड़ा, खंड, स्वरूप, आकृति, मूरत, चिह्न, चर्म, भाग, छिलका, (संज्ञा स्त्री०) चेहरा, स्वरूप, चेष्टा, बनावट, गढ़न, उपाय, ढंग, रास्ता ।

४४८५. शकुन (संज्ञा पु०) (सं०) शगुन, शुभ मुहूर्त्त, शुभसूचक चिह्न, मङ्गलगान, पक्षी-विशेष ।

४४८६. शकुनि (संज्ञा पु०) (सं०) पक्षी, चिड़िया, गिद्ध पक्षी, दुष्ट आदमी।

४४८७. शक्ति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रकृति, माया, पाँवर, दुर्गा, गौरी, लक्ष्मी, तलवार, वश, अधिकार, सम्प्रदाय-विशेष ।

४४८८. शक्र (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र, कुटज वृक्ष, अर्जुन वृक्ष, इंद्रजौ, ज्येष्ठा नक्षत्र, (वि०) समर्थ, योग्य, लायक ।

४४८९. **शगुन** (संज्ञा पु०) (हिं०) शकुन, भेंट, नज़राना, मँगनी।

४४९०. **शगूफ़ा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कली, पुष्प, फूल, विलक्षण घटना।

४४९१. **शचि, शची** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) इन्द्र की पत्नी, सतावर, असबरग, वक्तृत्व शक्ति, प्रज्ञा, बुद्धि।

४४९२. **शठ** (वि०) (सं०) धूर्त्त, चालाक, लुच्चा, बदमाश, दुष्ट, पाजी, मूर्ख, ठग, कपटी, वंचक, (संज्ञा पु०) केसर, लोहा, फ़ौलाद, चित्रक, ताल वृक्ष।

४४९३. **शतक** (संज्ञा पु०) (सं०) शताब्दी, शती, सदी, सौ का समूह, सैकड़ा, (अँ०) सेंच्युरी।

४४९४. **शत्रु** (संज्ञा पु०) (सं०) वैरी, दुश्मन, अरि, द्वेषी, रिपु।

४४९५. **शनैः** (अव्यय) (सं०) धीरे, आहिस्ता, हौले।

४४९६. **शपथ** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सौगन्ध, कसम, हलफ़, दृढ़तापूर्ण कथन, प्रतिज्ञा।

४४९७. **शफ़ा** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) आरोग्यता, तन्दुरुस्ती।

४४९८. **शबनम** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) ओस, तुषार, एक तरह का बहुत महीन कपड़ा।

४४९९. **शबाब** (संज्ञा पु०) (अ०) यौवनकाल, अत्यधिक सौन्दर्य, ख़ूबसूरती, जवानी, हुस्न।

४५००. **शम** (संज्ञा पु०) (सं०) शांति, मोक्ष, क्षमा, निवृत्ति, हाथ, तिरस्कार, आचार, निग्रह, संयम।

४५०१. **शमन** (संज्ञा पु०) (सं०) यम, मृग-विशेष, हिंसा, शान्ति, दमन, उपद्रव दबाना, अन्न, मटर, तिरस्कार, आघात, चोट, रात, रात्रि, यमराज।

४५०२. **शय** (संज्ञा पु०) (सं०) शय्या, साँप, निद्रा, पण, हाथ, (संज्ञा स्त्री०) (अ०) वस्तु, पदार्थ, भूत, प्रेत।

४५०३. **शर** (संज्ञा पु०) (सं०) बाण, तीर, सरकंडा, भाले का फल, सरपत, ख़स, उशीर, चिता, हिंसा, सायक, विशिख, पाँच की संख्या।

४५०४. **शरण** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रक्षा, आश्रय, बचाव का स्थान, पनाह, घर, मकान।

४५०५. **शरभ** (संज्ञा पु०) (सं०) टिड्डी, विष्णु, ऊँट, सिंह, हाथी का बच्चा, (अ०) शर्म, लज्जा।

४५०६. **शरह** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) टीका, भाष्य, दर, भाव, रस्म, रीति।

४५०७. **शराब** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) मदिरा, सुरा, शरबत, पुरवा, सकोरा।

४५०८. **शरीक** (वि०) (अ०) मिला हुआ, सम्मिलित, शामिल, (संज्ञा पु०) साथी, सहायक, सहयोगी, हिस्सेदार, साझीदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी।

४५०९. **शरीफ़** (संज्ञा पु०) (अ०) भला आदमी, सज्जन, कुलीन।

४५१०. **शरीर** (संज्ञा पु०) (सं०) देह, तन, बदन, काया, अङ्ग, गात्र, (अं०) फ्रेम, (वि०) (अ०) दुष्ट, पाजी, नटखट।

४५११. **शरु** (संज्ञा पु०) (सं०) क्रोध, गुस्सा, वज्र, वाण, तीर, हथियार, आयुध, हिंसा, हत्या, हिंसक, गन्धर्व-विशेष, (वि०) बहुत पतला।

४५१२. **शर्करा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चीनी, शक्कर, खाँड, बालू, पथरी रोग, कंकड़, ठीकरा।

४५१३. **शर्त्त** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दाँव, बाजी, ठहराव, पण, नियम।

४५१४. **शल** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, ऊँट, शल्यराज, भाला, भृङ्गी।

४५१५. **शलभ** (संज्ञा पु०) (सं०) शरभ, टिड्डी, पतंगा, फतिंगा, कीट, पतङ्ग, कीड़ा, मकोड़ा।

४५१६. **शलाका** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सलाई, सींख, सलाख, वाण, तीर, बैलट, अस्थि, हड्डी, मैनफल, सलई वृक्ष, वच, बचा, कूँची, तूली, मैना पक्षी।

४५१७. **शल्य** (संज्ञा पु०) (सं०) शस्त्र-चिकित्सा, हड्डी, अस्थि, शलाका, गाली, दुर्वचन, मैनफल, वाण, लोध, बेल, पाप, (अं०) ऑपरेशन।

४५१८. शवर (संज्ञा पु०) (सं०) अन्धकार, अँधेरा, कामदेव, सन्ध्या, भील ।

४५१९. शवरी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रात, निशा, साँझ, संध्या, हल्दी, स्त्री, औरत ।

४५२०. शश (संज्ञा पु०) (सं०) खरगोश, लोध्र ।

४५२१. शशि (संज्ञा पु०) (हिं०) चन्द्रमा, विधु, चाँद, निशिकर, रजनीपति ।

४५२२. शस्त (संज्ञा पु०) (सं०) शरीर, देह, मंगल, कल्याण, (फा०) लक्ष्य, निशाना, मछली पकड़ने का काँटा, (वि०) (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, मरा हुआ, निहत, कल्याणयुक्त, मङ्गलकारक ।

४५२३. शस्त्रधारी (वि०) (सं०) हथियारबन्द, (संज्ञा पु०) योद्धा, सैनिक, (संज्ञा स्त्री०) शस्त्रधारिणी ।

४५२४. शस्य (संज्ञा पु०) (सं०) अन्न, अनाज, फ़सल, उपज, पैदावार, नई घास, सद्‌गुण, धान्य, धान ।

४५२५. शह (वि०) (फा०) बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठतर, (संज्ञा स्त्री०) (फा०) किश्त ।

४५२६. शहर (संज्ञा पु०) (फा०) नगर, पुर ।

४५२७. शांत, शान्त (वि०) (सं०) निश्चल, मृत, मरा हुआ, धीर, सौम्य, मौन, चुप, अप्रभावित, उत्साह, तत्परता-रहित, स्थिर, अक्षुब्ध, अचंचल, गंभीर, अछोभ, उदाम ।

४५२८. शांता, शान्ता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रेणुका, दूर्वा, दूब, शमी, आँवला ।

४५२९. शांति, शान्ति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) निश्चलता, स्तब्धता, सन्नाटा, दुर्गा, विराग, गंभीरता, सौम्यता, शम, स्थिरता, चैन, ठंडाई ।

४५३०. शांबरी, शाम्बरी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) माया, इन्द्रजाल, जादूगरनी, मायाविनी, (संज्ञा पु०) (सं०) चन्दन-विशेष, लोध्र, मूषाकानी लता ।

४५३१. **शांभव, शाम्भव** (वि०) (सं०) शिवोपासक, शैव, (संज्ञा पु०) (सं०) देवदार, कपूर, मित्रमल्लिका (लता), गुग्गल, एक विष, शैव, शिवपुत्र।

४५३२. **शाक** (संज्ञा पु०) (सं०) भाजी, तरकारी, साग, भोजन, सिरस वृक्ष, शक्ति, बल, (वि०) (अ०) भारी, दूभर, कठिन, दुःखदायी, कड़ा।

४५३३. **शाकट** (संज्ञा पु०) (सं०) बैल, बोझ, लिसोड़ा, वव वृक्ष, खेत।

४५३४. **शाख** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) टहनी, डाली, सींग, खण्ड, फांक।

४५३५. **शाठ्य** (संज्ञा पु०) (सं०) शठता, दुष्टता, कपट, छल, ठठाई, धूर्त्तता।

४५३६. **शाण** (संज्ञा पु०) (सं०) सान, कसौटी, भँगरा, शान, छुरी तेज करने का पत्थर।

४५३७. **शाद** (संज्ञा पु०) (सं०) गिरना, पड़ना, घास, दूब, कीचड़, (वि०) (फा०) खुश, प्रसन्न, भरा-पूरा, परिपूर्ण।

४५३८. **शादी** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) विवाह, आनन्दोत्सव, पाणि-ग्रहण, परिणय।

४५३९. **शान** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) तड़क-भड़क, ठाठ-बाट, शक्ति, करामात, ऐश्वर्य, भडकीला, सुन्दर (संज्ञा पु०) (सं०) शाण, सान।

४५४०. **शाप** (संज्ञा पु०) (सं०) धिक्कार, भर्त्सना, सराप, अशुभ, दुरिष्ट, दुरुक्त, परिग्रह, फटकार, अभिशाप, आक्रोश, दुरालाप, अवग्रह, कुवाक्, श्राप, (अं०) कर्स।

४५४१. **शाम** (संज्ञा स्त्री०) (फा०) सांझ, संध्या, दिनक्षय, दिनादि, नेम, पूर्वी, प्रदोष, दिनशेष, दिनांत, दोषा, सायं, साँझ, (वि०) (सं०) शम-सम्बन्धी, शम का, (संज्ञा पु०) सामगान।

४५४२. **शामत** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) दुर्भाग्य, विपत्ति, दुर्दशा, बुराई, खराबी।

४५४३. **शायरी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) काव्य, कविता, पद्यमयी रचना।

४५४४. **शार** (वि०) (सं०) चितकबरा, पीला, (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हिंसा, (संज्ञा स्त्री०) कुश।

४५४५. शारद (वि०) (सं०) शरद्काल का, नवीन, नया, लज्जावान्, शरत्-सम्बन्धी, (संज्ञा पु०) (सं०) वर्ष, साल, बादल, मेघ, सफ़ेद कमल, मौलसिरी, कासतृण, हरी मूँग।

४५४६. शार्दूल (संज्ञा पु०) (सं०) बाघ, चीता, राक्षस, पक्षी-विशेष, व्याघ्र, चित्रक वृक्ष, (वि०) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

४५४७. शाल (संज्ञा पु०) (सं०) साखू, वृक्ष, पेड़, राल, घूना, काँटा, कील, मत्स्य-विशेष, वृक्ष-विशेष, पर्वत-विशेष, दुशाला।

४५४८. शाला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) घर, मकान, जगह, स्थान, गृह, आलय, शाखा, डाल।

४५४९. शालीन (वि०) (सं०) विनीत, नम्र, लज्जाशील, धनवान्, दक्ष, चतुर।

४५५०. शालु (संज्ञा पु०) (सं०) भसींड़, कषाय द्रव्य, मेंढक, एक फल।

४५५१. शाश्वत (वि०) (सं०) नित्य, (संज्ञा पु०) वेदव्यास, शिव, स्वर्ग, अन्तरिक्ष, (क्रि० वि०) लगातार, बराबर, सतत, सदैव, (अँ०) ऐटर्नल।

४५५२. शासक (संज्ञा पु०) (सं०) हाकिम, प्रशासक, शासनकर्त्ता, (अँ०) रूलर।

४५५३. शासन (संज्ञा पु०) (सं०) आज्ञा, आदेश, हुक्म, हुकूमत, (अँ०) गर्वनमेण्ट, दण्ड, सजा।

४५५४. शास्ता (संज्ञा पु०) (सं०) शासक, राजा, पिता, गुरु।

४५५५. शाह (संज्ञा पु०) (फ़ा०) महाराज, बादशाह, मुसलमान फ़कीर, स्वामी, प्रभु, (वि०) बड़ा, महान्।

४५५६. शिकस्त (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) पराजय, हार, टूटना, विफलता, असिद्धि।

४५५७. शिकार (संज्ञा पु०) (फ़ा०) आखेट, मृगया, गोश्त, माँस, आहार, खाद्य, खेट, अहेर, हेर, आछोटक।

४५५८. शिक्षक (संज्ञा पु०) (सं०) गुरु, उस्ताद, अध्यापक, विद्यादाता, सिखाने वाला, (अँ०) मास्टर, टीचर।

४५५९. **शिक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) तालीम, उपदेश, नसीहत, पाठ, सबक, परामर्श, सलाह, शासन, दबाव, सीख, सिखाई, उपदेश ।

४५६०. **शिखंडी, शिखण्डी** (संज्ञा पु०) (सं०) स्वर्ण, यूथिका, घुँघची, गुंजा, मोर, मुर्गा, वाण, विष्णु, शिव, श्रीकृष्ण, वृहस्पति ।

४५६१. **शिखर** (संज्ञा पु०) (सं०) सिरा, चोटी, कलश, कँगूरा, मंडप, गुंबद, शिखा, शृङ्ग, पहाड़ ।

४५६२. **शिखरिणी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) रसाल, नारी-रत्न, रोमावली, मल्लिका, किशमिश, मूर्वा, मरोड़फली ।

४५६३. **शिखरी** (संज्ञा पु०) (हिं०) पर्वत, पहाड़ी, दुर्ग, वृक्ष, अपा-मार्ग, बन्दाक, लोवान, काकड़ासिंगी, ज्वार, मक्का ।

४५६४. **शिखा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चोटी, चुटिया, कलगी, लपट, लौ, प्रकाश-किरण, नुकीला छोर, नोक, दामन, डाली, शाखा, पैर का सिरा, पेड़ की जड़, जटामासी, कलियारी विष, ज्वाला ।

४५६५. **शिखि** (संज्ञा पु०) (सं०) मोर, मयूरी, अग्नि, कामदेव ।

४५६६. **शिखी** (वि०) (सं०) शिखा-विशिष्ट, शिखायुक्त, (संज्ञा पु०) मोर, मयूर, मुर्गा, सारस-विशेष, बैल, घोड़ा, अग्नि, चित्रकवृक्ष, दीपक, पुच्छल तारा, पित्त, मेथी, बाण, तीर, सतावर, ब्राह्मण, वृक्ष, पर्वत, जटाधारी साधु, इन्द्र, बगुला, अपामार्ग, चिचड़ा, विष-विशेष ।

४५६७. **शिगूफ़ा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) कली, फूल, चुटकुला ।

४५६८. **शित** (वि०) (सं०) कृश, दुर्वल, नुकीला, पतला, धारदार ।

४५६९. **शिताबी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) शीघ्रता, जल्दी, तेज़ी, हड़बड़ी ।

४५७०. **शिति** (वि०) (सं०) श्वेत, सफ़ेद, काला, कृष्ण, (संज्ञा पु०) भोजपत्र ।

४५७१. **शिथिल** (वि०) (सं०) सुस्त, धीमा, ढीला, आज्ञा, विधान, कमज़ोर, दुबल, आलसी, मन्द ।

४५७२. **शिर** (वि०) (सं०) सिर, माथा, भाल, कपाल, सिरा, चोटी, शिखर, मुखिया, पिप्पलीमूल, शय्या, बिस्तर, अजगर ।

४५७३. **शिरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाड़ी, नस, धमनी ।

४५७४. **शिला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पाषाण, पत्थर, सिल, चट्टान, मनःशिला, कपूर, शिलाजीत, गेरू, हरीतकी, गोरोचन, दूब, उंछवृत्ति ।

४५७५. **शिली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) देहलीज़, केंचुआ, बाण, भोजपत्र, भाला, मेंढक ।

४५७६. **शिल्पी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) राज, थवई, चित्रकार, कारीगर, (अँ०) टेकनीशियन ।

४५७७. **शिव** (संज्ञा पु०) (सं०) मंगल, कल्याण, मोक्ष, रुद्र, परमेश्वर, जल, पानी, सेंधा नमक, फिटकरी, सुहागा, चाँदी, चंदन, लोहा, मिर्च, पारा, वेद, खूँटा, गुग्गुल, पुंडरीक वृक्ष, शुभग्रह, लिंग, नीलकण्ठ पक्षी, कौआ, मौलसिरी, विष्कम्भ, महादेव, महेश ।

४५७८. **शिवा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, मोक्ष, हड़, हरीतकी, सफ़ेद कीकर, आँवला, हल्दी, धव, अनन्तःमूल, शृगाली, दूब, गोरोचन ।

४५७९. **शिविर** (संज्ञा पु०) (सं०) पड़ाव, कैंप, डेरा, खेमा, दुर्ग, किला, कोट, छावनी, सेना, सन्निवेश ।

४५८०. **शिशिर** (संज्ञा पु०) (सं०) जाड़ा, शीतकाल, हिम, विष्णु, सूर्य, एक अस्त्र, लाल चन्दन, ऋतु-विशेष, पाला, सर्दी, (वि०) शीतल, ठंडा ।

४५८१. **शिशु** (संज्ञा पु०) (सं०) बालक, बाल, बच्चा ।

४५८२. **शिष्ट** (वि०) (सं०) भला आदमी, सभ्य, धर्मशील, धीर, शांत, श्रेष्ठ, उत्तम, आज्ञाकारी, सदाचारी, प्रतिष्ठित, भलामानस ।

४५८३. **शिष्टता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सभ्यता, भलमनसाहत, उत्तमत्ता, श्रेष्ठता, सदाचार, भलमनसी ।

४५८४. **शिष्टाचार** (संज्ञा पु०) (सं०) सभ्य आचरण, उत्तम व्यवहार, आवभगत, विनय, नम्रता, सत्कार ।

४५८५. **शीघ्र** (क्रि० वि०) (सं०) चटपट, झटपट, जल्द, फौरन, त्वरित, तुरत, द्रुत, तुरन्त, जल्दी, (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, लभज तृण, चक्रांग ।

४५८६. **शीत** (वि०) (सं०) ठंडा, शीतल, शिथिल, सुस्त, सर्द, आलसी (संज्ञा पु०) जाड़ा, सर्दी, जुकाम, जल, पानी, ओस, तुषार, दालचीनी, बेंत, लिसोड़ा, नीम, कपूर, पित्तपापड़ा ।

४५८७. **शीतक** (संज्ञा पु०) (सं०) बिच्छू, बनसनई, सुस्त, आलसी, सन्तोषी पुरुष ।

४५८८. **शीतफल** (संज्ञा पु०) (सं०) गूलर, पीलू, अखरोट, आँवला, लिसोड़ा ।

४५८९. **शीतल** (वि०) (सं०) ठण्डा, सर्द, क्षोभ-रहित, उद्वेग-रहित, शांत, प्रसन्न, सन्तुष्ट, (संज्ञा पु०) (सं०) उशार, खास, छरीला, कसीस, चन्दन, मोती, बनसनई, लिसोड़ा, चम्पा, राल, पीत चन्दन, पदुमकाठ, हिम, बर्फ़, भीमसेनी कपूर, शालवृक्ष, चन्द्रमा, मटर ।

४५९०. **शीतवीर्य** (संज्ञा पु०) (सं०) पदुमकाठ, पाषाणभेद, पित्तपापड़ा, पाकड़, नीली दूब, बच, बचा, (वि०) ठंडी तासीर वाला ।

४५९१. **शीर** (वि०) (सं०) नुकीला, तेज़, (संज्ञा पु०) अजगर, (संज्ञा पु०) (फ़ा०) क्षीर, दूध ।

४५९२. **शीर्ण** (वि०) (सं०) छितराया हुआ, गिरा हुआ, च्युत, जीर्ण, फटा-पुराना, दुबला, पतला, मुरझाया हुआ, प्राचीन, बिल्कुल निकम्मा ।

४५९३. **शीर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) सिर, कपाल, माथा, मस्तक, सिरा, चोटी, हेड़, काला अगर, सीसा ।

४५९४. **शील** (संज्ञा पु०) (सं०) मिजाज, चाल-ढाल, सद्वृत्ति, संकोच, मुरौवत, कोमल हृदय, कृतिवान्, उत्तम स्वभाव, लज्जा, (अं०) डिस्पोजीशन, (वि०) (सं०) तत्पर, प्रवृत्त ।

४५९५. **शुंडा, शुण्डा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सूँड़, मदिरा, वेश्या, कुटनी ।

४५९६. शुक (संज्ञा पु०) (सं०) सुग्गा, तोता, मोनापाठा, लोधवृक्ष, पतालीश पत्र, भरभण्डा, वस्त्र, पगड़ी, शुकदेव, पक्षी-विशेष।

४५९७. शुक्ल (वि०) (सं०) उजला, सफ़ेद, शुक्ल पक्ष, सुदी, एक नेत्र-रोग, सफ़ेद लोध, मक्खन, चाँदी, रजत, योग, विष्णु, श्वेत वर्ण, धौला।

४५९८. शुक्ला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सरस्वती, शक्कर, चीनी, काकोली, विदारी, शूकर कन्द, शेफालिका।

४५९९. शुचि (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, चित्रकवृक्ष, गरमी, ग्रीष्म, ज्येष्ठ मास, आषाढ़ मास, चन्द्रमा, शुक, ब्राह्मण, कार्त्तिकेय, श्वेत वर्ण, शुक्र, पवित्र, (संज्ञा स्त्री०) शुचि, पवित्रता, शुद्धता, (वि०) शुद्ध, स्वच्छ, साफ़, निर्दोष।

४६००. शुद्ध (वि०) (सं०) पवित्र, स्वच्छ, साफ़, ठीक, खालिस, बेऐब, (संज्ञा पु०) (सं०) सेंधा नमक, काली मिर्च, रूपा, चाँदी।

४६०१. शुद्धता (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पवित्रता, स्वच्छता, निर्दोषता।

४६०२. शुद्धि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्वच्छता, सफ़ाई, दुर्गा, पवित्रता, शोधन, शुचिता।

४६०३. शुभ (वि०) (सं०) अच्छा, भला, कल्याणकारी, मङ्गलप्रद, (संज्ञा पु०) मङ्गल, कल्याण, भलाई, पदमकाठ, चाँदी, बकरा।

४६०४. शुभा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शोभा, कांति, चमक, देवसभा, इच्छा, वंशलोचन, गोरोचन, सफ़ेद कीकर, बकरी, अरारोट, सोआ, सफ़ेद बच, असवरग।

४६०५. शुभ्र (वि०) (सं०) श्वेत, सफ़ेद, उजला, स्वच्छ, विशद।

४६०६. शुल्क (संज्ञा पु०) (सं०) आयात-निर्यात, ड्यूटी, किराया, भाड़ा, फीस, चुङ्गी।

४६०७. शुश्रूषा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सेवा, टहल, खुशामद, कथन, कहने की इच्छा।

४६०८. शुष्क (वि०) (सं०) सूखा, खुश्क, नीरस, रसहीन, स्नेह-रहित, हृदयहीन, निरर्थक, व्यर्थ, निर्मोही (संज्ञा पु०) काला अगर।

४६०९. शुष्मा (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, तेज, पराक्रम, चित्रक, चीता।

४६१०. शूक (संज्ञा पु०) (सं०) यव, जौ, (अँ०) आलपिन, पिन ।

४६११. शूकरी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सूअरी, वाराह कांता, वाराही कन्द, विधारा ।

४६१२. शून्य (संज्ञा पु०) (सं०) खाली जगह, आकाश, एकान्त स्थान, विंदु, विंदी, अभाव, राहित्य, विष्णु, स्वर्ग, ईश्वर, (अँ०) वैकुम, (वि०) (सं०) खाली, निराकार, असत्, विहीन, रहित ।

४६१३. शूर (संज्ञा पु०) (सं०) वीर, वहादुर, योद्धा, सूरमा, सूर्य, सिंह, सूअर, चीता, शाल वृक्ष, बड़हर, मसूर, चित्रकवृक्ष, आक, मदार, (वि०) उत्साही, बलवान् ।

४६१४. शूल (संज्ञा पु०) (सं०) पीड़ा, दर्द, सूली, मृत्यु, मौत, झण्डा, पताका, अस्त्र-विशेष ।

४६१५. शूला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वेश्या, सलाख, सीख, छड़, सूली ।

४६१६. शृंखला, शृङ्खला (संज्ञा स्त्री०) (सं०) क्रम, सिलसिला, जंजीर, सिकड़ी, साँकल, श्रेणी, कतार, कटिवस्त्र, मेखला करधनी ।

४६१७. शृंग, शृङ्ग (संज्ञा पु०) (सं०) शिखर, कँगूरा, कमल, जीवक औषध, सोंठ, अदरक, सींग, विषाण, अगर, प्रभुत्व, कामोत्तेजना, चिह्न, स्तन, छाती, (वि०) तीक्ष्ण, तेज़ ।

४६१८. शृंगार, शृङ्गार (संज्ञा पु०) (सं०) सजावट, लौंग, अदरक, सेंदूर, चूरन, चूर्ण, काला अगर, सोना, रति, मैथुन, रस-विशेष, प्रथम रस ।

४६१९. शृंगिणी, शृङ्गिणी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गाय, गौ, मल्लिका, मोतिया, मालकंगनी, लता, अतीस ।

४६२०. शृंगी, शृङ्गी (संज्ञा पु०) (सं०) हाथी, वृक्ष, पर्वत, सींगवाला पशु, सींग से बना बाजा, शिव, महादेव, बरगद, पाकड़, अमड़ा, सींगिया विष, सींग वाला, शृङ्ग-विशिष्ट, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अतीस, काकड़ासिंगी, मजीठ, आँवला, विष, ज़हर ।

४६२१. शृगाल (संज्ञा पु०) (सं०) गीदड़, सियार, वासुदेव, सियाल, (वि०) भीरु, डरपोक, निष्ठुर, निर्दय, खल, दुष्ट ।

४६२२. **शेख** (संज्ञा पु०) (अ०) आचार्य, वीर, बड़ा-बूढ़ा ।

४६२३. **शेखर** (संज्ञा पु०) (सं०) शीर्ष, सिर, मुकुट, किरीट, शिखर, भूषण-विशेष, सिर, मस्तक, कपाल ।

४६२४. **शेखी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) गर्व, घमंड, ऐंठ, शान, अकड़, अभिमान ।

४६२५. **शेर** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) साहसी व्यक्ति, बाघ, नाहर, सिंह, पंचानन, केहरि, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र, पंचशिख, कर्वर, करिदारक, केशी, दीप्त, नखायुध, चित्रक, पशुनाथ, नागरिपु, पशुराज, पारीन्द्र, पुण्डरीक, जटिल, बनपति, वनराज, हरि, गजारि, पिंगल, सिंघ, सुकेसर, हरित, हिसारु ।

४६२६. **शेव** (संज्ञा पु०) (सं०) ऊँचाई, उन्नति, धन, दौलत, शिश्न, लिंग, मछली, सर्प, (अँ०) हजामत ।

४६२७. **शेष** (संज्ञा पु०) (सं०) बाकी, समाप्ति, अन्त, शेषनाग, लक्ष्मण, परिणाम, फल, स्मारक वस्तु, मरण, नाश, बलराम, परमेश्वर, एक दिग्गज, हाथी, जमालगोटा, अवशिष्ट, बचा हुआ, सीमा ।

४६२८. **शैतान** (संज्ञा पु०) (अ०) भूत, प्रेत, दुष्ट, पाजी, असुर, एक तमोगुणी देवता (ईसाई व इस्लाम धर्म में) ।

४६२९. **शैल** (वि०) (सं०) शिला-सम्बन्धी, पथरीला, कड़ा, कठोर, (संज्ञा पु०) पर्वत, चट्टान, छरीला, रसौत, शिलाजीत, लिसोड़ा ।

४६३०. **शैलजा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पार्वती, गजपिप्पली, सिंह-पिप्पली, पाषाणभेद ।

४६३१. **शैली** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चाल, ढब, ढंग, प्रणाली, तर्ज़, रीति, प्रथा, रिवाज, भाँति, प्रकार ।

४६३२. **शैलेय** (वि०) (सं०) पथरीला, पहाड़ी, (संज्ञा पु०) (सं०) छरीला, शिलाजीत, तालपर्णी, सेंधा नमक, सिंह, भ्रमर ।

४६३३. **शैव** (वि०) (सं०) शिव-सम्बन्धी, शिव का, संज्ञा (पु०) (सं०) धतूरा, अड़ूसा, वासुदेव, पाशुपत-अस्त्र, शिवभक्त, शिवोपासक ।

४६३४. **शैशव** (वि०) (सं०) शिशु-सम्बन्धी, (संज्ञा पु०) बचपन, लड़कपन, बाल्यावस्था, बालकपन, शिशुता ।

४६३५. **शोक** (संज्ञा पु०) (सं०) सोग, शोच, चिन्ता, दुःख, खेद, पश्चात्ताप, पछतावा, अफ़सोस ।

४६३६. **शोख़** (वि०) (फ़ा०) धृष्ट, ढीठ, नटखट, पाजी, चपल, चंचल, चुलबुला, गहरा, चमकदार (रंग), अभिमानी ।

४६३७. **शोख़ी** (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) धृष्टता, ढिठाई, नटखटपन, चंचलता, चुलबुलापन, चमकीलापन, तेज़ी, अभिमान ।

४६३८. **शोच** (संज्ञा पु०) (हिं०) दुःख, अफ़सोस, चिंता, खटका, विचार ।

४६३९. **शोण** (संज्ञा पु०) (सं०) लाल रङ्ग, लाली, अरुणता, अग्नि, रक्त, लहू, पद्मराग मणि, लाल गदहपूरना, सोनापाठा, लाल गन्ना, अतसी, नद-विशेष ।

४६४०. **शोणित** (वि०) (सं०) लाल, सुर्ख़, (संज्ञा पु०) लोहू, रुधिर, रक्त, केसर, ईंगुर, ताँबा, तृणकेशर ।

४६४१. **शोध** (संज्ञा पु०) (सं०) दुरुस्ती, जाँच, परीक्षा, खोज, तलाश, अनुसन्धान, शुद्धि, बदला ।

४६४२. **शोधन** (संज्ञा पु०) (सं०) शुद्ध करना, ठीक करना, सुधारना, छानबीन, जाँच, तलाश करना, ढूँढ़ना, ऋण चुकाना, (अँ०) पेमेण्ट, प्रायश्चित्त, सज़ा, साफ़ करना, विरेचन, मुरदासङ्ग, मल, विष्ठा, हीराकसीस, नींबू, स्वच्छ करना, निर्मल करना ।

४६४३. **शोभन** (वि०) (सं०) सुन्दर, सजीला, सुहावना, रमणीय, उत्तम, श्रेष्ठ, उचित, उपयुक्त, शुभ, मंगलदायक, अच्छा, भला, (संज्ञा पु०) (सं०) अग्नि, शिव, दृष्टियोग, कमल, राँगा, आभूषण, धर्म, पुण्य, सौन्दर्य, सिंदूर, कंकुष्ठ ।

४६४४. **शोभा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) कांति, चमक, छवि, सुन्दरता, सजावट, उत्तम गुण, वर्ण, रंग, हल्दी, गोरोचन, दीप्ति, मनोहरता ।

४६४५. **शोषण** (संज्ञा पु०) (सं०) सोखना, मुखाना, नाश करना, सोंठ, सोनापाठा, पिप्पली, चूसना, मुखाव ।

४६४६. **शोहदा** (संज्ञा पु०) (अ०) लुच्चा, बदमाश, गुण्डा, लम्पट, व्यभिचारी, छैलचिकनिया, विलासी, छैला ।

४६४७. **शौक़** (संज्ञा पु०) (अ०) व्यसन, लालसा, चसका, प्रवृत्ति, झुकाव।

४६४८. **श्याम** (संज्ञा पु०) (सं०) श्रीकृष्ण, साँया धान्य, सेंधा नमक, धतूरा, विधारा, बादल, दमनक, एक गंधतृण, काली मिर्च, पीलू वृक्ष, कोयल, (वि०) साँवला, काला, कृष्णवर्ण ।

४६४९. **श्यामल** (वि०) (सं०) काला, साँवला, कृष्णवर्ण, (संज्ञा पु०) पीपल, सिरिस ।

४६५०. **श्यामला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पार्वती, असगन्ध, जामुन, कटभी, कस्तूरी ।

४६५१. **श्यामा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) राधा, राधिका, यमुना नदी, रात्रि, रात, स्त्री, कबूतरी, काली, निसीथ, प्रियंगु, बकुची, नील, गूगल, सोमलता, भद्रमोथा, गिलोय, बंझा, कस्तूरी, पाषाणभेदी, पिप्पली, हल्दी, हरी दूब, तुलसी, क्षुप, कमलगट्टा, विधारा, शीशम, साँवाँ अन्न, काला, गदहपूरना, गोलोचन, लता-कस्तूरी, मेढ़ासिंगी, हरीतकी, छाया, कालिका देवी, युवती, पक्षी-विशेष ।

४६५२. **श्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) परिश्रम, मेहनत, थकावट, क्लान्ति, दौड़धूप, उद्योग, क्लेश, दुःख, व्यायाम, चिकित्सा, खेद, तप, प्रयास ।

४६५३. **श्रवण** (संज्ञा पु०) (सं०) कान, कर्ण, सुना, कर्णेन्द्रिय ।

४६५४. **श्रवना** (क्रि० सं०) (हिं०) बहना, चूना, टपकना, रसना, गिरना, बहना ।

४६५५. **श्रांत, श्रान्त** (वि०) (सं०) थका हुआ, शान्त, दुखी, खिन्न, निवृत्त, जितेन्द्रिय, श्रमित, थकित ।

४६५६. **श्रावक** (संज्ञा पु०) (सं०) भिक्षु, नास्तिक, काक, शिष्य, छात्र, जैन गृहस्थ, सरावगी ।

४६५७. श्रावण (संज्ञा पु०) (सं०) शब्द, आवाज़, पाखण्ड, मास-विशेष, पाँचवाँ महीना।

४६५८. श्री (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, कमला, सरस्वती, धन, सम्पत्ति, विभूति, ऐश्वर्य, वन, शोभा, छटा, कांति, चमक, चन्दन, उपकरण, अधिकार, सिद्धि, वृद्धि, लौंग, लवंग, बिल्ववृक्ष, विभव, द्युति, इन्दिरा, विष्णु-पत्नी, रोरी, कुंकुम, वाणी।

४६५९. श्रीपति (संज्ञा पु०) (सं०) विष्णु, रामचन्द्र, कृष्ण, लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान्, नृप, राजा।

४६६०. श्रीफल (संज्ञा पु०) (सं०) बेल, नारियल, आँवला, धन, द्रव्य, बिल्वफल, नारिकेल।

४६६१. श्रीमत् (संज्ञा पु०) (सं०) तिलपुष्प, अश्वत्थवृक्ष, पीपल, विष्णु, शिव, कुबेर।

४६६२. श्रीमती (संज्ञा स्त्री०) (सं०) लक्ष्मी, राधा, मुंडी, मुंडिका।

४६६३. श्रीमान (संज्ञा पु०) (सं०) धनवान्, सम्पन्न, अमीर, श्रीयुत्, शिव, विष्णु, कुबेर, पीपल, अश्वत्थ वृक्ष, तिलपुष्पी, हल्दी।

४६६४. श्रुति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सुनना, श्रवण करना, कान, नाम, अभिधान, विद्या, विद्वत्ता, कर्ण, वेद।

४६६५. श्रेणी (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पंक्ति, अवली, पाँति, क्रम, शृंखला, परम्परा, दरजा, सीढ़ी, लकीर, कतार, (अँ०) क्लास।

४६६६. श्रेय (वि०) (हिं०) अधिक, अच्छा, बेहतर, श्रेष्ठ, उत्तम, शुभ, कल्याणकारी, (संज्ञा पु०) (सं०) अच्छापन, कल्याण, सदाचार।

४६६७. श्रेष्ठ (वि०) (सं०) सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान, पूज्य, वृद्ध, ज्येष्ठ, कल्याण-भाजन, बड़ा, माननीय, (संज्ञा पु०) कुबेर, विष्णु, द्विज, ब्राह्मण।

४६६८. श्लथ (वि०) (सं०) शिथिल, ढीला, मन्द, धीमा, दुर्बल, कमज़ोर, छुटा हुआ।

४६६९. श्लाघा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रशंसा, तारीफ़, स्तुति, बड़ाई, खुशामद, चापलूसी, चाह, इच्छा, आज्ञा-पालन, प्रस्तुत।

४६७०. **श्लील** (वि०) (सं०) उत्तम, बढ़िया, शुभ, सभ्योचित ।

४६७१. **श्लेष** (संज्ञा पु०) (सं०) संयोग, मिलना, जुड़ना, भेंटना, आलिंगन, अलंकार-विशेष ।

४६७२. **श्लोक** (संज्ञा पु०) (सं०) शब्द, ध्वनि, पुकार, आह्वान, स्तुति, प्रशंसा, नाम-कीर्ति, अनुष्टुपछन्द, कीर्ति, यश, कीर्तिगान, पद्य, छन्द, छन्द-विशेष ।

४६७३. **श्वान** (संज्ञा पु०) (सं०) कुत्ता, कुक्कुर ।

४६७४. **श्वेत** (वि०) (सं०) सफ़ेद, धौला, चिट्टा, शुभ्र, उज्ज्वल, साफ़, गोरा, निष्कलंक, (संज्ञा पु०) सफ़ेद रंग, चाँदी, रूपा, कौड़ी, शंख, सफ़ेद जीरा, सफ़ेद घोड़ा, श्वेत वराह, सफ़ेद बादल, शुक्रग्रह ।

४६७५. **श्वेतपुष्पा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नागपुष्पी, तरोई, सन, सम्भालु, सफ़ेद अपराजिता, नागदंती ।

४६७६. **श्वेता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) दूब, घास, तृण, कौड़ी, काष्ठपाटल, अतीस, अपराजिता लता, सफ़ेद बनभंटा, भटकटैया, पाषाणभेद, वंशलोचन, श्वेत पुनर्नवा, शिलावाक, फिटकरी, मिस्री, शक्कर, चीनी, पर्व-मूला, सफ़ेद वच ।

(ष)

४६७७. **षंड, षण्ड** (संज्ञा पु०) (सं०) राशि, समूह, झाड़ी, साँड़, नपुंसक, हीजड़ा, कमल-समूह, शिव, बैल ।

४६७८. **षट्पदी** (वि०) (सं०) भ्रमरी, भौंरी, छप्पयछन्द ।

४६७९. **षड्ऋतु** (संज्ञा पु०) (सं०) बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर ।

४६८०. **षट्राग** (संज्ञा पु०) (सं०) बखेड़ा, जंजाल, झंझट ।

४६८१. **षष्टिक** (वि०) (सं०) साठवाला, (संज्ञा पु०) (सं०) साठीधान ।

(स)

४६८२. **संकट** (संज्ञा पु०) (हिं०) विपत्ति, आफ़त, दुःख, कष्ट, (वि०) (हि०) घनीभूत, तंग, दुर्लंघ्य, भयानक, दुःखदायी, संकरा, संकीर्ण ।

४६८३. **सँकरा** (वि०) (हि०) तंग, (संज्ञा स्त्री०) शृंखला, साँकल, ज़ंजीर ।

४६८४. **संकर्षण** (संज्ञा पु०) (सं०) खींचना, हल जोतना, बलराम ।

४६८५. **संकलन** (संज्ञा पु०) (सं०) संग्रह करना, जमा करना, संग्रह, ढेर ।

४६८६. **संकल्प** (संज्ञा पु०) (सं०) विचार, इरादा, दृढ़ निश्चय, इच्छा, चाह, मानसिक कर्म, अभिलाष, (अँ०) रिज़ोल्यूशन ।

४६८७. **संकीर्ण** (वि०) (सं०) कम चौड़ा, संकर, क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, घन, सघन, निबिड़, सकरा ।

४६८८. **संकुल** (वि०) (सं०) संकीर्ण, तङ्ग, भरा हुआ, परिपूर्ण, भीड़, (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, लड़ाई, झुंड, समूह, असंगत वाक्य ।

४६८९. **संकोच** (संज्ञा पु०) (सं०) आगा-पीछा, हिचक, कमी, भय, केसर, सहम, लाज, लज्जा, सिमट ।

४६९०. **संक्षिप्त** (वि०) (सं०) खुलासा, थोड़ा, अल्प ।

४६९१. **संक्षेप** (संज्ञा पु०) (सं०) सार, समाहार, समास, चुम्बक ।

४६९२. **संग** (संज्ञा पु०) (हि०) मिलना, मिलन, साथ रहना, सहवास, सोहबत, आसक्ति, साथ, संयोग, मेल ।

४६९३. **संगति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मेल, मिलाप, संग, साथ, सम्बन्ध, प्रसंग, मैथुन, ताल्लुक, ज्ञान, मैत्री, दोस्ती ।

४६९४. **संगम, सङ्गम** (संज्ञा पु०) (सं०) मेल, मिलाप, सम्मेलन, संग, साथ, सोहबत, मैथुन ।

४६९५. **संगर, सङ्गर** (संज्ञा पु०) (सं०) युद्ध, संग्राम, विपत्ति, नियम, लड़ाई, समर ।

४६९६. **संगीन** (संज्ञा पु०) (वि०) मोटा, भारी, विकट, पेचीदा।

४६९७. **संग्रह** (संज्ञा पु०) (सं०) जमा करना, संकलन, संचय, ग्रहण करना, सूची, सोमयाग, संयम, निग्रह, रक्षा, कब्ज़, शिव, विवाह, जमघट, सभा।

४६९८. **संघट, सङ्घट** (संज्ञा पु०) (सं०) संघटन, मिलन, युद्ध, लड़ाई, झगड़ा, समूह, ढेर।

४६९९. **संघर्ष, सङ्घर्ष** (संज्ञा पु०) (सं०) रगड़ खाना, रगड़, घिस्सा, प्रतियोगिता, होड़, देखा-देखी, स्पर्द्धा, ईर्ष्या।

४७००. **संघात, सङ्घात** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, झुंड, निवास-स्थान, गहरी, भारी चोट, मार डालना, वध, शरीर, (वि०) घना, सघन, निबिड़।

४७०१. **संचर, सञ्चर** (संज्ञा पु०) (सं०) चलना, पुल, सेतु, पथ, मार्ग, स्थान, जगह, शरीर, देह, साथी।

४७०२. **संचार, सञ्चार** (संज्ञा पु०) (सं०) चलना, गमन, फैलना, कष्ट, विपत्ति, मार्ग-प्रदर्शन, उत्तेजन, भ्रमण, पर्यटन, (अं०) कम्यूनिकेशन।

४७०३. **संचालक, सञ्चालक** (संज्ञा पु०) (सं०) परिचालक।

४६०४. **संजीदा** (वि०) (फ़ा०) शांत, गंभीर, समझदार, बुद्धिमान्।

४७०५. **संज्ञा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चेतन, होश, बुद्धि, अक्ल, ज्ञान, नाम, आख्या, संकेत, इशारा, गायत्री।

४७०६. **संत, सन्त** (संज्ञा पु०) (हि०) साधु, संन्यासी, महात्मा, धर्मात्मा, ईश्वर-भक्त, सज्जन, धर्मी।

४७०७. **संतति** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) बाल-बच्चे, औलाद, प्रजा, गोत्र, विस्तार, दल, झुंड, अपत्य, लड़के-बाले।

४७०८. **संतप्त, सन्तप्त** (वि०) (सं०) जला हुआ, दग्ध, दुःखी, पीड़ित, मलीनमन, श्रांत, थका हुआ।

४७०९. **संतान, सन्तान** (संज्ञा पु०) (सं०) बाल-बच्चे, सन्तति, वंश, कल्पवृक्ष, विस्तार, फैलाव, सन्तति।

४७१०. **संताप, सन्ताप** (संज्ञा पु०) (सं०) ताप, जलन, आँच, मानसिक कष्ट, दुःख, मनोव्यथा, ज्वर, शत्रु, दुश्मन, शोक, पीड़ा ।

४७११. **संदर्भ, सन्दर्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) रचना, निबन्ध, लेख, प्रकरण, प्रसंग, प्रबन्ध ।

४७१२. **संदिग्ध, सन्दिग्ध** (वि०) (सं०) सन्देहपूर्ण, संशयान्वित, भ्रमयुक्त ।

४७१३. **सन्देह, सन्देह** (संज्ञा पु०) (सं०) शंका, भ्रम, दुविधा, संशय ।

४७१४. **संधान, सन्धान** (संज्ञा पु०) (सं०) संयुक्त करना, मिलाना, मदिरा, शराब, सन्धि, आचार, (अँ०) एडजस्टमेंट ।

४७१५. **संधि, सन्धि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मेल, संयोग, सुलह, अवकाश, भग, भेद, साधन, (अँ०) ट्रीटी ।

४७१६. **संध्या, सन्ध्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सायंकाल, शाम, युगसन्धि, सीमा, हद, सन्धान, सन्ध्योपासन ।

४७१७. **संपत्ति, सम्पत्ति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) धन, दौलत, ऐश्वर्य, वैभव, समृद्धि, सुभाग, सम्पदा, प्राप्ति, लाभ, अधिकता ।

४७१८. **संपद्, सम्पद्** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सिद्धि, पूर्णता, ऐश्वर्य, वैभव, सौभाग्य, प्राप्ति, लाभ, अधिकता, मोतियों का हार ।

४७१९. **संपर्क, सम्पर्क** (संज्ञा पु०) (सं०) लगाव, सम्बन्ध, वास्ता, स्पर्श, घटना, मिश्रण, मिलावट, योग, जोड़ ।

४७२०. **संपुट, सम्पुट** (संज्ञा पु०) (सं०) खप्पर, ठीकरा, डिब्बा, दोना, अंजली, कोश, कटसरैया ।

४७२१. **संपूर्ण, सम्पूर्ण** (वि०) (सं०) समस्त, पूरा, समाप्त, खत्म, सारा, समूचा, अखिल ।

४७२२. **संप्रदान, सम्प्रदान** (संज्ञा पु०) (सं०) दीक्षा, मन्त्रोपदेश, भेंट, नज़र ।

४७२३. **संप्रदाय, सम्प्रदाय** (संज्ञा पु०) (सं०) देने वाला, दाता, मार्ग पथ, परिपाटी, रीति, चाल, (अँ०) सेक्ट ।

४७२४. **संबंध, सम्बन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) जुड़ना-मिलना, लगाव, सम्पर्क, वास्ता, नाता, रिश्ता, गहरी मित्रता, (अँ०) कनेक्शन ।

४७२५. **संबंधक, सम्बन्धक** (वि०) (सं०) योग्य, उपयुक्त, (संज्ञा पु०) मित्र, दोस्त, नातेदार ।

४७२६. **संबद्ध, सम्बद्ध** (वि०) (सं०) सम्बन्धयुक्त, मिला हुआ, बंद, संयुक्त, सहित ।

४७२७. **संबाध, सम्बाध** (संज्ञा पु०) (सं०) बाधा, अड़चन, भीड़, संघर्ष, भग, योनि, कष्ट, पीड़ा, (वि०) संकीर्ण, तंग, जनपूर्ण, भरा, पूर्ण, संकुल ।

४७२८. **संबोधन, सम्बोधन** (संज्ञा पु०) (सं०) उठना, जगाना, पुकारना, समाधान करना, संमुखीकरण ।

४७२९. **संभव, सम्भव** (संज्ञा पु०) (सं०) उत्पत्ति, मेल, संयोग, सहवास, प्रसङ्ग, अँटना, हेतु, कारण, होना, उपयुक्तता, एक लोक, ध्वंस, नाश, युक्ति, उपाय, योग्यता, होनहार, भवितव्य, सम्भावना ।

४७३०. **सँभाल** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) रक्षा, हिफ़ाज़त, प्रबन्ध, इन्तज़ाम, सुधार ।

४७३१. **संभावना, सम्भावना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अनुमान, कल्पना, प्रतिष्ठा, मान, इज़्ज़त, दुबिधा, सन्देह, अनिश्चय ।

४७३२. **संभूत, सम्भूत** (वि०) (सं०) उत्पन्न, पैदा, युक्त, सहित ।

४७३३. **संभृत, सम्भृत** (वि०) (सं०) एकत्र, इकट्ठा, पूर्ण, भरा हुआ, युक्त, सहित, सम्मानित, प्रस्तुत, तैयार, निर्मित, बना हुआ ।

४७३४. **संभ्रम, सम्भ्रम** (संज्ञा पु०) (सं०) घूमना, चक्कर, फेरा, उतावली, घबराहट, व्याकुलता, हलचल, धूम, सिटपिटाना, मान, गौरव, आदर, सम्मान, भय, डर, त्रास ।

४७३५. **संभ्रान्त, सम्भ्रान्त** (वि० पु०) (सं०) सम्मानित, प्रतिष्ठित ।

४७३६. **संयत** वि०) (सं०) सम्बद्ध, अखण्डित, लगातार, (संज्ञा पु०) नियत स्थान, वादा, लड़ाई, करार, झगड़ा ।

४७३७. **संयत** (वि०) (सं०) बद्ध, बँधा हुआ, क्रमबद्ध, व्यवस्थित, विग्रही, (संज्ञा पु०) शिव, योगी ।

४७३८. **संयम** (संज्ञा पु०) (सं०) रोक, दाब, बाँधना, बन्धन, प्रयत्न, कोशिश, प्रलय ।

४७३९. **संयोग** (संज्ञा पु०) (सं०) मेल, मिलान, लगाव, सम्बन्ध, सहवास, मतैक्य ।

४७४०. **संलग्न** (वि०) (सं०) सटा हुआ, मिला हुआ, सम्बद्ध ।

४७४१. **संवर** (संज्ञा पु०) (सं०) दूर करना, इन्द्रिय-निग्रह, बाँध, पुल, चुनना, पसन्द करना, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) स्मरण, याद, वृत्तान्त, हाल ।

४७४२. **संवर्त्त** (संज्ञा पु०) (सं०) भिड़ना, घुमाव, चक्कर, टिकिया, पिंडी, मेघ, बादल, वर्ष, एक दिव्यास्त्र, बहेड़ा ।

४७४३. **संवाद** (संज्ञा पु०) (सं०) बातचीत, वार्त्तालाप, खबर, समाचार, विवरण, हाल, (अं०) रिपोर्ट, कथा, प्रसंग, नियति, नियुक्ति, सहमति, एक राय, स्वीकार, रजामंदी ।

४७४४. **सँवार** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हजामत, क्षौरकर्म, हाल, समाचार ।

४७४५. **संविद्** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चेतना, ज्ञानशक्ति, बोध, ज्ञान, समझ, बुद्धि, संवेदन, अनुभूति, वृत्तांत, हाल, नाम, संज्ञा, युद्ध, लड़ाई, सम्पत्ति, जायदाद, समझौता, युक्ति, उपाय, रीति, प्रथा, नाम, तोषण, तुष्टि, माँग ।

४७४६. **संविधान** (संज्ञा पु०) (सं०) व्यवस्था, रीति, रचना, अनुष्ठापन ।

४७४७. **संवीत** (वि०) (सं०) आवृत, ढका हुआ, पहने हुए, रुका हुआ, रुद्ध, अदृश्य, (संज्ञा पु०) पहनना, आच्छादन, सफेद कटभी ।

४७४८. **संवृत** (वि०) (सं०) ढका हुआ, आच्छादित, रक्षित, लपेटा हुआ, दबाया हुआ, रुँधा हुआ, (संज्ञा पु०) (सं०) वरुण देवता, गुप्त स्थान, एक बेंत ।

४७४९. **संवेदना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अनुभूत, सहानुभूति, अनुभव ।

४७५०. **संवेश** (संज्ञा पु०) (सं०) पहुँचना, प्रवेश, बैठना, लपेटना, सोना, काष्ठासन, पीढ़ा, अग्निदेवता ।

४७५१. **संश्लिष्ट** (वि०) (सं०) जुड़ा हुआ, सटा हुआ, मिश्रित, सम्मिलित, आलिंगन, (संज्ञा पु०) (सं०) राशि, ढेर, चँदोवा, मण्डप ।

४७५२. **संसर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) मिलन, मिलाप, संभोग, कामोपभोग, सङ्गति, साथ, इजमाल, परिचय, घनिष्ठता ।

४७५३. **संसार** (संज्ञा पु०) (सं०) जगत्, दुनिया, मर्त्यलोक, घर, आवागमन, मायाजाल, विट्खदिर ।

४७५४. **संसिद्ध** (वि०) (सं०) प्राप्त, चंगा, स्वस्थ, तैयार, उद्यत, कुशल, निपुण, मुक्त ।

४७५५. **संसिद्धि** (संज्ञा स्त्री०)(सं०) सफलता, स्वस्थता, पकना, सीझना, मोक्ष, मुक्ति, परिणाम, निसर्ग, प्रकृति, स्वभाव, आदत, मदमस्त स्त्री ।

४७५६. **संसृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) संसार, जगत्, आवागमन, भवचक्र ।

४७५७. **संसृष्ट** (वि०) (सं०) मिश्रित, संश्लिष्ट, संबद्ध, अंतर्गत, शामिल, वहुत परिचित, संगृहीत, (संज्ञा पु०) घनिष्ठता ।

४७५८. **संसृष्टि** (संज्ञा स्त्री०) मिश्रण, परस्पर सम्बन्ध, लगाव, हेलमेल, घनिष्ठता, संयोजन, रचना, संग्रह, एकत्र करना ।

४७५९. **संस्करण** (संज्ञा पु०) (सं०) ठीक करना, संस्कार करना, दुरुस्त करना, आवृत्ति, परिष्कृत करना, (अँ०) एडिशन ।

४७६०. **संस्कार** (संज्ञा पु०) (सं०) सुधार, दुरुस्ती, पूर्वजन्म, सभ्यता, (अँ०) कलचर ।

४७६१. **संस्कृत** (वि०)(सं०) परिमार्जित, पकाया हुआ, सँवारा हुआ ।

४७६२. **संस्कृति**, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) शुद्धि, सफ़ाई, सुधार, सभ्यता, संस्कार, (अँ०) कलचर ।

४७६३. **संस्था** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्थिति, व्यवस्था, बँधा नियम, विधि, मर्यादा, अभिव्यक्ति, प्रकाश, जत्था, गिरोह ।

४३६४. **संस्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) ठहराव, स्थिति, बैठाना, स्थापना, अस्तित्व, देश, (अँ०) एस्टेट, प्रबन्ध, व्यवस्था, रूप, आकृति, प्रकृति, स्वभाव, चौराहा, ढांचा, डौल, पड़ोस।

४३६५. **संस्थापक** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रवर्त्तक, संचालक।

४३६६. **संस्थिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) ठहराव, जमाव, दृढ़ता, धीरता, अस्तित्व, रूप, आकृति, व्यवस्था, गुण, प्रकृति, स्वभाव, समाप्ति, मृत्यु, मरण, कोष्ठबद्धता, राशि, ढेर।

४३६७. **संस्मरण** (संज्ञा पु०) (सं०) स्मरण, खूब याद, संस्कार-जन्य ज्ञान, स्मरणीय घटनाएँ, स्मरणीय घटनाओं का उल्लेख।

४३६८. **संहत** (वि०) (सं०) संयुक्त, सहित, कड़ा, सख्त, गठा हुआ, घना, दृढ़ांग, मजबूत, एकत्र, मिश्रित, मिला हुआ, आहत, घायल।

४३६९. **संहार** (संज्ञा पु०) (सं०) समेटना, इकट्ठा करना, संकोच, सिकुड़ना, गूँथना, नाश, ध्वंस, प्रलय, परिवार, रोक।

४३७०. **संहिता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मेल, मिलावट, (अँ०) कोड।

४३७१. **सकता** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्तब्धता, भौचक्कापन, मूर्च्छा रोग।

४३७२. **सकल** (वि०) (सं०) सब कुल, समस्त, सारा, (संज्ञा पु०) रोहिस घास, पशु।

४३७३. **सखा** (संज्ञा पु०) (हिं०) साथी, मित्र, सहयोगी, सहायक।

४३७४. **सखुन** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) बातचीत, कथन, उक्ति, कविता, काव्य, कौल, वचन।

४३७५. **सख्त** (वि०) (फ़ा०) कठोर, क्रूर, कड़ा, कठिन, मुश्किल।

४३७६. **सख्य** (संज्ञा पु०) (सं०) सखापन, मित्रता, दोस्ती।

४३७७. **सगरा** (वि०) (हिं०) सब, तमाम, कुल, (संज्ञा पु०) (हिं०) तालाब, झील।

४३७८. **सगाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) मँगनी, रिश्ता, संबंध, कुड़माई।

४३७९. **सघन** (वि०) (सं०) घना, अविरल, ठोस, ठस।

४७८०. **सचमुच** (अव्यय) (हिं०) वास्तव में, वस्तुतः, अवश्य, निश्चय ।

४७८१. **सचाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सत्यता, वास्तविकता, यथार्थता, औचित्य ।

४७८२. **सचिव** (संज्ञा पु०) (सं०) मित्र, दोस्त, सहायक मन्त्री, (अँ०) सेक्रेटरी ।

४७८३. **सचेतन** (वि०) (सं०) चैतन्य, चेतनायुक्त, सावधान, होशियार, ख़बरदार, चतुर, समझदार ।

४७८४. **सज** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) सजावट, बनावट, गढ़न, डौल, शोभा, सुन्दरता ।

४७८५. **सज्जन** (संज्ञा पु०) (हिं०) सज्जन, भला आदमी, शरीफ़, पति, स्वामी, प्रियतम ।

४७८६. **सज्जा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सजावट, वेश-भूषा, (हिं०) शय्या, शय्यादान, (वि०) दाहिना ।

४७८७. **सट्टा** (संज्ञा पु०) (देश०) इकरारनामा, खेला, हाट, बाज़ार, (अँ०) स्पेक्युलेशन ।

४७८८. **सत्** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्म, सार, निष्कर्ष, सारभाग, गूढ़ा, सत्य, (वि०) (सं०) सत्य, सज्जन, नित्य स्थायी, शुद्ध, पवित्र, श्रेष्ठ, पंडित, ज्ञानी, धीर ।

४७८९. **सत** (संज्ञा पु०) (हि०) सार, जीवनी शक्ति, निष्कर्ष, सार भाग, सत्य ।

४७९०. **सतत** (अव्यय) (सं०) सदा, हमेशा, निरंतर, लगातार ।

४७९१. **सतर** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) रेखा, लकीर, पंक्ति, कतार, अवली, ओट, आड़ ।

४७९२. **सतर्क** (वि०) (सं०) तर्क-सहित, युक्ति-सहित, सावधान, सचेत ।

४७९३. **सत्कार** (संज्ञा पु०) (सं०) ख़ातिरदारी, आतिथ्य, मेहमान-दारी, आदर, सम्मान, सेवा, स्वागत ।

४७९४. **सत्ता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अस्तित्व, शक्ति, सामर्थ्य, बल, पराक्रम, विद्यमानता, (अँ०) पावर ।

४७९५. **सत्य** (वि०) (सं०) यथार्थ, ठीक, सही, असल, वास्तविक, सच्चा, निश्चय, सही, वाजिबी, पीपल का पेड़, विष्णु, रामचन्द्र, शपथ, कसम ।

४७९६. **सत्र** (संज्ञा पु०) (सं०) यज्ञ, घर, तालाब, जंगल, धोखा, परिवेषण, गोपन ।

४७९७. **सत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) सत्ता, अस्तित्व, सार, तत्व, आत्मतत्व, चैतन्य, गर्भ, भूत, प्रेत, दृढ़ता, धीरता, साहस, प्राणी, जीवधारी, प्राण, सद्‌गुण, उद्यम, हृदय, प्रकृति, भलाई ।

४७९८. **सद** (अव्यय) (हिं०) तुरंत, तत्क्षण, तत्काल, उसी समय, श्रेष्ठ, उत्तम, (वि०) (हिं०) ताज़ा, नया, नवीन, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) प्रकृति, आदत ।

४७९९. **सदका** (संज्ञा पु०) (अ०) दान, खैरात, निछावर, उतारा, उतारन ।

४८००. **सदन** (संज्ञा पु०) (सं०) घर, मकान, गृह, स्थिरता, शैथिल्य, थकावट, मन्दिर, वास-स्थान, (अँ०) हाउस ।

४८०१. **सदर** (वि०) (अ०) प्रधान, मुख्य, (संज्ञा पु०) केंद्रस्थल, सभापति, (वि०) (सं०) भय-युक्त, डरा हुआ ।

४८०२. **सदा** (अव्यय) (सं०) नित्य, हमेशा, निरन्तर, सर्वदा, सतत, सदैव, सर्वदा, अविरत, प्रतिदिन, नितराम, अनुक्षण, अश्रान्त, नित, (संज्ञा स्त्री०) (अ०) गूंज, प्रतिध्वनि, शब्द, ध्वनि, आवाज़, पुकार ।

४८०३. **सदाचार** (संज्ञा पु०) (सं०) अच्छा आचरण, सात्विक व्यवहार, शिष्ट व्यवहार, भलमनसाहत, उत्तम आचार ।

४८०४. **सदी** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) शताब्दी, शती, सैकड़ा ।

४८०५. **सदृश** (वि०) (सं०) समान, अनुरूप, तुल्य, बराबर, उपयुक्त, मुनासिब, सम ।

४८०६. **सद्य** (अव्यय (सं०) आज ही, अभी, इसी समय, तुरन्त, शीघ्र, तत्काल, (संज्ञा पु०) (सं०) शिव।

४८०७. **सन्** (संज्ञा पु०) (सं०) वर्ष, साल, संवत्।

४८०८. **सनद** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रमाण, सबूत, प्रमाणपत्र, तकियागाह।

४८०९. **सनातन** (संज्ञा पु०) (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, (वि०) नित्य, शाश्वत।

४८१०. **सन्नद्ध** (वि०) (सं०) तैयार, उद्यत, प्रस्तुत, तत्पर।

४८११. **सन्नाटा** (संज्ञा पु०) (हिं०) नीरवता, निस्तब्धता, निर्जनता, एकान्तता, भौचक्कापन, चुप्पी, नीरव, शब्दाभाव।

४८१२. **सन्निवेश** (संज्ञा पु०) (सं०) अँटना, समाना, एकत्र होना, इकट्ठा होना, जुटना, घर, आधार, चौपाल, गढ़न, बनावट, रचना।

४८१३. **संन्यासी** (संज्ञा पु०) (हिं०) विरागी, त्यागी, यती, त्रिदण्डी, चतुर्थाश्रमी।

४८१४. **सफ़** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) पंक्ति, कतार, लम्बी चटाई, बिछावन।

४८१५. **सफल** (वि०) (सं०) सार्थक, कामयाब, कृतकार्य, फलवान्, फलयुक्त, सिद्धि, फलदायक।

४८१६. **सफ़ा** (वि०) (अ०) साफ़, स्वच्छ, निर्मल, पाक, चिकना, (संज्ञा पु०) पृष्ठ।

४८१७. **सफ़ेद** (वि०) (फ़ा०) उजला, धौला, श्वेत, सादा, कोरा।

४८१८. **सब** (वि०) (हिं०) समस्त, कुल, सारा, पूरा, सम्पूर्ण, सर्व, अखिल।

४८१९. **सभा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) परिषद्, गोष्ठी, समिति, जूआ, द्यूत, घर, मकान, समूह, झुण्ड, मण्डली, समाज, पंचायत, उत्सव।

४८२०. **सभ्य** (वि०) (सं०) शिष्ट, (अँ०) सिविल, (संज्ञा पु०) (सं०) सभासद, सदस्य, नागरिक, भद्र।

४८२१. **सभ्यता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सदस्यता, भलमनसाहत, शराफ़त, (अं०) सिविलिज़ेशन।

४८२२. **समन्वय** (संज्ञा पु०) (सं०) मिलना, मिलाप।

४८२३. **समय** (संज्ञा पु०) (सं०) वक्त, काल, अवसर, मौका, अवकाश, फ़ुरसत, अंतिम काल, कौल-करार, रिवाज, प्रथा, सिद्धान्त, संविद्, व्यवहार, बेला, अवधि, बार, अवस्था।

४८२४. **समर्थ** (वि०) (सं०) शक्तिमान्, योग्य, शक्ति, (संज्ञा पु०) हित, भलाई।

४८२५. **समर्पण** (संज्ञा पु०) (सं०) सौंपना, त्याग, अर्पण, दान।

४८२६. **समस्त** (वि०) (सं०) कुल, समग्र, सब, सारा, सकल, सम्पूर्ण।

४८२७. **समस्या** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) संघटन, संकेत, (अं०) प्राब्लम।

४८२८. **समाज** (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, गिरोह, (अं०) सोसाइटी।

४८२९. **समाधान** (संज्ञा पु०) (सं०) निष्पत्ति, निराकरण, समाधि, नियम, तपस्या, अनुसन्धान, अन्वेषण, ध्यान, समर्थन, हल करना, सन्देह दूर करना।

४८३०. **समाधि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) समर्थन, नियम, ग्रहण करना, ध्यान, आरोप, प्रतिज्ञा, प्रतिशोध, बदला, निद्रा, नींद, योग।

४८३१. **समारोह** (संज्ञा पु०) (सं०) भारी आयोजन, धूमधाम, उत्सव, जमाव, जमावड़ा, भीड़।

४८३२. **समास** (संज्ञा पु०) (सं०) संक्षेप, समर्थन, संग्रह, सम्मिलन।

४८३३. **समिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सभा, समाज, सभा, सन्निपात रोग, (अं०) कमिटी।

४८३४. **समीक्षा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आलोचना, समालोचना, मीमांसा-शास्त्र।

४८३५. **समीचीन** (वि०) (सं०) उपयुक्त, ठीक, उचित, वाजिब, न्यायसङ्गत, सम्यक्, सचाई, सच्चा।

४८३६. समीप (वि०) (सं०) पास, निकट, नज़दीक।

४८३७. समीर (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, शमीवृक्ष, प्राणवायु, पवन-प्रकम्पन।

४८३८. समीरण (संज्ञा पु०) (सं०) वायु, हवा, गन्धतुलसी, मरुआ, पथीक, बटोही, प्रेरणा, पवन।

४८३९. समुच्चय (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, राशि, समुदाय, एकत्रित, राशि, (अँ०) कम्बिनेशन।

४८४०. समुदाय (संज्ञा पु०) (सं०) समूह, ढेर, झुंड, गिरोह, जाति, मण्डली, वर्ग, समर, उदय, उन्नति, (अँ०) कम्यूनिटी।

४८४१. समुद्र (संज्ञा पु०) (सं०) सागर, अंबुधि, उदधि, जलनिधि, पयोधि।

४८४२. समूह (संज्ञा पु०) (सं०) समुदाय, झुंड, गिरोह, समुदाय, ढेर, वर्ग, दल, यूथ, जत्था।

४८४३. सम्मति (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सलाह, राय, आदेश, अनुज्ञा, मत, अभिप्राय, (अँ०) एग्रीमेण्ट।

४८४४. सम्मान (संज्ञा पु०) (सं०) इज्ज़त, आदर, मान, गौरव, प्रतिष्ठा।

४८४५. सम्मेलन (संज्ञा पु०) (सं०) जमावड़ा, जमघट, मिलाप, संगम, (अँ०) कॉनफरेंस।

४८४६. सम्राट् (संज्ञा पु०) (सं०) शहंशाह, (अँ०) एम्परर, बादशाह, महाराजाधिराज।

४८४७. सर (संज्ञा पु०) (सं०) जलाशय, तालाब, सरोवर, तड़ाग, (संज्ञा पु०) (फा०) सिर, सिरा, चोटी, (वि०) जीता हुआ, पराजित, अभिभूत।

४८४८. सरदार (संज्ञा पु०) (फा०) अगुवा, नायक, धनी, अमीर।

४८४९. सरमाया (संज्ञा पु०) (फा०) मूलधन, पूंजी, धन-दौलत, संपत्ति।

४८५०. **सरल** (वि०) (सं०) निश्छल, निष्कपट, सीधा, सीधा-सादा, मृदुल, सुगम, सच्चा, ईमानदार, उदार, छलशून्य, (संज्ञा पु०) एक चिड़िया, अग्नि।

४८५१. **सरलता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सीधापन, निष्कपटता, सुगमता, आसानी, सादगी, भोलापन, सत्यता, सच्चाई।

४८५२. **सरस** (वि०) (सं०) रसयुक्त, रसीला, तर, गीला, सुन्दर, मनोहर, मधुर, मीठा, भावपूर्ण, भावुक, रसिक, स्वाद।

४८५३. **सरस्वती** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) वाग्देवी, शारदा, वाणी, भारती, वाग्देवता, वागीश्वरी, विद्या, इल्म, एक रागिनी, ब्राह्मी बूटी, मालकँगनी, सोमलता, गौ, नदी-विशेष।

४८५४. **सरासर** (अव्यय०) (फ़ा०) बिलकुल पूरा, प्रत्यक्ष, साक्षात्।

४८५५. **सरि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) झरना, निर्झर, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) नदी, बराबरी, समता, (वि०) समान, सदृश, बराबर।

४८५६. **सरूर** (संज्ञा पु०) (हिं०) खुशी, आनन्द, मादकता, हल्का नशा।

४८५७. **सर्क** (संज्ञा पु०) (सं०) मन, चित्त, वायु।

४८५८. **सर्ग** (संज्ञा पु०) (सं०) गमन, संसार, सृष्टि, प्रवाह, बहाव, छोड़ना, फेंकना, उद्गम, उत्पत्ति, प्राणी, जीव, सन्तान, औलाद, स्वभाव, प्रकृति, झुकाव, प्रवृत्ति, प्रयत्न, संकल्प, मोह, मूर्च्छा, शिव, अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद।

४८५९. **सर्ज** (संज्ञा पु०) (सं०) अजकणवृक्ष, राल, धूना।

४८६०. **सर्प** (संज्ञा पु०) (सं०) साँप, रेंगना, नागकेसर, अहि, भुजंग।

४८६१. **सर्व** (वि०) (सं०) सब, समस्त, कुल, सम्पूर्ण, सारा, सकल, (संज्ञा पु०) (सं०) शिव, विष्णु, पारा, रसौत, शिलाजीत।

४८६२. **सर्वतोमुख** (संज्ञा पु०) (सं०) जल, पानी, आत्मा, जीव, ब्रह्मा, शिव, अग्नि, स्वर्ग, आकाश, (वि०) व्यापक।

४८६३. **सलाई** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शलाका, दियासलाई, सलई।

४८६४. **सलामत** (वि०) (अ०) सकुशल, रक्षित, जीवित, स्वस्थ, स्थिर, कायम ।

४८६५. **सलाह** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) सम्मति, राय, परामर्श ।

४८६६. **सलीका** (संज्ञा पु०) (सं०) योग्यता, शऊर, हुनर, शिष्टता ।

४८६७. **सलील** (वि०) (सं०) लीलायुक्त, क्रीड़ाशील, खिलाड़ी, कुतूहल-प्रिय, कौतुकी ।

४८६८. **सलूक** (संज्ञा पु०) (अ०) व्यवहार, बरताव, सद्भाव, तौर, तरीका, ढंग, उपकार, भलाई ।

४८६९. **सवाल** (संज्ञा पु०) (अ०) प्रश्न, माँग ।

४८७०. **सस्ता** (वि०) (हिं०) साधारण, मामूली, स्वल्पमूल्य, (अँ०) चीप ।

४८७१. **सह** (अव्यय) (सं०) सहित, समेत, संग, साथ, (वि०) उपस्थित, मौजूद, सहनशील, समर्थ, (संज्ञा पु०) समानता, शक्ति, बल, कलमी आम, सहायक, सहयोग ।

४८७२. **सहचर** (संज्ञा पु०) (सं०) संगी, साथी, सेवक, भृत्य, नौकर, मित्र, सखा, कटसरैया ।

४८७३. **सहज** (संज्ञा पु०) (सं०) सगा भाई, स्वभाव, भाई, सहोदर भाई, (वि०) स्वाभाविक, सरल, सुगम, साधारण ।

४८७४. **सहदेवा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सहदेई, बरियारा, बला, दंडोत्पल, अनन्तमूल, सरहँटी, प्रियंगु, नील ।

४८७५. **सहयोगी** (संज्ञा पु०) (सं०) सहकारी, साथी, समकालीन ।

४८७६. **सहर** (संज्ञा पु०) (अ०) प्रातःकाल, (संज्ञा पु०) (हिं०) जादू, टोना, शहर, (क्रि० वि०) (हिं०) मन्दगति से, धीरे-धीरे ।

४८७७. **सहसा** (अव्यय) (सं०) एकाएक, अकस्मात्, झटपट, अतर्कित, बिना विचार ।

४८७८. **सहारा** (संज्ञा पु०) (हिं०) आश्रय, आसरा, भरोसा, सहायता, योगदान ।

४८७९. सही (वि०) (फा०) सत्य, प्रामाणिक, शुद्ध, ठीक, हस्ताक्षर, दस्तखत ।

४८८०. सहृदय (वि०) (सं०) दयालु, रसिक, भावुक ।

४८८१. सह्य (वि०) (सं०) आरोग्य, सहने योग्य, सहाऊ, (संज्ञा पु०) (सं०) सह्याद्रि, समानता, बराबरी, साम्य ।

४८८२. साँई (संज्ञा पु०) (हिं०) स्वामी, मालिक, ईश्वर, पति, परमात्मा, प्रभु, भगवान् ।

४८८३. साँकर (संज्ञा स्त्री०) (हि०) ज़ंजीर, सिकरी, भूषण-विशेष, (संज्ञा पु०) संकट, विपत्ति, (वि०) संकरा, तङ्ग, संकीर्ण, दुःखमय, कष्टमय ।

४८८४. साँचा (संज्ञा पु०) (हिं०) घड़िया, ठप्पा, दर्जा ।

४८८५. सांत्वना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) आश्वासन, ढाढ़स, सुख, प्रेम, प्रणय ।

४८८६. साँप (संज्ञा पु०) (हिं०) सरीसृप, तार्क्ष्य, दीर्घजिह्वा, दीर्घपृष्ठ, नाग, निशाचर, सर्प, भुजंग, व्यालि, अहि, वासुक, पन्नग, काकोदर, कोड़ा, उरग, कचाकु, कनक, कर्णहीन, कालिग, कुम्भकार, तामस, पवनाश, पवनाशन, पातालनिलय, पुण्डरीक, पुष्कर, फड़कर, फड़कर, फणी, फन, विषहर, अजगर, कालिग, भवंग, भवंगा, भुजंगम, भोग, भोगी, मणिवर, ब्याल, शेष, सारंग, हरि, दुष्ट जन्तु, फणिक, तक्षक, दन्तशूक, ध्वजी, कुंडली, सुरा, स्थूलास्य ।

४८८७. साँस (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) श्वास, दम, अवकाश, फ़ुरसत, गुंजाइश, समाई, संधि, दरज, प्राण ।

४८८८. साका (संज्ञा पु०) (हिं०) संवत्, शाका, ख्याति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, धाक, रोब, कीर्त्ति-स्मारक, समय, शाका ।

४८८९. साकार (वि०) (सं०) मूर्तिमान, प्रत्यक्ष, मूर्त्त, स्थूल, आकारसहित ।

४८९०. साक्षात् (अव्यय०) (सं०) सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष, प्रकट, (वि०) मूर्त्तिमान, साकार, (संज्ञा पु०) भेंट, मुलाकात ।

४८६१. **साक्षी** (संज्ञा पु०) (सं०) साखी, गवाह, तटस्थ दर्शक, (संज्ञा स्त्री०) गवाही, शहादत।

४८६२. **साख** (संज्ञा पु०) (हि०) साक्षी, गवाह, गवाही, प्रमाण, धाक, रोब, मर्यादा, प्रामाणिकता।

४८६३. **सागर** (संज्ञा पु०) (सं०) समुद्र, जलधि, जलाशय, बड़ा ताल, झील, एक मृग, उदधि, पयोधि, अर्णव।

४८६४. **साग** (संज्ञा पु०) (हिं०) शाक, भाजी, तरकारी।

४८६५. **साज** (संज्ञा पु०) (फा०) सजावट, ठाठ-बाठ, वाद्य, बाजा, हथियार, सामग्री।

४८६६. **सात्विक** (वि०) (सं०) सतोगुणी, पवित्र, निर्मल, सत्वगुण-युक्त, साधु, सरल, सज्जन।

४८६७. **साथ** (संज्ञा पु०) (हि०) संगति, सहचार, साथी, संगी, घनिष्ठता, सङ्ग, सहित, समेत।

४८६८. **सादा** (वि०) (फा०) सीधा, सरल, सफ़ेद।

४८६९. **सादृश्य** (संज्ञा पु०) (सं०) एकरूपता, बराबरी, तुलना, कुरंग, मृग, समानता, तुल्यता।

४९००. **साध** (संज्ञा पु०) (हि०) साधु, महात्मा, सज्जन, योगी, (संज्ञा स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, चाह, मनोरथ।

४९०१. **साधक** (संज्ञा पु०) (सं०) योगी, साधन, ज़रिया, अभ्यास-कारी, तपस्वी।

४९०२. **साधन** (संज्ञा पु०) (सं०) निर्णय, उपकरण, उपाय, युक्ति, कारण, हेतु, आचार, संधान, जाना, गमन, धन, दौलत, पदार्थ, वस्तु, सिद्धि, प्रमाण, साधना, उपाय, यत्न, उद्योग, चेष्टा, अभ्यास, अनुष्ठान।

४९०३. **साधना** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सिद्धि, उपासना, आराधना, साधन, अनुष्ठान, तपस्या।

४९९४. **साधारण** (वि०) (सं०) सामान्य, मामूली, सहज, सरल, सुगम, आम, जन-समाज।

४६०५. साधु (संज्ञा पु०) (सं०) कुलीन, आर्य, संत, भला आदमी, सज्जन, जैन साधु, जिन, मुनि, वरुण वृक्ष, परोपकारी व्यक्ति।

४६०६. साध्य (वि०) (सं०) साधनीय, सिद्ध करने योग्य, सहज, सरल।

४६०७. साफ़ (वि०) (अ०) स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, खालिस, निर्दोष, स्पष्ट, उज्ज्वल, निखरा हुआ, चमकीला, निष्कपट, हिसाब चुकता करना, सादा, कोरा, खाली, समतल, हमवार, बिलकुल, परम, अनघ, अमल, अलेपक, गौर, धौत, शान्त, शुक्ल, शुक्त, शुचि, संशोधन, सित, अतम, अर्जुन, विशद, पुनीत, धवल, साधुजात, सुथरा, अदूषित।

४६०८. साफ़ा (संज्ञा पु०) (अ०) मुंडासा, पगड़ी, कपड़े धोना।

४६०९. सामंत, सामन्त (संज्ञा पु०) (सं०) वीर, योद्धा, शक्तिशाली ज़मींदार, सरदार, समीपता, नज़दीकी।

४६१०. सामग्री (संज्ञा स्त्री०) (सं०) असबाब, सामान, आवश्यक द्रव्य, ज़रूरी सामान, साधन, चीज़, वस्तु, उपकरण।

४६११. सामना (संज्ञा पु०) (हि०) समक्ष, सम्मुख, भेंट, मुलाकात, प्रतियोगिता, मुकाबला, आगे, अगाड़ी।

४६१२. सामर्थ्य (संज्ञा पु०) (सं०) योग्यता, शक्ति, ताकत, पराक्रम, बल।

४६१३. सामान्य (वि०) (सं०) मामूली, साधारण, चलनसार, (संज्ञा पु०) समानता, बराबरी।

४६१४. साम्राज्य (संज्ञा पु०) (सं०) सार्वभौम, राज्य, आधिपत्य, (अं०) एम्पायर।

४६१५. सायं (संज्ञा पु०) (सं०) संध्या, शाम, बाण, तीर।

४६१६. सायक (संज्ञा पु०) (सं०) बाण, तीर, खड्ग, पाँच की संख्या।

४६१७. साया (संज्ञा पु०) (फ़ा०) छाया, छाँह, परछाईं, असर, प्रभाव।

४६१८. **सारंग** (संज्ञा पु०) (सं०) कोयल, श्येन, बाज, सूर्य, सिंह, हंस, मयूर, मोर, चातक, घोड़ा, छाता, छत्र, हाथी, शंख, कमल, भौंरा, भ्रमर, ताल, सर, आभूषण, गहना, स्वर्ण, सोना, मधुमक्खी-विशेष, कपूर, श्रीकृष्ण, चन्द्रमा, जल, सागर, बाण, तीर, दीपक, पपीहा, शिव, शंकर, साँप, चन्दन, भूमि, बाल, केश, शोभा, स्त्री, रात्रि, रात, दिन, तलवार, दीप्ति, चमक, कबूतर, मृग, हिरन, मेघ, बादल, हाथ, खंजन पक्षी, ग्रह, नक्षत्र, आकाश, गगन, मेंढक, पक्षी, सारंगी, ईश्वर, कामदेव, विद्युत्, बिजली, पुष्प, फूल, काजल, वस्त्र, कपड़ा, मोती, कौआ, वायस, कुच, स्तन, (वि०) रँगा हुआ, रंगीन, सुन्दर, मनोहर, सरस, रसयुक्त।

४६१९. **सार** (संज्ञा पु०) (सं०) तत्व, मत्त, तात्पर्य, निष्कर्ष, अर्क, रस, गूदा, मग्ज़, परिणाम, नतीजा, धन, बल, शक्ति, मज्जा, मींगी, पतला शरबत, क्वाथ, काढ़ा, मूँग, खाद, लोहा, हीर (हिं०) सारिका, मैना, पालन, पोषण, शय्या, पलंग, सभाल, हिफ़ाज़त, साला, (वि०) (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, दृढ़, मज़बूत, न्याय।

४६२०. **सारना** (क्रि० स०) (हिं०) पूर्ण करना, समाप्त करना, साधना, बनाना, सुन्दर करना, सुशोभित करना, सँभालना, शस्त्र चलाना, प्रहार करना।

४६२१. **सारस** (संज्ञा पु०) (सं०) हंस, चन्द्रमा, कमल, पक्षी-विशेष।

४६२२. **सारांश** (संज्ञा पु०) (सं०) संक्षेप, सार, तात्पर्य, निष्कर्ष, परिणाम, नतीजा, निचोड़, मुख्य अंश, मुख्य भाग।

४६२३. **सारा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) काली निसोथ, दूब, थूहर, शातला, केला, तालिस पत्र, (वि०) सम्पूर्ण, समस्त, समूचा।

४६२४. **सारी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सारिका पक्षी, मैना, पासा, गोटी, थूहर, साड़ी।

४६२५. **सार्थक** (वि०) (सं०) अर्थ-सहित, सफल, पूर्ण मनोरथ, उपकारी, गुणकारी, अर्थयुक्त।

४६२६. **साल** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) वर्ष, बरस, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) छेद, सुराख, घाव, क्षत, पीड़ा, वेदना, (संज्ञा पु०) (सं०) जड़, मूल, राल, धूना, वृक्ष, सियार, किला, कोट।

४६२७. **सावित्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) गायत्री, सरस्वती, यमुना नदी, सधवा, सुहागिन, आँवला।

४६२८. **साह** (संज्ञा पु०) (हिं०) साधु, भला आदमी, साहूकार, धनी, सेठ, बनिया, महाजन, रोजगारी।

४६२९. **साहब** (संज्ञा पु०) (सं०) (अ०) प्रभु, स्वामी, ईश्वर, मित्र, साथी, महाशय, गोरा।

४६३०. **साहित्य** (संज्ञा पु०) (सं०) वाङ्मय, उपकरण, सामान, सामग्री, (अं०) लिटरेचर।

४६३१. **सिंगार** (संज्ञा पु०) (हि०) शृङ्गार, सजावट, सज्जा, बनाव, शोभा, शृङ्गार-रस।

४६३२. **सिंदूरी** (संज्ञा स्त्री०) (हि०) लाल हिन्दी, सिंदूरपुष्पी, लाल वस्त्र, कबीला।

४६३३. **सिंधु, सिन्धु** (संज्ञा पु०) (सं०) नद, बड़ी नदी, समुद्र, सिंध प्रदेश, गजमद, निर्गुण्डी, सागर, पयोधि, उपाधि, प्रान्त-विशेष।

४६३४. **सिंह** (संज्ञा पु०) (सं०) मृगेन्द्र, केसरी, शेर बबर, शेर, मृगराज।

४६३५. **सिंहनाद** (संज्ञा पु०) (हि०) शिव, गंभीर ध्वनि।

४६३६. **सिंहला** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सिंहलद्वीप, राँगा, पीतल, छाल, दारचीनी।

४६३७. **सिंहासन** (संज्ञा पु०) (सं०) लौहकिट्ट, राजासन, राजगद्दी, आसन, गद्दी।

४६३८. **सिकड़ी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) साँकल, ज़ंजीर, करधनी, तगड़ी।

४६३९. **सिकता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) बालू, रेत, चीनी, शर्करा, प्रमेह रोग, लोणि साग, बालुका।

४६४०. **सिक्का** (संज्ञा पु०) (हिं०) मुहर, मुद्रा, छाप, ठप्पा, अधिकार, प्रभुत्व ।

४६४१. **सिक्ख** (संज्ञा पु०) (हिं०) शिष्य, चेला, जाति-विशेष, (संज्ञा स्त्री०) सीख, शिक्षा, शिखा, चींटी ।

४६४२. **सिक्त** (वि०) (सं०) सींचा हुआ, भीगा हुआ, गीला, तर ।

४६४३. **सित** (वि०) (सं०) श्वेत, सफ़ेद, उज्ज्वल, शुभ्र, स्वच्छ, निर्मल, साफ़, (संज्ञा पु०) (सं०) शुक्रग्रह, शुक्राचार्य, शुक्लपक्ष, चीनी, सफ़ेद कचनार, मूली, चन्दन, भोजपत्र, सफ़ेद तिल, चाँदी ।

४६४४. **सिता** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) चीनी, शक्कर, ज्योत्सना, मदिरा, शुक्लपक्ष, श्वेत कंटकारी, बकुची, विदारीकंद, सफ़ेद दूब, कुटुम्बिनी, पिंगा, त्रायमाणलता, अंधाहुली, बच, सिंहली पीपल, आमड़ा, गोरोचन, चाँदी, श्वेत निसोथ, पुनर्नवा, सफ़ेद पाडर, सफेद सेम, मूर्वालता ।

४६४५. **सितारा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) नक्षत्र, तारा, भाग्य, प्रारब्ध, चमकी ।

४६४६. **सिद्ध** (वि०) (सं०) सफल, प्रमाणित, सीझा या उबला हुआ, कामयाब, कृतकार्य, निर्णित, फैसला, शोधित, चुकता, संघटित, तैयार, बना हुआ, प्रसिद्ध, (संज्ञा पु०) (सं०) पूर्ण ज्ञानी, अर्हंत, जिन, संन्यासी, साधु, व्यवहार, मुकद्दमा, काला धतूरा, गुड़, सफ़ेद सरसों ।

४६४७. **सिद्धान्त, सिद्धांत** (संज्ञा पु०) (सं०) विचार, मत, असूल, तत्वार्थ, (अँ०) प्रिंसिपल, थिऊरी, डाक्ट्रिन ।

४६४८. **सिद्धि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सफलता, निश्चय, निर्णय, पकना, सीझना, लक्ष्यवेध, भाग्यदेव, सुख-समृद्धि, मोक्ष, भोग, विजय, प्रभाव, असर, बुद्धि, दुर्गा,

४६४९. **सिपाही** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) सैनिक, योद्धा, वीर, पहरेदार, बहादुर ।

४६५०. **सिर** (संज्ञा पु०)(हिं०) कपाल, खोपड़ी, मस्तक, माथा, शीश, शीर्ष ।

४६५१. सिरा (संज्ञा पु०) (हि०) छोर, नोक, अनी, अग्रभाग, रग, नस।

४६५२. सिल (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) पत्थर, चट्टान, शिला, (संज्ञा पु०) (अ०) राज्यक्षमा, तपेदिक।

४६५३. सिलसिला (संज्ञा पु०) (अ०) क्रम, तार, श्रेणी, पंक्ति, व्यवस्था, शृंखला, लड़ी।

४६५४. सिवाय (क्रि० वि०) (अ०) अतिरिक्त, अलावा, (वि०) (हि०) अधिक, ज़्यादा।

४६५५. सीकर (संज्ञा पु०) (सं०) जलकण, स्वेद, पसीना, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) जंजीर, सिकड़ी।

४६५६. सीढ़ी (संज्ञा स्त्री०) (हि०) निसेनी, पैड़ी, ज़ीना, डण्डा, सोपान।

४६५७. सीधा (वि०) (हिं०) अबरक, सरल, ऋजु, निष्कपट, भोलाभाला, शिष्ट, भला, शान्त, आसान, सहल, दाहिना।

४६५८. सीमा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) हद, सरहद, माँग, (अं०) बाउण्डरी, लिमिट।

४६५९. सीर (संज्ञा पु०) (सं०) हल, आक, मदार, सूर्य, (संज्ञा स्त्री०) (हि०) साझा।

४६६०. सुन्दर (वि०) (सं०) रूपवान्, खूबसूरत, अच्छा, भला, दिव्य, मनोहर, भव्य, सुभाग, रुचिर, चारु, मंजु, कल, कलित, कमनीय, रमणीय, अभिराम, रम्य, मंजुल, मनहर, मनोरम, ललित, शुभ, मधुर, ललाम, सुप्रभ, अनूठा।

४६६१. सुकुमार (वि०) (सं०) कोमल, नाज़ुक, सौम्य।

४६६२. सुख (संज्ञा पु०) (सं०) आरोग्य, स्वर्ग, जल, पानी।

४६६३. सुगंध, सुगन्ध (संज्ञा स्त्री०) (सं०) महक, सौरभ, खुशबू, चन्दन, गंधराज, गंधतृण, नील कमल, राल, चना, केवला, सिलारस।

४९६४. **सुगंधि, सुगन्धि** (संज्ञा पु०) (सं०) महक, सौरभ, सुगन्ध, परमेश्वर, कसेरू, मोथा, आम, फूट, एलुवा, बनतुलसी।

४९६५. **सुगम** (वि०) (सं०) सहज, सरल, आसान।

४९६६. **सुध** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) स्मृति, याद, चेतना, खबर, होश, पता।

४९६७. **सुधा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अमृत, जल, दूध, पृथ्वी, धरती, मकरन्द, गंगा, अर्क, रस, मरोड़फली, आँवला, थूहर, शलापर्णी, बिजली, विष, चूना, ईंट, पुत्री, वधू, मधु, घर।

४९६८. **सुभीता** (संज्ञा पु०) (देश०) सुगमता, सहूलियत, सुअवसर, सुयोग, (अँ०) कन्वीनिएन्स।

४९६९. **सुर** (संज्ञा पु०) (सं०) देव, अमर, देवता, सूर्य, पंडित, विद्वान्, मुनि, ऋषि, (संज्ञा पु०) (हिं०) स्वर, ध्वनि, आवाज़।

४९७०. **सुरभि** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पृथ्वी, गौ, गाय, सुगन्ध, खुशबू, तुलसी, सुरा, शराब, (वि०) सुगन्धित, सुवासित, सुन्दर, श्रेष्ठ, उत्तम, सदाचारी, (संज्ञा पु०) स्वर्ण, सोना, गंधक, राल, मौलसिरी।

४९७१. **सुरा** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) मद्य, मदिरा, आसव, शराब, जल, पानी।

४९७२. **सुरूप** (वि०) (सं०) सुन्दर, विद्वान्, (संज्ञा पु०) शिव, कपास।

४९७३. **सुरेश** (संज्ञा पु०) (सं०) इन्द्र, शिव, विष्णु, श्रीकृष्ण, लोकपाल।

४९७४. **सुलभ** (वि०) (सं०) सहज, सरल, साधारण, उपयोगी, सुप्राप्य, सुगम, आसान, सहल।

४९७५. **सुशील** (वि०) (सं०) साधु, विनीत, नम्र, सीधा, सरल।

४९७६. **सुष्ठु** (अव्यय) (सं०) अत्यन्त, अतिशय, भली भाँति, यथायोग्य, (संज्ञा पु०) प्रशंसा, सत्य।

४९७७. **सुस्त** (वि०) (फ़ा०) निस्तेज, दुर्बल, कमज़ोर, उदास, हतप्रभ।

४६७८. सूक्ष्म (वि०) (सं०) छोटा, बारीक, महीन, (संज्ञा पु०) (सं०) परमाणु, अणु, परब्रह्म, शिव।

४६७९. सूखा (वि०) (हिं०) हृदयहीन, उदास, तेजहीन, कोरा, केवल, निरा।

४६८०. सूचना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) विज्ञापन, इश्तहार, हिंसा, अभिनय, (अं०) नोटिस, इन्फार्मेशन, रिपोर्ट, एडवाइस, (क्रि० स०) (हिं०) बतलाना, जतलाना, बेधना, छेदना।

४६८१. सूची (संज्ञा स्त्री०) (सं०) सूई, तालिका, फ़ेहरिस्त, केवड़ा, सफ़ेद कुश, (अं०) लिस्ट।

४६८२. सूत्र (संज्ञा पु०) (सं०) सूत, तागा, धागा, डोरा, जनेऊ, करधनी, नियम, व्यवस्था, रेखा, लकीर, सुराग, (अं०) क्ल्यू, फार्मूला।

४६८३. सूना (वि०) (हिं०) निर्जन, एकान्त, (संज्ञा स्त्री०) (सं०) पुत्री, बेटा, कसाईखाना।

४६८४. सूरज (संज्ञा पु०) (हिं०) दिनेश, दिवाकर, प्रभाकर, पतंग, रवि, भानु, सूर्य, वरनि, भास्कर, अंशुमाली, हरि, आद्रि, खद्योत, दिनपति, भासमान, मरीचि, दिनकर, दिनमाली।

४६८५. सूरत (संज्ञा स्त्री०) (फ़ा०) रूप, आकृति, शक्ल, छवि, सौन्दर्य, उपाय, युक्ति, तदबीर, अवस्था, दशा, हालत।

४६८६. सृष्टि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) उत्पत्ति, पैदाइश, निर्माण, रचना, संसार, दुनिया, प्रकृति, निसर्ग, उदारता।

४६८७. सेतु (संज्ञा पु०) (सं०) सीमा, हद, बन्धन, बन्धाव, मर्यादा, प्रतिबन्ध, प्रणव, ओंकार, (अं०) डम।

४६८८. सेना (संज्ञा स्त्री०) (सं०) फ़ौज, पल्टन, भाला, बरछी, इन्द्राणी, (अं०) मिलिटरी।

४६८९. सेवा (संज्ञा स्त्री०) (सं०) परिचर्या, टहल, नौकरी, उपासना, आराधना, आसरा, शरण, रक्षा, हिफ़ाज़त।

४९९०. **सोना** (संज्ञा पु०) (हिं०) स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम, सुवर्ण, ह्राटक, धतूरा, पारक।

४९९१. **सोम** (संज्ञा पु०) (हिं०) देवता, चन्द्रमा, सोमवार, अमृत, जल, कुबेर, यम, सोमयज्ञ, स्वर्ग, वायु।

४९९२. **सौध** (संज्ञा पु०) (सं०) महल, भवन, चाँदी, रजत, दूधिया पत्थर।

४९९३. **सौभाग्य** (संज्ञा पु०) (सं०) भाग्य, खुशकिस्मती, सुख, आनन्द, ऐश्वर्य, वैभव, सुहाग, अनुराग, सुन्दरता, मंगलकामना, सफलता, सिन्दूर, सुहागा।

४९९४. **सौम्य** (संज्ञा पु०) (सं०) सोमयज्ञ, मार्गशीर्ष, ब्राह्मण, भक्त, उपासक, गूलर, पित्त, सुशीलता, सज्जनता, भलमनसाहत, बाईं आँख, (वि०) (सं०) ठंडा, शान्त, नम्र, सुशील, सुन्दर, मनोहर, मांगलिक, शुभ, प्रसन्न, प्रफुल्ल, उज्जवल, चमकीला।

४९९५. **स्कन्ध** (संज्ञा पु०) (सं०) कन्धा, मोढ़ा कांड, शाखा, डाल, समूह, झुंड, भंडार, (अँ०) स्टाक, देह, शरीर, युद्ध, लड़ाई, राजा।

४९९६. **स्कूल** (संज्ञा पु०) (अ०) शिक्षालय, शिक्षणालय, विद्यालय, सम्प्रदाय, शाखा।

४९९७. **स्टाइल** (संज्ञा स्त्री०) (अ०) ढंग, शैली, पद्धति, लेखन-शैली।

४९९८. **स्टाक** (संज्ञा पु०) (अँ०) भंडार, रसद, सामान, समूह।

४९९९. **स्टेट** (संज्ञा पु०) (अँ०) स्थावर और जंगम सम्पत्ति, राज्य, देश, प्रान्त।

५०००. **स्तम्भ** (संज्ञा पु०) (सं०) खम्भा, जड़ता, अचलता, प्रतिबन्ध, रुकावट, अभिमान, दम्भ।

५००१. **स्तब्ध** (वि०) (सं०) स्तम्भित, दृढ़, पक्का, मन्द, धीमा, हठी, दुराग्रही, अभिमानी।

५००२. **स्तुति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) प्रशंसा, बड़ाई, स्तव, दुर्गा।

५००३. **स्त्री** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नारी, औरत, पत्नी, जोरू, सफेद, च्यूँटी ।

५००४. **स्थल** (संज्ञा पु०) (सं०) भूमि, ज़मीन, खश्की, स्थान, जगह, अवसर, मौका ।

५००५. **स्थान** (संज्ञा पु०) (सं०) ठहराव, स्थिति, भूमि, ज़मीन, मैदान, जगह, स्थल, पद, ओहदा, (अँ०) पोस्ट, अवसर, मौका, राज्य, देश, गढ़, दुर्ग, भंडार, गोदाम, अवस्था, दशा, कारण, उद्देश्य, अध्याय, परिच्छेद, वेदी ।

५००६. **स्थावर** (वि०) (सं०) अचल, स्थिर, (संज्ञा पु०) (सं०) पहाड़, पर्वत, सम्पत्ति ।

५००७. **स्थिति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) अवस्था, दशा, केस, पालन, नियम, सीमा, हद, निवृत्ति, आकार, आकृति, संयोग, मौका, हालत, स्टेट ।

५००८. **स्थिर** (वि०) (सं०) निश्चल, निश्चित, शान्त, दृढ़, अटल, नियत, मुकर्रर, विश्वस्त, (संज्ञा पु०) शिव, साँड, वृष, मोक्ष, मुक्ति, वृक्ष, पर्वत, पहाड़, शनिग्रह ।

५००९. **स्थूल** (वि०) (सं०) मोटा, (संज्ञा पु०) (सं०) गोचर पिंड, विष्णु, समूह, राशि, कटहल, प्रियंगु, ईख, ऊख ।

५०१०. **स्नेह** (संज्ञा पु०) (सं०) प्रेम, प्रणय, प्यार, मुहब्बत, कोमलता, सरसों ।

५०११. **स्फुट** (वि०) (सं०) व्यक्त, खिला हुआ, विकसित, साफ़, शुल्क, सफेद, फुटकर, अलग-अलग ।

५०१२. **स्मृति** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) याद, इच्छा, कामना, धर्म, दर्शन ।

५०१३. **स्याना** (वि०) (हिं०) सयाना, चतुर, होशियार, बुद्धिमान्, चालाक, काइयाँ, धूर्त, वयस्क, बालिग़, (संज्ञा पु०) बूढ़ा, वृद्ध पुरुष, ओझा, चिकित्सक, मुखिया ।

५०१४. **स्वगत** (क्रि० वि०) (सं०) स्वतः, आत्मगत, मनोगत, आप ही आप ।

५०१५. **स्वच्छ** (वि०) (सं०) निर्मल, साफ़, उज्वल, शुभ्र, पवित्र, निष्कपट (संज्ञा पु०) (सं०) बिल्लौर, मोती, अभ्रक, सोनामाखी, रूपामाखी, विमल ।

५०१६. **स्वतन्त्र** (वि०) (सं०) आज़ाद, स्वाधीन, स्वेच्छाचारी, अलग, पृथक्, भिन्न, (अँ०) फ्री, इंडिपेण्डेंट ।

५०१७. **स्वत्व** (संज्ञा पु०) (सं०) अपनापन, अधिकार, हक, (अँ०) राईट ।

५०१८. **स्वभाव** (संज्ञा पु०) (सं०) गुण, प्रकृति, आदत, बान, (अँ०) हैबिट, नेचर ।

५०१९. **स्वस्थ** (वि०) (सं०) नीरोग, तन्दुरुस्त, चंगा, सावधान, (अँ०) हैल्दी ।

५०२०. **स्वामिनी** (संज्ञा स्त्री०) (सं०) स्वत्वाधिकारिणी, मालकिन, गृहिणी, श्रीराधिका ।

५०२१. **स्वामी** (संज्ञा पु०) (हिं०) मालिक, पति, खसम, साधु, ईश्वर, भगवान्, राजा, शिव, विष्णु, गरुड़, कार्तिकेय ।

५०२२. **स्वेद** (संज्ञा पु०) (सं०) पसीना, भाप, ताप, गर्मी ।

(ह)

५०२३. **हँगामा** (संज्ञा पु०) (फ़ा०) उपद्रव, उत्पात, शोरगुल, हल्ला, भीड़-भाड़ ।

५०२४. **हंस** (संज्ञा पु०) (सं०) सूर्य, ब्रह्मा, जीवात्मा, विष्णु, आत्मा, प्राणवायु, शिव, घोड़ा, ईर्ष्या, द्वेष, पर्वत, कामदेव, भैंसा, हंस पक्षी ।

५०२५. **हँसी** (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) हास, परिहास, दिल्लगी, मज़ाक, व्यंग्य, हास्य, ठट्ठा ।

५०२६. **हक़** (वि०) (अ०) सत्य, सच, उचित, वाजिब, ठीक. (संज्ञा-पु०) (अ०) अधिकार, इख्तियार, कर्त्तव्य, फर्ज, पक्ष, ईश्वर ।

५०२७. हठ (संज्ञा पु०) (सं०) आड़, ज़िद, टेक, प्रतिज्ञा, संकल्प, ज़बरदस्ती, आग्रह ।

५०२८. हत (वि०) (सं०) मारा हुआ, ताड़ित, रहित, विहीन, नष्ट, हैरान, पीड़ित, ग्रस्त, निकृष्ट, निकम्मा।

५०२९. हरण (संज्ञा पु०) (सं०) दूर करना, हटाना, विनाश, संहार, वहन, दहेज।

५०३०. हरा (वि०) (हिं०) हरित, सब्ज, प्रसन्न, प्रफुल्ल, ताज़ा, सब्ज़।

५०३१. हरास (संज्ञा पु०) (फा०) भय, डर, आशंका, खटका, दुख, निराशा।

५०३२. हरि (वि०) (सं०) भूरा, बादामी, पीला, (संज्ञा पु०) विष्णु, शिव, बन्दर, अग्नि, श्रीकृष्ण, श्रीराम, घोड़ा, इन्द्र, सिंह, सूर्य, किरण, चन्द्रमा, गीदड़, शुक, तोता, कोयल, हंस, मेंढक, सर्प, वायु, यम, शुक्र, (अव्यय) (हिं०) धीरे, आहिस्ते।

५०३३. हलका (वि०) (हि०) कम वज़नी, पतला, थोड़ा, उथला, मन्द, ओछा, तुच्छ, सहज, निश्चिन्त, प्रफुल्ल, पतला, महीन, ताज़ा, हरा, घटिया, खाली, छूँछा।

५०३४. हवा (संज्ञा स्त्री०) (अ०) पवन, वायु, भूत, प्रेत, यश, कीर्त्ति, साख, सनक, धुन।

५०३५. हवाला (संज्ञा पु०) (अ०) प्रमाण, दृष्टान्त, मिसाल, सुपुर्दगी, ज़िम्मेदारी।

५०३६. हाट (संज्ञा स्त्री०) (हि०) दुकान, बाज़ार, हट्टी।

५०३७. हाथ (संज्ञा पु०) (हिं०) कर, हस्त, दस्त, दाँव, दस्ता, मुठिया।

५०३८. हानि (संज्ञा स्त्री०) (सं०) नाश, क्षति, घाटा, टोटा, नुक़सान, अपकार, बुराई, (अं०) लॉस, डैमेज।

५०३९. हाल (संज्ञा पु०) (अ०) दशा, परिस्थिति, अवस्था, समाचार, वृत्तान्त, विवरण, ब्योरा, तन्मयता, लीनता, (वि०) वर्तमान, मौजूद, (अव्यय) (अ०) अभी, तुरन्त, (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) कंप, झटका, झोंका, धक्का।

५०४०. हासिल (वि०) (अ०) प्राप्त, लब्ध, (संज्ञा पु०) (अ०) पैदावार, उपज, लाभ, नफ़ा, लगान।

५०४१. हिकमत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) विद्या, तत्वज्ञान, कला-कौशल, उपाय, तदबीर, युक्ति, चतुराई, चाल, पालिसी, किफ़ायत, हकीमी।

५०४२. हित (वि०) (सं०) कल्याण, मंगल, भलाई, उपकार, लाभ, फ़ायदा, स्नेह, मुहब्बत, सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५०४३. हिम (संज्ञा पु०) (सं०) पाला, तुषार, जाड़ा, ठण्ड, चन्द्रमा, चन्दन, कपूर, मोती, राँगा, ताज़ा मक्खन, कमल, काढ़ा, जशांदा, (वि०) ठंडा, सर्द।

५०४४. हिरण्य (संज्ञा पु०) (सं०) सोना, स्वर्ण, वीर्य, शुक्र, कौड़ी, धतूरा, नित्य, तत्व, ज्ञान, ज्योति, प्रकाश, अमृत।

५०४५. हीन (वि०) (सं०) परित्यक्त, रहित, खाली, बगैर, शून्य, ओछा, नीच, तुच्छ, नाचीज़, दीन, पथभ्रष्ट, अल्प, कम, नम्र।

५०४६. हुकूमत (संज्ञा स्त्री०) (अ०) शासन, आधिपत्य, अधिकार, राज्य।

५०४७. हुक्म (संज्ञा पु०) (अ०) आज्ञा, आदेश, शासन, प्रभुत्व।

५०४८. हूक (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) साल, दर्द, वेदना, आशंका, खटका, कसक।

५०४९. हेतु (संज्ञा पु०) (सं०) अभिप्राय, उद्देश्य, कारण, वजह सबब, तर्क, दलील, मूल कारण (संज्ञा पु०) (सं०) लगाव, प्रेम, प्रीति।

५०५०. हेम (संज्ञा पु०) (सं०) हिम, पाला, सोना, स्वर्ण, कपित्थ, कैथ, नागकेसर।

५०५१. हैरान (वि०) (सं०) आश्चर्य-चकित, स्तब्ध, परेशान, व्यग्र, तंग।

५०५२. होड़ (संज्ञा स्त्री०) (हिं०) शर्त, बाज़ी, प्रतियोगिता, हठ, ज़िद, (संज्ञा पु०) (सं०) नाव।

५०५३. **होनी** (संज्ञा स्त्री०) (*हिं*०) उत्पत्ति, पैदाइश, भावी, भवितव्यता, किस्मत, भाग्य ।

५०५४. **होशियार** (वि०) (*फ़ा*०) समझदार, बुद्धिमान्, दक्ष, कुशल, सावधान, सचेत, सयाना, धूर्त्त, चालाक, (क्रि०) सावधान होना ।

५०५५. **हौसला** (संज्ञा पु०) (*अ*०) प्रबल उत्कंठा, उत्साह ।

५०५६. **ह्रस्व** (वि०) (*सं*०) छोटा, नाटा, थोड़ा, नीचा, तुच्छ, नाचीज़ ।

५०५७. **ह्रास** (संज्ञा पु०) (*सं*०) कमी, घटती, उतार, घटाव, ध्वनि, आवाज़ ।

साहित्यिक पारिभाषिक शब्द

अ

अंक— नाटक का एक भाग

अंतर्बोध—अंतश्चेतना

अंतर्मुखी—बाह्य विषयों के विपरीत

अन्त्यानुप्रास—एक अलंकार

अक्रमता—क्रम से वस्तुओं का वर्णन न करना

अगूढव्यंग्य—जहाँ व्यंग्यार्थ स्पष्ट जान पड़े

अज्ञातयौवना—(नायिका-भेद) जिसे अपने यौवन का ज्ञान न हो

अतियथार्थवाद—फ्रांस में उत्पन्न एक साहित्यिक वाद जिसमें रोमांटिक साहित्य का विरोध किया जाता

अतिराष्ट्रीयतावाद—राष्ट्रवाद की पराकाष्ठा, फासिज़्म

अतिशयोक्ति—अर्थालंकार का एक भेद

अतिहसित—हास्य रस का एक भेद

अतीन्द्रिय—इन्द्रियों से परे

अतुकांत—जिस पद्य के अन्त में तुक न मिले

अत्युक्ति—(अलंकार) किसी गुण का मिथ्या वर्णन

अदब—साहित्य

अद्भुत— (एक रस) विस्मयजनक काव्य-रस

अद्वैतवाद—आत्मा - परमात्मा की अभिन्नता मानना

अधमा—(नायिका का एक भेद)अति हठीली नायिका

अधिकपद—(वाक्यदोष) कोई पद वाक्य में निरर्थक होना

अधिनायकवाद—(डिक्टेटरशिप) तानाशाही

अधीरा—(नायिका भेद)

अभ्यांतरिक—स्वात्मनिष्ठ (काव्य)

अध्यात्मवाद—आत्मा-परमात्मा-परलोक सम्बन्धी दार्शनिक विचार

अनन्वय—एक अलंकार, जहाँ उपमेय को ही उपमान भी बनाया जाए

अनलहक—(फारसी शब्द) मैं ही ब्रह्म हूं

अनवीकृत—(अर्थदोष) जहां कोई

नई बात नहीं कही गई हो

अनात्मवाद—आत्मा को स्वीकार न करना

अनाहत—अनहद शब्द, ब्रह्मरंध्र में होने वाला शब्द

अनीश्वरवाद—नास्तिकवाद

अनुकरण—अनुकृति, हूबहू नकल

अनुकूल—(एक अर्थालंकार)

अनुगुण— (एक अर्थालंकार)

अनुग्रह—(भक्ति-साहित्य में भगवत् कृपा), कृपा

अनुचितार्थ—(एक शब्द दोष)

अनुप्रास—(अलंकार) एक जैसे अक्षरों का दुबारा आना

अनुभाव—(रस का एक तत्व) इसके चार भेद हैं— कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक

अनुभूति— चेतना, अनुभव

अनुमान—(एक अलंकार) जहाँ चतुराई से साधन द्वारा साध्य का बोध कराया जाए

अनुशयाना—(नायिका भेद) परकीया नायिका जो प्रिय मिलन का अवसर खोने से दुःखी हो

अनुष्टुप—(छन्द) अक्षर का चतुष्पाद छन्द

अनुसंधान—खोज, रिसर्च (अं०)

अनूढा—(नायिका) अविवाहिता प्रेमिका

अन्योन्य—(अर्थालंकार) जहाँ एक क्रिया द्वारा दो वस्तुओं का परस्पर संबंध बताया जाए

अपकर्ष—(काव्य-दोष) जहाँ रस की हानि करने वाले शब्दों का प्रयोग हो

अपभ्रंश—६ठी से १२वीं शताब्दी तक की उत्तर भारत की भाषा

अपभ्रंशधारा—हिन्दी - साहित्य के आदि काल की काव्यधारा जिसमें हेमचन्द्र आदि ने रचना की

अपभ्रंश साहित्य—अपभ्रंश भाषा में लिखा गया साहित्य

अपवारित—रंगमंच पर किसी पात्र का दूसरी ओर मुँह करके दर्शकों को सुनाकर पास खड़े पात्र की बात कहना

अपहसित—(हास्य रस का एक भेद)

अपह्नुति—(अलंकार) जहां प्रस्तुत को छिपा कर अप्रस्तुत की स्थापना की जाए

अभिजात वर्ग—समाज का उच्चतम वर्ग, एरिस्टोक्रेसी (अं०)

अभिधा—(शब्द-शक्ति) जहां शब्द का रूढ अर्थ लिया जाए

अभिनेता—अभिनय करने वाला, एक्टर (अं०)

अभिप्राय—उद्देश्य और अर्थ

अभिव्यंज़नावाद—इटली के क्रोचे का चलाया साहित्य का एक मत, (कवि या कलाकार अपने अन्तर की भावना को प्रकाशित करता है)

अभिसारिका—(नायिका) जो नायिका स्वयं प्रियमिलन के लिए जाए

अभेदरूपक—रूपक अलंकार का एक भेद

अमर्ष—तेंतीस में से एक संचारी भाव

अमियरस—ब्रह्मरंध्र से झरने वाला आनन्द-रस

अप्रयुक्त—(शब्ददोष) ऐसे शब्द का किसी अर्थ के लिए प्रयोग करना जिसके लिए पहले उसका प्रयोग न हुआ हो

अप्रस्तुत-प्रशंसा—जहां अप्रस्तुत के वर्णन द्वारा प्रस्तुत का वर्णन किया जाए

अरविन्द दर्शन—योगी अरविन्द का का मत

अराजकतावाद—साहित्यिकवाद, जिस में राज्य, समाज तथा परिवार को तोड़ने के पक्ष में विचार हों, एनारकिज़्म (अं०)

अर्चनागीत—स्तुतिगीत

अर्थप्रकृति—रूपक के कथावृत्त की पांच स्थितियाँ बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य

अर्थवक्रोक्ति—(अलंकार) जहां वक्ता के कहे अर्थ से भिन्न अर्थ लिया जाए

अर्थश्लेष—(अलंकार) जहां अर्थ में श्लेष हो (दो अर्थ निकलें)

अर्थान्तरन्यास—(अलंकार) जहां सामान्य द्वारा विशेष का और विशेष द्वारा सामान्य का समर्थन हो

अर्थालंकार—जहां अर्थ में चमत्कार हो

अलंकार—शब्द या अर्थ की सजावट

अलख—अलक्ष्य ईश्वर, नाथपंथियों के भक्ति-गीत

अवतार—ईश्वर या उसकी शक्ति का जन्म ग्रहण

अवदान—लोक-कथा

अवधी—हिन्दी का वह रूप जो अवध में बोला जाता है

अश्राव्य—नाटकीय संवाद में कथा-वस्तु का एक भेद जिसे केवल कहने वाला पात्र सुनता है, रंग-मंच का अन्य कोई पात्र मानो नहीं सुनता

अश्लील—(अर्थदोष) जहां कामवासना संबन्धी खुला वर्णन हो

अष्टछाप—पुष्टि-मार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित मंडल इसमें सूरदास आदि आठ कवि थे

असंगति—(अलंकार) जहां कार्य कहीं हो और कारण कहीं

असूया—दूसरे के गुण को न सहना, तेंतीस संचारी भावों में से एक

अहंकार—अपने को देवता समझना

अहिंसा—किसी प्राणी को न मारना और न कष्ट देना

अहीर—ग्वाला, एक मात्रिक सम छंद

अहेरी—शिकारी, अपना मन मृग है और मन ही अहेरी

आकाशभाषित—रंगमंच पर आकाश-वाणी होना

आख्यायिका—कहानी

आगतपतिका—(नायिका) जिसका पति परदेश से आया हो

आत्मकथा—लेखक द्वारा लिखी अपनी जीवनी

आत्मपीड़न—अपने को कष्ट पहुंचाना

आत्मवाद—अध्यात्मवाद

आदर्शवाद—यथार्थ से भिन्न सूक्ष्म मूल्यों को स्वीकार करनेवाला मत

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद—जिस विचार-धारा में आदर्श तथा यथार्थ का संमिश्रण हो

आदिकाल—हिन्दी साहित्य का वीर-गाथाकाल स० १०५० से १३७५ तक

आधिकारिक वस्तु—दृश्य काव्य में कथा वस्तु के दो भेद १. आधिकारिक (मुख्य), २. प्रासंगिक (गौण)

आधुनिककाल—संवत् १६०० से आरम्भ हुआ हिन्दी साहित्यकाल

आनन्द—रस या आत्मानन्द

आनन्दवाद—रस या आनन्द को मुख्य मानने वाला साहित्यिक मत

आन्तरिक आलोचना प्रणाली—जिस आलोचना प्रणाली में रचना के भीतरी गुणों पर बल दिया जाए

आमुख—नाटक की प्रस्तावना

आरती—भक्ति प्रार्थना का गीत

आराधना—स्तुति गीत

आर्थी व्यंजना—व्यंजना शब्द शक्ति का एक भेद, जहाँ अर्थाश्रित व्यंग्य हो

आर्या—संस्कृत का एक मात्रिक छन्द, नाटक में स्त्री विशेषत: नायिका का संबोधन

आलंबन विभाव—(रस का अंग)

पात्र विशेष के भावों का आलबन

स्य—शारीरिक या मानसिक क्रिया में तत्पर न होने की प्रवृत्ति

आली—सखी

आलोचना—साहित्य के किसी अंग की व्याख्या, गुण-विश्लेषण या मूल्यांकन

आवेग—(एक संचारी-भाव) हर्ष या भय से शरीर में सनसनी दौड़ना

आसक्ति—स्नेह का अत्यधिक राग-रंजित रूप

इन्द्रवज्रा—एक सम वर्णवृत्त (छन्द)

इद्रियवाद—इन्द्रिय सुखवाद

इतिवृत्तात्मक काव्य—चरित काव्य

इतिवृत्तात्मकता—काव्य में चरित्र की प्रधानता से नीरसता आना

ईहामृग—रूपक (नाटक) का एक भेद जिसमें नारी के लिए युद्ध हो

उग्रता—एक संचारी-भाव

उच्चमध्यवर्ग—धनसंपन्न बुद्धिवादी वर्ग के लोग

उड़िया—उड़ीसा का साहित्य, भाषा या वहां की एक जाति

उत्कंठिता—(नायिका भेद) सकेत-स्थल पर नायक की चिन्तापूर्वक प्रतीक्षा करने वाली नायिका

उत्तमा-(नायिका) नायक द्वारा अहित होने पर भी जो उस का हित करे

उत्तरमध्यकाल—हिन्दी साहित्य का रीतिकाल सं० १७०० से १९००

उत्पाद्य (कथा) वस्तु—कथानक का कवि-कल्पित अंश

उत्प्रेक्षा—(अलंकार) उपमेय में उपमान की कल्पना या संभावना

उत्सवगीत—पुत्र-जन्म या त्योहार संबन्धी गान

उत्साह—वीर रस का स्थायी भाव

उदात्त—उत्कर्ष रूप से किसी पदार्थ का ग्रहण (एक अर्थालंकार भी है)

उदारवाद—उदारता का मत, लिब-रलिज़्म (अं०)

उद्दीपन विभाव—रस को उद्दीपित करने वाली आलंबन की चेष्टा आदि

उद्देश्य—काव्य, उपन्यास या नाटक का एक तत्व, किसी विशेष जीवन-दृष्टि का विवेचन

उन्मीलित—(एक अलंकार) जहां साम्य के कारण उपमेय उपमान मिल गये हों, पर किसी विशेष कारण से उपमेय का अलग पता चल जाय

उपचेतन—मानस का चेतनेतर पक्ष, सबकॉन्शस् (अं०)

उपजाति—जाति (कौम) का उपभेद, इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना एक वर्णवृत्त (छन्द)

उपदेशवाद—साहित्य में उपदेश पर जोर देना

उपन्यास—साहित्य की एक गद्यात्मक विधा, जिसमें समाज का विस्तृत चित्र आता है

उपमा—(अलंकार) उपमेय उपमान की समता का वर्णन

उपमान—जिस ऊँचे गुण वाली वस्तु से उपमय की समता बताई जाए

उपमेय—जिस व्यक्ति या वस्तु के गुण की उत्तमता बताने के लिए उसे ऊँचे गुणवाली प्रसिद्ध वस्तु के समान कहा जाए—'मुख चन्द्रमा के समान है' यहां मुख उपमेय है, चन्द्रमा उपमान

उपयोगितावाद—किसी वस्तु, विचार या कार्य का महत्व आंकने के लिए उसे उपयोगिता की कसौटी पर कसने का वाद

उपयोगी कला—बौद्धिकता तथा उपयोगिता वाली कला

उपरूपक—(दृश्य काव्य का भेद) नृत्य पर आधारित दृश्य काव्य

उपहासकाव्य—पैरोडी, चरित्रोपहास (कैरीकेचर), आदि

उपाख्यान—काव्य के कथानक में आई कोई स्वतन्त्र अन्य कथा

उपालंभ—उलाहना (सखीकर्म)

उपेन्द्रवज्रा—एक वर्णिक छन्द

उर्दू—खड़ीबोली का एक रूप जिसका आरंभ बादशाही शिविर में हुआ और जिसमें फारसी अरबी के शब्द अधिक होते हैं

उल्लाप्य—एक उपरूपक जिसमें चार नायिकायें होती हैं

उल्लाला—एक मात्रिक छन्द

उल्लेख—(अलंकार) जहां एक वस्तु व्यक्ति आदि का अनेक प्रकार से वर्णन हो

ऋचा—ऋग्वेद का मन्त्र

एकपात्रीय नाटक—जिस नाटक में एक ही अभिनेता हो

एकांकी—जो नाटक एक ही अंक में पूर्ण हो, जिसमें जीवन के किसी एक अंश का वर्णन हो

एकांतिक भक्ति—जो एक में अनन्य भक्ति हो

एकीकरण—एकता, विभिन्न तत्वों को एक में मिलाना

एकेश्वरवाद—अल्लाह ईश्वर गौड आदि से एक ही ईश्वर का बोध

मानना

एलिजी—शोकगीत

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य—इतिहास की गतिविधि पर ध्यान रखकर योजना बनाना या अध्ययन करना

ऐतिहासिक भौतिकवाद—'हिस्टॉरिकल मैटीरियलिज़्म'

ओजगुण—रीति के तीन गुण ओज, प्रसाद, माधुर्य

औत्सुक्य—एक संचारीभाव, उत्सुकता

औदार्य—नायक का एक सात्विक गुण, उदारता

कंप—एक सात्विक अनुभाव

कजरी—सावन में गाया जाने वाला लोकगीत

कथनी—केवल कहना, अमल न करना

कथा—कहानी (प्राय: धार्मिक)

कथासाहित्य—'फिक्शन', जिस साहित्य में कहानी प्रधान हो

कथानक—कथा का सारांश, कथावस्तु

कपाली—शिवजी, या कापालिक

कबीरपंथ—कबीर का चलाया संप्रदाय

करखा—एक मात्रिक सम दण्डक छन्द

करनी—नेक कमाई, शुभ कर्म

करुणगीति—एलिजी (अं०) शोकगीत

करुणरस—दु:ख से दु:खी होने के बाद आनन्द की प्राप्ति

कलमा—इस्लाम का मूलमंत्र

कलहान्तरिता—(नायिका) विकलता को सँभालने में असमर्थ नायिका

कला—मानव संस्कृति का सुन्दरता से भरा कर्म

कलापक्ष—साहित्य का बहिरंग, काव्य आदि का बाहरी पक्ष

कलाली—शराब पिलाने वाली

कलावाद—'कला कला के लिये' मानने वाला मत

कल्पना—पूर्व अनुभूतियों और वर्तमान के मेल से अपूर्व को सोचना

कवि-चर्या—कवि का सारे दिन का कार्यक्रम

कविता—पद्य में रसात्मक भावों का प्रकटीकरण

कविसमय—परम्परा से चली आती अशास्त्रीय एवं अलौकिक बातें

कव्वाली—सूफियों कव्वालों का सामूहिकगान जिसमें लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम का वर्णन किया जाता है

कश्मीरी—कश्मीर घाटी में बोली जाने वाली भाषा काशुर

कष्टकल्पना—एक रस दोष

कसीदा—उर्दू काव्य का एक रूप

कहानी—गद्य साहित्य की एक विधा जिसमें कथा जीवन के केवल एक ही अंश को छूती है

काकु वक्रोक्ति—(अलंकार) जहां वक्ता के कंठ-ध्वनि-विकार से और का और अर्थ लिया जाए

कापालिक—खोपड़ी धारण करनेवाला शैव साधु

काफ़िया—तुक लाने से पहले एक जैसे शब्दों का प्रयोग, जैसे—बहार, करार आदि

कामनापूर्ति—इष्टापूर्ति, इच्छा की पूर्ति

कामिक (अं)—हास्य रस का उद्दीपक नाटक

काया—पिंड, शरीर

कायापलट—शरीर तथा जीवन में विशेष परिवर्तन, योग-साधना की एक विशेष क्रिया

कायिक अनुभाव—शरीर - संबन्धी अनुभाव

कारणमाला—(अलंकार) जहाँ पूर्ववर्ती अर्थ उत्तरोत्तर वाले का कारण बनता जाये

कार्यव्यापार—नाटक की घटनाओं की शृंखला

कालविभाग—कालविभाजन

काव्य—कवि की कृति

काव्यशास्त्र—काव्य-रचना के नियम रीति आदि पर विचार करने वाला शास्त्र

काव्यहरण—अन्य कवि के प्रयोग को अपने काव्य में लाना

काव्यहेतु—काव्य-रचना के कारण

किंवदंती—लोक-प्रसिद्ध उक्ति

किरीट सवैया—सवैया छन्द का एक भेद

कुंडलिया—दोहा - रोला जोड़कर बनाया गया छन्द

कुलटा—पतिता स्त्री, लज्जा-हीना नायिका

कुलिश—वज्र, 'तृन ते कुलिश, कुलिश तृन करई'

कृति—रचना, कलाकार का कलापूर्ण रचना

कृतित्व—रचना में कलाकार की अनुभूति, कला तथा अभिव्यक्ति

कृष्णकाव्य—कृष्ण की भक्ति का काव्य

कृष्णभक्तिशाखा—हिन्दी के पूर्व-मध्य काल की एक विशेष काव्य शाखा

कैलास—स्वर्ग, कैलाश पर्वत

क्लिष्ट—(शब्ददोष) कठिन शब्द-विन्यास

क्वाँरी—अविवाहिता नारी, माया

क्रोध—रौद्र रस का स्थायी भाव

क्लासिकल (अं०)—सर्वश्रेष्ठ, शाश्वत, उच्चकोटि की

खंडकाव्य—एक प्रकार का प्रबंध-काव्य, जिसमें जीवन के एक अंश का वर्णन हो

खंडिता—(नायिका भेद) जिसका प्रियतम अन्य नारी से संयोग करके आया हो

खड़ीबोली—सरहिन्द से लखनऊ तक बोली जाने वाली साधारण हिन्दी भाषा

खसम—निर्गुणियों का ईश्वर

खुमार-री—आध्यात्मिक प्रेम का नशा

ख्याल—लोकनाटक का एक प्रकार

गगनमंडल—सहस्रदलकमलचक्र, सहस्रार-चक्र, आकाश

गद्य—छन्दों के बन्धन में न बंधी रचना

गद्यकाल—हिन्दी साहित्य का वह काल, जो संवत् १६०० से आरम्भ हुआ

गद्यकाव्य—कथा, आख्यायिका, उपन्यास, गद्यगीत आदि

गर्बा—गुजराती लोकगीत-नृत्य की एक शैली

गर्भसंधि—रूपक की पाँच संधियों में से एक

गर्व—एक संचारी-भाव—प्रभाव, ऐश्वर्य, विद्या, कुल आदि के अहंकार से दूसरों की अवज्ञा का भाव

गल्प—लघुकथा

गांधीवाद—गाँधी जी की विचार-पद्धति का मत

गांभीर्य—नायक का सात्विक गुण

गाथा—गाने योग्य कथानक वाला लोक-साहित्य

गान—गीत

गाय—संतसाहित्य में आत्मा, 'गाय तो नाहर खायो'

गायन—गान-क्रिया

गीति—गाने योग्य कविता

गीतिकाव्य—लिरिक (अं०)

गीतिनाट्य—गीतात्मक रूपक

गुजराती—गुजरात प्रदेश की भाषा

गुण—विशेषता, खूबी, काव्य की विशेषता

गुणीभूत व्यंग्य—दूसरी कोटि का काव्य, जहाँ ध्वनि प्रधान न हो

गुरु—अज्ञान - अंधकार का नाशक व्यक्ति, उपाय या मन्त्र, छन्द में दीर्घ आदि

गेय काव्य—गान योग्य काव्य

गोचारणकाव्य—ग्राम्यगीति, पेस्टोरल लिरिक (अं०)

गोपीभाव—गोपी जैसी भक्ति

गोरखपंथ—गोरखनाथ का चलाया मार्ग

गोष्ठी—एक अंक का शृंगार रस-प्रधान उपरूपक

गौडी रीति—परुषाक्षरा वृत्ति, वीर रस में उपयोगी रीति

गौण वस्तु—प्रासंगिक कथा-वस्तु

गौणी लक्षणा—लक्षणा शब्द-शक्ति का एक प्रकार

गौरव-गीति—प्रशस्ति-गान

ग्रामगीत—गाँवों के गीत

ग्राम्यत्व—काव्य में गँवारूपन का दोष

ग्लानि—एक संचारीभाव

घनाक्षरी—एक तरह का मुक्तक दंडक छन्द

चंद्रावल—सावन में गाई जाने वाली एक गेय कथा

चंपू—वह श्रव्यकाव्य, जिसमें गद्य पद्य का मिश्रण हो

चकवा—एक पक्षी जो प्रेमी का प्रतीक है, यह रात को प्रिया से बिछुड़ कर चिल्लाता कराहता है

चपलता—एक संचारी - भाव, चंचलता,

चरखा—कताई का यन्त्र, काव्य में शरीर का प्रतीक-- 'जो चरखा जर जाई बढैया ना मरैं'

चरण—पद्य का एक पद या पाद

चरितकाव्य—वह प्रबन्ध-काव्य जिसमें चरित की प्रधानता हो

चरित्रचित्रण—पात्र के गुण दोष का विश्लेषण

चादर-चदरिया--सन्तसाहित्य में शरीर का प्रतीक

चित्त—अन्तःकरण

चेतन—मानस का सचेत पक्ष, कॉंश्यस् (अं०)

चेतना—चेतन मानस की मुख्य विशेषता

चैता, चैती—चेत मास के गीत

चोला—शरीर का प्रतीक, कुर्ता

चौपड़—एक खेल, जीवन का प्रतीक

चौपाई—१६ मात्रा का एक मात्रिक छन्द

छंदशास्त्र—पद्य-रचना का ज्ञान कराने वाला शास्त्र

छत्तीसगढ़ी—पूर्वी हिन्दी की एक बोली

छप्पय—रोला और उल्लाला छन्दों के योग से बना मात्रिक विषम छन्द

छल—एक संचारी भाव, जहां नायिका धोखे से अपनी अवज्ञा का बदला लेती है

छायानाट्य—आधुनिक चलचित्रों का मूल रूप, इनमें चमड़े की कठपुतलियाँ बनाकर प्रकाश के आगे रखते थे और उनकी छाया सामने के पर्दे पर डालते थे

छायावाद—आधुनिक हिन्दी की रोमांटिक धारा, इसका आरंभ सन् १९१८ में हुआ। छायावादी कविता में बाह्यार्थ और वस्तु का वर्णन कम होता है और अन्तःकरण का नियोग अधिक होता छायावाद में है—

१. आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति
२. कल्पना की प्रधानता,
३. सौन्दर्याकर्षण,
४. विस्मयभावना,
५. सर्वचेतनतावाद,
६. सामाजिक-धार्मिक- राजनीतिक-साहित्यिक रूढिबन्धनों के प्रति विद्रोह। प्रसाद पन्त, निराला और महादेवी-ये छायावाद के प्रमुख स्तम्भ हैं

छेकानुप्रास—(अलंकार) जहां वर्णो की एक बार आवृत्ति हा

जड़ता—एक संचारीभाव, मूक स्तब्ध रह जाना

जन—समाज में रहने वाले लोग

जनआन्दोलन—किसी लक्ष्य के लिए जनता की सामूहिक हलचल

जनकवि—जिस कवि की कविता का संपर्क जनता के व्यापक जीवन से हो

जनतन्त्र—जनता के चुने प्रतिनिधियों का शासन, डेमोक्रेसी (अँ०)

जनता—समाज के सभी सदस्यों का समूह

जनपद—प्रदेश, इलाका

जनवाद—मार्क्स के अनुसार जनता के हित का हर बात में ध्यान रखना

जिकड़ी—व्रज का एक गीत जो होली में गाया जाता है

जिक्र—स्मरण

जुलाहा—योग-साधना में साधक का प्रतीक

जैनचरित काव्य—जैनमत में प्रचलित कथा-प्रधान काव्य

ज्ञातयौवना—मुग्धा नायिका का दूसरा भेद, जिसे यौवन का ज्ञान हो चुका हो

ज्ञानाश्रयी शाखा—हिन्दी के पूर्व-

मध्यकाल की एक शाखा जिस में कबीर आदि हुए

झूलना—सावन में झूले का गीत

झूमर—मंगल-गीत

टिप्पणी—संक्षिप्त टीका

टीका—तिलक, विस्तृत व्याख्या

टेक—गीत के आरंभ की स्वतंत्र कड़ी, जिस पर गीत की सब पंक्तियों की तुक टिकी रहती है

टेर—भक्त की पुकार

टेबलो—(अं०) चरित्र या घटना-प्रधान मूक नाट्य

ट्राटस्कीवाद—ट्राटस्की का मत, जिसमें क्रान्ति कभी रुकती नहीं

ट्रैक्ट—(अं०) छोटे आकार का निबन्ध या पेंफ्लेट

ट्रैजेडी—दुःखान्त नाटक

डिंगल—पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप

डिम—वह दृश्यकाव्य या रूपक जिसमें विद्रोह का वर्णन हो

डेन्यूमाँ—(फ्रां०) गाँठ खुलना

ढकोसला—ढोंग, बेसिर पैर की काव्य उक्ति

ढोला—प्रियतम, एक लोक काव्य

तद्गुण—(अलकार) जहां प्रस्तुत अपने गुण को छोड़ कर अप्रस्तुत के गुण को ग्रहण करता है

तमिल—द्राविड़ परिवार की सबसे प्राचीन भाषा

तरणिजा—सूर्यसुता, जमुना

तरीकत—सूफ़ियों का आध्यात्मिक मार्ग

तसव्वुफ—सूफीमत

तांत्रिकमत—ई० ६००से १२०० तक की भारत में प्रचलित साधना पद्धति

ताद्रूप्य रूपक—जहाँ रूपक अलंकार में उपमेय द्वारा उपमान का ही रूप धारण करना वर्णित हो

तानाशाही—जहाँ व्यक्ति के कर्तव्य और अधिकार की जिम्मेदारी राज्य पर हो और एक आदमी राज्य का सर्वेसर्वा हो

तार्किकसत्य--क्रियाशील दृष्टि के प्रभाव में बुद्धि से सिद्ध सत्य

ताल—तालाब, संगीत में स्वर के काल और चाल का संकेत

तुक—कविता में चरणों के अन्त में एक जैसे वर्ण आना, जैसे—राम, श्याम, अभिराम, निष्काम,

तुल्ययोगिता—(अलंकार) प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत का परस्पर समान

धर्म से संबद्ध होना

तेलुगु—आंध्र प्रदेश की मुख्य भाषा

तोटक—(वर्ण छन्द) ४ सगण प्रत्येक चरण में

तोमर—(मात्रिक सम छन्द) १२ मात्रा, अन्त में ऽ। (गुरु लघु)

त्रास—आकस्मिक भय से जी घबरा जाना, एक संचारी भाव

त्रिकुटी—इड़ा पिंगला-सुषुम्ना नाड़ियों का मिलन-स्थल

त्रोटक—दूसरा उपरूपक, इसके पात्रों में देव मनुष्य दोनों होते हैं, जैसे कालिदास का विक्रमोर्वशीय

थीम—(अं०) तत्त्व, कथासूत्र

थीसिस—किसी व्यक्ति की गवेषणा और विचारों का लिखित रूप, महानिबंध

थेरगाथा—वृद्धकथा, पाली में प्रसिद्ध कथाएं

दक्खिनी—दक्खिन के मुसलमान कवियों तथा लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिन्दवी का रूप

दलितवर्ग—हरिजन आदि, शोषित पीड़ित मज़दूर किसान आदि

दादूपंथ—संत दादू साहब का चलाया भक्ति संप्रदाय

दास्यभाव—दास की तरह उपास्य की भक्ति-भावना

दिवास्वप्न—अत्यन्त कल्पना का एक रूप

दिव्य—अलौकिक

दिव्या—अमानवीया नायिका

दिव्यानुभूति—रहस्यपूर्ण रसानुभूति

दीपक—एक अर्थालंकार

दीप्ति—एक अयत्नज अलंकार

दुःखवाद—गौतम बुद्ध का मत—सब दुख है

दुर्मल्लिका—चार अंक का एक उपरूपक

दुर्मिल सवया—एक तरह का सवैया छंद

दूतकाव्य—जैसे—मेघदूत, पवनदूत आदि

दूती—जो नायक से नायिका को मिलाये

दूती कर्म—दूती के कार्य

दृश्य-श्रव्य—काव्य के दो भेद, रंगमंच पर खेले जाने योग्य दृश्य, केवल पढ़ने सुनने से आनन्द देने वाला-श्रव्य

दृष्टान्त—भक्ति में उदाहरण, एक अलंकार

देवघनाक्षरी—३३ वर्णों का वृत्त (छंद)

देवनागरी—ब्राह्मी की उत्तराधि-

कारिणी लिपि, हिन्दी इसी में लिखी जाती है

देशकाल—कथा-साहित्य एक मुख्य तत्त्व

दैन्य—एक संचारीभाव, भक्ति में भक्त की अतिशय दीनता

दोहा—एक मात्रिक अर्धसम छन्द, जिसमें १, ३ पादों में १३-१३ मात्राएं तथा २,४ पादों में ११-११ मात्राएं होती हैं, इसे पहले दोहा-साखी भी कहते थे

द्रुतविलम्बित—(छन्द) इसमें प्रत्येक चरण में (न भ भ र) कुल १२ वर्ण होते हैं

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद—डायलेक्टिकल मैटीरियलिज़्म, यह वाद दैनिक अनुभवों तथा पर्यवेक्षणों पर आधारित है

द्विविधा—दो प्रकार की, दुबिधा

द्विवेदीयुग—महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से चला सुधार-वादी काल

द्वैतवाद—वह दार्शनिक विचार जिसमें जीव तथा ब्रह्म को पृथक् पृथक् माना जाता है

धर्मकथा—धार्मिक गाथा

धारणा—योग की एक क्रिया

धीरप्रशान्त— नायक का एक भेद

धीरललित—नायक का एक भेद

धीरा—(नायिका भेद)

धीरोद्धत—ढीठ नायक

ध्यान—योग की एक क्रिया

ध्येय—लक्ष्य, मुक्ति, ईश्वर-प्राप्ति, उद्देश्य

ध्वनि—आवाज, काव्य की आत्मा, व्यंग्य-प्रधान शैली

ध्वनिसंप्रदाय—संस्कृत के काव्यशास्त्र का सबसे मुख्य तथा प्रौढ संप्रदाय, यह संप्रदाय 'ध्वन्यालोक' नामक ग्रन्थ से चला

नचारी—शिवभक्ति के गीत

नज़्म—(उर्दू) कविता

नट—नाटक आदि में अभिनय करने वाले अभिनेता

नटी—अभिनेत्री

नफ़्स—सूफ़ीमत में आत्मा का नीचे दर्जे का भेद

नयी कविता—हिन्दी की सन् १९५१ के बाद की कविता

नवजागरण—ई० १३०० से १६०० तक योरुप में एक प्रबल आन्दोलन चला, जिसे रिनेसाँ कहते हैं। इस युग में पुरानी रूढियों

को तोड़कर कला का नये ढंग से विकास हुआ

नवोढा—नवविवाहिता स्त्री, एक नायिका भेद

नागरी—चतुरा, राधा, देवनागरी

नांदी—देवता ब्राह्मण, राजा आदि की स्तुति जो नाटक के आरंभ में की जाती है

नाजीवाद—हिटलर का चलाया उग्र राष्ट्र-जाति-वाद

नाटक—रूपक का सब से मुख्य भेद

नाटिका—उपरूपक का मुख्य भेद, इसमें गीत और नृत्य प्रधान होता है

नाट्यरासक—एक उपरूपक

नाट्य वृत्ति—नाटक रचना की चार वृत्तियां हैं — भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी

नाथ सम्प्रदाय गोरखनाथ से चला मत

नाद—अनाहत शब्द

नानकपंथ—गुरु नानक का चलाया एक निर्गुण संप्रदाय

नर्मसचिव—नायक का कामवासना-सचिव

नायक—नाटक का मुख्य पात्र

नायिका—नाटक की मुख्य स्त्री पात्र

निघंटु—वैदिक शब्दकोष, आयुर्वेदिक ओषधि शब्दकोष

निदर्शना—एक अर्थालंकार

निबन्ध—प्रबन्ध, एस्से (अं०)

निम्नमध्यवर्ग—दफ्तरों के बाबू क्लर्क आदि

निम्नवर्ग—शारीरिक श्रम से जीविका कमाने वाला समाज का वर्ग

निरंजन—माया से अलिप्त

निरर्थक—(शब्द-दोष), अर्थरहित या व्यर्थ के शब्द का प्रयोग

निराशावाद—आदर्शवाद से च्युत और यथार्थ के संपर्क में आए कलाकार की मनःस्थिति को प्रकट करने वाला वाद

निर्गुण संप्रदाय—हिन्दी में इसका अर्थ है निराकार की उपासना करने वाले कवियों का मार्ग

निरुक्ति—एक अलंकार, पदों का निर्वचन करना

निर्वाण—मुक्ति, मोक्ष

निष्कामभक्ति—जिस भक्ति में भक्त की कोई इच्छा न हो

निहालदे—एक लोक-कथात्मक गीत

नीतिकाव्य—जिस काव्य में समाज-नीति के उपदेश हों (इसमें रस की कमी आ जाती है)

नीर—सहस्रार से झरने वाला अमृत रस

नूर—ज्योति

नेपाली—नेपाल राज्य की भाषा

नौटंकी—स्वाँग, भगत आदि लोक-गीति-नाट्य

पंचचामर—'ज र ज र ज ग' इस प्रकार जहां १६ वर्ण हों वह छंद पंचचामर होता

पंजाबी—(भाषा) पंजाब की भाषा

पतत्प्रकर्ष—जहां कविता के एक वाक्य से दूसरे वाक्य में या पूर्व पद से उत्तर पद में उत्कर्ष कम हो जाए

पत्रगीति—गीतात्मक पत्र

पत्र—समाचार पत्र, चिट्ठी-पत्री

पद्धरि—(मात्रिक सम छन्द) प्रत्येक पाद में १६ मात्राएँ तथा अन्त में जगण

पदुमावत—जायसी का लिखा प्रेमाख्यानक काव्य

पद्य—गद्य का उलटा, छन्द-नियम में बंधी वाक्य-रचना

पनघट—शृंगार काव्य का एक विशेष संकेत स्थल

पनिहारिन—पानी भरने वालियों का गीत

परंपरावाद—पुरानी रूढ़ियों को अच्छा समझने का मत

परकीया नायिका—जो स्त्री किसी अन्य पुरुष से प्रेम संबन्ध की स्थापना करे

परदेसिया—परदेश में गये पति के विरह में गाये गये गीत

परपीडन—आत्म-पीडन का उलटा, सैडिज़्म (अं०)

परमार्थ—भक्ति, दान, परोपकार आदि परलोक के लिए किये गये कार्य

पराभक्ति—भगवान् के प्रति (संसार की आसक्ति छोड़कर) भक्ति

परिकर—(अर्थालंकार) जहां विशेषण किसी अभिप्राय से रखे जाएं

परिणाम—एक अर्थालंकार,नाटक की कथावस्तु की चरम परिणति

परिवृत्ति—(अर्थालंकार) जहां विनिमय का सुन्दर वर्णन हो

परिसंख्या — (अलंकार) किसी वस्तु का एक स्थान में निषेध करके किसी अन्य स्थान में होना बताया जाए और इसका विशेष अभिप्राय हो, जैसे—राम के राज्य में दंड नहीं मिलता, केवल यतियों के कर में ही मिलता है

परुषा—कठोर शब्दों वाली दूसरी काव्य वृत्ति या रीति

पर्यालोचना—चारों ओर से समीक्षा

पलना—पालना, झूला, हिंडोला

पलायनवाद—एस्केपिज़्म (अं०) यथार्थ से दूर भागने की वृत्ति

पवाड़ा—महाराष्ट्र में एक लोक-प्रसिद्ध छन्द जो प्रायः वीर रस में प्रयुक्त होता है

पँछाहीं—पश्चिमी हिंदी

पांचाली—तीसरी वृत्ति या काव्य-रीति

पात्र—काव्य, गद्यकाव्य या नाटक का मुख्य तत्त्व, चरित्र

पादाकुलक—१६मात्रा का एक छन्द

पाराती—प्रभाती, प्रभात के गीत

पालि—मध्यदेश की एक भारतीय भाषा, जिसमें बौद्धसाहित्य की रचना अधिक हुई

पाशुपत—एक अस्त्र, एक शैवसंप्रदाय

पिंगल—छन्दशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य, छन्द का भी पर्याय

पिंगल काव्य—ब्रजभाषा से पूर्व की काव्यभाषा में रचित काव्य

पुनरुक्ति—एक बात को व्यर्थ ही दुबारा कहना

पुनरुक्तवदाभास—(अलंकार) जहां शब्द की मिथ्या पुनरुक्ति प्रतीत हो, वास्तव में शब्द का अन्य अर्थ में प्रयोग हुआ हो

पुनरुत्थानकाल—हिन्दी में भारतेन्दु से इस काल का आरम्भ माना जाता है

पुराणकथा—पुराणों से ली गई कथा

पुष्टिमार्ग—वल्लभाचार्य का चलाया संप्रदाय, जिसमें प्रवृत्ति का निषेध नहीं, पर मानसिक निवृत्ति पर बल दिया गया है

पूँजीवाद—वह अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन के साधनों पर राज्य का नहीं, बल्कि व्यक्ति का अधिकार माना जाता है

पूर्वमध्यकाल—हिन्दी साहित्य का वह काल जिसमें ज्ञानमार्गी प्रेममार्गी, राम-भक्ति तथा कृष्ण-भक्ति कविता का विकास हुआ, सं० १३७५ से १७०० तक का समय

पूर्वरंग—नाटक से पूर्व रंगशाला में गीत आदि की आयोजना द्वारा सामाजिकों (दर्शकों) को आनन्द देने की क्रिया

पूर्वराग—विवाहपूर्व प्रेम, कोर्टशिप (अं०)

पूरबी—पूर्वी हिन्दी

पैगम्बर (फा०)—खुदा का संदेश-वाहक

पैंफ्लेट—(अं०) छोटा-सा निबन्ध या पुस्तिका

पैरोडी—(अं०) किसी शैली पर टीपी गई व्यंग्यगीति

पौराणिक—पुराणों का आधार लेकर बनाया गया काव्य नाटक आदि

प्रकरण—प्रसंग, रूपक का एक भेद

प्रकरणान्तर—प्रसंगान्तर

प्रकृतिवाद—प्रकृति-सबन्धी रोमांटिक कविता-धारा-संबन्धी वाद

प्रगतिवाद—साम्यवादी यथार्थवाद का साहित्यिक मत, प्रोग्रेसिविज़्म (अं०)

प्रगीतकाव्य—गेय और कवि की व्यक्तिगत प्रबल भावना का काव्य

प्रणयगीति—प्रेमगीत

प्रतिक्रियावादी—प्रगतिविरोधी, रि-ऐक्शनरी (अं०)

प्रतिध्वनि—ध्वनि की गूँज

प्रतिबिंब—रूप की प्रतिच्छाया

प्रतिवस्तूपमा—(अर्थालंकार) जहां साम्य वाले उपमेय-उपमान का साधारण धर्म भिन्न-भिन्न शब्दों में कहा जाए

प्रतीक—चिह्न, चिह्न शब्द, सिंबल (Symbol)

प्रतीप—उपमा का उलटा अर्थालंकार, जहां उपमान का वर्णन मुख्य बनाकर उपमेय का गुण कथन किया जाए

प्रतीयमाना उत्प्रेक्षा—जिस उत्प्रेक्षा अलंकार में 'मानो' आदि उत्प्रेक्षा-वाचक शब्द न हों

प्रत्यक्षवाद—इन्द्रियों से ग्राह्य वस्तुओं को मानने वाला मत

प्रत्यालोचना—आलोचना की आलोचना

प्रत्यावर्तन—अतीत या पुरातन को पुनः लौटाने की लहर

प्रत्युत्तर काव्य—गडरिये का गीत, जिसमें प्रेमी प्रेमिका के प्रश्नों का एकतरफा उत्तर देता है

प्रपत्ति—अनन्या भक्ति

प्रबन्ध काव्य—श्रव्य काव्य का एक भेद जिसमें कथा का क्रमिक विकास होता है और पद्यों का पूर्वापर-प्रसंग होता है

प्रबोधक काव्य—उपदेशमय काव्य

प्रभाववाद—इंप्रेशनिज़्म (अं०) इसमें कलाकार अपने अन्तःकरण पर झलके प्रभाव की हलकी-सी छाया प्रस्तुत करता है

प्रयाणगीत—युद्ध के लिए जाने वाले वीरों का प्रचलन गीत, मार्चिंग सौंग (अं०)

प्रयोगवाद—सन् १९४३ में हिन्दी कविता में चली एक नई धारा, ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरूकता

प्ररूढयौवना—(नायिका भेद) भरपूर यौवन वाली

प्रलय—सर्वनाश, एक सात्विक अनुभाव

प्रवक्ता—स्पोक्समैन (अं०) विशेष बोलने के लिए नियुक्त व्यक्ति, रेडियो नाटक में एक व्यक्ति

प्रवत्स्यत्पतिका—(नायिका भेद) जिसका पति परदेश जाने ही वाला है

प्रवर्तक—आरम्भ करने वाला (जैसे आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द थे), नाटक की प्रस्तावना का एक भेद

प्रवास—परदेश-वास

प्रवृत्ति—प्रवृत्त होने की क्रिया या स्वभाव

प्रवेश—पात्र का रंगमंच पर आना

प्रशस्ति—गौरवगान

प्रसादगुण—सरलता का काव्यगुण

प्रस्तावना—नाटक की भूमिका

प्रस्तुत—जिसका वर्णन किया जा रहा हो

प्रस्थानक—दो अंकों तथा दस नायकों वाला एक उपरूपक

प्रहसन—रूपक का वह भेद जिसमें किसी व्यक्ति या मत की हँसी उड़ाई जाती है

प्रहेलिका—पहेली, बुझारत

प्राकृत—भारत की मध्यकालीन भाषा

प्राकृतवाद—नेचुरलिज़्म (अं०)

प्रागैतिहासिक युग—लिखित इतिहास से पहले का युग, प्रीहिस्टोरिक एज (अं०)

प्राणायाम—साँस चढ़ाकर ध्यान लगाना

प्रासंगिक वस्तु—दृश्य काव्य में प्रसंग-वश आई गौण कथा-वस्तु

प्रेंखण—एक उपरूपक

प्रेममार्गी—सूफी साधक कवि, जैसे जायसी

प्रेमलक्षणा भक्ति—जहाँ भक्ति में प्रेम की प्रधानता हो

प्रेमाख्यान काव्य—जिन काव्यों की प्रेम कहानी के आधार पर रचना हुई हो (इनमें प्रायः लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम की प्रतीति कराई जाती है)

प्रेयस्—प्रेय, श्रेयस् का उलटा, वे कार्य जो प्रिय लगें परन्तु परिणाम में कल्याणकारी न हों

प्रोषितपतिका—(नायिका भेद) जिस नायिका का पति परदेस गया हुआ हो

प्रौढ़ा—(नायिका भद) पूर्ण विकसिता चतुरा वाक्कुशला नायिका

प्लाट—कथावस्तु

फलागम—रूपक की पाँच अवस्थाओं में से अंतिम अवस्था

फ़ारसी—ईरानी भाषा

फासिज्म—कट्टर राष्ट्रवाद, एक तरह का अधिनायकवाद

फिक्शन—कथा साहित्य

फ्लैशबैक—स्मृति दृश्य

बंकनाल—शंखिनी नाड़ी

बँगला—बंगाल की भाषा

बंध—चित्रबन्ध काव्य

बघेली—बघेलखंड की भाषा

बधावा—बधाई गीत

बन्ना—वर, विवाहगीत

बन्नी—वधू

बरवै—मात्रिक अर्धसम छंद जिसमें १, ३ पादों में १२-१२ मा० तथा २, ४ में ७-७ मात्राएं होती हैं

बहिर्मुखी—अन्तर्मुखी का उलटा, वह प्रवृत्ति जिसमें बाहरी टीप-टाप पर अधिक ध्यान हो

बहुदेवतावाद—नाना देवी-देवताओं को मानना

बाउल—बंगाल का एक संप्रदाय, जिनके अनुयायी गीत गाकर माँगते हैं

बारहमासा—एक तरह का लोकगीत जिसमें चैत्र, वैशाख आदि महीनों में प्रकृति की नाना स्थितियों और विरही की मन स्थितियों का वर्णन होता है।

बावरी—बौरी, पगली

बावरी पंथ—यू०पी० के गाजीपुर जिले में बावरी साहिबा से यह पंथ चला, इसमें अजपा जाप तथा व्यक्तिगत सदाचार पर बहुत बल दिया जाता है

बासोख्त (उ०)—उर्दू की वह कविता जिसमें प्रेमी अपनी प्रेमिका को उलाहना देता है

बिन्दु—दृश्यकाव्य की पाँच अर्थ प्रकृतियों में से द्वितीय

बिंदु—नाद रूप है ईश्वर का और बिन्दु रूप है जीव का

बिंबविधान कल्पना करना

बिदेसिया—परदेसी प्रियतम के विरह में गाए जाने वाले गीत

बिहारी (भाषा)—बिहार की भाषा

बीज—रूपक की पाँच अर्थप्रकृतियों में से पहली

बीजाक्षर—मन्त्र को किसी एक अक्षर में इकट्ठा करके उसी का जाप करना

बीभत्स रस—इसका स्थायीभाव घृणा या जुगुप्सा है, इसमें मांस, वसा श्मशान आदि का वर्णन रहता है

बुत—मूर्ति

बुत-परस्त—मूर्ति-पूजक

बुतशिकन—मूर्तिभंजक

बुद्धिवाद—बुद्धि से समझ में आनेवाली बातों को मानने वाला वाद, इसमें प्रायः इन्द्रियों से परे की बातों को नहीं माना जाता

बूर्जुआ (फ्रां०)—पूँजीपतियों का उच्चवर्ग

बैलेड (अं०)—नृत्यगीत

बैसवाड़ी—उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, फतेहपुर—इन जिलों की बोली

बोधिसत्व—बुद्ध के अवतार

बोलशेविक—रूस की साम्यवादी क्रान्तिकारी पार्टी, जिसने ज़ार का शासन समाप्त किया

ब्रजभाषा—मथुरा-आगरा आदि में प्रचलित हिन्दी का रूप

ब्रह्मरंध्र—कुंडलिनी का जहां सिर है उससे ऊपर मस्तिष्क में एक छिद्र है (हठयोग)

ब्रह्मवाद—ब्रह्म सत्य ; जगत् मिथ्या, यह मत

ब्रह्मसमाज—एक सुधारक संप्रदाय, जिसकी स्थापना राजाराम मोहन राय ने की थी

ब्रह्मानन्दसहोदर—काव्य रस को ब्रह्म की प्राप्ति से मिलने वाले रस के समान बताया गया है

भक्ति—प्रभु भजन की क्रिया। ईश्वर-प्राप्ति के चार मार्ग—कर्म, ज्ञान, योग और भक्ति

भक्तिकाल—हिन्दी साहित्य के इतिहास का पूर्वमध्यकाल, संवत् १३७५ से १७०० तक, कबीर, जायसी, तुलसी, सूर और मीरा आदि इसी काल में हुए

भयानक रस—इस रस का स्थायी-भाव भय है, इस रस के आश्रय स्त्री, नीच स्वभाव व्यक्ति, बालक आदि हो सकते हैं

भागवत धर्म—विष्णु भगवान् या उस के किसी अवतार की भक्ति को मानने वाला संप्रदाय, वास्तव में सभी सगुणोपासक इसके अन्तर्गत आते हैं

भाण—इस रूपक में एक ही पात्र होता है

भाणिका—उपरूपक का एक भेद, इसमें केवल एक अंक होता

भारती वृत्ति—चौथी नाट्यवृत्ति

भारोपीय—भारत-यूरोपीय भाषा

भाव—मानसिक अवस्था की अभिव्यक्ति

भावनाट्य—मेलोड्रामा (अं०) जिस नाटक में भावगीतों का अभिनय हो

भावपक्ष—काव्य का अन्तरंग, काव्य की आन्तरिक विशेषताएं, कविता की आत्मा, कविता के भाव-विचार रस आदि

भाव-विरोध—जहां एक भाव के वर्णन में विरोधी भाव लाया जाये, वहां काव्य में यह वर्णन-दोष होता है

भावशबलता—एक भाव के बाद दूसरे भाव का आना, दूसरे के बाद तीसरे का—इस प्रकार जहाँ भावों की शृंखला हो; परन्तु दूसरा भाव पहले को दबाकर, तीसरा भाव दूसरे को दबाकर आए, इस प्रकार भाव-चमत्कार उत्पन्न हो

भावशान्ति—पहले से विद्यमान भाव की अकस्मात् चमत्कार-पूर्ण शान्ति होना

भावसन्धि—जहां एक भाव के बाद दूसरा भाव आये और दोनों के बीच चमत्कारपूर्ण स्थिति हो

भावाभास—अनुचित स्थान पर भाव-प्रकाशन, जैसे शत्रु की सराहना शत्रु करे या वेश्या लजाए तो वहां भाव फीका पड़ेगा

भावोदय—एक भाव को शान्त करके दूसरे भाव के उदय होने से चमत्कार होना .

भाषण—वक्तृता, लेक्चर (अं०)

भाषणकला—वक्तृत्वकला

भुजंगी—एक वर्ण छन्द जिसमें तीन यगण हर एक चरण में हों

भुजंगप्रयात—जहां चार यगण प्रत्येक चरण में हों

भुजरियाँ—गेहूं या जौ की बालें जो हरियाली तीजो के उत्सव पर नदी आदि में सिराई जाती हैं, तीजो के गीत

भूत—प्राणी, पंचमहाभूत, पृथ्वी जल तेज वायु आकाश, भूत—(प्रेत) योनि विशेष

भूदान आन्दोलन—विनोबा भावे द्वारा चलाया भूमि-हीनों को भूमि दिलाने का शान्तिमय आन्दोलन

भोजपुरी—पूर्वी उत्तरप्रदेश तथा बिहार के विस्तृत भूभागों में बोली जाने वाली हिन्दी की शाखा

भौतिकी—विज्ञान का प्रथम अंग, फिज़िक्स (अं०)

भौतिकवाद—पदार्थवाद, सांसारिक इन्द्रियग्राह्य पदार्थों को ही मानना

भ्रम—भ्रान्ति, रस्सी में साँप का भ्रम

भ्रमर—भौंरा, रसिक व्यक्ति, नायक, ऊधो

भ्रमरगीत—कृष्ण भक्ति का एक अंग, उद्धव-गोपी संवाद। सूर, नंददास, आलम और व्रजरत्नदास का भ्रमरगीत प्रसिद्ध है; पर वास्तव में उत्तम सूर और नंददास का ही है

भ्रमरगुफा या गुहा—ब्रह्मरन्ध्र

भ्रान्तिमान्—(अर्थालंकार) उपमेय में उपमान का भ्रम होना

मंगलपाठ—नांदी

मंगलाचरण—काव्य या किसी भी ग्रन्थ के आदि में देवता, गुरु आदि की स्तुति

मंडन—समर्थन, कृष्णभक्ति में सखी द्वारा नायिका (राधा) को सजाना

मंत्र—वेद का एक पद्य, गुरु-मंत्र, गुप्त सलाह, मन्त्री की दी हुई सलाह

मंदाक्रान्ता—(वर्णवृत्त) म भ न त त ग ग १७ वर्ण का छन्द

मकड़ी—जीव जो अपने चारों ओर मायाजाल बुन लेता है

मगही—मागधी अपभ्रंश से पैदा हुई बोली जो पटना और गया में बोली जाती है

मणि—वज्र, रत्न, माथेमणि-सौभाग्य

मणिपूर—हठयोग में दूसरा चक्र

मति—बुद्धि, मत, सलाह, एक संचारी भाव

मत्तगयन्द सवैया—मत्र में प्रसिद्ध सवैया, इसमें सात भगण और दो गुरु होते हैं

मद—धन यौवन शक्ति विद्या कुल आदि का अभिमान, एक सचारी भाव

मदन—कामदेव

मदनगुपाल—श्याम (कृष्ण)

मदिरा—एक सवैया

मधुमती भूमिका—रसास्वादन की वह सात्विक अवस्था जिसमें आस्वादक अपनी सत्ता खोकर तल्लीन हो जाता है

मध्यकाल—सं० १३७५ से १९०० तक का हिन्दी साहित्य का समय

मध्यमा—वह नायिका जो प्रेम करने पर प्रियतम से प्रेम करे, अवज्ञा करने पर अवज्ञा करे

मध्यवर्ग—मिडिल क्लास के लोग, जो सामन्तवादी अर्थ-व्यवस्था में नौकरी या दलाली द्वारा गुजारा कर हैं। मार्क्सवादी इसे सबसे अधिक घृणा की दृष्टि से देखता है

मनोविकार—मन के रोग, मानसिक परिवर्तन

मनोविश्लेषण—मानस के विभिन्न अंशों की विस्तृत व्याख्या—फ्रायड, जुंग और एडलर इसके मुख्य आचार्य माने जाते हैं, मनोविश्लेषण का संसार के साहित्य तथा आलोचना पर गहरा प्रभाव पड़ा है

मरसिया—शोकगीत, एलेजी (अं०)

मराठी—महाराष्ट्र की भाषा

मर्यादापुरुषोत्तम—राम

मलयालम—द्रविड गोत्र की वह भाषा जो मलाबार (केरल) में बोली जाती है

मसनवी—कथा काव्य की एक शैली जिसमें शेरों की संख्या तथा भावों का कोई बंधन नहीं होता। जायसी का पद्मावत इसी शैली में लिखा गया है

महाकाव्य—पद्य में विस्तृत कथात्मक काव्य जिसमें जीवन के विविध अंगों और समाज का चित्रण हो, कथानक उदात्त व्यक्ति के चरित्र से संबद्ध हो और अवान्तर कथाएं भी हों, साथ ही देश-काल की झलक हो—रामायण, महाभारत, पृथ्वीराज - रासो, रामचरितमानस, पद्मावत, प्रियप्रवास कामायनी, साकेत, कृष्णायन आदि महाकाव्य हैं

महायान—बुद्ध धर्म की पूर्वी शाखा,
मात्रा—परिमाण, ओषधि की खूराक छन्द शास्त्र में ध्वनि के उच्चारण की इकाई—मत्ता, मत्त, कला भी इसी के नाम हैं—मात्रा के दो भेद गुरु और लघु
माधुर्य—एक काव्य गुण
मानवीकरण—अमानव में मानव गुण का आरोप, जैसे 'संध्या-सुन्दरी'
मानस—मन
मारिफ़त—ईश्वरीय, ईश्वरभक्ति में भक्त की दास्य अवस्था
मार्क्सवाद—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्स का पदार्थवाद जिसमें पदार्थ को प्रधान माना गया है और प्रत्यय (चेतना) को पदार्थ से उत्पन्न
मालिनी—न न म य य—१५ वर्णों का छन्द
मालोपमा—जहां एक उपमेय के अनेक उपमान हों (अर्थालंकार)
माहिया—पंजाबी का विरह-पूर्ण लोक गीत
मिश्रवस्तु—नाटक में प्रख्यात के साथ उत्पाद्य कथावस्तु का मिश्रण
मिसरा(उ०)—छन्द का एक चरण
मीमांसा—गवेषणा, तर्कपूर्ण विचार, मीमांसा एक दर्शनशास्त्र भी है
मीलित—उपमेय उपमान का गुणों की एकता के कारण परस्पर मिलकर पृथक न दिखाई देना 'जुवति जोन्ह में मिलि गई'
मुकरी—कहमुकरनी, पहेली का एक प्रकार
मुक्तक काव्य—प्रबन्ध काव्य के विपरीत जिस काव्य का प्रत्येक पद्य स्वतन्त्र हो, उसमें पूर्वापर प्रसंग न हो
मुग्धा—जिस नायिका के शरीर में नवयौवन का प्रथम संचार हुआ हो
मुद्रा—मोहर, अंगूठी, हठयोग की मुद्रा, एक अर्थालंकार
मुरली—श्याम की बंसरी
मूलकथावस्तु—मुख्य (आधिकारिक) कथावस्तु
मूलप्रवृत्तियाँ—आदिम वृत्तियां, इंस्टिंक्ट्स (अं०)
मूलाधार—हठयोग में पहला चक्र
मूषक—चंचल मन का प्रतीक
मेंढक—उछलकूद करने वाला मन
मैथिलकोकिल—कवि विद्यापति
मैथिली—मिथिला-दरभंगा की बोली
मैथुन—संभोगक्रिया

मोह—सांसारिक वस्तुओं या व्यक्तियों की ममता, एक संचारी भाव जिसमें बेहोशी आ जाती है

मोहन—प्राणप्रिय, श्याम

यथार्थवाद—आदर्शवाद के विपरीत वस्तु को उसके हूबहू रूप में देखना और वर्णन करना, यह वाद कल्पना की उड़ानों के विरुद्ध है

यमक—(शब्दालंकार) जहाँ भिन्न आकार वाले दो ऐसे शब्द हों जो एकार्थक प्रतीत हों पर दोनों का अर्थ भिन्न-भिन्न हो

युक्ति—योग की युक्ति, एक अर्थालंकार, प्रियमिलन की युक्ति (उपाय)

योग—चित्तवृत्ति का निरोध, प्रियतम से संयोग,

योगमाया—विष्णु की माया भगवती जिसने संसार को सम्मोहित कर रखा है

योगी—योगाभ्यासी, नाथ संप्रदाय का कनफटा साधु

यौनवर्जना—काम-उपभोग में किसी तरह की मनाही

यौनविकृति—कामसंबन्धी अस्वाभाविक अवस्था

रंगमंच—स्टेज (अं०)

रचना—साहित्य की किसी विधा की कृति—कविता, काव्य, महाकाव्य, नाटक आदि

रचनात्मक—कर्तृत्वशक्ति वाला

रति—प्रेम, अनुरक्ति, शृंगार रस का स्थायीभाव

रस—विभाव अनुभाव संचारी भावों के योग से उत्पन्न ब्रह्मानन्द सहोदर आनन्द जो काव्य के अध्ययन दर्शन आदि से मिलता है। शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत, शान्त ये नव रस माने गये हैं। कुछ विद्वान् वात्सल्य को भी मानते हैं

रसराज—शृंगाररस

रससंप्रदाय—रसवाद

रसाभास—जहां उचित स्थान पर रस की योजना न हो

रसाभिव्यक्ति—रसनिष्पत्ति

रसिया—रसिक श्याम या कृष्ण, ध्रुपद घराने का एक संगीत

रहस्यवाद—जीवात्मा की उस प्रवृत्ति का काव्यमय प्रकाशन जो उसमें परमात्मा से मिलन की उत्कंठा के कारण रहती है

राजस्थानी—राजस्थान की भाषा

राधावल्लभी संप्रदाय—गोसाईं हित-हरिवंश का चलाया कृष्णभक्ति का एक पंथ

राम—दशरथ सुत, ईश्वर

राम कथा—रामचन्द्र की कथा

राम कहानी—अपनी कहानी, आत्म-कथा

राम काव्य—वाल्मीकि की रामायण से लेकर आज के साकेत काव्य तक का सारा रामचरिताश्रित काव्य

राष्ट्रीय गीत — राष्ट्रगीत, नेशनल सौंग (अं०)

राष्ट्रीयकविता—देशभक्ति की कविता

रास—रासलीला

रासधारी—रास रचाने वाले

रासो—वह काव्य जिसमें राजा की शोभा का वर्णन हो, यह शब्द राज-सूय, रसायन या रहस्य से बना है

रिव्यू—(अं०) पत्र-पत्रिकाओं में की गई पुस्तकों की समीक्षा

रीति—ढंग, काव्य-शैली, वृत्ति, काव्यशास्त्र संबन्धी सब नियम

रीतिकाल—संवत् १७०० से १९०० तक का हिंदी साहित्य का समय

रूपक—एक अलंकार, जहां उपमेय को उपमान का रूप दिया जाता है, जैसे—मुखचंद्र

रूपक कथा-काव्य—एलेगरी (अं०), जहां काव्य में पात्र किन्हीं भावों के प्रतीक रूप में आते हैं

रूपगर्विता — (नायिका) जिसे अपनी सुन्दरता का बहुत अभि-मान हो

रूह—(फ़ा०) आत्मा

रेखता—ऐसी कविता जिसमें फ़ारसी और हिन्दी का मिश्रण हो, ऐसी बोली जिसमें हिन्दवी और फ़ारसी का मिश्रण हो (बाद में इसके लिए उर्दू शब्द प्रसिद्ध हो गया)

रोपनी—वर्षा में धान बीजने के समय के गीत

रोमांच—रोंगटे खड़े होना, एक सात्विक अनुभाव

रोमांटिसिज़्म—स्वच्छन्दता-वाद, यह क्लासिसिज़्म के विरुद्ध होता है, इसमें पुरानी रूढ़ियों को नहीं स्वीकार किया जाता

रोला—प्रसिद्ध मात्रिक छन्द, इसमें २४ मात्रा और ११, १३ पर यति होती है

रौद्र—एक रस जिसका स्थायी भाव क्रोध है

लक्षक—वह शब्द जिसका अर्थ लक्षणा शक्ति से जाना जाए

लक्षिता—वह नायिका जिसका परपुरुष से प्रेम प्रकट हो जाए

लघु उपन्यास—नावेलेट (अं०)

लघु कथा—आख्यायिका, गल्प

लय—ताल (द्रुत, मध्यम और विलंबित)

ललित कला—फाइन आर्ट (अं०)

लाटानुप्रास—शब्द या वाक्य की आवृत्ति—शब्दों के अर्थ भी एक—परन्तु अन्वय करने पर तात्पर्य में भेद

लावनी—एक छन्द, संगीत में एक उपराग, लावनी बाजों के दंगल होते हैं

लिटरेचर (अं०)—साहित्य

लीला—भगवान् की अपार लीला

लेख—निबंध

लेश—अंश

लोक—तीन लोक, लोग, जनता, ग्राम जनता

लोकगीत—जन साधारण के गीत

लोकयात्रा—निर्वाह, आजीविका, संसार यात्रा (जीवन)

लोकपरम्परा—लोकरूढि, पुराने चले आए रीति-रिवाज

लोकमानस—जनमानस

लोरी—शिशुओं को सुलाने के समय गुनगुनाये जाने वाले गीत

लौ—लिव, लगन, चाह, चित्तवृत्ति

लौकिक छन्द—जिन छन्दों का प्रयोग वेदों में नहीं हुआ

वक्रता—कविता शैली में विदग्धता और चारुता

वक्रोक्ति—शब्दालंकार, जहां श्रोता कंठ-ध्वनि विकार से या श्लेष से वक्ता के अर्थ से भिन्न अर्थ ग्रहण करे

वज्रयान—बौद्धधर्म का एक तान्त्रिक रूप

वटगमनी—एक प्रकार के मैथिली लोकगीत

वर्गयुद्ध—वर्ग-संघर्ष

वर्गहीन समाज—साम्यवादी समाज

वर्ण—रंग, अक्षर

वर्णवृत्त—जिन छन्दों में वर्णों की गणना और गुरु लघु आदि का नियम हो

वसंततिलका—(छन्द) जहां 'त भ ज ज ग ग, हों

वस्तुसत्य—यथार्थ

वाङ्मय—साहित्य

वाचक—पाठक

वात्सल्य—दसवाँ रस

वाममार्ग—तान्त्रिक मत के दक्षिणाचार के विपरीत संप्रदाय जिसमें मद्य, माँस, मीन, मुद्रा और मैथुन ये पाँच साधन माने जाते थे, इनमें भैरवी चक्र होते थे, जिनमें मनमाना व्यभिचार होता था।

वासकसज्जा—(नायिका) प्रियमिलन के निश्चय से शरीर तथा सेज सजाने वाली नायिका।

विकल्प—यह करूँ या वह, इस तरह की दुविधा, एक अर्थालंकार—'शिवा को सराहूँ कै सराहूँ छत्रसाल को'।

विकासवाद—लामार्क डारविन आदि द्वारा स्थापित सिद्धान्त।

विघटन—संघटन का विपरीत, इकाइयों को अलग-अलग करना।

विचार—बुद्धि के तर्क-वितर्क।

विदूषक—नायक का हँसोड़ सहायक

विनोक्ति—(अर्थालंकार) जहाँ 'विना' शब्द के द्वारा चमत्कार लाया गया हो।

विप्रलंभ—वियोग शृंगार।

विबोध—एक संचारी भाव।

विभव—वैभव, अवतार।

विभ्रम—अप्रस्तुत व्यक्तियों या पदार्थों को देखना (वहम)।

विरेचक सिद्धान्त—अरिस्टॉटल का चलाया सिद्धान्त—इसमें बताया गया कि दुःखान्त से आनन्द इस कारण मिलता है कि उससे हमारा शोक बाहर वह निकलता है और हृदय स्वच्छ हो जाता है।

विरोधाभास—(अर्थालंकार) जहाँ विरोध-सा प्रतीत होता हो, पर वास्तव में विरोध न हो।

विवेचना—गुण-दोष या स्वरूप की छानबीन।

विशिष्टाद्वैतवाद—कारण ब्रह्म और कार्य ब्रह्म की एकता का सिद्धान्त, रामानुज इसके प्रवर्तक और रामानन्द उत्तर भारत में प्रचारक थे.

विश्लेषण—किसी रचना के आन्तरिक तत्त्वों को पृथक्-पृथक् करके समझाना।

विषयप्रधान काव्य—जिस काव्य में जगत् का वर्णन मुख्य हो।

विषयिप्रधान काव्य—जिसमें कवि का स्वात्म मुख्य हो

विष्कंभ—दो अंकों के बीच में आने

वाला नाटक का अंश, जिसमें हो चुके या आगे होने वाले कथांश को बताया जाता है।

विस्मय—अद्‌भुत रस का स्थायी भाव, रहस्यवाद की पहली स्थिति।

वीथी—गली, पंक्ति, रूपक का एक भेद जिसमें दो या एक ही पात्र हो।

वीप्सा—भय, घृणा, हर्ष आदि को प्रकट करने के लिए जहाँ शब्द की द्विरुक्ति हो।

वीर—आल्हा छंद।

वीर काव्य—योद्धाओं के यशोगान का काव्य।

वीर पूजा—वीर या आदर्श व्यक्ति की पूजा।

वीर रस—उत्साह इसका स्थायी भाव है

वेदान्त—वेदसार, उपनिषद्, अद्वैतवाद।

वैदर्भी—प्रथम काव्य रीति।

वैदिक—वेद-सम्बन्धी।

व्यंजना शक्ति—अकथित अर्थ को बताने वाली सबसे उत्तम शब्द शक्ति।

व्यक्तिवाद—इंडिविजुअलिज्म, अपने 'मैं' को ही केन्द्र मानकर हर एक बात को सोचना और हर एक काम को करना।

व्यतिरेक—(अलंकार) जहाँ उपमेय का उपमान से या उपमान का उपमेय से उत्कर्ष कहा जाए।

व्याघात—बाधा, एक अर्थालंकार।

व्याजस्तुति या व्याजनिन्दा—(अर्थालंकार) जहाँ स्तुति के बहाने निन्दा या निन्दा के बहाने स्तुति की जाये।

व्याधि—रोग, एक संचारी भाव, शारीरिक ताप या मनःसंताप।

व्यायोग—रूपक का एक भेद, जिसमें स्त्री पात्र कम; पुरुष अधिक हों, एक ही अंक हो।

व्याहतत्व—एक अर्थदोष, पहले किसी का उत्कर्ष या अपकर्ष दिखाकर फिर उसके विपरीत कथन।

व्रीडा—लज्जा, लज्जा संचारीभाव।

शंका—एक संचारीभाव, दूसरे की कठोरता या अपनी त्रुटि से अपने अनिष्ट की आशंका।

शकार—राजा का साला (नाटकों में एक मूर्ख पात्र)।

शक्ति—संस्कार रूप से वर्तमान काव्य-रचना की शक्ति।

शठ—जो नायक किसी अन्य नायिका में अनुराग रखे; परन्तु सामने

उपस्थित नायिका में झूठमूठ अनुराग दिखाये।

शतक—मुक्तक सौ पद्यों का संग्रह।

शबरी—भीलनी।

शब्ददोष—पदांशगत, पदगत और वाक्यगत तीन प्रकार के शब्द दोष होते हैं।

शब्दशक्ति—शब्द के अर्थ का बोध कराने वाला व्यापार।

शब्दालंकार—जहाँ काव्य में संगीत के आधार पर शब्द चमत्कार हो।

शरीरवाद—अति यथार्थवाद का वह रूप जिसमें शील परम्परा का पालन अवांछनीय समझा जाता है।

शान्त—काव्य का नौवाँ रस, इसका स्थायीभाव शम, तप आदि; विभाव काम क्रोध आदि का अभाव, और मति आदि संचारी भाव हैं।

शाक्तमत—शक्ति की उपासना करने वालों का पंथ।

शार्दूलविक्रीडित— (वार्णिक छन्द) म, स, ज, स, त, त, ग और १२, ७ वर्णों पर यति।

शालिनी—(वर्णवृत्त) म त त ग ग

शास्त्रीयवाद—पुराने शास्त्रों के नियमों का कठोरता से पालन करते हुए कविता करना।

शिक्षा—सखी की सीख (मान मनौती आदि)।

शिखरिणी—(वर्णवृत्त) य म न स भ ल ग।

शिल्पक—(उपरूपक) चार अंक, चार वृत्तियाँ, शान्त और हास्य के सिवा अन्य सब रस होते हैं।

शिष्य—काव्य शास्त्र का अधिकारी व्यक्ति।

शुक्लाभिसारिका—(नायिका भेद) चाँदनी रात में अभिसार करने वाली नायिका।

शुद्धतावाद—प्योरिज्म या प्यूरिटनिज्म

शुद्धाद्वैतवाद—वल्लभाचार्य का अद्वैत संबन्धी मत, इसमें ब्रह्म को माया संबन्ध से रहित अतः शुद्ध माना जाता है।

शून्य—विष्णु के सहस्रनामों में से एक नाम, वेदान्त में ब्रह्म का एक वाचक।

शून्यवाद—बौद्धमत के महायान का दार्शनिक सम्प्रदाय।

शृंगारकाल—हिन्दी साहित्य का रीति काल (संवत् १७०० से

१६०० तक) ।

शृंगाररस—रसराज, काव्य और नाटक का प्रथम रस, रति इसका स्थायी भाव है ।

शृगाल—ज्ञानवान् मन का प्रतीक 'उलटि सियार सिंह को खायो'—कबीर ।

शेर—उर्दू कविता का कोई एक छंद बहुवचन 'अशआर' ।

शैली—रीति, काव्य की पद-रचना का विशेष ढंग, स्टाइल (अं०)

शैवमत—शिव के उपासकों का पंथ

शैवागम—शैव, पाशुपत, कालायन और कापालिक, इन चार मतों के ग्रन्थ, इनकी सं० २०० है ।

शोक—करुण रस का स्थायीभाव ।

शोभा—अयत्नज अलंकार ।

श्रम—तेंतीस में से एक संचारीभाव । रति (संभोग) या मार्ग चलने आदि से होने वाला खेद ।

श्रव्यकाव्य—जिस काव्य में कवि स्वयं कथा का वर्णन करे, दृश्य के विपरीत ।

श्रव्य नाटक—रेडियो नाटक का एक प्रकार ।

श्रावकयान—हीनयान का ही एक अच्छा नाम ।

श्रुतिकटु—पददोष, कर्ण कटु शब्दों का प्रयोग ।

श्रुत्यनुप्रास — (शब्दालंकार) कण्ठ-तालु आदि से किसी एक ही स्थान से उच्चारण किये जाने वाले शब्दों की आवृत्ति ।

श्रेणीसाहित्य—समाज के किसी एक वर्ग का साहित्य ।

श्लेष—जहाँ एक शब्द के कई अर्थ निकलें और वे अर्थ अभिलषित हों ।

श्लेषवक्रोक्ति— (एक शब्दालंकार) जहाँ श्लेष के कारण वक्रोक्ति अलंकार हो ।

श्लोक—यश, संस्कृत का कोई पद्य ।

षड्दर्शन—न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा ।

षोडशोपचार — मूर्ति-पूजा के सोलह विधान ।

संकटकाल—व्यक्ति के जीवन में जब नीति-अनीति और जीवन-मरण में से एक को चुनने का समय आ जाये, साहित्य-समीक्षा में पूँजीवाद के कारण संस्कृति की अवनति का काल ।

संकर—जब एक पद में नीरक्षीर न्याय से एक से अधिक अलंकार

मिले हुए हों, इसके तीन भेद अंगांगिभाव संकर, एकवाचकानुप्रवेश संकर, सन्देहसंकर।

संक्रमण—ऐसा परिवर्तन, जिसमें पुराने का भी अंश रहता है और नया भी आता है

संक्रमणकाल—जब साहित्य नया रूप धारण कर रहा होता है, वह समय।

संख्यासंकेत—छंद शास्त्र में वर्णसंख्या के स्थान पर प्रयोग में आने वाले शब्द, जैसे भुज नेत्र पक्ष, ये दो की संख्या के सूचक हैं।

संगति—सामंजज्य, विरोध का अभाव, सौन्दर्य बोध की तृप्ति

संगीत—ध्वनि या नाद से आनन्द देने वाली कला, गीत या वाद्य की कला।

संगीतरूपक—गीतों की प्रधानता वाला एक रेडियो रूपक।

संघर्ष—पश्चिमी नाट्यशास्त्रों के अनुसार नाटक की वह स्थिति जिनमें विरोधी शक्तियों का अंतिम बार संघर्ष होता है।

संचारीभाव—निर्वेद, ग्लानि आदि ३३ संचरण करनेवाले भाव, संचारीभाव को व्यभिचारीभाव भी कहते हैं।

संतमत—साधु, महात्मा, निर्गुणमत के प्रवर्तक कबीर आदि का चलाया मार्ग।

सन्तुलन—सामंजस्य, संगति, बैलेंस (अं०)

संदर्भसाहित्य—वह साहित्य जिसमें सामान्यतया साहित्य में आई गूढ़ बातों का स्पष्टीकरण हो।

संदेशकाव्य—विरह सन्देश की कविता का काव्य, इसमें भावानुभूति की तल्लीनता होती है।

संदेहवाद—वह वाद है जिसमें किसी भी प्रकार के विश्वसनीय ज्ञान को असम्भव माना जाए।

संधि—व्याकरण में अक्षरों के मेल से होने वाला विकार, रूपक (दृश्य काव्य) में प्रकृति और अवस्था का मेल।

संबोधन गीति—गीति-काव्य का वह रूप जिसमें प्रेमी या प्रेमिका को संबोधन करके हृदय के भावों के उद्‌गार कहे गये हों।

संभोग शृंगार—जहाँ प्रेमी प्रेमिका दर्शन, स्पर्शन, संभाषण या शरीर सम्बध से आनन्द उपलब्ध करें, ऐसा काव्य-प्रसंग (इसे संयोग

शृंगार) भी कहते हैं।

संवेदना—ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूति।

संश्लेष–विश्लेषण का विपरीत शब्द।

संसृष्टि—एक पद्य या वाक्य में एक से अधिक शब्दालंकारों या अर्थालंकारों का तिल-तण्डुल न्याय से मिलना।

संस्कृत—आर्य परिवार की एक प्राचीन भाषा, दो रूप—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत।

संस्कृत साहित्य या वाङ्मय—वेदों से लेकर आज तक संस्कृत भाषा में लिखे गये ग्रन्थ।

संस्कृति—सामाजिक परम्परा से प्राप्त संस्कार और व्यवहार, कल्चर (अं०), पाश्चात्य संस्कृति या पश्चिमी संस्कृति=यूरोपीय संस्कृति।

संस्मरण—आत्मचरित का वह रूप जिसमें किसी अन्य के चरित्र को प्रधानता देकर उसकी विगत बातों का उल्लेख हो।

सकामभक्ति—कामना सहित प्रभु-भजन, ध्यान आदि करना।

सखी—गोपी, राधा, नायिका की सहचरी।

सखी भाव—गोपी के रूप में भक्त द्वारा उपासना।

सखी संप्रदाय—निम्बार्कमत की एक शाखा, इस की संस्थापना स्वामी हरिदास ने की थी, इस में भक्त सखी की वेशभूषा धारण कर लेते थे।

सगुण धारा—हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की एक विशेष शाखा।

सगुण संप्रदाय—वे सब संप्रदाय जो साकार की उपासना को स्वीकार करते हैं।

सट्टक—उपरूपक का वह भेद जिसमें अद्‌भुत रस प्रधान हो और प्रवेशक, विष्कंभक आदि का अभाव हो।

सतनामी संप्रदाय—एक भक्त पंथ जिसके अनुयायी आपस में मिलने पर 'सत्तनाम' कहते हैं।

सतसई—सात सौ मुक्तक पद्यों की एक ही कवि की रचना।

सत्याग्रह—गाँधी जी का प्रचारित शब्द जिस में सत्य के आग्रह के लिए कोई व्यक्ति विरोधी के हाथों कष्ट सहन करता है, पर उसे सत्य पर चलाने का प्रयत्न नहीं छोड़ता, अहिंसा इसका मुख्य अंग है।

सबद—शब्द, आदेश उपदेश के पद।

समता—सामंजस्य।

समदाउनि—मिथिला में बेटी की विदाई में गाया जाने वाला गीत।

समरस—शिव शक्ति का तादात्म्य; आनन्द बोध के समय गायक, गान और गेय का अभेद, रसानुभूति की स्थिति।

समवकार—(रूपक का एक भेद) इस में कई नायक होते हैं।

समवेतगान—सामूहिक गान।

समष्टिवाद—व्यक्तिवाद का विपरीत शब्द, कलैक्टिविज़्म (अँ०)।

समाजवाद—सोशलिज़्म (अँ०)।

समाधि—एक अलंकार जहाँ काकतालीय न्याय से किसी अर्थ की सिद्धि हो जाए।

समालोचना—किसी साहित्यिक रचना की परख करके उसके विषय में अपनी सम्मति देना।

समासोक्ति—(अर्थालंकार) जहाँ समान विशेषण की सामर्थ्य से प्रकृत के कथन द्वारा अप्रकृत का कथन किया जाए।

समाहारवाद—परस्पर विरोधी तत्वों, मतों या संप्रदायों का समन्वय करना।

समीक्षा—अच्छी तरह देख और जाँच कर किसी वस्तु अथवा साहित्य की रचना की विवेचना, आलोचना आदि करना।

समूह गीत—सामूहिक गान, कोरस (अँ०)

समूहवाद—एक तरह की समष्टिवादी विचारधारा।

सरमाया—पूँजी।

सरमायादार—पूँजीवादी, पूँजीपति।

सरस साहित्य—ललित साहित्य।

सरसी—एक छंद जिसमें १६, ११ के क्रम से २७ मात्राएँ प्रत्येक चरण में हों और चरणान्त में १-१ गुरु-लघु अवश्य हों।

सर्वश्राव्य—नाटक में कथोपकथन का वह भाग जो 'स्वगत' के बाद सबको सुनाने के लिए कहा जाए।

सर्वात्मवाद—सर्वेश्वरवाद, सब में एक ही आत्मा है।

सलज्जरति—जो लाज के साथ रति बढ़ाने की इच्छा करे, वह नायिका।

सवैया—एक चरण में २२ से २६ अक्षरों वाले छन्द को सवैया कहते हैं; हिन्दी में कवित्त के बाद सवैया छंद का बड़ा महत्त्व और प्रयोग है, सुन्दरी (मत्तगयन्द), दुर्मिल, किरीट,

अरसात, मदिरा, सुमुखी आदि इसके कई भेद हैं।

सहज—(नाथ पंथ में) परमतत्त्व।

सहज रहनि—समाधि।

सहजिया—परकीया प्रेम को महत्त्व देने वाला एक संप्रदाय।

सहस्रदलकमल—हठयोगियों के अनुसार एक चक्र।

सहस्रार—ब्रह्मरंध्र।

सहोक्ति (अर्थालंकार) जहाँ सह, साथ आदि शब्दों के द्वारा चत्मकार हो।

सांग रूपक—(अर्थालंकार) जहाँ रूपक अलंकार में उपमेय के अवयवों पर उपमान के अवयवों का भी आरोप हो।

साकांक्षता—सामजस्य, समन्वय, अंग प्रत्यंग का उचित सन्निवेश।

सात्विक अनुभाव—चित्तवृत्तियों के द्वारा स्तंभ, स्वेद, रोमांच आदि शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव।

सात्विक अलंकार—शोभा, कान्ति, दीप्ति, माधुर्य आदि, सत्वगुण वाले व्यक्तित्व की सुन्दरता बढ़ाने वाले गुण।

सादृश्य—समानता, उपमा अलंकार में उपमेय उपमान की समानधर्मिता।

साधना—सिद्धि के लिए प्रयत्न।

साधारण धर्म या सामान्य धर्म—उपमा अलंकार में चौथा अंग।

साधारणीकरण—विभावादि का व्यक्तिविशिष्ट से संबंध छूट जाना और सामाजिक का व्यक्तित्व बंधन नष्ट होना, अतः रस की प्रतीति होना।

सानिट (अँ०)—चतुर्दशपदी छन्द।

सापेक्षता—दो परिणामों की तुलना, सौन्दर्य-विश्लेषण में अ की ब से तुलना।

सापेक्षतावाद—आइनस्टाइन का आविष्कृत सिद्धान्त, इस सिद्धान्त में दिक्काल-निरन्तरता को वास्तविक माना जाता है।

सामंजस्य—नाना विभिन्न अनुभवों तथा प्रभावों की समन्विति।

सामंतवाद—राजा रजवाड़ा जमींदारवाद।

सामगान—सामवेद के मन्त्रों का स्वर सहित गान।

सामाजिक दायित्व—समाज के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य।

सामाजिक यथार्थवाद—मनुष्य के व्यापारों, जीवन-प्रक्रिया तथा

लौकिक संबन्धों को ही महत्त्व-पूर्ण एवं सत्य मानने वाला मत।

सामाजिक समष्टि—सोशल होल या सोशल एग्रीगेट (अँ०), समुदाय-वाद।

सामान्य—अविशेष, एक अर्थालंकार, समानता।

सामूहिक चेतना—कोलेक्टिव साइक (अँ०), वह चेतना जो व्यक्ति विशेष की न होकर कालविशेष में समष्टिगत हो।

सामूहिक मानस—ग्रुपमाइंड (अँ०), सभा-समिति या वर्ग का मानस।

साम्यवाद—कम्यूनिज़्म।

सारंगा सदाब्रज—उत्तरीय भारत का एक कथागीत।

सार—एक छंद, सारांश, जन्मोत्सव का गीत, एक अलंकार।

सारोपा लक्षणा—लक्षणा शब्द शक्ति का एक भेद जिसमें विषयी तथा विषय दोनों का शब्द द्वारा प्रति-पादन होता है।

सावन—एक मास जो विरह के काव्य का सबसे उपयुक्त समय है।

सावनी हिंडोला—स्त्रियों द्वारा झूला झूलते समय गाये जाने वाले गीत।

साहित्य—किसी भाषा के ललित-रसपूर्ण काव्य, नाटक, उपन्याम आदि ग्रंथों का समुदाय।

साहित्य-विधा—साहित्य के रूप।

सिंहलगढ़—हठयोग में शरीर।

सिंहावलोकन—आगे-पीछे देखकर वर्णन करना या देखना।

सिद्ध—जिसकी साधना पूर्ण हुई, साबित, तन्त्रयुग में सफल साधना वाला योगी।

सुत्त—सूक्त, सूत्र।

सुपर इगो—(अँ०) इड और अहम्।

सुरति—चित्त के स्रोत का प्रवाह, स्मृति।

सुषुम्ना—इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, तीन नाड़ियाँ हैं।

सूक्तिकाव्य—कवि अनुभव सार।

सूत्र—१ सूत, २ तार, ३ जनेऊ, ४ छोटे वाक्य में बहुत अर्थ-कथन, ५ पुतलियों की डोरी, ६ मूल ग्रन्थ।

सूत्रधार—रंगशाला का प्रबन्ध कर्ता।

सूफी—इसलाम में रहस्यवादी।

सूफी मत—वह मत जिसमें लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम किया जाता है।

सेवा—भगवान् की सेवा, गुरु सेवा, साधु सेवा, लोक सेवा।

सेहरा—सोने-चाँदी की तारों या फूलों की झालर, विवाह के समय बधाई के रूप में गाई जाने वाली कविता।

सैटायर—व्यंग्यगीत या व्यंग्यकविता।

सोमरस—अमीरस, एक लता का रस जिसे वेदों के काल के आर्य पीते थे।

सोरठ—एक रोमांटिक लोकगाथात्मक कविता।

सोहनी—पंजाब की एक लोकगाथा सोहनीमहिवाल की नायिका, आषाढ़ में निराती के समय का लोकगीत।

सोहम्—वेदान्त का मूलमन्त्र—मैं ब्रह्म हूँ।

सोहर—जन्मोत्सव का गीत।

सौन्दर्य चेतना—सौन्दर्यमय वस्तु की रचना या आस्वादन करते समय आत्मा की स्थिति विशेष।

स्टालिनवाद—मार्क्सिज़्म-लेनिनिज़्म के व्यावहारिक रूप के समर्थक स्टालिन का मत, वे निरन्तर क्रान्ति के पक्षपाती थे।

स्तंभ—प्रथम सात्विक अनुभाव।

स्तुतिगीत—स्तोत्र, अर्चनागीत।

स्थापक—सूत्रधार के बाद रंगमंच पर कथा की स्थापना करने वाला।

स्थैर्य—स्थिरता, नायक का सात्विक गुण।

स्नेह—प्रेम अथवा भक्ति का पूर्व एवं कोमल रूप, सन्तान के प्रति प्यार।

स्पंद—कंपन, थिरकन, गति।

स्फोट—प्रस्फुटित होना, विकसित होना, नाद का शाश्वत रूप।

स्मरण—स्मृति, का एक अर्थालंकार जिसमें सदृश वस्तु को देखकर पूर्व दृश्य के स्मरण में चमत्कार हो।

स्मित—मुस्कान, हास्य रस का एक अंग।

स्मृति—एक संचारी भाव।

स्मृति दृश्य—फलेशबैंक (अं०), पूर्व स्मृति का दृश्य की भाँति साकार होना।

स्रग्धरा—वर्णवृत्त म र भ न य य य ७, ७, ७ वर्ण पर यति।

स्रग्विणी—(वर्णिक छन्द) चार रगण प्रत्येक चरण में।

स्रजन—सृजन, सर्जना।

स्वकीया—आत्मीया या स्वीया नायिका

स्वगत—नाटकीय कथोपकथन का वह अंश जिसे दर्शक तो सुनते हैं पर समीपस्थ अन्य पात्र नहीं सुनते, स्वगत के द्वारा नाटककार पात्र का चरित्र-चित्रण करता है और उसके अन्तःकरण को व्यक्त करता है तथा उसके अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करता है।

स्वच्छन्दतावाद—रोमांटिसिज़्म (अं०) इस वाद के अनुयायी प्राचीन रूढ़ियों का उल्लंघन करके स्वतन्त्र रूप में शृंगार, प्रकृति तथा वीरता की रचनाएँ करते हैं।

स्वप्नप्रतीक—मनोविज्ञान में स्वप्नों में दृष्ट कुछ वस्तुओं को अन्य गुप्त बातों का प्रतीक माना जाता है।

स्वप्नसर्जना—स्वप्न में की गई कलात्मक रचना।

स्वभावज अलंकार- -लीला विलास आदि हाव।

स्वभावोक्ति—(अर्थालंकार) जाति, गुण, क्रिया तथा स्वभाव आदि का वर्णन।

स्वांग—भंगी, धोबी, कुर्मी आदि का वेश का बदलकर शृंगारमय नृत्य करना जिसमें ढोलक, डफ आदि बजाये जाते हैं, विशेषतया होली में स्वाँग भरे जाते हैं और इसमें पुरुष स्त्री का वेश बनाता है तथा स्त्री पुरुष का वेश धारण करती है।

स्वागता—(वर्णवृत्त) न भ ग ग।

स्वात्मनिष्ठकाव्य—सब्जेक्टिव पोइट्री (अं०)।

स्वाधिष्ठान—हठयोगियों का बताया शरीर में ही दूसरा चक्र।

स्वाधीनपतिका—(नायिकाभेद) जिस का पति आज्ञा का पालन करे।

हकीकत—सूफीमत की वह मंज़िल जहाँ साधक को 'रब' का यथार्थ ज्ञान होता है।

हठयोग—योग-साधना का वह अंग जिसमें इन्द्रिय-निग्रह कड़ाई से किया जाता है और प्राणायाम तथा ध्यान आदि द्वारा कुंडलिनी को जगा कर ब्रह्मरंध्र से टपकने वाला अमृतरस पिया जाता है।

हरिगीतिका—१६, १२ यति के क्रम से प्रत्येक चरण में २८ मात्रा का मात्रिक छन्द।

हरिप्रिया—इसके प्रत्येक पद में १२, १२, १२, १० कुल ४६ मात्राएँ

होती हैं, अन्त में S या SS लगा होता है। यह मात्रिक दंडक है।

हर्ष—एक संचारी भाव।

हल्लीश— (एक उपरूपक) इसमें ७-८ या १० नारी पात्र होते हैं।

हाँरमनी—(अँ०) सामंजस्य।

हाल—सूफियों की वह अवस्था जब वे सभी मानवीय गुण-दोषों से ऊपर उठकर भावावेश की अवस्था में हो जाते हैं।

हालावाद—शराब, मधुबाला और मदिरालय के प्रतीकों से की जाने वाला कविता का पंथ।

हाव—अंगज अलंकार।

हास—हास्य रस का स्थायी भाव।

हास्यरस—इसका स्थायी भाव हास्य है। इसका वर्ण श्वेत है, देवता प्रमथ है।

हिंदवी—हिन्दी का पुराना नाम।

हिन्दी—देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उत्तरी भारत की सबसे मुख्य भाषा जो सरहिन्द से बनारस तक बोली जाती है, भारत की राष्ट्र-भाषा और सन् १९६५ के बाद भारत की राजभाषा।

हिन्दुस्तानी—हिन्दी-उर्दू भाषा के मिले जुले सरल रूप का नाम।

हीर राँझा—झंग में हीर का और तख्त हज़ारे में राँझे का जन्म हुआ। दोनों की प्रेम-कहानी पंजाब में अमर हो गई, पंजाबी में कवि वारस शाह का 'हीर' नामक काव्य बड़ा प्रसिद्ध है, पंजाब का सबसे प्रसिद्ध लोकगीत।

हृदयवाद—वह मत जिसमें साहित्य रचना के लिए हृदय की अनुभूतियों को सर्वोपरि माना जाता है।

हेला—अंगज अलंकार।

होली—फाग के गीत।

ह्रासोन्मुख—पतन की ओर प्रवृत्त।

ह्लाद—आह्लाद, हर्षातिरेक।

धातु

१. अर्च्—(हिं०अर्थ) आराधना करना, उपासना करना, पूजा करना; (अँ० अ०) टु एडोर, टु वर्शिप, टु रेस्पेक्ट; (व्यु०श०) अर्चा, अर्चना ।

२. अर्ज्—(हिं०) कमाना, प्राप्त करना; (अँ०) टु ऑब्टेन, टु आक्वायर; (व्यु०श०) अर्जन, उपार्जन (उप+अर्जन), धनोपार्जन (धन+उप+अर्जन) ।

३. अर्थ्—(हिं०) प्रार्थना करना, माँगना (विनयपूर्वक) ; (अँ०) टु रिक्वेस्ट, टु डिमाण्ड, टु एंट्रीट ; (व्यु०श०) अर्थ (प्रयोजन, धन), प्रार्थना (प्र+अर्थना) ।

४. अश्—(हिं०) भोजन करना, खाना चबाकर निगलना; (अँ०) टु टेक फूड, टु ईट, टु कन्ज्यूम; (व्यु०श०) अशन, प्रातराश, (प्रातर्+आश) ।

५. अस्—(हिं०) होना, रहना; (अँ०) टु एग्जिस्ट, टु लिव, टु बी, टु रिमेन; (व्यु०श०) अस्तित्व (अस्ति+त्व) ।

६. इष् (हिं०) चलना, गति करना, इच्छा करना, चाहना; (अँ०) टु मूव, टु गो, टु स्टिर, टु विश, टु डिजायर; (व्यु०श०) इषु (बाण, तीर), इच्छा ।

७. ईक्ष्—(हिं०) परीक्षा करना, ध्यान से देखना, विचारना; (अँ०) टु एग्जामिन, टु कन्सिडर,; (व्यु०श०) परीक्षा (परि+ईक्षा) ।

८. ईर्—(हिं०) प्रेरित करना, उत्तेजित करना, उकसाना, दबाना; (अँ०) टु अर्ज, टु मूव, टु इन्साईट,; (व्यु०श०) ईरणा, प्रेरणा (प्र+ईरणा) ।

९. ईर्ष्य्—(हिं०) ईर्ष्या करना, स्पर्धा करना डाह करना, जलना; (अँ०) टु एन्वि, टु हेट, टु ग्रज; (व्यु०श०) ईर्ष्या ।

१०. उन्द्—(हिं०) जल से भिगोना, आर्द्र करना, पानी छिड़कना; (अँ०) टु वैट, टु मॉइसन; (व्यु०श०) समुद्र (सम्+उद्र), उदक (जल) ।

११. ऊह्—(हिं०) तर्क-वितर्क करना, तर्क द्वारा परीक्षण करना, वाद-विवाद करना, विचार करना; (अँ०) टु डिलीबरेट, टु रीजन, टु आर्ग्यू,

टु डिस्कस; (व्यु०श०) ऊहा, ऊहापोह (सोच-विचार, तर्क-वितर्क)।

१२. ऋध्—(हिं०) कृतार्थ होना, सफल होना, वैभववान् होना, धनवान् होना, (अं०) टु थ्राइव, टु प्रॉस्पर, टु फ्लरिश; (व्यु०श०) ऋद्धि, समद्धि (सम्+ऋद्धि)।

१३. कथ्—(हिं०) कहना, बतलाना, वर्णन करना, प्रकट करना; (अं०) टु टैल, टु रिलेट; (व्यु०श०) कथा।

१४. कम्—(हिं०) चाहना, इच्छा करना; (अं०) टु विश, टु डिज़ायर; (व्यु०श०) काम, कामना।

१५. कम्प्—(हिं०) कँपाना, काँपना, हिलाना, हलचल मचाना; (अं०) टु ट्रेम्बल, टु कॉज़ टु ट्रेम्बल, टु मूव, टु डिस्टर्ब; (व्यु०श०) कम्प, कम्पन, भूकम्प, (भू+कम्प)।

१६. कष्—(हिं०) घिसना, रगड़ना, सान देना; (अं०) टु ग्राइंड, टु शार्पन, टु स्मूद (बाइ फ्रिक्शन); (व्यु०श०) कषवटी (कसौटी) निकष (नि+कष), कष्ट।

१७. काश्—(हिं०) चमकना, चमकाना, प्रज्वलित होना, जगमगाना; (अं०) टु एमिट लाईट, टु ग्लीम, टु शाइन; (व्यु०श०) प्रकाश (प्र+काश)।

१८. कुच्—(हिं०) सिकुड़ना, छोटा करना; (अं०) टु कॉण्ट्राक्ट; (व्यु०श०) संकोच, (सम्+कोच), संकुचित, (सम्+कुचित)।

१९. कुण्ठ्—(हिं०) मंद करना, धारहीन करना, भोंटा करना, भुथरा करना; (अं०) टु ब्लण्ट; (व्यु०श०) कुण्ठा, कुण्ठित।

२०. कुत्स्—(हिं०) निन्दा करना, गाली देना, दुर्वचन कहना, अनुचित व्यवहार करना; (अं०) टु आब्यूस, टु माल्ट्रीट; (व्यु०श०) कुत्सित, कुत्सा।

२१. कुप्—(हिं०) क्रुद्ध होना; (अं०) टु बी एंग्रि, टु बी एन्रेज्ड; (व्यु०श०) कुपित, कोप।

२२. कृ—(हिं०) करना, कार्य संपादित करना; (अं०) टु डू, टु एक्ट,

टु परफ़ार्म; (व्यु०श०) कृति, करण ।

२३. कृत्—(हिं०) कातना, काटना; (अँ०) टु स्पिन, टु कट; (व्यु०श०) कर्तन (कातना), कर्तन (काटना) ।

२४. कृष् (हिं०) अपनी ओर खींचना, हल जोतना, खेती करना; (अँ०) टु प्लाउ, टु पुल, टु ड्रा, टु कल्टिवेट, टु टिल; (व्यु०श०) आकर्षण (आ+कर्षण), कृषि ।

२५. क्लृप्—(हिं०) काटना, उत्पन्न करना, सम्पन्न करना; (अँ०) टु कट, टु प्रोड्यूस, टु इफ़ेक्ट; (व्यु०श०) कल्पनी (कैंची), कल्पना ।

२६. क्री—(हिं०) मोल लेना, खरीदना; (अँ०) टु पर्चेज़, टु बाई; (व्यु० श०) क्रय, विक्रय (वि+क्रय) ।

२७. क्रीड्—(हिं०) खेलना, कूद-फाँद करना, विहार करना; (अँ०) टु स्पोर्ट, टु प्ले, टु फ्रॉलिक ; (व्यु०श०) क्रीडा (क्रीड़ा) ।

२८. क्रुश्—(हिं०) चिल्लाना, निन्दा करना, दोष निकालना, कोसना; (अँ०) टु क्राइ, टु कण्डेम, टु ब्लेम, टु एब्यूस; (व्यु०श०) क्रोश (कोस—लम्बाई अथवा दूरी का परिमाण, अर्थात् वह दूरी जहाँ तक चिल्लाने की आवाज़ पहुँच सके), आक्रोश (आ+क्रोश) ।

२९. क्षम्—(हिं०) सहनशील होना, धैर्य रखना, संतोषी होना; (अँ०) टु बी पेशेण्ट, टु फार्बेअर; (व्यु०श०) क्षमा ।

३०. क्षर्—(हिं०) रिसना, टपकना, बहना, (बूँद बूँद करके बहना); (अँ०) टु ट्रिक्ल, टु फ्लो; (व्यु०श०) क्षार (छार), क्षरण ।

३१. क्षुभ्—(हिं०) चुभाना, उत्तेजित करना, घबराना, व्याकुल होना; (अँ०) टु डिस्टर्ब, टु मूव, टु शेक, टु बी एक्साइटिड, टु पिन्च; (व्यु०श०) क्षोभ, क्षुब्ध ।

३२. क्षुर्—(हिं०) काटना, घाव करना ; (अँ०) टु कट, टु वूण्ड, टु इञ्जर, टु हर्ट; (व्यु०श०) क्षुर (छुरा, उस्तरा), क्षुरा, (छुरा), क्षुरी (छुरी), क्षुरिका ।

३३. खन्—(हिं०) खोदना, गड्ढा करना, अन्वेषण करना; (अँ०)

टु एक्सकेवेट, टु डिग; (व्यु०श०) खनि (खान), खनन ।

३४. खाद्—(हिं०) खाना, चबाकर निगल जाना; (अँ०) टु ईट, टु टेक फूड ; (व्यु०श०) खाद्य ।

३५. ख्या—(हिं०) वर्णन करना, कहना, सुनाना, (अँ०) टु नैरेट, टु रिसाइट; (व्यु० श०) ख्याति, विख्यात (वि+ख्यात), व्याख्यान (वि+आ+ख्यान) ।

३६. गण्—(हिं०) गिनना, जोड़ना; (अँ०) टु काउण्ट, टु रेकन, टु कम्प्यूट, टु काल्क्यूलेट; (व्यु०श०) गणित, गणना ।

३७. गद्—(हिं०) कहना, बोलना, वार्तालाप करना, उच्चारण करना; (अँ०) टु अटर, टु से, टु स्पीक; (व्यु० श०) गद्य ।

३८. गम्—(हिं०) चलना, जाना, प्रस्थान करना; (अँ०) टु मूव, टु डिपार्ट, टु गो; (व्यु० श०) गम, आगम (आ+गम), गमन, गति ।

३९. गा—(हिं०) प्रस्थान करना, जाना, चलना, स्थान बदलना, चेष्टा करना; (अँ०) गात्र (शरीर का अवयव, अर्थात् गत्यात्मक क्रिया-व्यापार का साधन) ।

४०. गै, गा—(हिं०) गाना, कूजना, कविता रचना, सुरीले स्वर लय में शब्दोच्चारण करना; (अँ०) टु सिंग, टु अटर इन ए ट्यून; (व्यु०श०) गायन (गै+अन), गान (गा+अन) ।

४१. गुण्—(हिं०) गुणा करना, बढ़ाना; (अँ०) टु मल्टिप्लाई, टु इन्क्रीज़ (इन नंबर), टु एड्वांस; (व्यु० श०) गुणन, गुणा ।

४२. घट्—(हिं०) संयोगवश होना, आ पड़ना; (अँ०) टु चान्स, टु हैप्पन; (हिं०) घटना, दुर्घटना (दुर्+घटना), घटित ।

४३. घुष्—(हिं०) प्रकट करना, प्रकाशित करना, विज्ञापन करना; (अँ०) टु एनाउन्स, टु डिक्लेअर, टु प्रोक्लेम; (व्यु० श०) घोष, घोषित, घोषणा ।

४४. चक्ष्—(हिं०) देखना, दर्शन करना, निरीक्षण करना, अन्वेषण करना, परीक्षा करना; (अँ०) टु लुक, टु सी, टु डिसर्न ऑब्जेक्ट विद आइज़, टु एग्ज़ैमिन; (व्यु० श०) चक्षु ।

४५. चण्ड्—(हिं०) क्रुद्ध होना, कुपित होना, भयंकर होना; (अँ०) टु बी एन्रेज्ड, टु बी एंग्री; (व्यु०श०) प्रचण्ड प्र+चण्ड, चण्डी, चण्डिका।

४६. चर्— (हिं०) पैदल चलना, टहलना; (अँ०), टु स्टेप, टु वाक, टु ट्रैवल ऑन फुट; (व्यु०श०) चरण, चरित, चर।

४७. चित्—(हिं०) बोध करना, जानना, समझना, सूचित होना; (अँ०) टु नो, टु लर्न, टु अण्डरस्टैण्ड, टु एप्रिहेण्ड; (व्यु०श०) चित्त, चेतन, चेतना।

४८. जन्—(हिं०) जन्म लेना, पैदा होना, जनमना; (अँ०) टु बी बॉर्न, टु टेक बर्थ; (व्यु०श०) जन, जनित, जन्य, जन्म, जन्तु (प्राणी)।

४९. ज्ञा—(हिं०) भली-भाँति जानना (समझना), परिचित होना, अनुभव प्राप्त करना; (अँ०) टु पर्सीव, टु आब्जर्व, टु नो, टु अण्डरस्टैण्ड; (व्यु० श०) ज्ञान, ज्ञात।

५०. तप्—(हिं०) गर्म करना, गर्म होना, उत्तेजित करना, भड़काना; (अँ०) टु बी हॉट, टु मेक हॉट, टु एक्साइट, टु एजिटेट; (व्यु०श०) तप्त, तप, ताप।

५१. दिश्—(हिं०) दिखलाना, बतलाना, सूचित करना, निर्दिष्ट करना; (अँ०) टु इंडिकेट, टु डाइरेक्ट, टु पॉयण्ट आउट, टु शो, टु गाइड; (व्यु०श०) दिशा, दिशि।

५२. दुह्—(हिं०) दूध दुहना, दूध निकालना (दुधारु पशु के स्तनों में से); (अँ०) टु मिल्क, टू ड्रा मिल्क; (व्यु०श०) दोहन, दुग्ध।

५३. द्युत—(हिं०) जगमगाना, प्रज्वलित होना, प्रकाशित करना, चमकना, (अँ०) टु बी ब्रिल्यण्ट, टु ब्राइटेन, टु ग्लीम, टू एमिट लाइट, टू शाइन; (व्यु०श०) द्युति, विद्युत् (वि+द्युत्), द्योतक।

५४. धा—(हिं०) सृष्टि रचना, निर्माण करना, पोषण करना, सहारा देना, धारण करना; (अँ०) टु ऑरिजिनेट, टु ब्रिंग इनटु एग्जिस्टेंस, टु सप्पोर्ट, टु क्रिएट; (व्यू० श०) धात्री, धाता, विधाता (वि+धाता)।

५५. **धी**—(हिं०) सोचना, विचारना, मनन करना, चिंतन करना, अनु-मान करना, कल्पना करना; (अँ०) टु थिंक, टु कन्सिडर, टु कॉण्टेम्प्लेट, टु मेडिटेट, टु इमेजिन, टु फेंसि; (व्यु०श०) धी (बुद्धि, ज्ञान, पुत्री)।

५६. **नम्**—(हिं०) नमस्कार करना, प्रणाम करना, झुकना, चरणों पर गिरना, (चरण स्पर्श करना), टु बेंड, टु स्टूप, टु सेल्यूट, टु रिवी-अर; (व्यु०श०) नमस्कार, नम्र।

५७. **नी**—(हिं०) मार्ग दिखाना, अग्रसर होना, ले चलना, आगे जाना, अगुआई करना; टु डाइरेक्ट, टु गाईड, टु लीड, टु काण्डक्ट; (व्यु० श०) नेत्री, नेता।

५८. **पठ्**—(हिं०) पढ़ना, समझना, विचारना, अध्ययन करना; (अँ०) टु स्टडि, टु रीड, टु लर्न (बाई आब्जर्वेशन), (व्यु०श०) पठित, पाठ्य, पाठ।

५६. **पिष्**—(हिं०) पीसना, कसकर रगड़ना, चूर्ण के रूप में करना; टु रिड्यूस, टू पाऊडर, टु ग्राईन्ड, टु रब हार्ड; (व्यु०श०) पिष्ट, पेषण, पिष्टपेषण, (पिसे हुए को फिर पीसना)।

६०. **पुष्**—(हिं०) पलना-पुसना, बढ़ना, लालित-पालित होना, सबल-सुदृढ़ होना, (अँ०) टु बी नरिश्ड, टु बी नर्चर्ड, टु बी चेरिश्ड; (व्यु०श०) पुष्टि, पुष्ट, संपुष्ट (सम्+पुष्ट)।

६१. **पू**—(हिं०) शुद्ध करना, निर्मल करना; (अँ०) टु प्योरिफ़ाई, टू क्लीन, टु मेक प्योर; (व्यु०श०) पवन, (पू+अन) अर्थात् शुद्धि करने वाला।

६२. **पूज्**—(हिं०) आराधना करना, आदर करना, उपासना करना, सम्मान करना, प्रतिष्ठा करना; (अँ०) टु आनर, टु वेनरेट, टु एडोर, टु वर्शिप, टु रेसपेक्ट, टु रेवरेंस; (व्यु०श०) पूजन, पूज्य, पूजनीय, पूजा, पूजित।

६३. **प्रच्छ्**—(हिं०) पूछना, याचना करना, माँगना, जाँचना, अन्वेषण

करना; (अँ०) टु इन्क्वायर, (एन्क्वायर), टु आस्क, टु डिमाण्ड; (व्यु०श०) पृच्छा, पृच्छक, प्रश्न ।

६४. प्रथ्—(हिं०) फैलना, प्रचलित होना, व्यवहृत होना, संचरना; (व्यु०श०) टु स्प्रेड, टु बी कस्टमरि; (व्यु०श०) प्रथा, प्रथित ।

६५. प्री—(हिं०) प्रसन्न करना, आनन्द देना, सुखकर होना, तृप्त करना, (अँ०) प्लीज़, टू ग्रेटीफ़ाइ, टु डिलाईट; (व्यु०श०) प्रीति, प्रेयसी, प्रिय ।

६६. प्लु—(हिं०) तिरना, तैरना. धोना, (अँ०) टु फ़्लोट, टु बॉय; (व्यु०श०) प्लवन (प्लु+अन), प्लावन, प्लुत ।

६७. बुध्—(हिं०) जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना, (अँ०) टु नो, टु पर्सीव, टु अण्डरस्टैंड, (व्यु०श०) बुद्धि, बोध ।

६८. भी—(हिं०) डरना, त्रस्त होना, आशंका करना, संदेह करना, (अँ०) टु बी एफ़्रेड, टु फ़िअर, टु डाउट; (व्यु० श०) भीत, भय ।

६९. मन्—(हिं०) चिंतन करना, सोचना, विचारना, कल्पना करना; (अँ०) टु कॉण्टेम्पलेट, टु मेडिटेट, टु थिंक, टु कन्सिडर; (व्यु० श०) मन ।

७०. मह्—(हिं०) सम्मान करना, प्रतिष्ठा, करना, बढ़ाना, अधिक, करना; (अँ०) टु ऑनर, टु मेग्निफ़ाइ, टु मेक ग्रेट; (व्यु०श०) महान्, महत्ता ।

७१. मा—(हिं०) नापना, मापना, कूतना, अनुमान, करना; (अँ०) टु एस्टिमेट, टु मेज़र, टु एस्सर्टेन, टु डिर्टमिन; (व्यु०श०) मान ।

७२. मार्ग—(हिं०) खोजना, ढूँढ़ना, अन्वेषण करना, तलाशना; (अँ०) टु सीक, टु सर्च; (व्यु०श०) मार्ग, मार्गी, मार्गिक, मार्गन ।

७३. मिल्—(हिं०) मिलना, भेंट करना, सम्मुख आना, भिड़ना, एकत्र होना; (अँ०) टु एन्काउंटर, टु मीट, टु कम फ़ेस टु फ़ेस, टु असेम्बल; (व्यु०श०) मिलन, सम्मेलन, (सम्+मेलन) ।

७४. मुच्—(हिं०) बन्धन से छुटकारा देना, निस्तार करना, तारना;

(अँ०) टु सेट ऐट लिबर्टी, टु रिलीज़ फ्रॉम बॉण्डेज, टु लिबरेट; (व्यु०श०) मुक्त, मुक्ति, मोचन।

७५. मुद्—(हिं०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना, हँसमुख होना, (अँ०) टु बी मेरि, टु बी गे, टु बी मर्थफुल, टु बी जॉयस ; (व्यु०श०) मोद, मोदक, मुदित, आमोद (आ+मोद), प्रमोद (प्र+मोद)।

७६ मृ—(हिं०) मरना, दम निकलना, समाप्त होना, प्राणान्त होना; (अँ० टु सीज़ टु लिव, टु एक्स्पायर, टु डाइ ; (व्यु०श०) मरण मृत्यु।

७७. यम्—(हिं०) अधीन करना, प्रतिबंध लगाना, रोकना, सीमा बाँधना, दबाना, ; (अँ०) टु कण्ट्रोल, टु रिस्ट्रेन, टु लिमिट ; (व्यु० श०) यम, संयम, (सम्+यम), नियम, नियमन।

७८. याच्—(हिं०) प्रार्थना करना, विनय करना ; (अँ०) टु रिक्वेस्ट, टु एण्ट्रीट, टु प्रे फ़ॉर, टु बेग; (व्यु०श०) याचना, याचन, याचक।

७९. युज्—(हिं०) मिलना, मिलाना, जुड़ना, जोड़ना, एक होना, एकत्र होना ; (अँ०) टु युनाइट, टु जॉइन, टु ग्रो इण्टू वन ; (व्यु०श०) योजन, योजक, योग, संयोग, (सम्+योग), वियोग (वि+योग)।

८०. रम्—(हिं०) अति आनन्दित होना, हर्षित होना ; (अँ०) टु टेक ग्रेट प्लेज़र, टु डिलाइट इन; (व्यु०श०) रमण (आनन्ददायक), राम (मनोहर, प्रिय)।

८१. रस्—(हिं०) स्वाद लेना, चखना, अनुभव करना, आनन्द लेना ; (अँ०)टु गेट प्लेज़र आउट ऑव, टु रेलिश, टु टेस्ट ; (व्यु०श०) रसना, रस ।

८२. राज—(हिं०) शासन करना, अधीन या नियंत्रित रखना, व्यवस्था करना, (अँ०) टु रूल, टु गवर्न, टु रेन ; (व्यु०श०) राज्य, राजा।

८३. लक्ष्—(हिं०) निशान लगाना, चिह्नित करना, संकेत द्वारा बताना, निर्दिष्ट करना, देखना ; (अँ०) टु सिम्बलाइज़, टु मार्क, टु नोट, टु आब्ज़र्व ; (व्यु०श०) लक्ष्य, लक्षण, लक्षणा, लक्षि, लक्षक, लक्षित।

८४. लप्—(*हिं०*) बातचीत करना, बोलना, सम्भाषण करना ; (अँ०) टु चैट्टर, टु टॉक, टु स्पीक, टु कन्वर्स ; (*व्यु०श०*) प्रलाप (प्र+लाप), आलाप (आ+ लाप), विलाप, (वि+ लाप), वार्तालाप (वार्ता+ आलाप) ।

८५. लभ्—(*हिं०*) प्राप्त करना ; (अँ०) टु गेन, टु गेट, टु ऑब्टेन; (*व्यु०श०*) लभ्य, लाभ, सुलभ, (सु+लभ) दुर्लभ, (दुर्+लभ) ।

८६. लिख्—(*हिं०*) रचना करना, लिपि में प्रकट करना, निबंध रचना, लिखना, (अँ०) टु एक्सप्रेस इन ब्लेक एंड व्हाइट, टु राइट, (*व्यु०श०*) लिखित, लेख, लेखन, लेखक ।

८७. लोक्—(*हिं०*) देखना, परीक्षा करना, निरखना, निहारना, दृष्टि का प्रयोग करना, (अँ०) टु यूज़ साइट, टु लुक, टु सी, टु बिहोल्ड; (*व्यु०श०*) लोक (लोग, संसार) ।

८८. वच्—(*हिं०*) बोलना, कहना, (अँ०) टु से, टु स्पीक; (*व्यु०श०*) वचन ।

८९. वर्ण्—(*हिं०*) रँगना, चित्रकारी करना, निरूपण करना, व्याख्या करना, बयान करना, (अँ०) टु पेण्ट, टु डिस्क्राइब, टु सेट फ़ोर्थ इन, टु मार्क आउट ; (*व्यु०श०*) वर्णन, वर्ण्य, वर्ण ।

९०. वस्—(*हिं०*) रहना, बसना, समय बिताना, पहनना; (अँ०) टु ड्वेल, टु इन्हैबिट, टु लिव, टु रिज़ाइड, टु वेअर; (*व्यु०श०*) वास, निवास, आवास, प्रवास, वसन, वस्त्र ।

९१. विद्—(*हिं०*) जानना, समझना, अस्तित्व रखना, प्राप्त करना; (अँ०) टु पर्सीव, टु नो, टु एग्ज़िस्ट, टु ऑब्टेन ;

९२. वे—(*हिं०*) बुनना, कपड़ा बनाना (बुनना) ; (अँ०) टु वीव, टु इण्टरलेस थ्रेड्ज़ इन ए लूम ; (*व्यु०श०*) वयन, वेम (करघा), ओत-प्रोत (आ+ऊत—प्र+ऊत) ।

९३. व्रज्—(*हिं०*) घूमना, विचरना, भटकना, चलना, स्थान छोड़कर जाना ; (अँ०) टु रोम, टु वाण्डर, टु रैम्बल ; (*व्यु०श०*) व्रज, व्रजक,

व्रजन, व्रज्या, परिव्राजक ।

९४. शिक्ष्—(हिं०) पढ़ाना, सिखाना, उपदेश देना; (अँ०) टु टीच, टु इन्स्ट्रक्ट; (व्यु०श०) शिक्षा, शिक्षक, शिक्षित ।

९५. सृज्—(हिं०) निर्माण करना, अस्तित्व में लाना, सृष्टि रचना, उत्पन्न करना; (अँ०) टु क्रिएट, टु ऑरिजिनेट, टु ब्रिंग इण्टु एग्ज़िस्टेंस; (व्यु०श०) सृजन, सृष्टि, सृजक, सर्जन ।

९६. स्मि—(हिं०) मुस्कराना, हल्की हँसी हँसना; (अँ०) टु स्माइल, टु लाफ़ स्लाइटलि; (व्यु०श०) स्मिति, स्मित, स्मयन ।

९७. स्मृ—हिं०) स्मरण रखना, याद करना; (अँ०) टु रिटेन इन मेमरि, टु बेअर इन माइण्ड, टु रेकलेक्ट, टु रिमेम्बर; (व्यु०श०) स्मृत, विस्मृत (वि+स्मृत), स्मृति, स्मरण ।

९८. हिंस्—हिं०) आघात पहुँचाना, पीड़ा देना, हानि पहुँचाना; (अँ०) टु डू हार्म, टु डैमेज, टु इन्जर, टु हर्ट; (व्यु०श०) हिंस्र, हिंसक, हिंसा ।

९९. हु—(हिं०) बलि के लिए उपस्थित करना, भेंट चढ़ाना, पूजा की सामग्री अर्पित करना, बलिदान करना; (अँ०) टु प्रेज़ेंट एज़ ए सेक्रिफ़ाइस, टु ऑफ्फर; (व्यु०श०) होम, हुत, आहुति ।

१००. ह्वे—(हिं०) बुलाना, पुकारना, ललकारना,; (अँ०) टु चैलेञ्ज, टु क्राइ आउट, टु समन, टु काल; (व्यु०श०) आह्वान (आ+ह्वान) । (हिंदी का संबोधन-चिह्न 'हे' इस 'ह्वे' धातु का ही अपभ्रंश है ।)

—:०:—

प्रत्यय

१. अ—चोर (चुर्), हास (हस्) ; वासुदेव (वसुदेव), मायूर (मयूर) यौवन (युवन्) ।

२. अक—रञ्जक (रञ्ज्), रजक (रञ्ज), पाचक (पच्); आरण्यक (अरण्य), ग्रैष्मक (ग्रीष्म) ।

३. अन—भोजन (भुज्), ज्वलन (ज्वल्) ।

४. अनीय—वचनीय (वच्), भेदनीय (भिद्) ।

५. आ—जरा (जॄ), ऊहा (ऊह्), कुण्ठा (कुण्ठ्) ।

६. आन—वर्धमान (वृध्), क्रियमाण (कृ) ।

७. आमह—पितामह, मातामह ।

८. आलु—दयालु, ईर्ष्यालु ।

९. इ—कृषि (कृष्) ।

१०. इक—आस्तिक (अस्) , धार्मिक, मासिक, नाविक ।

११. इत—भ्रमित, विचलित, तारकित, पुष्पित ।

१२. इय—अग्रिय, इन्द्रिय ।

१३. इल—पंकिल, आविल ।

१४. ईन—कुलीन, कौलीन, ग्रामीण, सर्वांगीण ।

१५. ईय—आत्मीय, भ्रात्रीय ।

१६. उ—चक्षु (चक्ष्), भिक्षु (भिक्ष्) ।

१७. उक—कामुक (कम्) ।

१८. उन—मिथुन (मिथ्), शकुन (शक्) ।

१९. उर—भिदुर (भिद्), विदुर (विद्) ।

२०. एय—आग्नेय, नादेय, कौशेय ।

२१. क—आह्लादक, पञ्चक ।

२२. कट—संकट, प्रकट, विकट, उत्कट ।

२३. त्य—दाक्षिणात्य, पाश्चात्य ।

२४. त्रिम—कृत्रिम (कृ) ।
२५. त्व—पुंस्त्व (पुंस्) ।
२६. त—त्यक्त (त्यज्), हृष्ट (हृष्), उक्त (वच्) ।
२७. तम—उत्तम (उत्+तम), महत्तम (महत्+तम) ।
२८. तर—उत्तर (उत्+तर), महत्तर (महत्+तर) ।
२९. तन—अद्यतन, दिवातन ।
३०. ता—जनता, गीता ।
३१. ति—कृति (कृ) ।
३२. तीय—द्वितीय, तृतीय ।
३३. तु—जन्तु, तन्तु, वास्तु, हेतु ।
३४. धा—द्विधा, शतधा ।
३५. न—छिन्न (छिद्), पूर्ण (पृ), प्रश्न (प्रच्छ्) ।
३६. नि—अग्नि, ग्लानि, हानि ।
३७. नु—भानु ।
३८. म—पञ्चम, सप्तम, मध्यम, भीम, धूम ।
३९. मि—भूमि, रश्मि ।
४०. मी—लक्ष्मी ।
४१. य—गद्य (गद्), देय, (दा), ग्रैव्य, सौभाग्य, सभ्य, वश्य, कुल्य
४२. या—विद्या (विद्) ।
४३. यु—मन्यु, मृत्यु ।
४४. र—कुटीर, मुखर ।
४५. ल—अनिल, गरल, तरल, सरल ।
४६. व—केशव, अश्व ।
४७. श—लोमश (लोम), कपिश (कपि) ।
४८. शः—अल्पशः, शब्दशः ।
४९. क्ष्ण—तीक्ष्ण ।
५०. स्ना—मृत्स्ना ।
५१. सात्—भस्मसात्, आत्मसात् ।

उपसर्ग

१. **अति**—(*हिं०अर्थ*) अधिक, बढ़कर, ऊपर, पार, परे, बाहर, अतिरिक्त ; (*अँ०अर्थ*) एक्सेसिव, सरपासिंग, ओवर, बियॉण्ड ; (*उदाहरण*) अतीन्द्रिय, अत्यावश्यक, अत्याचार, अतिपितृ, अत्युत्साह ।

२. **अधि**—(*हिं०अर्थ*) ऊपर, पर, बढ़कर, ऊँची ओर, अधिक, ऊपर की दिशा में; (*अँ०अर्थ*) अपॉन, एडिशनल, एवव ; (*उदाहरण*) अधिमास, अध्यधीन, अधिप्रसू, अधिपति, अधिदेव, अधिपुरुष, आधिभौतिक, अधिमात्र, अधिरूढ़, अधिरोह ।

३. **अनु**—(*हिं०अर्थ*) पीछे, अनुसरण में, विषय में, बाद में, पिछला, अनुमोदन में, पीठ की ओर, बराबर, साथ-साथ, सटे-सटे, पास-पास, एक ओर से दूसरी ओर तक, साहचर्य में, क्रमानुसार, क्रम से, नियमित ; (*अँ०अर्थ*) बिहाइण्ड, एलॉङ्ग, आफ्टर, नियर, विद, आर्डर्ली; (*उदाहरण*) अनुकथन, अनुनिर्देश, अन्वाख्या, अनुचर, अनुरूप, अनुशीलन, अनुदिन ।

४. **अप**—(*हिं०अर्थ*) दूर, दूरस्थ, पीछे, नीचे, निषिद्ध, अस्वीकृत, बुरा, अशुद्ध, हीन, दूषित, विकृत, विपरीत ; (*अँ०अर्थ*) अवे, ऑफ, बैक, डाउन, निगेटिव, बैड, रॉङ्ग ; (*उदाहरण*) अपकर्ष, अपकार, अपक्रम, अपतीर्थ, अपकल्मष, अपपाठ, अपवाद, अपव्यय, अपहास, अपवर्त ।

५. **अपि** (पि)—(*हिं०अर्थ*) और, भी, अगरचे; (*अँ०अर्थ*) युनाइटिंग, प्लेसिंग ओवर, प्रॉक्सिमिटी, इन एडिशन टु; (*उदाहरण*) अपिच, अपिधान, अपिव्रत, अपिनद्ध, अपिहित ।

६. **अभि** (*हिं०अर्थ*) सामने, पास, समीप, ओर, श्रेष्ठ, अति, अत्यधिक, पुनः-पुनः; (*अँ०अर्थ*) अपॉन, ऑन, ओवर, ट्वाईस, इंटेंसिव; (*उदाहरण*)

अभिख्यान, अभिगम, अभिग्रह, अभिचर, अभिचार, अभिजन, अभिसार, अभिषेक, अभिधर्म, अभिनव, अभ्यास ।

७. अव—(*हि०अर्थ*) दूर, नीचे, निश्चित, व्याप्त, अल्प, क्षीण, कम, अभाव, में ; (*अँ०अर्थ*) डाउन, ऑफ, अवे ; (*उदाहरण*) अवकेश, अवगति, अवगम, अवगाहन, अवगुंठन, अवगुण, अवचय, अवज्ञान, अवतरण ।

८. आ—(हि० *अर्थ*) तक, से, भर, सहित, ओर, समीप, सामने सीमित, अल्प, सूक्ष्म, लघु ; (*अँ०अर्थ*) टुवार्ड्स, नियर, आप्पोज़िट, डिमिन्युटिव ; (*उदाहरण*) आसेतु, आकण्ठ, आजन्म, आजीवन, आबालवृद्ध, आकर्ण ।

९. उद्—(*हि०अर्थ*) ऊपर, ऊँचाई पर, प्रबल, प्रधान, उत्कर्ष पर, परे, दूर, बाहर, ऊपर की ओर ; (*अँ०अर्थ*) आफ़, अवे, आउट, अप, आउट आव, ओवर, ; (*उदाहरण*) उत्सूत्र, उत्क्षेप, उद्भव, उद्ग्रीव, उद्गार, उद्गत, उद्-घाटन, उद्घात, उद्घोष ।

१०. उप—(*हिं०अर्थ*) अधिक, न्यून, समीप, आसन्न, बराबर, व्याप्त, घटिया, ओर, अधीन, अप्रधान ; (*अँ०अर्थ*) ऑन, अंडर, टुवार्ड्स, नियर, इन्फ़िरिअर, सबार्डिनेट ; (*उदाहरण*) उपकक्ष, उपकार, उपलक्ष्य, उपक्रम, उपचार, उपनाम, उपनिवेश, उपनीत, उपन्यास, उपमान, उपपत्ति, उपभोग, उपकण्ठ, उपकूप ।

११. दुः—(*हि०अर्थ*) बुरा, कठोर, कठिन, अनुत्तम ; (*अँ०अर्थ*) बैड, हार्ड, डिफ़िकल्ट, इन्फ़िरिअर ; (*उदाहरण*) दुःसह, दुःशील, दुर्योनि, दुर्बल, दुर्भिषज्य, दुर्योग, दुर्वृत्ति, दुर्दैव, दुर्बुद्धि, दुरभिप्राय, दुरुत्तर, दुरध्येय ।

१२. नि—(*हि०अर्थ*) इनकार, में, भीतर, नीचे, पीछे ; (*अँ०अर्थ*) निगेशन, इन, इण्टू, डाउन, बैक ; (*उदाहरण*) निबिड, निग्रह, निसंज्ञ, निकारण, निकाम, निदेश, निवेश, निपुण, निबंध, निकट, निकृति, निदर्शन, निलय, निपीत ।

१३. निः—(*हि०अर्थ*) नकारात्मक, बाहर, परे, दूर, पीछे, आगे, सामने, अत्यंत, तीव्र, वृद्धिकर्ता, घना, ; (*अँ०अर्थ*) निगेटिव, आउट, अवे, फ़ार्थ, इंटेंसिव, ; (*उदाहरण*) निःशंक, निःशब्द, निःश्वास, निःशून्य, निःकपट, निःकाम, निःकारण, निःकासन, निःक्षेप, निःछल ।

१४. परा—(*हि०अर्थ*) दूर, परे, अलग, एक ओर, प्रधान ; (*अँ०अर्थ*) अवे, आफ़, एसाइड; (*उदाहरण*) पराकाष्ठा, पराहृत, परागत, परादृष्ट, पराक्रांत, पराजित, पराक्रम ।

१५. परि—(*हिं०अर्थ*) चारों ओर, गोलाई में, पूर्ण प्रकार से, पास, विषय में, बाहरी ओर ; (*अँ०अर्थ*) एबाउट, राउण्ड, फ़ुल्ली ; (*उदाहरण*) परिक्रमण, परिणत, परिवाद, परिष्कार, परिष्वंग, परिचर्या, परिच्छेद, परिकंप, परिकथा, परिकर, परिक्रिया ।

१६. प्र—(*हिं०अर्थ*) आगे, पर, ऊपर, दूर, अधिक, महान्, आगे की ओर, अत्यंत ; (*अँ०अर्थ*) आन, फ़ॉर्थ, ऑन्वर्ड्स, अवे, फॉवंर्ड, वेरी, एक्सेसिव, ग्रेट ; (*उदाहरण*) प्रयाण, प्रभु, प्रवाद, प्रच्छाय, प्रपौत्र, प्रोषित, प्रार्थना, प्रशम, प्रांजलि ।

१७. प्रति—(*हिं०अर्थ*) ओर, तरफ, संबंध में, विषय में, मुकाबले में, विरुद्ध, ऊपर, सामने, बदले में, पीछे, हर, सादृश्य, ; (*अँ०अर्थ*) टुवार्ड्स, इन ऑप्पोजिशन, टु अगेन्स्ट, अॅपान, इन रिटर्न, बैक, लाइकनेस, एवरि ; (*उदाहरण*) प्रतिकूल, प्रत्यग्नि, प्रतिपथ, प्रतिबल, प्रतिदिन, प्रतिकार, प्रतिदान, प्रतिफल, प्रतिग्रह, प्रतिमूर्ति, प्रतिदेवता, प्रत्यक्ष, प्रतिवाद, प्रतिभर ।

१८. वि—(*हिं०अर्थ*) बिना, परे, दूर, सामने, विरुद्ध, घना, अधिक, अलग, विभिन्न, पृथक्, विपरीत, अंतर, पर, क्रम, से ; (*अँ०अर्थ*) विदाउट, एपार्ट, अवे, अप्पोजिट, इण्टेन्सिव, डिफ़्फ़रेंट, ; (*उदाहरण*) विगत, विकच, विचित्र, विक्रय, वियोग, विभाग, विशेष, विधा, विरोध, विध्वंस, विमल, विकार ।